छत्तीसगढ़ विधान सभा

की

अशोधित कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

षष्ठम् विधान सभा   द्वितीय सत्र

मंगलवार, दिनांक 13 फरवरी, 2024

(माघ 24, शक सम्वत् 1945)

[अंक 07]

Webcopy

छत्तीसगढ़ विधान सभा

मंगलवार, दिनांक 13 फरवरी, 2024

(माघ-24, शक संवत् 1945)

विधानसभा पूर्वाह्न 11.00 बजे समवेत हुई

{अध्यक्ष महोदय (डॉ. रमन सिंह) पीठासीन हुए}

<u>तारांकित प्रश्नों के मौखिक उत्तर</u>

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज आप कुछ सक्रिय ध्यान दीजिए। यहां दिनोंदिन विपक्ष के सेहत गिरती जा रही है जैसे-जैसे विधान सभा का दिन बढ़ रहा है इनकी उपस्थिति और दयनीय होती जा रही है। अब यह लोग गिनती में भी नहीं है। आप अभिवादन, नमस्ते करते हैं उसे कोई लेने वाला नहीं है।

श्री लालजीत सिंह राठिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोगों की संख्या पर्याप्त है। आप चिन्ता मत करिये। हम लोग इधर बैठे हैं और उधर भी बैठे हैं। हम लोग सभी तरफ बैठे हुए हैं।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम सभी लोग हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इन लोग को स्वयं तय करके, अब नेता प्रतिपक्ष चुन लेना चाहिए। विधान सभा सत्र का तो माननीय नेता प्रतिपक्ष जी सामना नहीं कर पा रहे हैं। इस सदन से पूर्व मुख्यमंत्री जी भी गायब हैं। यहां वह आएंगे या नहीं आएंगे, यह भी तय नहीं है।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्नकाल। श्रीमती गोमती साय।

<u>प्रदेश में आंगनबाड़ी केंद्रों के सुधार एवं कुपोषण से मुक्ति हेतु शासन के प्रयास</u>

[महिला एवं बाल विकास]

1. (*क्र. 407) श्रीमती गोमती साय : क्या महिला एवं बाल विकास मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- **(क)** छत्तीसगढ़ प्रदेश के आंगनबाड़ी केन्द्रों की स्थिति में सुधार के लिए शासन की क्या योजनायें हैं एवं क्या प्रयास किये जा रहे हैं? **(ख)** प्रदेश को कुपोषण से पूर्णतः मुक्त किये जाने हेतु सरकार द्वारा क्या कदम उठाए जा रहे हैं? **(ग)** आंगनबाड़ी केन्द्रों में बालक-बालिका, गर्भवती-शिशुवती माताओं की संपूर्ण सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु शासन द्वारा किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दें?

महिला एवं बाल विकास मंत्री (श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े) : (क) प्रदेश के आंगनबाड़ी केन्द्रों की भौतिक संरचना में सुधार के लिए विभागीय बजट में उपलब्ध मरम्मत मद से, सक्षम आंगनबाड़ी के

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

तहत आंगनबाड़ी केन्द्रों का चरणबद्ध उन्नयन तथा स्थानीय स्तर पर डी.एम.एफ., सी.एस.आर. नीति आयोग की निधि से आंगनबाड़ी केन्द्रों की स्थिति में सुधार की कार्यवाही की जा रही है। हितग्राहियों के स्वास्थ्य एवं पोषण स्थिति में सुधार के लिए संचालित योजनायें व किये जान रहे प्रयासों की **जानकारी संलग्न**[1] **प्रपत्र-'अ' अनुसार है। (ख)** कुपोषित बच्चों के पोषण स्तर में सुधार हेतु विभाग द्वारा आंगनबाड़ी केन्द्रों की सेवाओं तथा संबंधित विभागीय योजनाओं के माध्यम से विविध प्रयास किये जा रहे हैं। इनमें पूरक पोषण आहार का प्रदाय, टीकाकरण, संदर्भ सेवा, स्वास्थ्य जांच, स्वास्थ्य एवं पोषण शिक्षा का लाभ प्रदान किया जाना, मुख्यमंत्री बाल संदर्भ योजना, मुख्यमंत्री सुपोषण योजना, समुदाय आधारित कुपोषित बच्चों का प्रबंधन, पोषण पुनर्वास केन्द्र में संदर्भित करना, सामुदायिक जनजागरण/समुदाय आधारित गतिविधियां, सुपोषण चौपाल एवं जिला स्तर पर स्थानीय प्रयास प्रमुख है। **(ग)**आंगनबाड़ी केन्द्रों के माध्यम से दर्ज बच्चों, गर्भवती एवं शिशुवती महिलाओं के स्वास्थ्य एवं पोषण स्थिति में सुधार हेतु किये जा रहे प्रयास का विवरण **संलग्न प्रपत्र-'ब' अनुसार है।**

श्रीमती गोमती साय :- माननीय अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद्। मेरा प्रश्न यह है कि आंगनबाड़ी केन्द्रों में बालक-बलिका, गर्भवती-शिशुवती माताओं की संपूर्ण सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु शासन द्वारा किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दें ?

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहती हूँ कि वैसे माननीय मंत्री महोदया ने अपने हिसाब से उत्तर बहुत अच्छा दिया है, पर मेरे हिसाब से, मैं इस उत्तर से संतुष्ट नहीं हूँ। इसमें स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से विस्तृत रूप से जानकारी तो दी गई है कि वहां स्वास्थ्य सेवाएं दी जातीं हैं। इस प्रश्न के परिशिष्ट "एक" में यह जानकारी दी गई है कि स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से संदर्भ सेवाएं तथा मुख्यमंत्री बाल संदर्भ योजना से लाभांवित किया जाता है, लेकिन मेरे प्रश्न यह है। मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहती हूँ कि मैं एक मॉ की पीड़ा को समझ सकती हूँ। जब एक मां अपने बच्चे को खोती है तो मैं उस पीड़ा को भी समझ सकती हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इसमें आपकी अनुमति चाहती हूँ। मैं कुछ विषय को उद्धृत करके बोल रही हूँ। यह दिनांक 12 अगस्त, 2023 जिला अस्पताल जशपुर की घटना है। जैसे कि गर्भवती महिला डिलेवरी के लिए अस्पताल में शौचालय का उपयोग करने जाती है और वहीं कमोड में बच्चे को जन्म देती है और उसी कमोड में बच्चा अंतिम सांस लेता है। वहां दो घण्टे तक शौचालय में मां बेहोश रहती है यह घटना अत्यन्त निंदनीय है और दुर्भाग्यजनक है।

अध्यक्ष महोदय :- आप अपना प्रश्न करिये।

[1] परिशिष्ट "एक"

श्रीमती गोमती साय :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा प्रश्न एक ही है। महिला एवं बाल विकास विभाग और स्वास्थ्य विभाग की संयुक्त जिम्मेदारी रहती है। इसमें स्वास्थ्य विभाग यह लापरवाही करती है, हालांकि स्वास्थ्य विभाग का मामला है, पर प्रदेश के किसी बच्चे की सुरक्षा करना महिला एवं बाल विकास विभाग की जिम्मेदारी होती है। यह विभाग जिम्मेदार होने के नाते, स्वास्थ्य विभाग विभाग की भी जवाबदारी बनती है और महिला एवं बाल विकास विभाग के द्वारा किसी बच्चे की सुरक्षा की जिम्मेदारी भी बनती है। आज इस घटना को लेकर, जो मेरे मन में बहुत दिनों से पीड़ा थी। इस प्रश्न के उत्तर में सारी जानकारियां हैं। रेडी टू ईट की भी जानकारी है। उन्हें जितने शासकीय नियमों में लाभ देना चाहिए, सारी चीजें दे रहे हैं, लेकिन मेरा कहना एक ही है कि क्या महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा महिलाओं एवं बच्चों की रक्षा के लिए ऐसे प्रकरणों में लापरवाही बरतने वालों, दोषियों के ऊपर कार्यवाही हो, क्या उन पर कार्यवाही के नियम बनाये गये हैं या नहीं ?

अध्यक्ष महोदय :- आपका प्रश्न आ गया। सदन में माननीय मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े जी पहली बार निर्वाचित एक मात्र महिला मंत्री उत्तर देने के लिए खड़ी हुई हैं। मैं उन्हें बधाई देता हूँ और शुभकामनाएं व्यक्त करता हूँ कि आप बेहतर तरीके से अपने पद के दायित्व का निर्वहन करेंगे। आप जवाब दीजिए।

श्री प्रबोध मिंज :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यहां महिला टीम का मैच हो रहा है।

अध्यक्ष महोदय :- दोनों तरफ महिलाएं हैं इसलिए आज मैं बीच में कम बोलूंगा।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझ तक उनका जो प्रश्न पहुंचा था। पत्र के माध्यम से उन तक इसका जवाब पहुंच गया है, लेकिन यहां पर उन्होंने एक महिला के दर्द को उल्लेख किया है। अगर मेरे पास इस तरह की घटना की जानकारी कभी भी पहुंचती है तो उसका मैं समाधान करवाने का या उसमें जो आरोपी सिद्ध होंगे, उन पर कार्रवाई करने का प्रयास करूंगी।

श्रीमती गोमती साय :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा इतना ही कहना है, क्योंकि माननीय मंत्री जी भी पहली बार जवाब दे रही हैं। मैं उच्च सदन में थी और वहां पर प्रश्न करती थी, पर इस सदन में भी मेरा पहला प्रश्न है।

अध्यक्ष महोदय :- आपका भी पहला प्रश्न है, आपको भी बहुत-बहुत बधाई और शुभकामना।

श्रीमती गोमती साय :- माननीय अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद। मैं इतना ही कहना चाहना चाहती हूं कि एक ऐसा नियम हो तो क्या महिला बाल विकास विभाग ऐसा कोई नियम बनायेगा कि ऐसी घटना में जो दोषी पाये जायें, वैसे लोगों के ऊपर कार्रवाई हो, ऐसा कोई नियम बनाने का विचार कर रहे हैं या नहीं कर रहे हैं ?

श्री राजेश अग्रवाल :- स्वास्थ्य विभाग के स्वास्थ्य मंत्री जी आ गये हैं, उनको भी जानकारी दे दीजिए।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, मंत्री जी आपको कुछ बोलना है तो जवाब दे दीजिए।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अगर बात स्वास्थ्य को लेकर के है तो अगर मुझ तक ऐसी कोई शिकायत पहुंचेगी तो हम विभागीय अधिकारियों के माध्यम से बातचीत करके, सलाह मशविरा करके उस पर कार्रवाई करेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है। आपका अच्छा जवाब है। और कोई प्रश्न आपके मन में है ? अजय चन्द्राकर जी, आप क्या पूछेंगे ? चलिये, आप प्रश्न कर लीजिए या सुझाव दे दीजिए। इतने सीनियर सदस्य खड़े हुए हैं, यह बड़ी बात है।

श्रीमती रायमुनी भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चूंकि 12 तारीख की रात को जो घटना थी, सम्माननीया सदस्य गोमती साय जी ने जो प्रश्न उठाया। उस दिन उस घटना की सूचना के बाद मैं तुरंत अस्पताल गई थी। शिशु का जन्म कमोड में होता है। प्रसव पीडा से पीड़ित महिला प्रसव कक्ष से उठकर शौंच के लिए जाती है और कमोड में प्रसव हो जाता है। यह कितनी पीड़ा भरी बात है। सारे अधिकारी उस दिन जो उस समय जो ड्यूटी में थे, जो दोषी हैं, उनको बचाने में लगे हुए थे। मैं कम से कम वहां 6 घंटे खड़ी रही। वहां पर प्रसव के समय जो दोषी डॉक्टर, नर्स थे, इस विषय को छिपाने में लगे रहे और कार्रवाई करने में बहुत देरी हुई। पीड़ित व्यक्ति को दबाव दिया गया। वह महिला 2 घंटे तक बेहोश रही।

अध्यक्ष महोदय :- आप इसी में प्रश्न कर लीजिए कि आप क्या चाहती हैं ?

श्रीमती रायमुनी भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उस समय जो भी नर्स और डॉक्टर ड्यूटी में थे, उन पर कार्रवाई आज तक क्यों नहीं हुई ? दोषियों के ऊपर कार्रवाई होनी चाहिए ताकि जिला चिकित्सालय में दोबारा ऐसी लापरवाही न हो। धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री जी बताईये कि क्या उन पर कोई कार्रवाई करेंगी ?

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं उनकी पीड़ा को समझ सकती हूं क्योंकि एक महिला की बात है। लेकिन मैं यह कहना चाहूंगी कि यह स्वास्थ्य विभाग से संबंधित है।

अध्यक्ष महोदय :- अच्छा, यह स्वास्थ्य विभाग से संबंधित है।

श्रीमती शेषराज हरवंश :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह स्वास्थ्य विभाग की घोर लापरवाही है। महिलाओं, शिशुओं के प्रति लापरवाही का मामला है, इसमें हमारी यह मांग है कि त्वरित कार्रवाई होनी चाहिए।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह महिलाओं की बात है, इसमें जरूर तुरंत के तुरंत कार्रवाई की जाये।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह प्रश्न और मामला इसलिए सर्वाधिक और गंभीर हो गया है। माननीय मुख्यमंत्री जी के जिले में, स्वास्थ्य विभाग में जब यह परिस्थिति है,

ऐसी अव्यवस्था है तो इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि अन्य जिलों में कैसी स्वास्थ्य व्यवस्था चल रही होगी।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, माननीय अजय चन्द्राकर जी।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सी.एस.आर. में कौन-कौन सी संस्थाओं ने आंगनबाड़ी बनाने के लिए इस वित्तीय वर्ष में कितना पैसा दिया ? भवन की मरम्मत करने के लिए या नया भवन बनाने के लिए पैसा दिया ? उसी तरह से इस वित्तीय वर्ष में नीति आयोग से कितना पैसा प्राप्त हुआ ? वह पैसा मरम्मत के लिए या नया भवन बनाने के लिए प्राप्त हुआ ? खासतौर से सी.एस.आर. मद से कौन-कौन सी संस्थाओं ने मरम्मत या नये निर्माण के लिये कितना पैसा दिया ?

अध्यक्ष महोदय :- आप कुछ बतायेंगी या जानकारी उपलब्ध करा देंगी ?

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय सदस्य जी को जानकारी उपलब्ध करवा दूंगी।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है। आप जानकारी दे दीजियेगा। दिलीप लहरिया जी।

मस्तूरी विधान सभा क्षेत्र में संचालित आंगनबाड़ी केन्द्र

[महिला एवं बाल विकास]

2. (*क्र. 785) श्री दिलीप लहरिया :- क्या महिला एवं बाल विकास मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- (क) मस्तूरी विधान सभा क्षेत्र अंतर्गत दिनांक 31 दिसंबर, 2023 की स्थिति में कुल कितने आंगनबाड़ी, मिनी आंगनबाड़ी केन्द्र संचालित हैं तथा कितने स्वयं के भवन में संचालित किए जा रहे हैं? जानकारी देवें? (ख) कंडिका "क" के अनुसार कौन-कौन से आंगनबाड़ी, मिनी आंगनबाड़ी केन्द्र भवन विहीन हैं या किराये के भवन में संचालित किए जा रहे हैं? जानाकरी देवें?

महिला एवं बाल विकास मंत्री (श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े) :- (क) मस्तूरी विधान सभा क्षेत्र अंतर्गत दिनांक 31 दिसम्बर, 2023 की स्थिति में कुल 421 आंगनबाड़ी केन्द्र, 20 मिनी आंगनबाड़ी केन्द्र संचालित हैं तथा 342 आंगनबाड़ी केन्द्र, 14 मिनी आंगनबाड़ी केन्द्र स्वयं के भवन में संचालित किए जा रहे हैं। (ख) कंडिका "क" के अनुसार 79 आंगनबाड़ी केन्द्र, 06 मिनी आंगनबाड़ी केन्द्र भवन विहीन हैं एवं 53 आंगनबाड़ी केन्द्र, 06 मिनी आंगनबाड़ी केन्द्र किराये के भवन में संचालित किए जा रहे हैं। जानकारी **संलग्न प्रपत्र**[2] अनुसार है।

[2]परिशिष्ट "दो"

श्री दिलीप लहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय जी, मैं आपके माध्यम से महिला एवं बाल विकास मंत्री से जानना चाहता हूं।

(सदस्य, श्री अजय चन्द्राकर के कुछ कहने पर)

श्री दिलीप लहरिया :- जी, संगीत होगा। संगीत भी होगा और बाजा भी बजाया जाएगा।

श्री रामकुमार यादव :- तुहला पांच साल ले संगीत ही तो सुनना हे अउ काय सुनना हे।

श्री दिलीप लहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय जी, मैं प्रश्न में नहीं जाना चाह रहा हूं। इसमें उत्तर आया है कि हमारे मस्तूरी विधान सभा क्षेत्र में 421 आंगनबाड़ी केन्द्र, 20 मिनी आंगनबाड़ी केन्द्र संचालित हैं, जिसमें से 342 आंगनबाड़ी केन्द्र, 14 मिनी आंगनबाड़ी केन्द्र स्वयं के भवन में संचालित किए जा रहे हैं। शेष 79 आंगनबाड़ी केन्द्र और 06 मिनी आंगनबाड़ी केन्द्र भवनविहीन हैं। जिसमें 53 आंगनबाड़ी केन्द्र और 06 मिनी आंगनबाड़ी केन्द्र किराए के भवन में संचालित किए जा रहे हैं। मैं आपके माध्मय से माननीय मंत्री जी से कहना चाहूंगा कि जो 79 आंगनबाड़ी केन्द्र और 06 मिनी आंगनबाड़ी केन्द्रों का भवन नहीं बना है, यह कब तक पूर्ण हो जाएगा? क्या आप इसको इस वित्तीय वर्ष में पूर्ण करेंगे?

अध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, जो भवन अधूरा है, उसको कब तक पूरा कर लेंगे, उसको बता दीजिए।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह कब तक पूरा हो जाएगा, यह बताया जाना संभव नहीं है।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है। आप अगला प्रश्न करिए।

श्री दिलीप लहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से कहना चाहूंगा कि जिसमें 53 आंगनबाड़ी केन्द्र और 06 मिनी आंगनबाड़ी केन्द्र किराए के भवन में संचालित हैं, बाकी शेष 26 आंगनबाड़ी केन्द्र कहां पर संचालित हैं? या कागज में ही वह कार्यवाही हो रहा है? जैसा कि हमारे पास शिकायत में आया है कि यहां कहीं भी बैठाकर संचालित किया जा रहा है। किसी के घर में या आपके कार्यकर्ता के घर में संचालित किया जा रहा है। तो क्या यह जायज है ? आप हमारे मस्तूरी विधान सभा क्षेत्र में जो शेष आंगनबाड़ी केन्द्र हैं, उसको कब तक पूर्ण करेंगे? आप घोषणा कर दीजिए।

अध्यक्ष महोदय :- कहां संचालित हो रहा है? यह बता दीजिए।

श्री दिलीप लहरिया :- या आप एक वित्तीय वर्ष में पूर्ण करने का आश्वासन दे दीजिए।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है। आपका प्रश्न आ गया है।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जहां आंगनबाड़ी भवन नहीं है, वह शासकीय भवनों में संचालित हो रहे हैं और मैं पहले भी कह चुकी है कि कब तक पूरे हो जाएंगे, यह बताया जाना संभव नहीं है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री दिलीप लहरिया :- कैसे बताया जाना संभव नहीं है। बच्चों का सवाल है। माननीय मंत्री जी, बताया जाना संभव नहीं है, यह उत्तर नहीं है। एक महीने, दो महीने या साल भर ले लीजिए या वित्तीय वर्ष में इसको पूरा करेंगे?

अध्यक्ष महोदय :- शीघ्र किया जा जाएगा कहिए।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- उसको शीघ्र पूरा करवा दिया जाएगा।

श्री दिलीप लहरिया :- अध्यक्ष महोदय, यह संवेदनशील मामला है।

अध्यक्ष महोदय :- जवाब आ गया है। बहुत बढ़िया जवाब आ गया है।

श्री दिलीप लहरिया :- बच्चों के साथ ऐसा नहीं होना चाहिए। आप एक महिला हैं। बच्चों के साथ जो हो रहा है, उसके प्रति आप समय नहीं बता पा रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- बता दिए हैं कि शीघ्र बनाया जाएगा।

श्री दिलीप लहरिया :- जी।

अध्यक्ष महोदय :- उससे अच्छा और क्या जवाब आएगा।

श्री दिलीप लहरिया :- जी। धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- श्रीमती हर्षिता स्वमी बघेल।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बहुत छोटे-छोटे बच्चों का मामला है। माननीय सदस्य जी केवल समय-सीमा जानना चाह रहे हैं। इसमें बजट की कमी तो है ही नहीं। 1 लाख 47 हजार करोड़ रूपये की बजट है और एक महिला बाल विकास केन्द्र बनाने में 5-6 लाख रूपये लगने हैं। यह राशि बहुत ज्यादा नहीं है। आपको महिला बाल विकास विभाग के क्षेत्र में काम करने का पहले सवाल मिला है। आप इसे विपक्षी भावना से मत देखिए।

अध्यक्ष महोदय :- आपने जवाब नहीं सुना है। उन्होंने कहा है कि शीघ्र पूरा किया जाएगा।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, शीघ्र पूरा किया जाएगा का मतलब एक महीने, दो महीने या तीन चालू हो जाएगा?

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल ।

<u>जिला-राजनांदगावं एवं खैरागढ़ में छ.ग. स्टेट सिविल सप्लाईज कार्पोरेशन लिमिटेड द्वारा संचालित केन्द्र</u>

[खाद्य, नागरिक आपूर्ति तथा उपभोक्ता संरक्षण]

3. (*क्र. 896) श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- क्या खाद्य मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- (क) जिला-राजनांदगांव एवं खैरागढ़ के अंतर्गत छ.ग. स्टेट सिविल सप्लाईज कार्पोरेशन लिमिटेड द्वारा कुल कितने प्रदाय केन्द्र संचालित किए जा रहे हैं? क्या संचालित हो रहे प्रदाय केन्द्रों में प्रभारी के

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

पद पर नियमित कर्मचारियों को पदस्थ किया गया है? यदि नहीं तो ऐसे कितने प्रदाय केन्द्र हैं, जहां पर नियमित कर्मचारी पदस्थ नहीं हैं? पदस्थ कर्मचारी का नाम, पदनाम, प्रदाय केन्द्र में पदस्थी की तिथि जिलेवार, प्रदाय केन्द्रवार जानकारी देवें? (ख) नियमित कर्मचारियों को मुख्यालय एवं जिला कार्यालयों में पदस्थ कर्मचारियों के नाम, पदस्थी दिनांक एवं पदस्थापना के कारण की जानकारी देवें। (ग) क्या सहायक प्रबंधक एवं प्रबंधक को छोड़कर अन्य किसी पद पर पदस्थ कर्मचारी/अधिकारियों को जिला प्रबंधक के पद पदस्थ किया जा सकता हैहे? यदि हां, तो पदस्थ करने का कारण, जिला प्रबंधक के पद पर पदस्थ अधिकारी/कर्मचारी का नाम, पदस्थी दिनांक, पदस्थी स्थल की जानकारी देवें?

खाद्य मंत्री (श्री दयालदास बघेल) :- (क) जानकारी **पुस्तकालय में रखे प्रपत्र-'अ'** अनुसार है। (ख) जानकारी **पुस्तकालय में रखे प्रपत्र-'ब'** अनुसार है। (ग) जी हाँ। नागरिक आपूर्ति निगम में प्रबंधन के संबंध में संचालक मण्डल की 14वीं बैठक दिनांक 26.04.2005 के एजेंडा बिन्दु क्रमांक 14.7 में पारित निर्णय के आधार पर आवश्यकतानुसार लेखा संवर्ग के अधिकारियों को प्रभारी जिला प्रबंधक के पद पर पदस्थ किया जा सकता है। जानकारी **पुस्तकालय में रखे प्रपत्र-'अ'** अनुसार है।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं सबसे पहले छत्तीसगढ़ महतारी और विधान सभा के पावन धरा को प्रणाम करती हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, आप मुझे सदन में प्रश्न पूछने का पहला अवसर दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, आपको भी बहुत-बहुत बधाई। आपका भी सदन में पहला प्रश्न है। आपको बधाई।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय खाद्य मंत्री महोदय जी से मैं निवेदन करती हूं कि क्या माननीय मंत्री महोदय जी यह बताने की कृपा करेंगे कि छत्तीसगढ़ सिविल सप्लाईज कार्पोरेशन लिमिटेड द्वारा कुल कितने प्रदाय केन्द्र संचालित किए जा रहे हैं? क्या संचालित हो रहे प्रदाय केन्द्रों में प्रभारी के पद पर नियमित कर्मचारियों को पदस्थ किया गया है? यदि पदस्थ नहीं किया गया है तो ऐसे कितने प्रदाय केन्द्र हैं, जहां पर नियमित कर्मचारी पदस्थ नहीं हैं? पदस्थ कर्मचारियों का नाम, पदनाम, प्रदाय केन्द्र में पदस्थी के तिथि जिलेवार, प्रदाय केन्द्र के जानकारी देवें?

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चूंकि प्रश्न जिला राजनांदगांव एवं खैरागढ़ का है। राजनांदगाव जिले में कुल 5 प्रदाय केन्द्र हैं और खैरागढ़ जिले में 1 प्रदाय केन्द्र है।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा दूसरा प्रश्न था कि नियमित कर्मचारियों के मुख्यालय एवं जिला कार्यालयों में पदस्थ कर्मचारियों के नाम, पदस्थी दिनांक एवं पदस्थापना के कारण की जानकारी देवें ?

अध्यक्ष महोदय :- हर्षिता जी, जो प्रश्न आपने किया है । माननीय मंत्री जी ने उसका जवाब लिखित में दे दिया है । उसमें से कुछ उद्भुत होता है उसको करेंगे तो आपकी बात और अच्छे से आयेगी ।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह जिलेवार दिया गया है ।

अध्यक्ष महोदय :- हर्षिता जी, आप आराम से पूछिए । आप जितने प्रश्न पूछेंगी, मैं आपको अवसर दूंगा । लेकिन उसमें जो उद्भुत होता है, आप जो चाहती हैं। उसको पूछ लेंगे तो बेहतर होगा ।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- जी । माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं यही चाहती हूं कि यहां पर आपने दिया है कि नियमित कर्मचारियों के मुख्यालय की तो जिसमें आपने कहा था कि राजनांदगांव, छुरिया एवं डोंगरगढ़ में केंद्र प्रभारी के रूप में अनियमित कर्मचारियों को प्रभारी के रूप में पदस्थ बताया गया । क्या माननीय मंत्री जी विभाग के नियमानुसार नियमित कर्मचारियों को उक्त केंद्रों में पदस्थ किया जायेगा ?

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह सही है कि राजनांदगांव जिले प्रदाय केंद्र में 3 अनियमित कर्मचारियों का वहां पर रखा गया था । वह जैसे ही हमारे संज्ञान में आया, हमने तीनों को बदल दिया है और वहां पर प्रदाय केंद्र में जो पात्र है उनको रख दिया है ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, आपकी बात पूरी हो गयी ।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी मेरा तीसरा प्रश्न बचा है । जिसमें मैंने पूछा था कि क्या सहायक प्रबंधक एवं प्रबंधक को छोड़कर अन्य किसी पद पर पदस्थ अधिकारी/कर्मचारियों को जिला प्रबंधक के पद पदस्थ किया जा सकता है ? यदि हां तो पदस्थ करने का कारण, जिला प्रबंधक के पद पर पदस्थ अधिकारी/कर्मचारी का नाम, पदस्थी दिनांक, पदस्थी स्थल की जानकारी देवें? लेकिन यहां पर प्रश्न का माननीय मंत्री महोदय जी द्वारा जो उत्तर आया था तो उसमें लिखा गया था । माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जी के ध्यान में यह लाना चाहती हूं कि नियम के संचालक मंडल का यह निर्णय सामान्य प्रशासन विभाग के निर्देशों के विरूद्ध है और अवैधानिक भी है क्योंकि संचालक मंडल को सेवा नियमों से संबंधित विषय पर निर्णय लेने का अधिकार ही नहीं है । सेवा नियम विभाग के द्वारा अनुमोदित होने से दूसरों या सामान्य प्रशासन विभाग के एक परिपत्र के अनुसार यदि किसी रिक्त पद पर उनसे नीचे की श्रेणी के अधिकारी को प्रभार देने की कृपा करेंगे ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये ।

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, दिनांक 26.04.2005 को संचालक मंडल का एक निर्णय हुआ था । उसकी 14वीं बैठक में निर्णय हुआ था, उस निर्णय के अनुसार निगम मंडल,

निगम प्रबंधक आवश्यकतानुसार लेखा संवर्ग के अधिकारियों को स्वतंत्र रूप से किसी भी जिले में प्रभारी जिला प्रबंधक के पद पर पदस्थ कर सकता है । इसी के हिसाब से यह किया गया है ।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- माननीय मंत्री जी, मैं आपसे पूछना चाहूंगी कि एक महिला कर्मचारी जिनको अपने पति के स्वर्गवास के उपरांत अनुकम्पा नियुक्ति प्रदान की है । छुरिया प्रदाय केंद्र में प्रभारी बनाकर पदस्थ किया गया तो माननीय मंत्री जी मेरा आपसे निवेदन है कि आपकी सरकार महिलाओं के हित के लिये कार्य कर रही है तो उक्त महिला पारिवारिक जिम्मेदारियों को ध्यान में रखते हुए जिला कार्यालय के निकटतम प्रदाय का केंद्र पदस्थ करने की कृपा करेंगे ।

अध्यक्ष महोदय :- आग्रह किया है, देख लीजिये ।

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, करवा देंगे ।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत अच्छा । डॉ. चरणदास महंत जी के स्थान में श्री लखेश्वर बघेल 2 प्रश्न करेंगे । आप महंत जी के बदले में करेंगे ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सामने में बैठकर करने की अनुमति दे दीजिये ।

अध्यक्ष महोदय :- यह तो इनकी पार्टी निर्णय करेगी । मैं तो केवल प्रश्न करा सकता हूं । (हंसी)

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप अनुमति देंगे तो वे सामने खड़े होकर भी प्रश्न कर सकते हैं । वे स्थायी तौर पर गायब हैं, आप स्थायी तौर पर बैठ जाईये ।

श्री लखेश्वर बघेल :- वह समय भी आयेगा, आप चिंता मत करिये ।

<u>धान का अवैध भंडारण एवं परिवहन</u>

[खाद्य, नागरिक आपूर्ति तथा उपभोक्ता संरक्षण]

4. (*क्र. 987) डॉ. चरण दास महंत : क्या खाद्य मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- **(क)** दिसम्बर, 2023 तथा जनवरी, 2024 में धान के अवैध भंडारण तथा परिवहन के कितने प्रकरण प्रकाश में आए, मात्रा कितनी-कितनी थी, अनियमितता का कारण क्या था, जिलावार बताएं? **(ख)** प्रश्नांश **(क)** के प्रकरणों में क्या-क्या कार्यवाही की गई ? **(ग)** अन्य राज्यों का धान छत्तीसगढ़ में अवैध रूप से आने को रोकने के लिए क्या-क्या विशेष उपाय किये गये हैं? क्या ये उपाय पर्याप्त हैं ?

खाद्य मंत्री (श्री दयालदास बघेल) : (क) दिसम्बर, 2023 तथा जनवरी, 2024 में धान के अवैध भंडारण तथा परिवहन के जिलों से 817 प्रकरण प्रकाश में आए हैं तथाधान की मात्रा 37717.1 क्विंटल है । प्रकरणों की जिलावार **जानकारी पुस्तकालय में रखे प्रपत्र - अ अनुसार है** ।**(ख)** प्रश्नांश **(क)** के प्रकरणों में कार्यवाही की **जानकारी पुस्तकालय में रखे प्रपत्र-ब** अनुसार है । **(ग)** खरीफ विपणन वर्ष 2023-24 में अन्य राज्यों का धान छत्तीसगढ़ में अवैध रूप से आने को

रोकनेहेतु सीमावर्ती जिलों के, जिला प्रशासन द्वारा 220 चेकपोस्ट बनाए गए है । जिला स्तर पर अवैध धान के परिवहन एवं भंडारण के निगरानी हेतु खाद्य विभाग, सहकारिता विभाग, राजस्व विभाग एवं कृषि उपज मंडी के अधिकारियों /कर्मचारियों को शामिल कर,विशेष जांच दल का गठन का किया गया है । धान खरीदी पर सतत् रूप से निरीक्षण व पर्यवेक्षण कार्य हेतु जिला प्रशासन द्वारा पर्याप्त उपाय किए गए है ।

श्री लखेश्वर बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा प्रश्न धान के अवैध भण्डारण एवं परिवहन से संबंधित है । अगर इस वर्ष आपकी सरकार के द्वारा 21 क्विंटल की खरीदी की गयी थी । चूंकि बहुत ज्यादा मात्रा में अवैध परिवहन हुआ है, उसमें 817 प्रकरण दर्ज किये गये हैं और उसमें 37,717 क्विंटल 54 किलो धान की जब्ती की गयी है । मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहूंगा कि जब्त किये गये धान का निराकरण किस प्रकार किया गया ? दूसरा, यह कि इन 817 प्रकरणों में सबसे बड़ा प्रकरण मुंगेली का है जो अनुक्रमांक 278 में 800 क्विंटल धान का कृपया इस प्रकरण के बारे में बतायें कि जांच में क्या-क्या पाया गया और क्या कार्यवाही हुई?

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 817 प्रकरण हैं, जिसमें 37717.1 क्विंटल धान जब्त हुआ था। माननीय अध्यक्ष महोदय, इसमें मंडी के नियम के तहत् 253 प्रकरण का निराकरण किया जा चुका है। 564 लंबित प्रकरण हैं। ये प्रक्रिया में हैं, इनके भी निराकरण की प्रक्रिया चल रही है।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय लखेश्वर जी ने मुंगेली में जो जब्त हुआ है, उसके संबंध में स्पेशिफिक जानकारी चाही है। उसका क्या किया गया तो उसके बारे में बता दें।

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसमें सभी जिलों का है। मुंगेली में थोड़ा ज्यादा धान जब्त हुआ है।

अध्यक्ष महोदय :- निराकरण हो गया है या नहीं, यह पूछ रहे हैं।

श्री दयालदास बघेल :- यह प्रक्रिया में है। इसका भी निराकरण बहुत जल्दी करा लिया जायेगा।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, दूसरा प्रश्न पूछिए।

श्री बघेल लखेश्वर :- हमने सीमावर्ती क्षेत्रों में 220 चेकपोस्ट बनाये थे। उसके बावजूद भी कई कर्मचारी-अधिकारी तैनात किये गये थे। इसके बावजूद भी इतनी मात्रा में धान आना बड़ा चिंताजनक विषय है। तो इन तैनात कर्मचारियों के विरूद्ध क्या-क्या कार्रवाई हुई? यह बताने का कष्ट करेंगे।

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, तैनात कर्मचारियों के विरूद्ध में कोई कार्रवाई नहीं हुई है। हमने तो एक टीम गठित किया था। जिला में टीम गठित किये थे। जो अवैध धान जब्त किया गया है, वह संख्या भी हमने बताया है और उसका निराकरण भी मंडी अधिनियम के तहत् कार्रवाई की जा रही है और उसमें मैंने आपको बताया है कि कुछ प्रकरण बचे हैं, उसका भी हम बहुत जल्द निराकरण करा लेंगे।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्रीमती चातुरी नंद :- अध्यक्ष महोदय..।

अध्यक्ष महोदय :- एक मिनट। इनका प्रश्न हो जाने दीजिए।

श्री बघेल लखेश्वर :- चेकपोस्ट में कर्मचारी तैनात थे न। उसके बावजूद भी धान का इतना परिवहन हुआ सीमावर्ती क्षेत्र में उड़ीसा सीमा जो भी हो तो मैं सीमावर्ती क्षेत्र में मेरा गांव है, इस समय अध्यक्ष महोदय, बहुत ज्यादा मात्रा में उड़ीसा सीमा से हो या आंध्र सीमा से हो, बहुत ज्यादा परिवहन हुआ है और जहां तक देखा गया है कि चेकपोस्ट के अधिकारी हो, जो मेरी जानकारी में है, मतलब उसमें गंभीरता किसी ने नहीं ली, इसका क्या कारण है, यह जांच का विषय है। अभी तो धान खरीदी कम हुई है तो भविष्य में थोड़ा इस पर गंभीरता के साथ..।

अध्यक्ष महोदय :- भविष्य में थोड़ा कठोर कदम उठायेंगे, जांच भी करेंगे। नाका को ज्यादा मजबूत करेंगे, यह सलाह दिया जा रहा है, प्रश्न नहीं है। सलाह है। चलिए, चातुरी जी क्या पूछना है?

श्री दयालदास बघेल :- अध्यक्ष महोदय, अवश्य करेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है। उनका सुझाव है। चलिए, चातुरी जी क्या पूछना है?

श्रीमती चातुरी नंद :- माननीय अध्यक्ष महोदय, खाद्य मंत्री महोदय से मैं यह जानना चाहथव कि जब धान खरीदी बर छत्तीसगढ़ के सीमावर्ती क्षेत्र में तैनात करे गे हे तो बाहरी क्षेत्र से धान अंदर कइसे आथे? मैं यह भी जानना चाहथव, काबर कि मैं महासमुंद जिला के अंतिम छोर सराईपाली जो कि उड़ीसा से लगे हुए हे और बहुत सारा धान के परिवहन उड़ीसा से हमर छत्तीसगढ़ में आवथे, जब ये हमन टीम गठित करे हन तो टीम गठित करे के बावजूद अतना सारा धान हमर छत्तीसगढ़ में काबर आवथे? मैं यह जानना चाहथव।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, बताइए।

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने टीम गठित किया था। बेरियर लगाये थे। उसके बाद धान अंदर नहीं आया। जब्त किया गया है। जो धान खरीदी केन्द्र हैं वहां ये जो पंजीकृत किसान हैं, इन लोगों ने अपना धान बेचा है। खरीदी केन्द्र में तो व्यवस्था थी। थंब और आई से टेस्ट करके पंजीकृत किसानों से ही धान खरीदी गयी है।

श्रीमती चातुरी नंद :- माननीय अध्यक्ष महोदय..।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है। आपका हो गया। आप पूछ लें।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय मंत्री जी, पूर्व में सवाल पूछे रहिस तो आप मन ला बताये रहे कि 3 लाख हेक्टेयर जमीन के यहां रकबा कम होये हे, लेकिन धान के बिक्री बढ़थे।

श्री अजय चन्द्राकर :- सुन सुन सुन। यादव जी।

श्री रामकुमार यादव :- मैं पूछना चाहत हौ कि जब रकबा कम होवत हे अउ धान बढ़त हे तो कहीं न कहीं ले धान आवत हे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- यादव जी, जब मैंने वह तथ्य रखा था तो ये कह रही थीं कि किसानों को चोर ठहरा रहे हो, ये जो सामने बैठी हैं, ये बोल रही थीं ।

श्री रामकुमार यादव :- माने आप मन चोरी करत हो एला मान गया ।

श्रीमती अनिला भेंडिया:- बाहर का धान बेचवाओगे क्या ?

श्री रामकुमार यादव :- एक तरफ रकबा घटत हे अउ धान बरोबर आवत हे, तो कहीं न कहीं चोरी होवत हे, ये साबित होत हे अउ तुमन एला जान बूझकर अइसना करवावत हो ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, रामकुमार जी हो गया आपका ।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय ।

अध्यक्ष महोदय :- आप इसी में प्रश्न करेंगे ।

श्री धरमलाल कौशिक :- ध्यान में लाना है ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, ध्यान में ले आइए, सुझाव दे दीजिए ।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, अभी सोसायटियों में लगभग 25 लाख मेट्रिक टन धान रखा गया है । न वह स्टॉकिंग प्वाइंट में जा रहा है, न ही राईस मिल को, मौसम भी खराब हो रहा है, बीच में बारिश भी हो रही है । उसके बाद सोसायटी वाले कितने जवाबदार हैं, यह आपको भी मालूम है । रात को वहां से धान को कोई ले जाए, जानवर उसको खा जाए, उसके बाद शॉर्टेज आएगा । मैं आपसे प्रश्न नहीं पूछना चाहता, यह कहना चाहता हूं कि यह जो 25 लाख मेट्रिक टन धान पड़ा हुआ है । उसको डिस्पोज कैसे करेंगे ? राईस मिल में भेजेंगे, स्टॉकिंग प्वाइंट में भेजेंगे, क्या करेंगे ? उसके लिए अधिकारियों की बैठक लेकर निर्देशित करेंगे। तो उस धान को हम बचा सकते हैं ।

प्रदेश में उत्पादित बिजली तथा खपत

[ऊर्जा]

5. (*क्र. 1019) श्री किरण देव : क्या मुख्यमंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- **(क)** वर्तमान में छत्तीसगढ़ राज्य में स्टेट सेक्टर के किन-किन संयंत्रों से कितनी-कितनी बिजली का उत्पादन किया जा रहा है तथा छत्तीसगढ़ राज्य में बिजली की खपत कितनी है ? कितनी बिजली, किस-किस दर पर छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी द्वारा अन्य प्रदेशों को विक्रय की जा रही है ? **(ख)** भविष्य में विद्युत की आपूर्ति हेतु शासन द्वारा क्या नवीन कार्ययोजना है ?प्रदेश में कितना विद्युत बिल उपभोक्ताओं, छोटे उद्योगों, वृहद उद्योगों तथा अन्य के नवंबर, 2023 तक बकाया है तथा उनकी वसूली हेतु क्या कार्यवाही की जा रही है? वितरण कंपनी के संभागावार बताये ?

मुख्यमंत्री (श्री विष्णु देव साय) : (क) वर्तमान में प्रदेश में छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर जनरेशन कंपनी लिमिटेड के द्वारा विभिन्न संयंत्रों से उत्पादित बिजली का विवरण **पुस्तकालय में रखें प्रपत्र-**

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अ अनुसार है। छत्तीसगढ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड के विद्युत उपभोक्ताओं द्वारा की गई बिजली की खपत वर्ष 2022-23 तथा वर्ष 2023-24 में (माह नवंबर 2023 तक) क्रमशः 29,104 तथा 22,528 मिलियन यूनिट खपत है। वर्तमान में छत्तीसगढ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड द्वारा अन्य प्रदेशों को बिजली विक्रय नहीं की जा रही है।**(ख)** भविष्य में विद्युत की आपूर्ति हेतु छत्तीसगढ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड द्वारा विभिन्न स्त्रोतों से विद्युत क्रय हेतु अनुबंध किया गया है तथा विद्युत क्रय हेतु सहमति प्रदान की गई है जिसकी जानकारी **पुस्तकालय में रखें प्रपत्र-ब** अनुसार है। माह नवंबर, 2023 तक प्रदेश के छत्तीसगढ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड के सभी श्रेणी के उच्चदाब एवं निम्नदाब विद्युत उपभोक्ताओं यथा घरेलू, गैरघरेलू, लघु उद्योग, वृहद उद्योग तथा अन्य श्रेणी के उपभोक्ताओं के विरूद्ध लगभग राशि रूपये 5,422.11 करोड़ बकाया है जिसकी वितरण कंपनी के संभागवार जानकारी **पुस्तकालय में रखें प्रपत्र-स** अनुसार है, बकाया राशि की वसूली हेतु लाईन विच्छेदन की कार्यवाही का संभागवार विवरण **पुस्तकालय में रखें प्रपत्र-द** अनुसार है, लाईन विच्छेदन की कार्यवाही के उपरांत प्राप्त भुगतान का संभागवार विवरण **पुस्तकालय में रखें प्रपत्र-इ** अनुसार है एवं बकाया राशि की वसूली हेतु लाइन विच्छेदन के पश्चात जारी बी. फार्म, सी फार्म एवं आर.आर.सी. की कार्यवाही की संभागवार जानकारी **पुस्तकालय में रखें प्रपत्र-फ** अनुसार है।

श्री किरण देव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, संक्षिप्त सा प्रश्न है क्या मुख्यमंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि छत्तीसगढ़ राज्य में स्टेट सेक्टर से किन-किन संयंत्रों से कितनी-कितनी बिजली का उत्पादन किया जा रहा है तथा छत्तीसगढ़ राज्य में बिजली की खपत कितनी है ? कितनी बिजली, किस-किस दर पर छत्तीसगढ़ स्टेट पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी द्वारा अन्य प्रदेशों को विक्रय की जा रही है । भविष्य में विद्युत की आपूर्ति हेतु शासन द्वारा क्या नवीन कार्य होना है ? प्रदेश में कितना विद्युत बिल उपभोक्ताओं, छोटे उद्योगों, वृहद उद्योगों तथा अन्य के नवम्बर, 2023 तक बकाया हैं तथा उनकी वसूली हेतु क्या कार्यवाही की जा रही है ?

श्री विष्णुदेव साय :- अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य जी ने एक साथ कई प्रश्न किया है ।

अध्यक्ष महोदय :- वे प्रदेश अध्यक्ष हैं । पूरे प्रदेश का प्रश्न पूछ रहे हैं और जवाब मुख्यमंत्री दे रहे हैं, यह अद्भुत संयोग है । उनकी चिंता पूरा प्रदेश है और आपकी भी चिंता पूरा प्रदेश है । आपके पास जो जानकारी है उसको केवल पढ़ दीजिए।

श्री विष्णुदेव साय :- अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ स्टेट पावर जनरेशन कंपनी लिमिटेड के विद्युत संयंत्रों द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 में नवम्बर तक कुल 14079.566 मिलियन यूनिट बिजली का उत्पादन किया गया है । इसमें हसदेव ताप विद्युत गृह कोरबा से 840 मेगावाट, दूसरा विस्तार संयंत्र हसदेव ताप संयंत्र विद्युत ताप गृह कोरबा पश्चिम से 500 मेगावाट, डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ताप विद्युत गृह कोरबा पूर्व से 500 मेगावाट और अटल बिहारी बाजपेयी ताप विद्युत गृह मड़वा से 1000

मेगावाट, इस तरह से कुल ताप विद्युत उत्पादन 2840 मेगावाट और जल विद्युत में हसदेव बांगो से जल विद्युत माचाडोली से 120 मेगावाट, गंगरेल जल विद्युत गृह धमतरी से 10 मेगावाट, सिकासेर जल विद्युत गरियाबंद से 7 मेगावाट, लघु जल विद्युत गृह कोरबा पश्चिम से 1.7 मेगावाट इस तरह से जल विद्युत उत्पादन 138.7 मेगावाट उत्पादन हुआ है ।

श्री किरण देव :- धन्यवाद् मुख्यमंत्री जी ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न छोटा करिये, स्पष्ट करिये ।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय ।

अध्यक्ष महोदय :- एक मिनट भाई, हर प्रश्न में खड़े होने की जरूरत नहीं है, कोई जरूरी नहीं होता । प्रश्नकर्ता सदस्य को पहले तीन प्रश्न करने की जवाबदारी होती है । उसके बाद मुझे लगेगा कि और जरूरत है तो अवसर दूंगा । हर बार अब आप नए नहीं हैं, पुराने हो गए हैं, आपको तो समझना चाहिए ।

श्री किरण देव :- माननीय अध्यक्ष जी, मेरा पूरक प्रश्न उसी में सम्मिलित था।

अध्यक्ष महोदय :- आप उत्तर से संतुष्ट हैं।

श्री किरण देव :- जी संतुष्ट हैं।

अध्यक्ष महोदय :- बैठ जाईए।

श्री किरण देव :- माननीय अध्यक्ष जी, धन्यवाद।

श्री अनुज शर्मा :- अध्यक्ष जी..।

अध्यक्ष महोदय :- इसी में प्रश्न है।

श्री अनुज शर्मा :- जी।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए पूछ लीजिए। छोटा प्रश्न करिए।

श्री अनुज शर्मा :- माननीय मुख्यमंत्री जी, मेरा बहुत छोटा सा सवाल है। कई लोगों को, बहुत छोटे-छोटे लोगों को बहुत बड़ा बिल का एमाउंट आया है तो क्या उस पर समीक्षा होगी ? उसको आधा किया जाएगा या माफ किया जाएगा। ऐसी कोई योजना है ? बहुत छोटे-छोटे घर के लोगों को 25 हजार रूपये का बिल आ गया है। उस पर क्या कार्रवाई होने वाली है। मेरा प्रश्न उसके विषय में है।

अध्यक्ष महोदय :- मुख्यमंत्री जी परीक्षण कर लीजिए।

श्री विष्णु देव साय :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसका परीक्षण करा लेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है। अजय जी।

क्वांटिफायबल डाटा आयोग का गठन एवं अनुशंसाओं का उपयोग

[सामान्य प्रशासन]

6. (*क्र. 794) श्री अजय चंद्राकर : क्या मुख्यमंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- **(क)** क्वांटिफायबल डाटा आयोग कब और किन उद्देश्यों से गठित किया गया ? उसका कार्यकाल कितनी अवधि का था ? उसके कार्यकाल को कितनी बार बढ़ाया गया और अंतिम बार कितनी अवधि के लिए कब तक बढ़ाया गया ? रिपोर्ट राज्य सरकार को कब सौंपी गई ? किन-किन संस्थाओं को देनी थी ? इसके चेयरमेन व सदस्य कौन-कौन थे तथा इनको क्या-क्या सुविधायें दी गयी एवं कितनी राशि व्यय की गयी ? **(ख)** क्वांटिफायबल डाटा आयोग ने क्या-क्या अनुशंसाएं दीं ? क्या उन अनुसंशाओं का उपयोग राज्य सरकार ने कर लिया है ? यदि कर रही है तो इनका उपयोग किन-किन क्षेत्रों में कर रही है ? यदि नहीं कर रही है तो इस आयोग का गठन क्यों किया गया ? **(ग)** क्या उक्त डाटा को सार्वजनिक किया गया था ? यदि नहीं, तो उसका कारण क्या था एवं उनकी अनुशंसाओं को सरकार द्वारा स्वीकार कर लागू किया गया है ? यदि हां, तो सरकार इनका उपयोग किन-किन क्षेत्रों में, किन-किन कार्यों के लिये कर रही है ? यदि नहीं, तो उसके कारण क्या हैं ?

मुख्यमंत्री (श्री विष्णु देव साय) : (क) क्वांटिफायबल डाटा आयोग सामान्य प्रशासन विभाग के आदेश क्रमांक एफ. 13-9/2019/आ.प्र./1-3 दिनांक 11.09.2019 द्वारा किया गया। इसका उद्देश्य राज्य की जनसंख्या में अन्य पिछड़े वर्गों तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों का सर्वेक्षण कर क्वांटिफायबल डाटा एकत्रित किया जाना था। आयोग का कार्यकाल 06 माह में प्रतिवेदन शासन को सौंपने हेतु गठन किया गया था, किन्तु प्रतिवेदन अपेक्षित होने के कारण आयोग का कार्यकाल 10 बार बढ़ाया गया, अंतिम बार 2 माह की अवधि के लिए दिनांक 31.12.2022 तक के लिये बढ़ाया गया, आयोग ने अपनी रिपोर्ट/प्रतिवेदन दिनांक 21.11.2022 को राज्य सरकार को सौंपी। उक्त रिपोर्ट/प्रतिवेदन किसी भी संस्थाओं को नहीं दी गई है। क्वांटिफायबल डाटा आयोग के चेयरमेन सेवानिवृत्त जिला एवं सेशन जज थे, आयोग में सदस्य नियुक्त नहीं किये गए थे। आयोग के चेयरमेन को मानदेय तथा समान पद के न्यायिक अधिकारियों को उपलब्ध सुविधाओं के अनुरूप सुविधाएं दी गई थी। कुल राशि रूपये 1,07,06,856/- (रूपये एक करोड़ सात लाख, छः हजार आठ सौ छप्पन मात्र) व्यय की गई। **(ख)** आयोग से प्राप्त प्रतिवेदन में अनुशंसा नहीं अपितु निष्कर्ष दिये गये हैं, जिसके आधार पर दिनांक 01, 02 दिसम्बर, 2022 को विधान सभा के विशेष सत्र में राज्य शासन द्वारा छत्तीसगए़ लोक सेवा (अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अन्य पिछड़े वर्गों के लिए) आरक्षण (संशोधन) विधेयक, 2022 तथा छत्तीसगढ़ शैक्षणिक संस्था (प्रवेश में आरक्षण) (संशोधन) विधेयक, 2022 लाया गया, जो सर्वसम्मति से विधान सभा द्वारा पारण किया गया है। राज्य शासन द्वारा आयोग से प्राप्त उक्त निष्कर्ष एवं डाटा का

उपयोग छत्तीसगढ़ लोक सेवा (अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अन्य पिछड़े वर्गों के लिए) आरक्षण (संशोधन) विधेयक, 2022 तथा छत्तीसगढ़ शैक्षणिक संस्था (प्रवेश में आरक्षण) (संशोधन) विधेयक, 2022 में किया गया। **(ग)** जी नहीं। आयोग का गठन राज्य की जनसंख्या में अन्य पिछड़े वर्गों तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों का सर्वेक्षण कर क्वांटिफायबल डाटा एकत्रित कर प्रतिवेदन शासन को सौंपने हेतु गठन किया गया था। आयोग से प्राप्त निष्कर्ष/डाटा को राज्य सरकार द्वारा स्वीकार कर छत्तीसगढ़ लोक सेवा (अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अन्य पिछड़े वर्गों के लिए) आरक्षण (संशोधन) विधेयक, 2022 तथा छत्तीसगढ़ शैक्षणिक संस्था (प्रवेश में आरक्षण) (संशोधन) विधेयक, 2022 में किया गया है। प्रश्न उपस्थित नहीं होता।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बड़ा दिलचस्प है। क्वांटिफायबल डाटा आयोग बनाया गया, उसके तथाकथित रिपोर्ट, तथाकथित शब्द उपयोग कर रहे हैं। उस तथाकथित रिपोर्ट पर विधान सभा में दो बिल पेश हो गए। बिल पारित नहीं हुआ है, बिल बना नहीं है और विधान सभा के रिकार्ड में पहली बार अशासकीय संकल्प आ गया कि इसको 9 वीं अनुसूची में जोड़ा जाए। ये बच्चा पैदा करें और मोदी जी उनका पालन पोषण करें, यह उनका मतलब था, ऐसा लगता है। मेरा कोई इसमें ज्यादा प्रश्न नहीं है। एक ही लाईन का प्रश्न है, क्वांटिफायबल डाटा आयोग के रिपोर्ट को या अनुशंसा या निष्कर्ष जो शब्द आपको अच्छा लगे, उसको सार्वजनिक करेंगे क्या ?

श्री विष्णु देव साय :- माननीय अध्यक्ष महोदय, क्वांटिफायबल डाटा आयोग ने निष्कर्ष दिया है और माननीय सदस्य का जो आग्रह है उस पर विचार करेंगे।

श्री अजय चंद्राकर :- ठीक है।

अध्यक्ष महादेय :- श्री अटल श्रीवास्तव जी।

<u>कोटा विधान सभा क्षेत्रांतर्गत ट्रांसफार्मर स्थापना</u>

<u>[ऊर्जा]</u>

7 (*क्र.601) श्री अटल श्रीवास्तव : क्या मुख्यमंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- **(क)** कोटा विधान सभा क्षेत्र अंतर्गत वर्ष 2020 से 15 जनवरी, 2024 तक कितने विद्युत ट्रांसफार्मर स्थापना की मांग प्राप्त हुई थी ? उक्त मांग के विरूद्ध कितने नये ट्रांसफार्मर की स्थापना की गई है ? **(ख)** कितने ट्रांसफार्मर लगाये जाने के प्रकरण लंबित हैं ? अगर लंबित हैं तो किस कारण से लंबित हैं ?

मुख्यमंत्री (श्री विष्णु देव साय) : **(क)** प्रश्नाधीन अवधि में विद्युत ट्रांसफार्मरों की स्थापना की मांग संबंधी जानकारी निरंक है। अत: शेष प्रश्न उद्भूत नहीं होता। **(ख)** उत्तरांश "क" के परिप्रेक्ष्य में यह प्रश्न उद्भूत नहीं होता।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अटल श्रीवास्तव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कोटा विधान सभा क्षेत्र के अंतर्गत वर्ष 2020 से 15 जनवरी, 2024 तक कितने विद्युत ट्रांसफार्मर की स्थापना की मांग प्राप्त हुई। उक्त मांग के विरूद्ध कितने नये ट्रांसफार्मर की स्थापना की गई है और कितने ट्रांसफार्मर लगाये जाने के प्रकरण लंबित हैं ?

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज अजय एक प्रश्न किए उसमें आप जवाब पढ़ेंगे तो आपको कम से कम 15 मिनट लगेगा। मुझे ऐसा लगता है कि आज 25 प्रश्न तक पहुंचा सकते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- आप सबका सहयोग मिलेगा तो बिल्कुल 25 प्रश्न तक पहुंचा सकते हैं।

श्री विष्णु देव साय :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने जिस अवधि का प्रश्न किया है, उस अवधि में कोई ट्रांसफार्मर की मांग नहीं थी। आवेदन निरंक है।

श्री अटल श्रीवास्तव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 4 साल में कोटा विधान सभा क्षेत्र में एक भी ट्रांसफार्मर की मांग नहीं थी ? अभी चुनाव के दौरान मैं जिन भी क्षेत्रों में गया हूं, वहां पर ट्रांसफार्मर की मांग की गयी थी। अभी आप किसानों के लिए पंप की सुविधा दे रहे हैं, उनको पंप का कनेक्शन दे रहे हैं, उसके लिए और ट्रांसफार्मर की जरूरत पड़ेगी। यह कैसा जवाब आया है कि कोटा विधान सभा क्षेत्र में अभी एक भी ट्रांसफार्मर की मांग वहां पर नहीं है। मैं तो वर्ष 2020 से 2024 तक का पूछा हूं, अभी जितने गांव में जाते हैं हर जगह ट्रांसफार्मर की मांग होती है।

अध्यक्ष महोदय :- आपके पास कोई लिखित जानकारी है तो माननीय मुख्यमंत्री जी को उपलब्ध करा दें।

श्री विष्णु देव साय :- आपने जिस अवधि का प्रश्न किया है, उस अवधि में निरंक है, उसके आगे मांग आई है और उसकी जानकारी हमारे पास है, हम स्थापित करेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- नई जानकारी है तो माननीय मुख्यमंत्री जी को उपलब्ध करा देंगे। भोला राम साहू

श्री अटल श्रीवास्तव :- जी।

महिला एवं बाल विकास विभाग में संचालित योजनाओं में पर्यवेक्षक के स्वीकृत, कार्यरत एवं रिक्त पद

[महिला एवं बाल विकास]

8. (*क्र.1012) श्री भोलाराम साहू : क्या महिला एवं बाल विकास मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- (क) खुज्जी विधान सभा क्षेत्र अंतर्गत दिनांक 31 दिसंबर, 2023 तक की स्थिति में महिला एवं बाल विकास विभाग के अंतर्गत कितनी परियोजनाएं संचालित हैं ? विकासखंडवार जानकारी देवें ? (ख) इन परियोजनाओं में कितने पर्यवेक्षक के पद स्वीकृत हैं ? स्वीकृत पद के विरूद्ध कितने

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कार्यरत हैं एवं कितने तथा कब से रिक्त हैं ? रिक्त पद की पूर्ति कब की जावेगी ? परियोजनावार, विकासखण्डवार जानकारी देवें ?

महिला एवं बाल विकास मंत्री (श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े) : (क) खुज्जी विधान सभा क्षेत्र अंतर्गत दिनांक 31 दिसंबर, 2023 की स्थिति में महिला एवं बाल विकास विभाग के अंतर्गत 03 परियोजना संचालित हैं। विकासखंडवार जानकारी संलग्न प्रपत्र अनुसर है। (ख) इन परियोजनाओं में 31 दिसंबर, 2023 की स्थिति में 27 पद स्वीकृत हैं जिसके विरूद्ध उक्त तिथि को 14 पर्यवेक्षक कार्यरत थे। रिक्त पदों के विरूद्ध 12 पद की पूर्ति कर ली गयी है। परियोजनावार, विकासखंडवार जानकारी **संलग्न प्रपत्र** †[3] अनुसार है।

श्री भोलाराम साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा प्रश्न है कि खुज्जी विधान सभा क्षेत्र में संचालित परियोजना हेतु कितने पद रिक्त, स्वीकृत हैं, कितने भरे गये हैं । मंत्री जी ने जवाब दिया है कि कुल 27 पद स्वीकृत थे, 14 पहले से कार्यरत हैं, 13 पद रिक्त हैं जिसमें 13 की नियुक्ति 27 दिसंबर को की गयी है। अध्यक्ष महोदय, 9 अक्टूबर से 3, 4 दिसंबर तक आदर्श आचार संहिता लगा था। इसकी परीक्षा कब ली गयी और नियुक्ति कब किया गया यह बता दीजिए ?

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री जी।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसकी परीक्षा आचार संहिता से पहले हो चुकी थी और नियुक्ति हमारी सरकार बनने के बाद की गई।

अध्यक्ष महोदय :- सरकार बनने के बाद नियुक्ति हुई है।

श्री भोलाराम साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आचार संहिता लगा हुआ था और इन 13 लोगों की नियुक्ति कर दी गई। उत्तर में जानकारी दी गई है कि 12 पद भर दिये गये हैं तो आप मुझे यह बता दीजिए कि आप 1 पद की भर्ती कर कब करेंगे ?

श्री कुंवर सिंह निषाद :- भोला भैया, बड़ दिक्कत हे। (हंसी)

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आचार संहिता के खत्म होते ही नियुक्ति की गई है।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है। बहुत अच्छा। आप अपना आखिरी प्रश्न पूछिये। आप थोड़ा स्पेसिफिक प्रश्न पूछिये। आप सीनियर विधायक हैं, आराम से पूछिये।

श्री भोलाराम साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा उसी से संबंधित स्पेसिफिक प्रश्न है। महिला एवं बाल विकास विभाग में पर्यवेक्षक के 14 पद भर दिये गये हैं और 13 पद रिक्त हैं। उत्तर में जानकारी दी गई गई है कि 12 पद भर लिये गये हैं तो 1 पद खाली है। आप मुझे यह बता दीजिए कि आप उस 1 पद की भर्ती कब करेंगे ?

---

[33] परिशिष्ट "तीन"

अध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, आप बोलिये कि आप शीघ्र ही उसकी भर्ती कर लेंगे।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- जी, माननीय अध्यक्ष महोदय। शीघ्र उसकी भर्ती कर लेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- रायमुनी भगत जी।

महिला स्व-सहायता समूहों द्वारा रेडी टू ईट योजना का संचालन

[महिला एवं बाल विकास]

9. (*क्र. 441) श्रीमती रायमुनी भगत : क्या महिला एवं बाल विकास मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- **(क)** क्या यह सत्य है कि शासन महिला स्व सहायता समूह के सशक्तिकरण के लिये प्रयासरत है ? यदि हां, तो तत्संबंधी ब्योरा क्या है ? **(ख)** क्या यह सत्य है कि रेडी टू ईट योजना के संचालन का दायित्व महिला स्व सहायता समूह से लेकर बीज विकास निगम को दे दिया गया है ? यदि हां तो इसके क्या कारण थे ? **(ग)** क्या इस योजना के संचालन का दायित्व पुन: महिला स्व सहायता समूह को दिये जाने हेतु प्रस्ताव शासन के समक्ष विचाराधीन है? यदि हां, तो तत्संबंधी ब्योरा क्या है ? यदि नहीं, तो इसका क्या कारण है ?

महिला एवं बाल विकास मंत्री (श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े) : (क) जी हां। जानकारी **संलग्न प्रपत्र†**[4] अनुसार है। **(ख)** जी हां, भारत शासन, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के निर्देश दिनांक 24.02.2009, 09.05.2012 एवं 24.12.2013 में निहित निर्देशों एवं मापदण्डों का पालन सुनिश्चित करने के लिए छत्तीसगढ़ राज्य बीज एवं कृषि विकास निगम के माध्यम से रेडी टू ईट प्रदाय का निर्णय लिया गया। **(ग)** रेडी टू ईट का कार्य महिला स्व सहायता समूहों को पुन: सौंपे जाने के संबंध में समुचित निर्णय लिये जाने की दशा में युक्तियुक्त कार्यवाही की जायेगी।

श्रीमती रायमुनी भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, किसी भी सरकार में महिला सशक्तिकरण को प्राथमिकता दी जाती है। महिला सशक्तिकरण के लिए पूरे छत्तीसगढ़ में रेडी टू ईट का कार्य स्व सहायता समूह की महिलाएं कर रही थीं। रेडी टू ईट के कार्य को महिला स्व सहायता समूह से छीनकर बीज विकास निगम को दिया गया है। बीज विकास निगम रेडी टू ईट का निर्माण कार्य कर रहा है तो मैं माननीय मंत्री महोदया जी से यह पूछना चाहती हूं कि आप उस कार्य को स्व सहायता समूह को कब तक वापस करेंगी ?

अध्यक्ष महोदय :- यह बहुत स्पेसिफिक प्रश्न है कि क्या रेडी टू ईट के कार्य को स्व सहायता समूह को सौंपने के लिए कोई विचार हो रहा है ? क्या आप इस पर कोई निर्णय लेना चाहेंगी या निर्णय

[4] † परिशिष्ट "चार"

लेने की प्रक्रिया चल रही है ? यह बहुत स्पष्ट प्रश्न है इसलिए आप हां या नहीं में इसका छोटा सा स्पष्ट जवाब दे दीजिए।

श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारी सम्माननीय सदस्य जी ने जो प्रश्न पूछा है। रेडी टू ईट के निर्माण कार्य को स्व सहायता समूह की महिलाएं करती थीं, जिसे अब बीज विकास निगम को दे दिया गया है तो इस पर विचार किया जा रहा है।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत अच्छा। उसके बारे में विचार किया जाएगा। यह बहुत बड़ी घोषणा है। निश्चित रूप से बहुत महत्वपूर्ण विषय पर मंत्री जी ने पहली बार बड़ी घोषणा की है। इसके लिए पूरा प्रदेश आंदोलित था, उसका समाधान करने की दिशा में आज प्रयास हुआ है। मंत्री जी को बधाई। अब आपकी कोई शंका तो बाकी नहीं है? कवासी लखमा जी। (मेजों की थपथपाहट)

श्रीमती रायमुनी भगत :- बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं तो चाहूंगी कि रेडी टू ईट के कार्य को जल्द ही महिलाओं को वापस दे दिया जाए।

<u>बस्तर संभाग में जिला खनिज न्यास निधि से स्वीकृत एवं निरस्त कार्य</u>

[खनिज साधन]

10. (*क्र. 437) श्री कवासी लखमा : क्या मुख्यमंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- **(क)** बस्तर संभाग में जुलाई, 2023 से सितंबर, 2023 तक जिला खनिज न्यास मद से कौन-कौन से कार्य स्वीकृत किए गए, स्थलवार, लागत सहित, जिलेवार बताइये ? **(ख)** क्या उक्त अवधि में स्वीकृत कार्यों को निरस्त किया गया है ? यदि हां, तो कब और क्यों ? निरस्त कार्यों की जानकारी जिलेवार अलग-अलग बताइये ?

मुख्यमंत्री (श्री विष्णु देव साय) : (क) बस्तर संभाग में जुलाई, 2023 से सितंबर, 2023 तक जिला खनिज न्यास मद से स्वीकृत कार्य, स्वीकृत राशि एवं स्थान की जिलेवार जानकारी **"संलग्न पुस्तकालय में रखे प्रपत्र-अ"** अनुसार है। **(ख)** प्रश्नांकित अवधि में स्वीकृत कार्यों में से जिला-बस्तर एवं कोण्डागांव में निरस्त कार्यों की जानकारी निरंक है। शेष जिलों में निरस्त कार्यों की जानकारी कारण सहित **"संलग्न पुस्तकालय में रखे प्रपत्र-ब"** अनुसार है।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे हमारे नये मुख्यमंत्री जी से प्रश्न पूछना है। मुझे पूरी उम्मीद है कि मुख्यमंत्री जी मेरी जरूर मदद करेंगे। मैंने आदिवासी जिला-बस्तर सहित संपूर्ण बस्तर संभाग में खनिज न्यास निधि से संबंधित जानकारी मांगी थी। हमारे प्रदेश अध्यक्ष जी, जो अभी वहां से विधायक निर्वाचित हुए हैं। मंत्री जी, 190 कार्य निरस्त किये गये हैं। मैंने दंतेवाड़ा, बीजापुर और कांकेर सहित सभी जिलों में खनिज न्यास निधि से संबंधित जानकारी मांगी थी तो आप मुझे यह बताने की कृपा कीजिए कि क्या वे कार्य अधूरे हैं ?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- लखमा जी, आपने निरस्त कार्यों की सूची जिलेवार मांगी थी, बस्तर, कोण्डागांव जिले की निरस्त कार्यों की जानकारी मांगी थी । माननीय मुख्यमंत्री जी ने सारी जानकारी दे दी है, जो पुस्तकालय में उपलब्ध है । उसके बाद भी यदि आपको स्पेशिफिक विषय में शंका हो तो आप प्रश्न कर सकते हैं । लिखित में करीब-करीब पूरा जवाब आ चुका है । इसी में से आप प्रश्न करिए ।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से पूछना चाहता हूं । मुख्यमंत्री जी नये हैं, मैं उनसे ज्यादा प्रश्न नहीं करूंगा । एक आदिवासी जिले में, सारे जिले में इतना काम निरस्त करने का कारण क्या है ?

श्री विष्णु देव साय :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आदरणीय कवासी लखमा जी बहुत वरिष्ठ सदस्य हैं और उन्होंने जो जानकारी चाही थी, वह हमने दे दी है । उन्होंने निरस्त होने का कारण पूछा है तो डी.एम.एफ. को लेकर जिले में कलेक्टर की अध्यक्षता में कमेटी है, उस कमेटी में उस जिले के सांसद और विधायकगण सदस्य रहते हैं और वे लोग तय करते हैं । जब हमारी सरकार बनी तो हम लोगों ने काम निरस्त करने का आदेश नहीं किया है, बल्कि जो काम अप्रारंभ थे, उसको रोकने का आदेश किया है । क्योंकि डी.एम.एफ. के विषय में बहुत शिकायतें आ रही थीं, पूरा बंदरबांट हो रहा था । इसलिए जिले में जो कमेटी है, उसको पावर है कि जो काम उपयोगी है, जनहित में है, उसको चालू कर सकते हैं और जो कार्य अनावश्यक रूप से स्वीकृत किए गए हैं, उस कमेटी को पावर है कि उसको निरस्त करें।

अध्यक्ष महोदय :- जो कार्य प्रारंभ नहीं हुए हैं, वह बंद हो गए हैं ।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी, बीजापुर का बाजार बोंदरीपाल का मेरा एक छोटा सा प्रश्न है । उसके लिए सी.सी. जारी हो गया, पैसा जारी हो गया और फिर वह निरस्त हो गया । उसका क्या होगा? अधिकारियों ने इस प्रकार की जानकारी दी है तो उनके खिलाफ कार्रवाई करेंगे क्या ? जिसका सी.सी. जारी हो गया था, उसको निरस्त बता रहे हैं । इस प्रकार की जानकारी अधिकारीगण देंगे तो उनके खिलाफ कार्रवाई करेंगे क्या ?

श्री विष्णु देव साय :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं बता चुका हूं कि जो काम जारी है, उसको निरस्त करने का कोई आदेश नहीं हुआ है । जो अप्रारंभ कार्य है, उसकी समीक्षा करना है । निरस्त करना, उसकी समीक्षा करना या उस कार्य को आगे जारी रखना जिले में जो कमेटी है, उसको यह अधिकार है ।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह मुख्यमंत्री जी का विभाग है, हम सदन में प्रश्न पूछ रहे हैं । एक साल पहले उस काम का सी.सी. जारी हो गया, पैसे का परमिशन मिल गया, लेकिन उस कार्य को यहां निरस्त बता रहे हैं । ऐसे अधिकारियों पर कार्रवाई करेंगे क्या ?

श्री विष्णु देव साय :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसका परीक्षण करा लेंगे ।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा दूसरा प्रश्न है । हमारा क्षेत्र गोलापल्ली नक्सलाईट एरिया है । हमने वहां के लिए सामाजिक भवन की मांग की थी, मैं स्वयं भी गया था । वहां बैठने की जगह नहीं थी । कलेक्टर ने वहां पर जाकर 25 लाख रूपए की घोषणा की थी, लेकिन उसको निरस्त किया गया है । वह नक्सलाईट पीड़ित क्षेत्र है । जो काम निरस्त किया गया है, उसे पुन: चालू करेंगे ? उसके बाद जगरगुण्डा में काम ही नहीं हो रहा है । वहां काम स्वीकृत हुआ है, लेकिन वहां की परिस्थिति में, इस्टीमेट बनाने में दिक्कत हुई । मेरे जिले के कोंटा ब्लॉक का 14 काम निरस्त हुआ है । उनको पुन: चालू करेंगे क्या ?

श्री विष्णु देव साय :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जिला कमेटी को पॉवर है, जिसके सदस्य आप स्वयं भी हैं ।

श्री विक्रम मण्डावी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने जो बात रखी है, उसमें बीजापुर जिले के भी बहुत सारे ऐसे काम हैं, जिसको निरस्त किया गया है और जो काम पहले से ही पूर्ण हो चुके हैं, सी.सी. भी बन चुका है और बहुत सारे जो अन्य काम हैं, वह सबसे ज्यादा काम स्कूल से संबंधित है । स्कूल में पेयजल के लिए बोरवेल के काम हैं, स्कूल के मरम्मत का काम है, नये स्कूल का निर्माण करना है, शौच से संबंधित काम हैं । इन कामों को निरस्त किया गया है ।

अध्यक्ष महोदय :- ऐसे जनरल प्रश्न इतने व्यापक रूप से नहीं होते, आप स्पेशिफिक प्रश्न पूछिए न । कोई काम जो आपकी जानकारी में है, जो काम प्रारंभ हो चुका है, वह बंद हो चुका है, ऐसे प्रश्न करिए । पूरा जनरल प्रश्न संभव नहीं है ।

श्री विक्रम मण्डावी :- अध्यक्ष महोदय, इसमें जानकारी उपलब्ध कराया गया है, उसमें मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से कहना चाहूंगा कि बहुत सारे काम आलरेडी पहले से पूर्ण हो चुके हैं या काम चल रहे हैं और सब जनउपयोगी काम हैं । उनको भी अप्रारंभ बताकर निरस्त करने की सूची दी गई है । मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से अनुरोध करता हूं कि बीजापुर बहुत ही संवेदनशील जिला है । वहां पर पहली बार काम हो रहे हैं तो मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से विशेष अनुरोध करता हूं कि ऐसे काम जिसकी वास्तव में आवश्यकता है और जो काम चल रहा है, उसकी एक बार फिर से समीक्षा की जाये और काम चालू किया जाये।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप उसको दिखवा लेंगे।

श्री विष्णुदेव साय :- जी, मैं समझता हूं कि इसका उत्तर पहले भी आ चुका है। फिर भी हम दिखवा लेंगे।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जिला पंचायत अध्यक्ष, जनपद अध्यक्ष, नगर पालिका अध्यक्ष इसके सदस्य नहीं हो सकते हैं क्या ? अभी जो नई समिति का गठन हुआ है, उसमें सुकमा जिले में मुझे भी नहीं बुलाया गया। अभी इतवार को जगदलपुर में मीटिंग बुलाया गया है। इसमें

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जिला सदस्य भी नहीं हैं, अध्यक्ष भी नहीं हैं, नगर पालिका का महापौर भी नहीं है, जनपद अध्यक्ष भी नहीं हैं तो इसके कौन-कौन सदस्य हैं ? इसको बताने का कष्ट करेंगे।

श्री विष्णुदेव साय :- अध्यक्ष महोदय, यह तो भारत सरकार के गाईड लाईन के अनुसार है, कोई नई बात नहीं है। यह डी.एम.एफ. तो बहुत पहले चल रहा है। कलेक्टर की अध्यक्षता में सांसद, विधायक सभी उसके सदस्य रहते हैं।

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष महोदय, अभी वर्तमान में मीटिंग हुआ है, उसमें ना तो विधायक को बुलाया गया, ना सांसद को बुलाया गया, ना जिला पंचायत अध्यक्ष को बुलाया गया ना जनपद सदस्य को बुलाय गया। इसमें कौन-कौन सदस्य हैं ? पहले तो हम इस समिति में सदस्य थे। अभी हम सदस्य हैं या नहीं ?

श्री विष्णुदेव साय :- अध्यक्ष महोदय, चलिये यदि ऐसा है तो उसको दिखवा लेंगे।

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष महोदय, भारत सरकार का गाईड-लाईन है।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मुख्यमंत्री जी, सांसदगण, विधायकगण तो सदस्य होते हैं। यदि उन्हें नहीं बुलाया गया तो दिखवा लेंगे, कवासी जी जो प्रश्न कर रहे हैं।

श्री दलेश्वर साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक प्रश्न करना चाह रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय :- आपका क्षेत्र अलग है, उनका क्षेत्र अलग है।

प्रदेश में बी.पी.एल. तथा ए.पी.एल. कार्ड धारक

[खाद्य, नागरिक आपूर्ति तथा उपभोक्ता संरक्षण]

11. (*क्र. 958) श्री मोतीलाल साहू : क्या खाद्य मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- प्रदेश में दिसंबर, 2018 की स्थितिमें कितने बी.पी.एल. तथा ए.पी.एल. कार्ड धारक थे, जिलेवार जानकारी देवें?

खाद्य मंत्री (श्री दयालदास बघेल) :प्रदेश में दिसम्बर 2018 की स्थिति में 1464855 अन्त्योदय राशनकार्ड, 4260937 प्राथमिकता राशनकार्ड, 55436 एकल निराश्रित राशनकार्ड, 10630 निःशक्जन जन राशनकार्ड एवं 7277 अन्नपूर्णा राशनकार्ड प्रचलित थे। एपीएल राशनकार्ड प्रचलति नहीं थे। जिलेवार **जानकारी संलग्न प्रपत्र[5] अनुसार** है।

श्री मोती लाल साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा प्रश्न माननीय खाद्य मंत्री जी से है। छत्तीसगढ़ में वर्तमान में प्रचलित कुल राशन कार्ड की संख्या बताने की कृपा करेंगे ?

[5] परिशिष्ट "पाँच"

Uncorrected and unedited/Not for Publication

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वैसे आदरणीय विधायक जी के पास जवाब चला गया है। फिर भी सदस्य जानना चाहते हैं तो मैं बताना चाहूंगा। दिसम्बर, 2018 में अन्त्योदय के 14,64,855 राशन कार्ड, प्राथमिकता वाले 42,60,937 राशन कार्ड, अन्नपूर्णा के 7,277 राशन कार्ड, निराश्रित के 55,436 राशन कार्ड, नि:शक्तजन के 10,630 राशन कार्ड हैं। अध्यक्ष महोदय, दिसम्बर 2023 में 14,90,979 कार्ड और अन्त्योदय, प्राथमिकता के 52,33,544 राशन कार्ड और अन्नपूर्णा के 0, निराश्रित के 37,737 राशन कार्ड, नि:शक्तजन के 15,299 राशन कार्ड, इस तरह राशन कार्ड की संख्या है।

श्री मोती लाल साहू :- अध्यक्ष महोदय, हम कुल संख्या नहीं जोड़ पाये। वर्तमान स्थिति में कुल कितने राशन कार्ड हैं, बता दीजिये ?

श्री दयाल दास बघेल :- अध्यक्ष महोदय, कुल संख्या परिशिष्ट में दिया है।

श्री मोती लाल साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा प्रश्न पूछने का आशय यह था कि आपने जो जानकारी दी है उसके अनुसार सन् 2018 में कुल संख्या 57,99,135 राशन कार्ड थे। मैं जानना चाह रहा था कि वर्ष 2023 तक इन राशन कार्डों में कुल कितनी वृद्धि हुई है ? मैं यह कहना चाह रहा था कि पिछली सरकार ने लगातार 40 लाख परिवार के गरीबी रेखा से बाहर आने का ढिंढोरा पीटते रही। तो मैं अंतर जानना चाह रहा था कि वर्तमान में इन 5 सालों में कितने और गरीब लोगों को राशनकार्ड वितरित हुआ है ? परन्तु मेरा प्रश्न संशोधित कर कटौती कर दिया गया। इसलिए मुझे सन् 2023 तक की जानकारी प्राप्त नहीं हो पाया था।

श्री दयाल दास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 18,56,324 कार्डों की वृद्धि हुई है। वृद्धि होने का कारण राज्य में अक्टूबर 2019 से यूनिवर्सल पीडीएस लागू करने से राज्य के सभी एपीएल परिवार को राशन कार्ड जारी किये गये हैं, जिसके कारण 8.77 लाख नये एपीएल राशन कार्ड जारी किये गये । इसके अलावा प्राथमिकता श्रेणी में 9.72 लाख नये राशन कार्ड जारी हुये ।

अध्यक्ष महोदय :- और कोई शंका ?

श्री मोतीलाल साहू :- अध्यक्ष महोदय और प्रश्न है । राशन दुकानों में लंबी कतारें लगती है । हम मातृ वंदना और नारी सशक्तीकरण की बात करते हैं । महिलाओं को घंटों लगातार कई दिनों तक राशन दुकानों में चक्कर काटना पड़ता है । राशन दुकानों का संचालक कार्ड को राशन दुकान में जमा करा लेता है और कई दिनों तक परेशान करता है । कई बार यह शिकायत मिली है कि राशनकार्डधारियों को पैसा देकर चावल अपने पास रख लेता है, क्या माननीय मंत्री जी इसकी जांच करायेंगे ? अध्यक्ष महोदय, मैं समझता हूँ कि इस प्रकार की शिकायतें लगभग सभी सदस्यों के पास होगा । क्या माननीय मंत्री जी इसकी जांच कराकर संचालक के ऊपर कार्यवाही करेंगे ?

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह प्रश्न उद्भूत नहीं होता है, फिर भी कोई शिकायत है तो बता देंगे । मैं जांच करा दूंगा ।

अध्यक्ष महोदय :- श्री राजेश मूणत जी कोई प्रश्न ?

श्री राजेश मूणत :- सममाननीय अध्यक्ष महोदय, केन्द्र सरकार की एक योजना है । क्या राशन कार्ड जो है, आधार कार्ड से लिंक होगा ? स्पेसिफिक प्रश्न है, क्या आपका जो राशनकार्ड है, वह आधार कार्ड से लिंक होगा, ऐसी कोई केन्द्र सरकार की योजना चल रही है, ताकि हमेंशा के लिये यह दिक्कत दूर हो ।

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आधार नंबर से जोड़ रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, जोड़ रहे हैं ।

श्री राजेश मूणत :- अध्यक्ष जी, मैंने इसलिये यह प्रश्न किया है कि हर बार नया कार्ड छपता है, छत्तीसगढ़ में यह कार्ड चौथी बार छप रहा है । केन्द्र सरकार ने तो विपक्ष को भी लिखकर भेजा था, क्या आधार लिंक कर लें ? आप लोगों ने पांच साल नहीं किया था और इसीलिये बड़े-बड़े चावल के स्कैण्डल निकलकर आये । गरीब का चावल गरीब को मिले ।(व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- हम लोग के ऊपर है क्या बताओ ?

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय अध्यक्ष महोदय जी, चावल की बात किये तो मेरा एक पूरक प्रश्न है...। (व्यवधान)

श्री दयालदास बघेल :- अध्यक्ष महोदय, सबसे ज्यादा फोटो वाला राशन कार्ड इन्होंने ही छपाया है, उसके पहले कभी फोटो वाला राशन कार्ड नहीं छपा था । आप ही ने चालू किया है । (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- अच्छा नहीं लग रहा है खत्म करने में...(व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, हम लोगों का भी प्रश्न है । (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- अध्यक्ष महोदय, चावल घोटाला इनके कार्यकाल में हुआ है । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- आपका विषय आ गया ।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, मैंने बोला कि यह प्रश्नकाल है, हम लोगों का भी प्रश्न है भई ?

श्री राजेश मूणत :- इससे हमेंशा के लिये समस्या का समाधान हो जायेगा ।

अध्यक्ष महोदय :- आधार से जोड़ेंगे क्या, पूछ रहे हैं ? उसे आपने हां कह दिया है । एक बार बोल दीजिए ?

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अब तक 98 परशेंट जोड़ा जा चुका है ।

अध्यक्ष महोदय :- सुन लीजिए, 98 परशेंट । लालजीत सिंह राठिया ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जिला रायगढ़ में धान खरीदी

[खाद्य, नागरिक आपूर्ति तथा उपभोक्ता संरक्षण]

12. (*क्र. 933) श्री लालजीत सिंह राठिया : क्या खाद्य मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- **(क)** जिला रायगढ़ में 10 जनवरी, 2024 की स्थिति में कितने धान की खरीदी की गयी है? कितने मूल्य पर धान की खरीदी की जा रही है? **(ख)** क्या 3100 रु प्रति क्विंटल खरीदी करने की घोषणा की गयी थी? यदि हां, तो 3100रु प्रति क्विंटल की दर से कब तक भुगतान किया जाएगा?

खाद्य मंत्री (श्री दयालदास बघेल) :(क) जिला रायगढ़ में खरीफ विपणन वर्ष 2023-24 में 10 जनवरी, 2024 की स्थिति में 3.15 लाख मे0टन धान की खरीदी की गई है। केन्द्र सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम समर्थन मूल्य (धान मोटा-रूपये 2183 एवं धान पतला-2203) प्रति क्विंटल की दर पर धान की खरीदी की जा रही है।**(ख)** जी हां। उपरोक्त संदर्भ में प्रक्रिया विचाराधीन है।

श्री लालजीत सिंह राठिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय खाद्य मंत्री जी से जानना चाह रहा हूँ कि रायगढ़ जिले में कितने पंजीकृत किसान है, क्या सभी किसानों से धान खरीदी की जा चुकी है ? मेरा एक प्रश्न यह भी है कि...।

अध्यक्ष महोदय :- एक-एक प्रश्न करते जाईये, फिर जवाब आता जायेगा । जवाब आयेगा, फिर करना । तीन बार अनुपूरक करने की अनुमति रहती है ।

श्री लालजीत सिंह राठिया :- अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूँ कि....।

अध्यक्ष महोदय :- पहला जवाब आ जाये ?

श्री लालजीत सिंह राठिया :- कितने पंजीकृत किसान है ? 10 जनवरी 2000 की स्थिति में कितने किसानों का धान खरीदा गया था और कितने किसान शेष थे ?

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, बैठिये ।

अध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी, बताईये ?

श्री दयालदास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इनका प्रश्न धान खरीदी के संबंध में है, पंजीकृत किसानों की संख्या 83056 है । पंजीकृत रकबा, 1.387 हेकटेअर है । धान बेचने वाले किसानों की संख्या 73,377 है, बेचे गये धान का रकबा 1,03,901 हे. है। यह धान खरीदी की जानकारी है। धान खरीदी की अनुमानित मात्रा 4.99 लाख टन है और यह धान खरीदी की अनुमानित मात्रा से अधिक है। माननीय अध्यक्ष महोदय, एक्च्यूल धान खरीदी के संबंध में जो प्रश्न पूछा गया था, उसका उत्तर दे दिया गया है।

श्री लालजीत सिंह राठिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं। इन्होंने बताया है कि 81056 किसानों का पंजीकरण हुआ। 73,377 किसानों से धान खरीदी की गयी।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

मैं माननीय मंत्री जी से दूसरा प्रश्न यह करना चाह रहा हूं कि क्या 31 जनवरी तक सारे जिलों के किसानों का धान खरीदी किया जा चुका है या अभी-भी किसानों से धान खरीदी करना शेष है ?

श्री दयाल दास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मुख्यमंत्री जी का आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने धान खरीदी की समय-सीमा बढ़ाकर 04 फरवरी तक की थी और 04 फरवरी तक सभी किसानों से धान खरीद लिया गया है और मैं विधायक महोदय को बताना चाहूंगा कि हमने जिला के कलेक्टरों से प्रमाण-पत्र भी ले लिया है।

श्री लालजीत सिंह राठिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मंत्री जी गलत उत्तर दे रहे हैं। किसान धान बेचने से वंचित रह गये हैं क्योंकि धान खरीदी के लिये जिस तिथि को बढ़ाया गया था उसमें बारिश हो गयी थी। लेट से खरीदी हुई। यह गंभीर विषय है कि किसान अभी-भी धान बेचने से छूट गये हैं।

अध्यक्ष महोदय, मेरा एक और प्रश्न यह है कि घोषणा पत्र में आया है कि 3100 रू. प्रति क्विंटल की दर से धान खरीदा जायेगा लेकिन 2143 रूपये में धान खरीदा गया है। किसानों को अंतर की राशि कब दी जायेगी और कितने रूपये प्रति क्विंटल दी जायेगी ?

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, वह अंतर की राशि का प्रश्न पूछ रहे हैं।

श्री दयाल दास बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो अंतर की राशि है, उसे अतिशीघ्र देंगे।

अध्यक्ष महोदय :- अतिशीघ्र दी जायेगी।

श्री लालजीत सिंह राठिया :- अध्यक्ष महोदय, प्रति क्विंटल के हिसाब से कितनी राशि दी जायेगी ?

अध्यक्ष महोदय :- श्री धरम लाल कौशिक जी। (व्यवधान)

<u>शराब दुकानों से प्राप्त राजस्व</u>

[वाणिज्यिक कर (आबकारी)]

13. (*क्र. 654) श्री धरमलाल कौशिक : क्या मुख्यमंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि **:-** **(क)** वर्ष 2021 से नवम्बर, 2023 तक मदिरा की कुल कितनी नवीन दुकान, बार एवं प्रीमियम दुकान खोली गई ? कितने फर्मों व कौन-कौन से फर्मों को ऑनलाईन मदिरा विक्रय/ स्वीकृति प्रदाय की गई व इससे कुल कितने राजस्व/आय की प्राप्ति हुई ? वर्षवार व जिलेवार जानकारी देवें ? **(ख)** कंडिका ''क'' अवधि में होटलों/बार को शराब बिक्री के लाइसेंस प्रदान करने के क्या नियम हैं ? कितने लाइसेंस जारी किये गये ? इससे कितने राजस्व/आय की प्राप्ति हुई ? कितने होटलों/बार के विरूद्ध अपराध पंजीबद्ध किया गया एवं कितनी शराब जब्ती की गई है ? वर्षवार एवं जिलावार जानकारी देवें ? **(ग)** कंडिका ''क'' अवधि में घर पहुंच सेवा से कितने राजस्व/आय की प्राप्ति हुई है ? वर्षवार एवं जिलेवार जानकारी देवें ? **(घ)** कंडिका ''क'' अनुसार अवधि में कितने चखना सेंटर/अहाता खोले गए ? जिलावार जानकारी देवें ? 03

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

दिसम्बर, 2023 के पश्चात कितने चखना सेंटर/अहाता को हटाया गया एवं इनको कौन संचालित कर रहा था जिलावार जानकारी दें ?

मुख्यमंत्री (श्री विष्णु देव साय) :- (क) वर्ष 2021 से नवम्बर, 2023 तक खोली गई नवीन देशी/विदेशी/प्रीमियम मदिरा दुकान तथा बार की वर्षवार, जिलेवार जानकारी पुस्तकालय में रखे **प्रपत्र अ** अनुसार है। ऑनलाईन मदिरा विक्रय हेतु किसी फर्म को स्वीकृति प्रदान नहीं की गई है, बल्कि छत्तीसगढ़ स्टेट मार्केटिंग कॉर्पोरेशन लिमिटेड द्वारा ऑनलाईन मदिरा विक्रय किया जाता है। ऑनलाईन मदिरा विक्रय से प्राप्त राजस्व की जानकारी वर्षवार व जिलेवार जानकारी **पुस्तकालय** में रखे **प्रपत्र ब** अनुसार है। **(ख)** होटलों/बारों को शराब बिक्री के लाइसेंस छत्तीसगढ़ आबकारी अधिनियम, 1915 के अंतर्गत निर्मित छत्तीसगढ़ विदेशी मदिरा नियम, 1996 के प्रावधान/नियम के तहत जारी किये जाते हैं। प्रश्नांकित अवधि में जारी किये गये लाइसेंस एवं प्राप्त राजस्व की वर्षवार, जिलेवार जानकारी **पुस्तकालय** में रखे **प्रपत्र स** अनुसार है। होटल/बार के विरूद्ध पंजीबद्ध अपराध की संख्या, शराब की जब्त मात्रा एवं शास्ति/जुर्माना राशि की जानकारी वर्षवार एवं जिलेवार जानकारी **पुस्तकालय** में रखे **प्रपत्र द** अनुसार है। **(ग)** प्रश्नांकित अवधि में घर पहुंच सेवा से प्राप्त राजस्व की वर्षवार व जिलेवार जानकारी **पुस्तकालय** में रखे **प्रपत्र द** अनुसार है। **(घ)** प्रश्नांकित अवधि में किसी भी मदिरा दुकान में चखना सेंटर/अहाता नहीं खोले गए हैं। अत: शेष जानकारी **निरंक** है।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय,..। (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं सरकार से पूछना चाह रही हूं कि इन्होंने पूरे छत्तीसगढ़ में प्रति एकड़ 21 क्विंटल धान खरीदने की बात की है। इसमें मेरा पूरक प्रश्न है। (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं मुख्यमंत्री जी से पूछना चाहता हूं। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- कवासी जी, संगीता जी, बैठिये।

श्री अटल श्रीवास्तव :- अध्यक्ष महोदय, यह गंभीर प्रश्न है। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- कार्यवाही आगे बढ़ गयी है।

श्री अटल श्रीवास्तव :- अध्यक्ष महोदय, इसमें मेरा भी प्रश्न लगा है।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्नकाल के बाद आपको अवसर मिलेगा।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- अध्यक्ष महोदय, मेरा पूरक प्रश्न है। संजारी-बालोद, विधान सभा में तरौद गांव में..। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- आपको अवसर मिलेगा। अभी बहुत समय रहेगा। (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री धरमलाल कौशिक :- और वर्ष 202-23 में 24 लाख रूपये। यह जो अंतर की राशि है, क्या आप उसकी जांच करा देंगे ? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- आप छोटा-छोटा प्रश्न करिये। समय देख लीजिये।

श्री धरमलाल कौशिक :- जो दोनों के अंतर की राशि है। वर्ष 2021-22 में 52 करोड़ 27 लाख रूपये और वर्ष 2022-23 में केवल 24 लाख रूपये। क्या आप इसकी जांच करा देंगे ?

श्री विष्णु देव साय :- क्या आप एक बार प्रश्न दोहरायेंगे ?

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न दोहरा दीजिये।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, वर्ष 2021-22 में ऑनलाईन राजस्व में 52 करोड़ 27 लाख रूपये की प्राप्ति हुई है और वर्ष 2022-23 में 24 लाख रूपये प्राप्ति हुई है। यह जो अंतर की राशि है, उसका क्या कारण है ? इसलिये मैं चाह रहा हूं कि क्या आप इसकी जांच करा देंगे ? कहां 52 करोड़ और कहां 24 करोड़ ? आखिर यह क्या मामला है ?

श्री विष्णु देव साय :- अध्यक्ष महोदय, बिल्कुल जांच करा देंगे। (मेजों की थपथपाहट)

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, मेरा एक और प्रश्न है। अभी आप लगातार समाचार पत्रों में देख रहे हैं और आप यदि व्ही.आई.पी. रोड में जायेंगे तो रात 12 बजे, 01 बजे और 02 बजे तक बार संचालित हो रहे हैं। जो हाईपर क्लब है, आज वहां गोलियां चल रही है और रात भर बार खुले हुए हैं। इसी प्रकार से बिलासपुर में भी है। यह जो रात भर बार खुल रहे हैं और जिस प्रकार की घटनाएं हो रही है, क्या आप उसमें पाबंदी लगायेंगे ? बार की जो टाईम लिमिट है, उसमें बार बंद हो जाये, क्या आप इसमें पाबंदी लगायेंगे ? मैं आपसे इतना ही पूछना चाहता हूं। जो घटनाएं घट रही है और लड़के और लड़कियां नांच रहे हैं।

श्री रामकुमार यादव :- तुंहर राज में गोली चलत हे।

श्री विष्णु देव साय :- अध्यक्ष महोदय, बिल्कल, शक्ति से नियम का पालन हो, शासन से इसका निर्देश दिया जा चुका है। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- आप संतुष्ट है ?

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, मैं पूरा संतुष्ट हूं।

अध्यक्ष महोदय :- मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद दीजिये।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, मैं मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देता हूं, मैं पूरा संतुष्ट हूं।

(प्रश्नकाल समाप्त)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

समय
12.00 बजे

पृच्छा

श्री धरमलाल कौशिक (बिल्हा):- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय प्रधानमंत्री जी को धन्यवाद् ज्ञापित करना चाहता हूँ। जो कतर में हमारे सैनिकों को मृत्युदण्ड की सजा सुनाई गई थी। माननीय मोदी जी के द्वारा प्रयास किया गया और उस प्रयास का जो परिणाम हुआ, वहां सार्थक बातचीत हुई और जब बाद में उसमें पहल की गई और पहल करने के कारण सकुशल 8 भारतीय भारत लौटे हैं मैं इसके लिए माननीय मोदी जी के प्रयास की प्रशंसा करता हूॅ। मैं इस सदन के माध्यम से माननीय मोदी जी को धन्यवाद् देना चाहता हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद्।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद् अउ प्रशंसा तो हमु मन करथन, लेकिन चीन हा हमर जमीन ला ले लेहे तेला पहिली तुमन जाकर लेवा।

अध्यक्ष महोदय :- आपको कुछ पूछना है। आप संक्षिप्त में बोलिए।

श्री दिलीप लहरिया (मस्तूरी) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जी। मैं संक्षिप्त में बोल रहा हूँ। यह मामला गंभीर है। हमारे मस्तूरी विधान सभा क्षेत्र के ग्राम पंचायत पाली में भांवर गणेश मूर्ति है जो 10 वीं शताब्दी का है और लगातार जिनकी चोरी हो रही है। अभी फिरहाल दो-चार दिन पहले चोरी हुई है और साल भर पहले भी चोरी हुई थी और इसके पहले भी एक बार चोरी हो चुकी है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से यह निवेदन करना चाहता हूँ कि माननीय मंत्री जी, इसमें आपकी तरफ से कोई सुरक्षा की व्यवस्था नहीं है क्या वहां सुरक्षा की व्यवस्था की जाएगी ?

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद्।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है।

श्रीमती संगीता सिन्हा (संजारी बालोद) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो भिलाई में मासूम बच्ची के साथ बलात्कार हुआ है, उसमें मैंने ध्यानाकर्षण दिया है कृपा करके, उसे ग्राह्य किया जाए।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद्।

अध्यक्ष महोदय :- हम इसे दिखवा लेंगे। कोई और माननीय सदस्य कुछ कहना चाहते हैं ?

श्री दलेश्वर साहू (डोंगरगांव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने, आपसे नक्सल बेल्ट में जाने के लिए, दौरे के लिए सुरक्षा को लेकर निवेदन भी किया था। मैंने इसमें ध्यानाकर्षण भी लगाया है। मैंने

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कल बजट भाषण की चर्चा में फरियाद किया था तो मैं चाहता हूँ कि आप इसे ग्राह्य करके, मेरा निवेदन स्वीकार करें। आपने मेरे क्षेत्र से चुनाव लड़ा है और माननीय अध्यक्ष महोदय जी उसी समय आप मुख्यमंत्री भी बने हैं तो आप मेरे क्षेत्र से वाकिफ हैं तो आप मेरे लिए इतनी तो दया कर सकते हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद्।

श्री लालजीत सिंह राठिया (धर्मजयगढ़):- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे विधान सभा क्षेत्र और जिले में लो वोल्टेज की स्थिति बनी हुई है, जिससे किसानों और आम जनता को लो वोल्टेज से परेशानी हो रही है। इस समस्या का समाधान किया जाये।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद्।

श्री अटल श्रीवास्तव (कोटा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं खाद्य मंत्री जी से जानना चाह रहा हूँ कि जो प्रदेश के किसानों को समर्थन मूल्य का 2203 रूपये और 2100 रूपये मिला है, अभी तक किसानों को उसका भुगतान नहीं हो पा रहा है। यहां बैंकों में किसानों की लाईनें लगी हुईं हैं जब किसान अपने पैसा निकालने जा रहे हैं तो उनको वहां से भगा दिया जा रहा है या उनको बहुत कम पैसा दिया जा रहा है। तो इसकी व्यवस्था क्या होगी और जो आपको 3100 रूपये की अतिरिक्त राशि बांटनी है, वह कब तक दी जाएगी। क्योंकि आपके संकल्प पत्र में यह था कि आप ग्राम पंचायत में सभा करके, वह पैसा देंगे तो आखिरी किसानों की 3100 रूपये की अतिरिक्त राशि कब दी जाएगी और यह कहां दी जायेगी ?

अध्यक्ष महोदय :- शून्यकाल महत्वपूर्ण होता है। माननीय सदस्यगण संक्षिप्त में अपनी बात रखते हैं। कृपया माननीय मंत्रिगण जो विषय उनके संबंधित विभाग का है शून्यकाल की सूचना का महत्व है, आप उसे नोट करें और आप उसे कम से कम ध्यान में रखें।

श्री भोलाराम साहू (खुज्जी) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, खुज्जी विधान सभा क्षेत्र _में पूरे किसान लो वोल्टेज की समस्या के कारण परेशान हैं तो वहां कम से कम लो वोल्टेज की समस्या का समाधान किया जाये।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद्।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है।

श्री द्वारिकाधीश यादव (खल्लारी) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से प्रदेश के उप मुख्यमंत्री, लोक निर्माण मंत्री महोदय का ध्यान आकृष्ट करवाना चाहता हूँ कि लोक निर्माण विभाग

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

में कार्यपालन अभियंता को जो पदस्थ किया गया है, उसमें काफी कनिष्ठ को किया गया है, वहां वरिष्ठ वंचित हैं। जिसमें शासन का कोई ऐसा आदेश नहीं है। वहां केवल अधिकारी के द्वारा पोस्टिंग की गई है। मैं माननीय उप मुख्यमंत्री, जी से निवेदन करना चाहता हूँ कि वहां शासन से आदेश हो। वहां पर शासन के काम को एक अधिकारी कर रहे हैं और केवल इतने में भी बात खत्म नहीं हो रही है। यदि आज भी उनकी पदोन्नति की जाती है तो वह ई.ई. नहीं बन सकते। आज की परिस्थिति में 2-2, 1-1 साल का समय लग जाएगा। मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाह रहा हूँ कि यह बहुत गंभीर विषय है। जो काम शासन, आपका है वह अधिकारी न करे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद्।

श्री कुंवर सिंह निषाद (गुन्डरदेही) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय खाद्य मंत्री जी से यह जानना चाहूंगा कि अभी धान खरीदी के समय वहां के डी.एम.ओ. के द्वारा बहुत सी लगभग 54 से 56 सोसायटियों को नोटिस जारी किया गया है कि आपने क्षमता से ज्यादा धान खरीद लिया है। इसके कारण समिति वाले किसानों का धान नहीं खरीद पाये हैं जिसके कारण वहां किसान पीस रहे हैं। मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहूंगा कि माननीय मंत्री जी उस अधिकारी के खिलाफ कार्यवाही करेंगे, जिसके कारण किसान धान बेचने से वंचित हो चुके हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद्।

श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह (अकलतरा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे जिले में और विधान सभा क्षेत्र में सरकार आते ही जितनी अवैध चखना की दुकानें थीं, उन पर बुल्डोजर चलाया गया। लेकिन पिछले विगत 2 हफ्ते में दोबारा वह दुकानें कई जगह स्थापित हो गई हैं। महिलाओं ने अवैध शराब बिकने के कारण लगातार 3-4 थाने का घेराव किया है। मैं आपके संज्ञान में लाना चाहता हूं कि इस पर त्वरित कार्रवाई होनी चाहिए।

श्रीमती अंबिका मरकाम (सिहावा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे सिहावा विधान सभा क्षेत्र में भारतमाला रोड बनने के कारण सारी रोड खराब हो चुकी हैं। मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी का ध्यान आकर्षित करना चाहती हूं कि उन रोडों का सुधार किया जाये।

श्रीमती संगीता सिन्हा (संजारी-बालोद) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 21 क्विंटल धान की खरीदी पूरे छत्तीसगढ़ राज्य में चल रही है। मेरी संजारी-बालोद विधान सभा में बालोद ब्लाक का एक गांव तरौद है, वहां 21 क्विंटल धान खरीदी हो रही थी। आपके अधिकारियों द्वारा वहां पत्र जारी किया गया है कि आप यहां पर 21 क्विंटल धान की खरीदी कैसे कर रहे हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, इसमें मैं जांच चाहती हूं।

श्रीमती चातुरी नंद (सराईपाली) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मुख्यमंत्री महोदय से निवेदन करत हौं कि महिला मन के साथ में गाली-गलौच करईया और ओ मन ला डरा धमकाकर पैसा मांग करवईया, आबकारी अधिकारी के ऊपर मा जो शिकायत में मुख्यमंत्री महोदय ला देहौं, ओकर ऊपर कौनो कार्रवाई होही या नई होय?

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, ठीक है।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय अध्यक्ष जी।

अध्यक्ष महोदय :- रामकुमार यादव जी, बोलिये।

श्री रामकुमार यादव (चन्द्रपुर) :- माननीय अध्यक्ष जी, मैं माननीय राजस्व मंत्री जी से निवेदन करना चाहत हौं कि चन्द्रपुर विधान सभा में करमा बैराज और साराडीह दोठे बैराज बने हे, येमा कंपनी ला देय बर पानी तो शुरू हो गये हे, अभी तक बहुत सारा किसान मन के ओकर मुआवजा नई मिले हे, जेकर लगातार हमन ओकर मुआवजा के लिए मांग करत हन। अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से निवेदन करना चाहत हौं ओ किसान मन ला जल्दी से मुआवजा दिलाये के लिये वहां सर्वे कराने का कष्ट करें।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, पत्रों का पटल पर रखा जाना। माननीय विष्णुदेव साय जी।

समय
12.07 बजे

पत्रों का पटल पर रखा जाना।

(1) परिवहन विभाग की अधिसूचनाएं

मुख्यमंत्री (श्री विष्णुदेव साय) :- अध्यक्ष महोदय, मैं छत्तीसगढ़ मोटरयान कराधान अधिनियम, 1991 (क्रमांक 25 सन् 1991) की धारा 21 की उप धारा (3) की अपेक्षानुसार अधिसूचना क्रमांक :-

(1) एफ 5-5/आठ-परि./2022, दिनांक 1 अगस्त, 2023

(2) एफ 5-7/आठ-परि./2022, दिनांक 18 जुलाई, 2023 तथा

(3) एफ 5-11/आठ-परि./2022, दिनांक 14 जुलाई, 2023 पटल पर रखता हूं।

(2)भारत के नियंत्रक महालेखापरीक्षक से प्राप्त छत्तीसगढ़ राज्य के वर्ष 2022- 23 के वित्त लेखे खण्ड 1 एवं खण्ड 2 तथा विनियोग लेखे छत्तीसगढ़ शासन

वित्त मंत्री (श्री ओ.पी. चौधरी) :- अध्यक्ष महोदय, मैं भारत के संविधान के अनुच्छेद 151 के खण्ड (2) की अपेक्षानुसार भारत के नियंत्रक महालेखापरीक्षक से प्राप्त छत्तीसगढ़ राज्य के वर्ष 2022-23 के वित्त लेखे खण्ड 1 एवं खण्ड 2 तथा विनियोग लेखे छत्तीसगढ़ शासन पटल पर रखता हूं।

अशासकीय/प्रकाशन के लिए नहीं

<u>सदन को सूचना</u>

<u>स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन</u>

अध्यक्ष महोदय :- माननीय सदस्यों हेतु विधान सभा भवन स्थित एलोपैथिक चिकित्सालय में प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 14 से 16 फरवरी, 2024 तक " स्वास्थ्य परीक्षण शिविर" आयोजित है।

कृपया, माननीय सदस्य प्रात: 11.00 बजे से सायं 5.00 बजे तक मध्य शिविर का लाभ लेवें।

ध्यानाकर्षण सूचना। श्रीमती गोमती साय जी अपनी ध्यानकर्षण की सूचना पढ़ेंगी।

श्री धर्मजीत सिंह :- (माननीय सदस्य दलेश्वर साहू जी को नेता प्रतिपक्ष की सीट पर बैठे हुए देखने पर) दलेश्वर साहू जी, नये नेता प्रतिपक्ष के रूप में आपका स्वागत है।

<u>ध्यानाकर्षण सूचना</u>

<u>(1) कुनकुरी विधान सभा क्षेत्र अंतर्गत ग्राम-दुलदुला स्थित श्री नदी में उच्च स्तरीय पुलिया निर्माण कार्य रोके जाने से हो रही परेशानी।</u>

श्रीमती गोमती साय (पत्थलगांव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरी ध्यानाकर्षण की सूचना का विषय इस प्रकार है :- जिला जशपुर के कुनकुरी विधान सभा क्षेत्र अंतर्गत ग्राम पंचायत दुलदुला के मुख्य मार्ग स्थित श्री नदी पर लोक निर्माण (सेतु) विभाग के द्वारा उच्च स्तरीय पुलिया का निर्माण किया जा रहा है। लेकिन वर्तमान में निर्माण कार्य रूका हुआ है। ऐसी स्थिति में पुलिया का निर्माण कार्य बरसात के आगमन तक पूर्ण नहीं होगा, जिससे क्षेत्र के लोगों को बरसात के समय आवागमन में अत्यधिक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। पुलिया निर्माण कार्य रूकने के कारण क्षेत्र की जनता एवं ग्रामवासियों में शासन के प्रति भारी रोष एवं आक्रोश व्याप्त है। मैं आपके माध्यम से जानना चाहती हूं, माननीय मंत्री जी उत्तर दिये हैं। माननीय मंत्री जी के वक्तव्य मे हैं, जिला जशपुर कुनकुरी विधान सभा क्षेत्र के ग्राम दुलदुला डिपो मार्ग पर श्री नदी में पुल निर्माण कार्य के संबंध में उत्तर आया है।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री जी का वक्तव्य आ जाने दीजिए।

श्रीमती गोमती साय :- जी

उप मुख्यमंत्री (लोक निर्माण) (श्री अरूण साव) :- जिला जशपुर के कुनकुरी विधान सभा क्षेत्र के ग्राम दुलदुला से डिपाटोली मार्ग पर श्री नदी में पुल निर्माण कार्य हेतु दिनांक 09.02.2023 को कार्यादेश जारी कर 12 माह वर्षाऋतु सहित अर्थात् दिनांक 08.03.2024 तक पूर्ण करने हेतु सौंपा गया है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

वर्तमान में पुल कार्य पूर्ण कर लिया गया है तथा दोनों तरफ पहुंच मार्ग के कार्य में कुछ स्थानीय निवासियों द्वारा बाधा पहुंचाए जाने के कारण पहुंच मार्ग के कार्य में विलंब हो रहा है। पहुंच मार्ग निर्माण के बाधा को दूर करके निर्माण कार्य को शीघ्र पूर्ण किया जावेगा। पुलिया निर्माण कार्य रूकने के कारण से क्षेत्र की जनता एवं ग्रामवासियों में शासन के प्रति रोष एवं आक्रोश व्याप्त नहीं है।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न करिए।

श्रीमती गोमसी साय :- माननीय अध्यक्ष महोदय, क्या माननीय मंत्री जी यह बतायेंगे कि पुल कब तक बन जाएगा? क्या समय-सीमा बतायेंगे? ताकि उस पुलिया के कारण कम से कम 40-50 गांवों के लोगों को इसका लाभ भी मिलेगा और उसको लेकर उनको परेशानी भी है। कृपया उसका जल्दी से जल्दी निराकरण करके पुल बनवाने का प्रयास करें।

श्री अरूण साव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह क्षेत्र माननीय मुख्यमंत्री जी का विधान सभा क्षेत्र है। जैसा कि मैंने बताया कि पुल का निर्माण कार्य हो गया है। पहुंच मार्ग से लगभग पांच परिवारों को दिक्कत हो रही है। उनसे बात-चीत करके उस समस्या का समाधान करेंगे और शीघ्र ही पहुंच मार्ग का निर्माण करेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- अजय चन्द्राकर जी।

श्री अजय चन्द्राकर (कुरूद) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से पूछना चाहूंगा कि जैसा कि माननीय मंत्री जी ने उत्तर में उल्लेख किया है। कुछ स्थानीय लोगों के द्वारा कुछ बाधाएं पहुंचायी जा रही है। तो कितने परिवार के लोग हैं? उसमें क्या-क्या बाधाएं उत्पन्न हुई हैं? चार-पांच लोग हैं तो बाधांए कब तक दूर कर ली जायेंगी?

श्री अरूण साव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पुल के निर्माण होने से एप्रोच रेट के लिए ऊंचा हो रहा है। वहां लगभग पांच परिवार हैं। तीन परिवार एक तरफ, दो परिवार एक तरफ है। उनको दूर से आना पड़ेगा। इस तरह की समस्या लगती है। उनसे बात-चीत करके उनके लिए समाधान निकालेंगे और शीघ्र ही पहुंच मार्ग का निर्माण करेंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, यह उत्तर में लिखा है कि शीघ्र निर्माण कार्य करेंगे। मैं वह नहीं जानना चाह रहा हूं। मैं यह जानना चाह रहा हूं कि वह बाधाएं घूमकर आने की है। यदि वह आपके ऊपर निर्भर, विभाग के द्वारा निर्भर है तो उसको कब तब दूर करेंगे? मैं यह जानना चाहता हूं कि आप उसकी अवधि बताएं। शीघ्र निर्माण कार्य पूर्ण जावेगा तो उत्तर में लिखा है। शीघ्रातिशीघ्र सरकारी वाला उत्तर है। जब आपको समस्याएं मालूम है तो उसको कब तक दूर करेंगे? यह मैं जानना चाहता हूं।

श्री अरूण साव :- अध्यक्ष महोदय, मैंने कहा कि उन परिवारों से बात-चीत करेंगे, बात-चीत करके समाधान निकालेंगे और हमने पुल का निर्माण already कर लिया है। एप्रोच रोड का विषय है, उसे शीघ्र ही पूरा कर लेंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो कुछ माननीय मंत्री जी बोल रहे हैं, वह उत्तर में दिया गया है। एक लाईन उससे आगे-पीछे नहीं है। यदि उत्तर है तो इस ध्यानाकर्षण को लेने का मतलब नहीं था । इतनी छोटी बात है, जिसके कारण 40-50 गांव के लोग वंचित हो रहे हैं। पांच परिवार के लोगों से परेशानी है, उसको कब तक दूर कर ली जाएगी? वही-वही उत्तर आ रहा है कि उसको शीघ्र कर लिया जाएगा जो कि उत्तर में लिखा है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, मंत्री जी, समय-सीमा बता दीजिए।

श्री अरूण साव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने बहुत स्पष्ट रूप से उत्तर दिया है कि हमने पुल का निर्माण कार्य पूरा कर लिया है। एप्रोच रोड बनाने में कुछ लोग विरोध कर रहे थे। उनसे बात-चीत करके उनसे समाधान करेंगे और एप्रोच रोड का निर्माण शीघ्र पूरा कर लेंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपको धन्यवाद देता हूं कि हम इस उत्तर से एक लाईन भी आगे-पीछे नहीं बढ़ें। पूछने का कोई अर्थ ही नहीं हुआ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये। धन्यवाद। श्री कुंवर सिंह निषाद।

(2) प्रदेश में लगातार बढ़ रही आपराधिक घटनाएँ

श्री कुंवर सिंह निषाद (गुण्डरदेही) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरी ध्यानाकर्षण सूचना का विषय इस प्रकार है :-

राज्य में लगातार अपराधिक घटनाएं बढ़ रही हैं। अपराधियों के हौसले बुलंद हैं। राज्य की सरकार इन घटनाओं को रोक पाने में असफल है। जिला बालोद के विकासखण्ड गुण्डरदेही अंतर्गत ग्राम-चीचा में दिनांक 31 जनवरी, 2024 को एक दस वर्षीय स्कूली छात्र की निमर्म हत्या हो गई। मृतक एवं अपराधी दोनों स्कूली छात्र हैं, जो नाबालिग हैं । छोटे-छोटे बच्चों में हिंसा की भावना बढ़ रही है । स्कूल परिसर के आसपास की दुकानों एवं ठेलों में विभिन्न प्रकार के नशीले पदार्थों की बिक्री की जाती है जिसकी जद में छोटे बच्चे आ रहे हैं । लंच टाईम के बाद बच्चों की दर्ज संख्या के हिसाब से उपस्थिति की गणना आवश्यक है एवं शाला बंद होने के समय दर्ज संख्या की पुनर्गणना आवश्यक है । प्रदेश में बढ़ती अपराधिक घटनाओं की रोकथाम नहीं होने के कारण क्षेत्र एवं राज्य की जनता में शासन एवं प्रशासन के प्रति रोष एवं आक्रोश व्याप्त है ।

उप मुख्यमंत्री (गृह) (श्री विजय शर्मा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह कहना सही नहीं है कि राज्य में लगातार अपराधिक घटनाएं बढ़ रही हैं और अपराधियों के हौसले बुलंद होते जा रहे हैं ।

वास्तविकता यह है कि अपराध एवं अपराधियों के विरूद्ध पुलिस द्वारा लगातार विधिसम्मत कार्यवाही करने से अपराधियों के हौसले पस्त हुए हैं ।

दिनांक 31.01.2024 को ग्राम चीचा, थाना-अर्जुन्दा, जिला-बालोद का अवयस्क बालक प्राथमिक शाला चीचा पढ़ने गया था । घर वापस नहीं आने पर परिजनों के खोजबीन करने पर गांव के गौठान में निर्माणाधीन मकान की टंकी में मृत अवस्था में मिला । घटना की सूचना बालक के पिता द्वारा थाना अर्जुन्दा में दिये जाने पर मर्ग क्रमांक- 03/2024 तथा अपराध क्रमांक 20/2024 धारा 302 भादवि पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया ।

विवेचना क्रम में संदेहियों के निवास जाकर पूछताछ करने पर विधि से संघर्षरत बालक ने बताया कि मृतक तथा उसके परिवार से पूर्व से विवाद चला आ रहा था । इसी बात पर विधि से संघर्षरत बालक ने मृतक बालक की बोल्डर एवं राड से सिर एवं गला में वार कर हत्या करना स्वीकार किया । विधि से संघर्षरत बालक को दिनांक 01.02.2024 के 15.20 बजे सुरक्षा में लिये जाने की सूचना उसके परिजनों को दिया जाकर न्यायिक सुरक्षा फार्म तैयार कर माननीय किशोर न्यायालय लोहारा के समक्ष पेश किया गया प्रकरण की विवेचना जारी है । अपचारी बालक द्वारा साक्ष्य छिपाने के कारण प्रकरण में धारा 201 भादवि विस्तारित की गई ।

स्कूल शिक्षा विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार शैक्षणिक संस्थानों में सिगरेट एवं अन्य तम्बाकू उत्पादों का विक्रय किया जाना प्रतिबंधित किया गया है । जिला शिक्षा अधिकारी बालोद के द्वारा जिले में संचालित सभी शालाओं के प्रधान पाठक एवं प्राचार्यों को दीर्घ विश्राम एवं शाला बंद होने के पूर्व छात्र-छात्राओं की उपस्थिति लेने हेतु निर्देशित किया गया है ।

यह कहना सही नहीं है कि स्कूल परिसर के आसपास दुकानों एवं ठेलों पर विभिन्न प्रकार के नशीले पदार्थ की बिक्री की जाती है । स्कूल परिसर के आसपास पुलिस द्वारा समय-समय पर पेट्रोलिंग की जा रही है । जन जीवन सामान्य है ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय गृहमंत्री जी के जवाब से असंतुष्ट हूं । मैंने इस घटना के संबंध में माननीय गृहमंत्री जी के पहले माननीय मुख्यमंत्री जी से बात करनी चाही । मैंने 4 बार फोन लगाया लेकिन फोन रिसीव नहीं हुआ उसके बाद मैंने उनके ओ.एस.डी. को 4 बार फोन लगाया, दोनों ओ.एस.डी. को, सुभाष राज जी को भी और बघेल जी को भी, 4-4 बार फोन लगाया लेकिन उन्होंने फोन नहीं उठाया उसके बाद दूसरे दिन भी मैंने बात करनी चाही । माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी को मैंने फिर से फोन लगाया उसकी पूरी कॉल डिटेल मेरे पास है, यदि आप चाहेंगे तो मैं दे दूंगा । लेकिन इस संगीन मामले में न ही माननीय मुख्यमंत्री जी के ओ.एस.डी. के द्वारा चूंकि आजकल आधुनिकता का दौर है, ट्रू कॉलर में आ जाता है कि किसका फोन है,

कौन है उसके साथ-साथ दोनों ओ.एस.डी. के माध्यम से फोन लगाने के बाद उसके बाद कोई जवाब संतोषप्रद नहीं आया ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप संतुष्ट हैं । आप जवाब से संतुष्ट हैं न ?

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं संतुष्ट नहीं हूं । मैं इसीलिये उनसे प्रश्न कर रहा हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- अच्छा, आप प्रश्न कर लीजिये ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय गृहमंत्री जी से रात में मेरी बात हुई । मैंने माननीय गृहमंत्री जी से निवेदन भी किया । माननीय गृहमंत्री जी, 11 बजकर 20 मिनट पर आपसे मेरी बात हुई, मैंने कहा कि यह संगीन मामला है इसमें क्या हो सकता है । उस परिवार की हम क्या सहायता कर सकते हैं, उस संबंध में यदि आपका कोई निर्णय आ जाता है तो जरूर उसमें तो आपने कहा कि एक-बार जरूर हम माननीय मुख्यमंत्री जी से बात करते हैं उसके बाद बात करेंगे लेकिन मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि यह जो बालक खत्म हुआ है तोरण कुमार। यह घर का ही इकलौता चिराग था । 10 साल का लड़का था, उस अबोध की क्या गलती थी कि उसके ही परिवार के एक भाई ने, 14 साल के उस लड़के ने ऐसी निर्ममता और बर्बरतापूर्वक हत्या की कि पहले सिर में पत्थर मारा गया । उसके बाद उसी सिर में रॉड को घुसाया गया, गाल में घुसाया गया और अंत में जब उसकी निर्ममता और बढ़ गयी तो गले में रॉड डालकर मोड दिया गया था । जब उसके पिता जी को पता चला, उस गांव से जब आये तो उसे अपने लड़के की लाश को देखने तक नहीं गया, सीधे उसको थाने में लाकर बैठा दिया गया । मैं चाहता हूं कि जो भी पुलिस वाले जो गंभीरतापूर्वक इसमें संज्ञान नहीं लिया, उसके परिवार के साथ ऐसी बातें कीं, मैं चाहता हूं कि उनके प्रति आपकी संवेदनशीलता क्या होगी, यह मैं नहीं जान सकता, लेकिन यह चीज कहना चाहूंगा कि नैतिकता के आधार पर क्या जैसे आपने पहले एक परिवार को आपकी प्रतिनिधि मंडल ने 5 लाख रूपये देने के लिए पेश किये थे। इनके परिवार को शासन की तरफ से 10 लाख रूपये तक के मुआवजा की मांग करता हूं। क्या गृह मंत्री जी इसे स्वीकार करेंगे?

श्री विजय शर्मा :- जो एफ.आई.आर. है, उसमें प्राप्त सूचना के आधार पर सबसे पहले बच्चे की मां ने ही जगह देखी और उन्होंने अपने पति को फोन पर सूचना दी। पति ने आकर वहां पर बालक को देखा और उसके बाद स्वयं उन्होंने एफ.आई.आर. कराया। ऐसी कोई घटना नहीं हुई कि उनको पकड़कर ले जाकर थाने में बैठाया गया। ऐसी कोई बात नहीं हुई। बाकी मुआवजे की जो दूसरी बात है, इसकी जांच पूरी हो जाने दीजिए, माननीय मुख्यमंत्री जी से इसका निवेदन करेंगे।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं स्वयं डेढ़ बजे रात तक परिजन के साथ उस थाने में बैठा था। उनके परिवार से भी बातचीत की। मैंने थाने वाले से भी कहा कि आपने बगैर उसकी सहमति के कैसे थाने में लाकर बैठाया तो उन्होंने कहा कि वहां पर मामला बिगड़ रहा था। लोग

विरोध कर रहे थे। लाश को उठाने नहीं दे रहे थे। अध्यक्ष महोदय, एक बात और बता देना चाहूंगा कि बगैर पंचनामा के केवल कोटवार से दस्तखत करवाकर वो लाश सीधे-सीधे मर्चुरी में भेज दिया गया था। न ही उसके परिजन से और न ही उसके गांव वाले से कोई सहमति ली गई थी। तो मैं समझता हूं कि आप इस बारे में कुछ कहेंगे क्या?

श्री विजय शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसमें पोस्टमार्टम का, अंतिम क्रिया-कर्म करने का ये सारी बातें उस परिवार के, वो दुखी परिवार यूं ही है, उसके घर में माता-पिता सबसे चर्चा करके और इस काम को आगे बढ़ाया गया है। इसमें कोई जोर-जबर्दस्ती या इस तरह की कोई बात न जांच में है और न मैं सोचता हूं कि वास्तविकता में ऐसी कोई बात है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, अनिला जी।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- अध्यक्ष महोदय, एक मिनट।

अध्यक्ष महोदय :- इसी में?

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी बैठे हैं। मैं निवेदन करना चाहूंगा कि उस परिवार के लिए मैंने आपसे 10 लाख रूपये मुआवजा राशि की मांग की है, क्या आप उन्हें स्वीकृत करते हुए सदन में घोषणा करेंगे क्या?

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, अनिला जी पूछिए।

श्री विजय शर्मा :- इसे विशेष प्रकरण मानते हुए माननीय मुख्यमंत्री जी से हम सब आग्रह करेंगे और मैं सोचता हूं कि यह हो पायेगा।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय..।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- सदन में घोषणा हो जाता। आदरणीय, एक मिनट। माननीय मुख्यमंत्री जी आपसे गृह मंत्री जी के माध्यम से आपसे निवेदन और आग्रह करता हूं। यह बहुत ही गंभीर मामला है और इसे संज्ञान में लेते हुए मैं आपसे निवेदन और आग्रह करना चाहूंगा कि उस परिवार के प्रति यदि थोड़ी बहुत भी संवेदना होगी जो जरूर इस सदन में उसके परिवार के लिए क्या आप मुआवजा राशि की घोषणा करेंगे?

श्री विजय शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे आपत्तिपूर्वक एक बात कहना चाहता हूं। थोड़ी बहुत भी संवेदना होगी, इस शब्द का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। ये बिल्कुल गलत है। माने संवेदनाएं क्या होती हैं, अगर पुराने 3-4 वर्षों में देखा जाए तो हम सब भुक्तभोगी हैं, जिन विषयों के लिए यहां पर बैठे हुए हैं। (मेजों की थपथपाहट) आपका यह कहना कि थोड़ी बहुत संवेदना होगी, यह बिल्कुल गलत है। संवेदना ही इस सरकार का मुख्य गुण है। माननीय मुख्यमंत्री जी कितने संवेदनशील हैं, हम सब जानते हैं और इस तरह से आपको नहीं कहना चाहिए बाकी आपकी जो भी बातें हैं, उसके लिए माननीय मुख्यमंत्री जी निर्णय करेंगे।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय अध्यक्ष महोदय, संवेदना की बात मैंने इसलिए कही कि एक भी आपकी पार्टी के न जिम्मेदार पदाधिकारी गये हैं और न कार्यकर्ता गये हैं और न उस पीडित परिवार से मिले, इसलिए मुझे यह कहना पड़ा।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, आपकी बात हो गई। अनिला जी।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं भी उसी बात को बोल रही हूं। पर आदरणीय उप मुख्यमंत्री जी बोल रहे हैं कि हम लोग 4 साल से 5 साल से परेशान हैं, आप एक बहुत जिम्मेदार पद में बैठे हैं तो यह कहना भी ठीक नहीं है, पर यहां आपके और हमारे आदरणीय सहृदय मुख्यमंत्री जी भी बैठे हैं और होम मिनिस्टर भी बैठे हैं, हमारे सभी वरिष्ठ मंत्रिगण बैठे हैं तो इसे बहुत संवेदनशील मानते हुए केवल उस परिवार को राहत राशि देने की मांग हम लोगों ने और हमारे कुंवर सिंह निषाद जी ने की है तो आप यहीं बैठे हैं, यदि आप यहीं घोषणा कर देते तो पूरे प्रदेश के लिए एक उदाहरण बन जाता। ये आपके माध्यम से हम लोग निवेदन करना चाह रहे हैं।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय मुख्यमंत्री जी..।

समय :

12.24 बजे

<u>नियम 267 "क" के अधीन शून्यकाल की सूचनाएं</u>

अध्यक्ष महोदय :- निम्नलिखित सदस्य की शून्यकाल की सूचना सदन में पढ़ी हुई मानी जायेंगी तथा इसे उत्तर के लिये संबंधित विभाग को भेजा जायेगा :-

1. श्री अजय चन्द्राकर
2. श्रीमती गोमती साय

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने माननीय मुख्यमंत्री जी निवेदन किया था, वे सदन में घोषणा कर दें। यह मेरा यह आग्रह है।

अध्यक्ष महोदय :- आपका आग्रह हो गया।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी से निवेदन करना चाहूंगा कि वे सदन में घोषणा कर दें।

अध्यक्ष महोदय :- वित्तीय वर्ष 2024-2025 के आय-व्ययक पर सामान्य चर्चा। श्री कुंवर सिंह निषाद जी, अपनी बात प्रारंभ करेंगे।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

समय :

12.25 बजे **वित्तीय वर्ष 2024-25 के आय-व्ययक पर सामान्य चर्चा (क्रमशः)**

श्री कुंवर सिंह निषाद (गुंडरदेही) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं, प्रस्तुत् आय-व्ययक के विरोध में अपनी बात रखने के लिए खड़ा हुआ हूं । इस विषय पर बहुत से साथियों ने विज़न को लेकर, छत्तीसगढ़ की परिकल्पना को लेकर, उसे संवारने को लेकर अपनी बातें रखी । इस आय-व्ययक में बहुत बढ़िया-बढ़िया सपने दिखाए गए । जिसमें मुंगेरीलाल के हसीन सपने भी दिखे । आदरणीय वित्तमंत्री श्री ओ.पी.चौधरी जी ने GYAN को थीम बनाकर अपना विज़न प्रस्तुत किया । इन सारी चीजों को देखकर लगता है कि जनता को केवल छलने का काम किया गया है । मैं छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा प्रस्तुत बजट 2024-25 के विरोध में बोलने के लिए खड़ा हूं । बजट में ऐसा कुछ भी प्रतीत नहीं होता जिससे छत्तीसगढ़ की जनता को, छत्तीसगढ़ के अंतिम छोर के व्यक्ति को धरातल पर तात्कालिक लाभ मिल सके । अध्यक्ष महोदय, हमारे काबिल वित्त मंत्री आदरणीय चौधरी साहब आई.ए.एस. अफसर रहे हैं । उन्होंने सरकार का बजट बनाया है, मुझे नहीं मालूम कि बजट प्रस्तुत करने में पूर्व में माननीय मुख्यमंत्री जी ने उसे पढ़ा है या नहीं । यह बजट सरकार चलाने का बजट है या किसी कार्पोरेट ऑफिस खोलने का प्लान है ? जनता के दैनिक जीवन से जुड़ी एक भी योजना का समावेश बजट में नहीं है । अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से जानना चाहूंगा कि 18 लाख प्रधानमंत्री आवास की जो घोषणा आपने की है । कांग्रेस शासनकाल में साढ़े सात लाख आवास की राशि जारी हो चुकी है, जो कि अधूरे पड़े हैं। आपने जो 18 लाख आवास की घोषणा की है, क्या वह साढ़े सात लाख भी उसमें शामिल है या फिर उस साढ़े सात लाख के लिए राशि अलग से देंगे ? आपकी सरकार के कार्यकाल का 2 माह से अधिक का समय हो चुका है । मोदी जी की गारंटी धरातल पर नहीं, केवल कागजों पर देखने को मिल रही है । अध्यक्ष महोदय, प्रदेश में मादक पदार्थों की तस्करी लगातार बढ़ रही है । स्वयं मेरे विधान सभा क्षेत्र में लगातार अवैध शराब बिक्री की कार्यवाही हो रही है । हत्या, बलात्कार की घटनाएं हो रही है, राजधानी में सूदखोरों की प्रताड़ना से आम गरीब आहत हैं । अध्यक्ष महोदय, इस बजट में युवा बेरोजगारों की बेरोजगारी भत्ते पर कोई बात नहीं कही गई है । युवाओं को आपने सपने दिखाए थे और वे सपने शायद उन्हें लग रहा है कि ये मुंगेरी लाल के हसीन सपने थे । ये बेरोजगार जो चार महीने से भत्ता ले रहे थे, अभी तक उनके खातों में एक भी रूपया नहीं गया है तो युवाओं में शासन के प्रति रोष भी है और आक्रोश भी है। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से निवेदन करना चाहूंगा कि बजट में संशोधन कर युवाओं के हित में बेराजगारी भत्ता देने में आप जरूर पहल करेंगे, मेरी ऐसी उम्मीद है। जिस ज्ञान की बात हमारे आदरणीय काबिल वित्त मंत्री जी ने की है, मैं इन पंक्तियों के

माध्यम से यह कहना चाहूंगा, आपका विजन, आपकी सोच, यह कहां तक कार्यरूप में परिणित होंगी, यह तो नहीं कह सकता लेकिन फिर भी यह कहना चाहूंगा कि :-

जख्म सीने से अब क्या होगा, राय दे देने से अब क्या होगा।

सियासत की लाश बदबू देती है, कफन बदल देने से क्या होगा।। (मेजों की थपथपाहट)

श्री अनुज शर्मा :- सुनिए साहब।

बहुत कुछ जान के जाना है तुमको, बड़ी मुश्किल से पहचाना है तुमको।

मुझे जो तुम समझते हो, गलत है, किसी दिन ये भी समझाना है तुमको।। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- दोनों एक दूसरे को ठीक से समझ लीजिए।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- अनुज भाई। हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए।

श्री अनुज शर्मा :- पुराना है।

श्री राजेश मूणत :- यह बहुत पुराना है।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- मैं इसका जवाब दे रहा हूं।

हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए,

इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए

आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी,

शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गांव में,

हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,

सारी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,

हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए। (मेजों की थपथपाहट)

श्री अनुज शर्मा :- अध्यक्ष जी, इतना बस कहूंगा,

गुरू बनाए जान के, पानी पीये छान के। (मेजों की थपथपाहट)

गृह मंत्री (श्री विजय शर्मा) :- माननीय अध्यक्ष जी,

तू इधर उधर की न बात कर ये बता काफिला कैसे लूटा।

मुझे रहजनों से गिला तो है, तेरी रहबरी का सवाल है।।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष जी, वहां बुरा हाल क्यों हुआ है, मैं आपको बता देता हूं।

99 के फेर में अटके रहे।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

मलाई की राह में भटके रहे।।

अब मलाई की राह में भटकते रहोगे तो यह हाल तो होगा ही ना। सब लोग तो रसमलाई खा रहे थे। (मेजों की थपथपाहट)

श्री अटल श्रीवास्तव :- अध्यक्ष जी, आदरणीय धर्मजीत जी के लिए एक शेर है।

मैं तो अपने वादों पर अटल हूं।

मैं वो तेरा दिल नहीं जो बदल जाऊं। (वाह-वाह की आवाज)

श्री सुशांत शुक्ला :- अध्यक्ष जी, नवाज देवबंदी कहते थे,

जलते घर को देखने वालों, फूस का छप्पर आपका है।

आपके पीछे तेज़ हवा है, आगे मुकद्दर आपका है।।

उस के क़त्ल पे मैं भी चुप था, मेरा नम्बर अब आया।

मेरे क़त्ल पे आप भी चुप है, अगला नम्बर आपका है।। (मेजों की थपथपाहट)

श्री धर्मजीत सिंह :- अटल जी, एक आपके लिए शेर है। मैं अटल जी की बात का जवाब दे रहा हूं।

श्री रामकुमार यादव :- भैया, एक आपके लिए शेर है। मैं आपके लिए शेर कहता हूं। ऐसा नहीं है कि मुझे शेर नहीं आता है।

श्रीमती अंबिका मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ऐसा लग रहा है कि सदन में कवि सम्मेलन हो रहा है। (हंसी)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- अभी रहा ना, एक से सेक करवा थों।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- माननीय अध्यक्ष जी, राज्योत्सव में बाहर से कवि बुलाने की आवश्यकता नहीं है। खुशी इस बात की है कि यहां पर हमारे विधायक साथी कवि के रूप में आए हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप उनको बोलने दीजिए।

अध्यक्ष महोदय :- अभी बहुत लोग हैं। रामकुमार जी, आप संक्षिप्त में अपनी बात कहिये।

श्री रामकुमार यादव :- जी। माननीय अध्यक्ष महोदय, यह लाइन हमारे ठाकुर साहब के लिए है - आछे दिन पाछे गए, गुरू सों किया न हेत। यह उधर चले गये हैं इसलिए मैं कह रहा हूं। यह कुछ बनेंगे करके उधर चले गये थे। अब पछताए होत क्या, ऐती मंत्री बनगे, चिड़िया चुग गई खेत। (हंसी)

श्री अनुज शर्मा :- आप सुनौं - जनम के मुरहा, करम के हीन। जइसे-तइसे कट गे दिन।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय -

मुझमें भी कमियां हैं, क्योंकि मैं भगवान नहीं हूं।

वायदा करूं और भूल जाऊं, ऐसा मैं इंसान भी नहीं हूं। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, आप लोगों ने वायदा किया और लोगों को धोखा दिया। हम लोग ऐसा नहीं करते हैं। हम भगवान नहीं बनते हैं। आप तो भगवान बन गये थे। आप वहां पर ऐसी भाषा में बात नहीं करेंगे तो क्या करेंगे ?

संसदीय कार्य मंत्री (श्री बृजमोहन अग्रवाल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज इतने सारे शेर आ गये हैं। लोग तो डर जाएंगे। (हंसी)

श्री अटल श्रीवास्तव :- माननीय वित्त मंत्री जी ने तभी बघवा प्रोजेक्ट रखा है।

अध्यक्ष महोदय :- कुंवर सिंह निषाद जी।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सारे सदस्यों ने अपनी बातें कविता के माध्यम से कही तो मैं उनको यह कविता समर्पित करना चाहूंगा -

सूरज, सितारे, चांद मेरे साथ में रहें।

जब तक ये हाथ, मेरे हाथ में रहें।

शाखों से टूट जाएं, वो पत्तें नहीं हैं हम।

आंधियों से कोई कह दे, औकात में रहें। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, इन्होंने ज्ञान को जिस तरीके से परिभाषित किया है। मोदी जी की विजनरी बोलकर भा.ज.पा. सरकार 4 स्वरूपों में देखती है। गरीबों, युवाओं, अन्नदाता और नारी, इन सभी को इस सरकार ने ठगा है। गरीबों के लिए कोई विजन नहीं है। किसी स्पष्ट योजना का उल्लेख नहीं है, जिससे गरीबों का कल्याण हो सके। युवाओं के लिए इनकी सोच दर्शाता है कि बेरोजगारी भत्ता का कोई जिक्र नहीं है। आप यह बता दें कि कब तक देंगे ? आपने स्किल डेव्हलपमेंट के माध्यम से रोजगार की संभावना की बात की है। ऐसे जितने भी जिले हैं, जहां पर आप संभावनाओं की तलाश करेंगे, वहां आपकी सरकार ने न ही एक भी नवीन कॉलेज के लिए प्रस्ताव किया है, न ही I.T.I. के लिए प्रस्ताव किया है और न किसी अन्य चीज के लिए प्रस्ताव किया है तो फिर आपके सपने कैसे पूरे होंगे, जिनके लिए आपने एक सोच रखी है ? यदि आज अन्नदाता खेतों में फसलें उगाना बंद कर दे तो चारों तरफ हाहाकार मच जाएगा। यह वही अन्नदाता है जो पसीना गारकर धूप, बरसात और ठण्ड में मेहनत करते हैं और खेत में फसल उगाते हैं, तब हम अपने बच्चों को दो वक्त का भरपेट भोजन दे पाते हैं। अन्नदाताओं के लिए आपके पास। माननीय मंत्री जी यहां पर नहीं हैं। उन्होंने सार्वजनिक मंच से घोषणा की थी कि सरकार आने के बाद हम 2-2 लाख रूपये तक का कर्जा माफ करेंगे। आपके घोषणा पत्र में ये बातें स्पष्ट रूप से नहीं आ रही हैं। आपने प्रदेश के उन किसानों को छलने का काम किया है, जिन्होंने आप पर विश्वास और उम्मीद किया है। आपने अपने घोषणा पत्र के माध्यम से 3,100 रूपये की राशि एकमुश्त पंचायतों के माध्यम से देने की बात की थी। लेकिन अभी तक न ही किसी पंचायत को आदेश

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

हुआ है और न ही शासन स्तर पर इसमें कोई निर्देश जारी हुआ है। मैं माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं कि आखिर उन वायदों पर कब तक अमल होगा ?

समय :
12.40 बजे **(सभापति महोदय (श्री प्रबोध मिंज) पीठासीन हुए)**

माननीय सभापति महोदय, आपने नारी शक्ति को भी छलने का काम किया है। आपने महतारी वंदन योजना के नाम से सालाना 12,000 रूपये देने का वायदा किया था। आपने कहा था कि प्रत्येक महिला को मिलेगा। उस समय उसमें क्राइटेरिया नहीं थी। हमारे उपमुख्यमंत्री जी ने बहुत सी सभाओं में कहा है, उनका वीडियो भी वायरल हो रहा है । उन्होंने कहा है कि कलेक्टर की पत्नी और स्वयं मेरी पत्नी को भी इसका लाभ मिलेगा, ऐसा उल्लेख उन्होंने किया है । लेकिन अभी आप फार्म भरवा रहे हैं, उसमें दुनिया भर के अड़गे लगवा रहे हैं, दुनिया भर के डाक्यूमेंट मांगे जा रहे हैं । महिलाएं परेशान हैं तो उस पर भी आपकी स्पष्ट नीति समझ में नहीं आ रही है, सब फार्म के चक्कर में भटक रहे हैं ।

माननीय सभापति महोदय, मैं उस समाज से आता हूं, उस वर्ग से आता हूं, जहां मछली मारना, मत्स्य खेट करना हमारा पुश्तैनी काम है, लेकिन मैं माननीय वित्त मंत्री जी से निवेदन करना चाहूंगा कि आपने प्रधानमंत्री मद समता योजना से केवल कोरबा के सतरेंगा में एक्वापार की घोषणा की है, मैं स्वयं मत्स्य कृषक हूं । मैं अपने आप के लिए आपको देखूं तो एक छोटे और सामान्य कृषक के लिए आपकी सरकार ने बजट में कोई प्रावधान नहीं किया है, आपने सतरेंगा के एक्वागार्ड के लिए बजट में केवल 5 करोड़ रूपए की बात कही है । प्रदेश में 24-25 लाख मछुआरे परिवार हैं, जिनकी उम्मीद, जिनकी आस इस सरकार से है । सरकार से उनको बहुत सी सुविधाएं दी जाती थीं । मछली का बीज दिया जाता था, चारा दिया जाता था, जाल दिए जाते थे, आईस बैग दिए जाते थे, सायकल एवं मोटर सायकिल दिए जाते है, फोर व्हीलर दिए जाते है, लेकिन आपके बजट में न कोई उल्लेख है, न प्रावधान है। मैं आपसे जानना चाहूंगा कि पिछली सरकार ने हमारी मांग पर मछली पालन को कृषि का दर्जा दिया था, उसके हिसाब से, कृषक के हिसाब से उन परिवारों को जो लाभ और सुविधाएं दी जानी चाहिए, इस संबंध में भी यहां पर कोई उल्लेख नहीं किया गया है । मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि इसमें संशोधन कर मछुआरों के लिए भी इस बजट में प्रावधान रखा जाये ।

माननीय सभापति महोदय, छत्तीसगढ़ के साथ-साथ देश विदेश में भी बड़ी-बड़ी बातें हुईं । इनकी सरकार ने युवाओं को ठगने का काम किया, 15-15 लाख देने की बात कही, 2 करोड़ युवाओं को नौकरी देने की बात कही । छत्तीसगढ़ की जनता पूछती है कि उनके खाते में 15-15 लाख रूपए कब आएंगे, रोजगार का पिटारा कब खुलेगा, ताकि भविष्य के नौजवान जो सपने संजोए हैं, जो नौकरी नहीं लग पाने के कारण शादी नहीं हुई है, वे आज 28, 30, 32, 35 साल के हो गए हैं, उनके लिए जब कोई लड़की

देखते जाते हैं तो परिजन पूछते हैं कि लड़का क्या कर रहा है ? वह कोई जवाब नहीं दे पाते। देश को लूटकर भागने वाले नीरव मोदी और विजय माल्या जैसे लूटेरों पर सरकार कब कार्रवाई कर रही है, यह बता दीजिए । छोटी-छोटी जानकारी के लिए आप यहां पर बातें करते हैं, लेकिन देश के हित पर गंभीर क्यों नहीं हैं, हमें इस पर भी बात करने की जरूरत है ।

मानननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय वित्त मंत्री जी से निवेदन भी करना चाहूंगा कि मैंने अपने विधान सभा क्षेत्र के लिए बहुत प्रस्ताव दिए हैं, लेकिन उन प्रस्तावों पर न ही कोई गौर किया गया, न ही उसमें कोई अमल किया गया, न ही बजट में कोई प्रावधान किया गया है । मेरे काबिल दोस्त भाई अनुज शर्मा यहां पर नहीं हैं । छत्तीसगढ़ की संस्कृति का यहां के जनजीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। जो सम्मान पूर्ववर्ती सरकार के समय छत्तीसगढ़ की परम्परा, संस्कृति, बोली, खान-पान को महत्व मिला था, मुझे आज ऐसा नहीं लगता है। जरूर छत्तीसगढ़ की संस्कृति बोली-भाषा में परिवर्तन हो सकता है, बस्तर से लेकर सरगुजा तक, मानपुर-मोहल से लेकर रायगढ़ तक बोली-भाखा मा परिवर्तन हो सकत हे, संगीत में अलग अलग भाव आ सकत हे, लेकिन मैं एक चीज कहना चाहूं कि गरियाबंद एक ऐसे सुदूर अंचल हे, जहां आदिवासी ज्यादातर कमार और भुजिया के संस्कृति ला सबसे पहली छत्तीसगढ़ ही नहीं, देश के पटल मा लाय के कोई काम करय तो आज जरूर वह हमर बीच जीवित नइ हे, वो हे स्व. मिथलेश साहू जी, ओ तरफ भी आप मन ला पता होही। कमार, भुजिया जनजाति के संस्कृति ला पूरा देश के मानचित्र मा लायके काम करे हे। लेकिन जो कमार परियोजना चलत रहिस हे, आज वो कहीं न कहीं धरातल मा नइ दिखत हे। आज वो जनजाति अपन मूल संस्कृति ला छोड़ के जीन्स, टी-शर्ट मा आ गय हे तो हमन ला वो जनजाति के संरक्षण करना बहुत जरूरी हे। नहीं तो ऐसे मत हो कि 5 साल, 10 साल बाद कते कमार हे, कते भुजिया हे, खोजे बर मत परय, बीच मा ओखर मन के प्रदर्शनी लगाय के जरूरत मत पड़ जाय। काबर के समाज के जो संस्कृति हे, जेन परम्परा हे, ये अलग हे। चाहे ओखर बिहाव के हो, चाहे ओखर दु:ख के परम्परा हो या अन्य समारोह के बात हो, मैं बहुत करीब से देखे हव। मोर लगभग 15 से 20 साल कला यात्रा गरियाबंद के आसपास पूरा गुजरे हे। एक समय ऐसे रहय कि जब हमन जान तो आसपास के गांव मन मा बिजली के व्यवस्था नइ रहय तो सेल वाला रेडियो ला धरे रहन, टून इन वन मा रिकार्ड करन, तब आज आप मन गाना ला सुनथव, ओ जो विशुद्ध छत्तीसगढ़ी जेकर दो लाईन मैं ये सदन मा समर्पित करना चाहव। ओ डहार जब बर-बिहाव होय तो ओ गाना, माननीय अजय भईया भी ला पता होही, छत्तीसगढ़ी संस्कृति गरियाबंद तरफ जेन कमार, भुजिया मन रात के जेन गाना गाय, बगैर बिजली के जन बरबस उनखर मुंह से गीत निकलय, ओला मैं बताना चाहूं :-

" आगी ला उठा धर भाचा, चल मोर संग सोय ला,
ओ माचा ले गिर परे दूनू ममा भाचा,

तै धरबे डोरी, मै धरहू डोरी।"
ओ जोरी ले चल मिले जावर जोरी,
जरा सावन होरी, मन ला मिलाबो जावर जोरी।"

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, मेरा पाईण्ट आफ आर्डर है।

सभापति महोदय :- निषाद जी, गाने के माध्यम से, कविताओं के माध्यम से कह सकते हैं।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- सभापति महोदय, मैं आदिवासी संस्कृति के पहचान, ओखर संस्कृति ला बताना चाहत हव।

श्री अजय चन्द्राकर :- एक मिनट भईया, मेरा पाईण्ट आफर स्वीकार किया गया है। कुंवर सिंह, आप बैठ जाईये। आप बैठ तो जाईये, मेरा पाईण्ट आफ आर्डर सुन तो लीजिये।

सभापति महोदय :- निषाद जी, गानों के माध्यम से, कविताओं के माध्यम से आप कह सकते हैं ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- यह हमारी संस्कृति की पहचान है, मैं उसे बताना चाहता हूँ सभापति महोदय ।

श्री अजय चन्द्राकर :- मेरा पाईन्ट ऑफ आर्डर स्वीकार किया है । बैठ तो जायें । पाईन्ट ऑफ आर्डर तो सुन लीजिए । सभापति महोदय, किसी कहानी, कविता, गायन को पढ़ लेना, जैसे बजट भाषण में पढ़ा है माननीय वित्त मंत्री जी ने। लेकिन ऐसा गायन, जिस गायन की यह प्रस्तुति कर रहे थे, क्या इसको विधान सभा में अनुमति दे दी गई है ? इस संबंध में यदि अनुमति नहीं है या स्थायी आदेश में शामिल नहीं है या परम्पराओं में शामिल नहीं है, नियमों में शामिल नहीं है, इस तरह की अभिव्यक्ति कैसे हो रही है, इस पर व्यवस्था देने का कष्ट करें ?

सभापति महोदय :- निषाद जी, मैंने आपको टोका था । गाने के माध्यम के अलावा आप दूसरे रूप में भी अपनी बात को कह सकते हैं ।

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति महोदय, विधान सभा भवन को भी मुख्यमंत्री निवास समझ लिये हैं । वहां भी [xx] वगैरह होता था । यह विधान सभा है, मुख्यमंत्री निवास नहीं है भई ।

श्री अजय चन्द्राकर :- व्यवस्था तो आनी चाहिये ? उनका भाषण निरन्तरता में है । अभिव्यक्ति उनहीं के द्वारा हो रही है । यदि आप व्यवस्था नहीं देंगे तो फिर उसी तरह की अभिव्यक्ति होगी । अभी मैंने थोड़ी देर पहले उदाहरण दिया था, जब मेरा प्रश्न था, उस समय । यह नई-नई चीजें शुरू हो रही है । चूंकि उसकी भाषा निरन्तरता में है, इसलिये आपकी व्यवस्था तत्काल आनी चाहिये । यह आपसे आग्रह है । आप कहिये कि तब तक वह अपना भाषण आगे न बढ़ायें । यदि व्यवस्था नहीं आयेगी तो फिर उसी तरह की बात होगी ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सभापति महोदय :- इस पर विचार होगा । मैंने निर्देश किया है कि गायन के माध्यम से जो परम्परा नहीं रही है, वह अपनी बात को आगे रखे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, आप पहली बार आसंदी में है, आप पहली बार निर्वाचित हैं, मैं आपकी योग्यता पर कोई प्रश्नचिन्ह नहीं उठा रहा हूँ, चूंकि भाषण निरन्तरता में है, इसलिये तत्काल उस पर व्यवस्था देने का कष्ट करें।

श्री भोलाराम साहू :- माननीय सभापति महोदय, शेर-शायरी उधर से चालू हुआ है ।

श्री राघवेन्द्र सिंह :- सभापति महोदय, मेरी एक आपत्ति है । अभी एक सदस्य के द्वारा यह कहा गया कि मुख्यमंत्री निवास में [xx]। यह घोर आपत्तिजनक है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- एक पैसे आपत्तिजनक नहीं है । मुख्यमंत्री निवास में हुआ है ।

श्री राघवेन्द्र सिंह :- महिला विधायकों को टारगेट करके बोला जा रहा है कि [xx] हुआ है, यह कैसे आपत्तिजनक नहीं है ? (व्यवधान)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- अगर छत्तीसगढ़ की संस्कृति नहीं बोली जायेगी (व्यवधान)

सभापति महोदय :- बैठिये । (नारे लगाये गये ।) बैठिये, शांति रखिये । सदस्यगण, कृपया बैठे, शांति रखें । सुशांत जी, शांत रहें । देखिये, मैं खड़ा हूँ, आप सब बैठिये । (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :-कोई त्यौहार या संस्कृति पर बोलना, गम्मत आप लोग कर रहे हैं।

सभापति महोदय :- आप लोग बैठिये ।

श्री अटल श्रीवास्तव :- सभापति महोदय, जैसा कि हमारे सदस्य जी कह रहे थे कि आप लोग [xx] कराये थे, [xx] । आप [xx] को राजयोत्सव में 5 करोड़ रूपये देकर बुलाते हैं । सभापति महोदय, यह छत्तीसगढ़ की संस्कृति है ।

सभापति महोदय :- अटल जी बैठिये ।

श्री धर्मजीत सिंह :- हिन्दुस्तान की कलाकार है । उसको बुला लिये तो कौन सा जुर्म किये ? और बुलायेंगे ।

श्री रामकुमार यादव :- [xx] त कैसे होगे ? सभापति जी के व्यवस्था ला सुनबो ।

सभापति महोदय :- चन्द्राकर जी ने अपनी आपत्ति रखी थी, मैंने आपकी व्यवस्था के प्रश्न को सुन लिया है । मैं इसके पश्चात व्यवस्था दूंगा ।

श्री अजय चन्द्राकर :- सभापति महोदय, मेरा यह कहना है कि माननीय सदस्य का भाषण निरन्तरता में है, पुन: उसी तरह की व्यवहार प्रणाली लगायेंगे ? फिर हमको उदाहरण ...।(व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- सभापति के ऊपर दबाव मत बनाओ भई ?

एक माननीय सदस्य :- सभापति व्यवस्था दे चुके हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं आग्रह कर रहा हूँ । मैं कोई निर्देश नहीं दे रहा हूँ । आपसे आग्रह है कि उसमें तत्काल व्यवस्था आ जाये । चलिये, आप रखते हैं तो लेकिन कुछ बोल देंगे तो फिर वही बात होगी । अभी महिला विधायकों के बारे में बोले तो सही बात पर ये हल्ला करने लगे । मैनपाट महोत्सव में तो पुरूष विधायकों को भी [xx] ।

सभापति महोदय :- चन्द्राकर जी, मैंने आपके प्रश्न को सुना है, मैं आपको व्यवस्था दूंगा। अभी चर्चा हो रही है, चर्चा को चलने दो । (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- मैनपाट महोत्सव में खुले आम दारू परोसी गई । खुले आम दारू परोसी गई ।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- (व्यवधान) आप लोग जगदलपुर में मोदी जी की यात्रा में पूरे युवाओं को शराब पिला रहे थे।

श्री सुशांत शुक्ला :- सभापति महोदय, इसमें हमें आपत्ति है। जो तथ्य नहीं है, माननीय सदस्या गलत बयानबाजी कर रही हैं। गलत बयानबाजी कर रही हैं।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- अच्छा, जब आप करो तो। (व्यवधान) आपको महिलाओं के बारे में बोलते समय लज्जा आनी चाहिए। (व्यवधान)

श्री अटल श्रीवास्तव :- सभापति महोदय, मैनपाट महोत्सव में चन्द्राकर जी क्या कर रहे थे ? (व्यवधान) वे चियर्स कर रहे थे। वे चियर्स कर रहे थे या जांच के हिस्सा थे ?

श्री रामकुमार यादव :- सभापति महोदय, वह नागिन डांस कर रहे थे।

सभापति महोदय :- निषाद जी, आप बोलिये।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय सभापति महोदय, मैंने कुछ पंक्तियों के माध्यम से छत्तीसगढ़ की संस्कृति में प्रकाश डाला तो हमारे काबिल और सीनियर विधायक और पूर्व मंत्री रहे माननीय अजय चन्द्राकर जी ने उस पर घोर आपत्ति की है। मैं भी इसमें व्यवस्था चाहता हूं। यदि एक कलाकार होने के नाते मैंने उस संस्कृति के बारे में दो-चार लाइनें कह दी तो क्या गलत किया ? (मेजों की थपथपाहट) यदि यह सदन में प्रमाणित कर दें कि मैंने गलत किया है तो मैं बैठ जाऊंगा और अपना भाषण बंद कर दूंगा। मैं इसमें आपसे व्यवस्था चाहता हूं।

सभापति महोदय :- निषाद जी, उन्होंने जो व्यवस्था का प्रश्न उठाया, मैंने कहा कि गाने के संबंध में व्यवस्था थी। उन्होंने आपके गाने के ऊपर प्रश्न किया है, मैं इसके बारे में व्यवस्था दूंगा। अभी सदन में आय-व्ययक पर चर्चा का विषय है। आप अपनी बात को रखिये। अभी सूची लंबी है।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- सभापति महोदय, मैं उसी आय-व्ययक के संबंध में बोल रहा हूं। उन्होंने उस आदिवासी संस्कृति के संबंध में बजट में क्या प्रावधान रखा है, मैं उसको बोलना चाह रहा हूं।

सभापति महोदय :- आप कविता के माध्यम से बोल सकते हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री कुंवर सिंह निषाद :- सभापति महोदय, जब तक मैं उस संस्कृति के बारे में नहीं बोलूंगा तो यह सदन उसके बारे में कैसे अवगत होगा ? क्योंकि मैं उस संस्कृति से 20 सालों से जुड़ा हुआ हूं। मुझे पता है कि आज उस संस्कृति की क्या स्थिति है। मेरे दोस्त, भाई अनुज शर्मा जी वहां बैठे हैं, उन्हें भी पता है और वह भी 10-15 सालों तक गरियाबंद में काम किये हैं। वहां कमार जनजाति आज विलुप्त होने की कगार पर है। यदि उसे हम लोग संरक्षित नहीं करेंगे तो उनकी क्या स्थिति हो जायेगी ? मैं उस बारे में आपसे कहना चाहता हूं। यदि एक पंक्ति, एक भाव के माध्यम से उनके बारे में मेरी पीड़ा और संवेदना व्यक्त हो जाती है तो उसमें इनका विरोध होता है। मतलब आप यह नहीं चाहते हैं कि छत्तीसगढ़ की संस्कृति उस पटल पर दिखे और आदिवासी संस्कृति को उनका सम्मान मिले। यह इनकी सोच को दर्शाता है। लेकिन मैं उस फील्ड से, उस संस्कृति से जुड़ा हूं इसलिये मैं हमेशा और बार-बार छत्तीसगढ़ संस्कृति की बात करूंगा, छत्तीसगढ़ की आदिवासी संस्कृति की अस्मिता के बारे में बात करूंगा और उसके संरक्षण की, उसके संवर्धन की बात करूंगा। (मेजों की थपथपाहट) जिसको तकलीफ हो, वह ऑब्जेक्शन करते रहे। लेकिन मैं इनके संरक्षण के प्रति हमेशा खड़ा हूं और खड़ा रहूंगा।

सभापति महोदय :- देखिये, यह बजट का विषय है। आप बजट पर चर्चा करिये।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- सभापति महोदय, मैं बजट पर ही बात कर रहा हूं। मैं यही जानना चाह रहा था कि आपने बजट में उनके लिये क्या प्रावधान किया है।

सभापति महोदय, हम सबको दलगत राजनीति से ऊपर उठकर छत्तीसगढ़ की संस्कृति, परंपरा और संस्कार के बारे में सोचना चाहिए। यदि आपने बजट में प्रावधान किया है तो उसको और बढ़ाकर हम यहां की संस्कृति को कितना आगे बढ़ा सकते हैं, जो हमारे छत्तीसगढ़ का एक विजन हो सके और हम छत्तीसगढ़ की संस्कृति को लोगों को दिखा सके, यह हमारा एक उद्देश्य होना चाहिए। विश्व आदिवासी दिवस के माध्यम से छत्तीसगढ़ की आदिवासी परंपरा को हमने भारत ही नहीं बल्कि विश्व पटल पर, मानचित्र पर लाने का प्रयास किया है। उसमें आपने देखा है कि इस विश्व आदिवासी महोत्सव में हमारे देश के साथ-साथ अन्य देशों की आदिवासी संस्कृति भी देखने को मिली है। हमें निश्चित ही यह गर्व होना चाहिए कि पूरा हिंदुस्तान नहीं बल्कि पूरे विश्व में आदिवासी संस्कृति की अपनी एक अलग छाप है, उनका एक अलग महत्व है।

माननीय सभापति महोदय, मैं आदरणीय वित्त मंत्री जी से यह आग्रह और निवेदन करना चाहूंगा कि आपने इस बजट में मैदानी क्षेत्र को छोड़ दिया। आपने सरगुजा और बस्तर पर फोकस किया है लेकिन आपने मैदानी क्षेत्रों में कहीं-कहीं पर जो बजट प्रावधान किया है, वह केवल ऊंट के मुंह में जीरा है। सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से कहना चाहूंगा कि थोड़ा-सा भेदभाव खत्म करके सर्वांगीण विकास की सोच को, परिकल्पना को धरातल पर लाने का प्रयास करें क्योंकि वहां की जनता ने भी आपको वोट दिया है। आपकी जिम्मेदारी उसकी भी जवाबदेही की बनती है। आने वाले

समय में लोक सभा का चुनाव है। इसके मद्देनजर मैं आपसे चाहूंगा कि आप मेरी बातों को गंभीरतापूर्वक विचार कर एक बार फिर अपने बजट के पन्ने को पलटकर कहां पर संशोधन कर सकते हैं और कहां पर कौन-सी योजनाओं को लागू कर सकते हैं, इनके बारे में जरूर विचार कीजिये।

समय :

1:00 बजे

माननीय सभापति महोदय, मैं ज्यादा नहीं कहना चाहूंगा। मैं केवल यही कहना चाहूंगा कि मेरे विधान सभा क्षेत्र में मैंने जो प्रमुख कार्य बजट में स्वीकृति के लिए दिये थे जब पूर्व में भारतीय जनता पार्टी की सरकार थी तो उस समय तात्कालीन मुख्यमंत्री, वर्तमान में अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह जी हैं उन्होंने मेरे विधान सभा क्षेत्र में दो-तीन घोषणाएं की थी। डॉ. रमन सिंह जी जब वह मुख्यमंत्री हुआ करते थे तब मैंने उनकी घोषणा को अमलीजामा पहनाया था और मैंने वहां पर कुछ स्कूलों का उन्नयन करवाया था। यह उनका एक विजन था, उनकी सोच थी कि कभी हमने भेद-भाव करने का प्रयास नहीं किया। क्योंकि पूर्व मुख्यमंत्री जी की घोषणा थी, मैंने उस घोषणा को पूरा करवाया था। मेरा, आपके माध्यम से माननीय वित्त मंत्री से निवेदन है कि पूर्व मुख्यमंत्री जी की घोषणा थी कि उसे शासकीयकरण किया जायेगा। मेरे यह जो 50 से 55 सालों से भाठागांव का जो स्कूल हैं उसे समिति संचालित कर रही है। वहां के स्कूल सरकार के द्वारा अनुदान प्राप्त है और जो पैरी का स्कूल हैं पूर्व मुख्यमंत्री जी के द्वारा शासकीयकरण की घोषणा की गई थी, उसे आप इस बजट में शामिल करें। वहां की जो जनता है उनकी अपेक्षाओं को जरूर पूरा करने का प्रयास करेंगे और साथ ही पूर्व में पैरी में शासन स्तर पर केन्द्रीय विद्यालय खोलने की अनुमति हो चुकी है। वहां जमीन का चिन्हांकन हो गया, मैंने सरकार को 10 एकड़ जमीन दे दी है। इसका प्रस्ताव भी हो चुका है और इसमें इश्तिहार भी हो चुका है। मैं उसमें भी निवेदन करना चाहूंगा कि इसमें केवल आपको स्वीकृति देनी है।

सभापति महोदय :- माननीय निषाद जी, आपको 35 मिनट हो चुके हैं।

श्री कुंवरसिंह निषाद :- माननीय सभापति महोदय, मैं आपसे केवल 5 मिनट का समय और लूंगा।

माननीय सभापति महोदय, एक तो हमन ला ले देकर बोले बर मिलथे। ओकर बाद काली सब आधा-आधा घण्टा बोलिस हे तो मोरो जिम्मेदारी हे।

सभापति महोदय :- अभी बहुत लोग बाकी हैं।

श्री कुंवरसिंह निषाद :- माननीय सभापति महोदय, अब हमर प्रमुख मन नइ हे तो ऊकर जगह में हमन हन।

माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय वित्त मंत्री जी से आग्रह करना चाहूंगा कि मेरे विधान सभा क्षेत्र में जो कुछ प्रमुख मार्ग हैं जो बहुत ही जायज है और उस मार्ग से 4 से

5 गांव जुड़ता हैं और दो तीन विधान सभाओं को भी जोड़ता है यह दुर्ग ग्रामीण, पाटन और गुन्डरदेही को भी जोड़ता है। उसमें अर्जुनी से गोरकापार सुखरी मार्ग है, डोंगीतरई से भटगांव और कलनपुर मार्ग और देवरी से खपराभाट मार्ग है तथा खल्लारी से मुंदेरातवेर मार्ग है। पिनकाराम से महराजपुर मार्ग, शिकारीटोला से भेंड़ी मार्ग और रेहची से चंदनबिरी मार्ग हैं। यह महत्वपूर्ण मार्ग हैं जो दो तीन विधान को जोड़ता है जहां की जनता को इसके लिए 7 या 8 किलोमीटर घुमकर जाना पड़ता है। भरदा (ट) जो आपके रोड जेवरतला के बाद इधर से राजनांदगांव विधान सभा और इधर से गुन्डरदेही विधान सभा को जोड़ता है। यह पुल दो-दो विधान सभा क्षेत्र को जोड़ता है, मैंने उसके लिए भी प्रस्ताव दिया था, लेकिन वह भी बजट में सम्मिलित नहीं हुआ। मैं आपके माध्यम से यह निवेदन करना चाहता हूँ कि बजट में संशोधन कर इसे जोड़े। इसके साथ ही आपने भी महाविद्यालय भवन, नवीन भवन के लिए प्रस्ताव, स्वीकृति दी है। पिछले साल से रोड जेवरतला में महाविद्यालय संचालित हो रहे हैं वह हायर सेकेण्डरी स्कूल के भवन में संचालित हो रहे हैं। मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि इस बजट में उस महाविद्यालय के लिए कोई प्रावधान रखिये। इसके साथ ही मैंने पिनकापार, चौरेल एवं राहुद में नवीन महाविद्यालय भवन के लिए बजट में शामिल करने का प्रस्ताव रखा था, लेकिन वहां एक भी कॉलेज की स्वीकृति नहीं हुई है। इस पर भी विचार करें और मेरे विधान सभा क्षेत्र में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, उप स्वास्थ्य केन्द्र की भी मांग है। पिछली सरकार में स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से देखते हुए, दो-चार उप स्वास्थ्य केन्द्र जरूर बने थे और वहां बहुत से प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों के भवन बन पाये थे, लेकिन इस बार बजट में एक भी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र और उप स्वास्थ्य केन्द्र की स्वीकृति नहीं हुई है। माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से निवेदन करना चाहूंगा कि इसे बजट में जोड़े। साथ ही जो भूमिविहीन, भवनविहीन जो हायर सेकेण्डरी स्कूल संचालित हो रहे हैं, मैं माननीय मंत्री जी से आग्रह करना चाहूंगा कि ऐसे 5 हायर सेकेण्डरी स्कूल भवन हैं जो आज भी जर्जर हालत में है। हमने पूर्व सरकार के माध्यम से व्यवस्था के तहत 4-4, 6-6 कमरे बनवाएं हैं, लेकिन वहां दर्ज संख्या के आधार पर इतने कमरे पर्याप्त नहीं है। वहां भरदाकला, कांदुल, भीमकन्हार, डोंगीतराई, पिनकापार का बजट में कोई प्रावधान नहीं है, मैं कहता हूँ कि इसे भी बजट में जोड़ें।

सभापति महोदय :- माननीय निषाद जी, इसके बाद भी लगातार हर विभाग की चर्चा का समय आएगा। आप उसमें अपनी बात विभागवार रख दीजिएगा।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय सभापति जी, एक और निवेदन करना चाहूंगा। बालोद जिला कृषि प्रधान जिला है। वहां पर पूर्व सरकार के माध्यम से परियोजनाएं संचालित हैं, उसमें निर्माण कार्य चल रहे हैं। यदि उन सिंचाई परियोजनाओं को थोड़ा सा बढ़ाकर विस्तार करने का काम हो जाये, भेड़ी उद्वहन सिंचाई योजना से 03 गावों को लाभ मिल सकता है। मैं आपके माध्यम से निवेदन भी करना चाहूंगा भेड़ी उद्वहन सिंचाई योजना का विस्तार कर उसे मुड़खुसरा, डेंगरापार एवं अहिवारा नवागांव में

जोड़ा जाये ताकि वहां के किसानों को सिंचाई का लाभ मिल सके। माननीय सभापति महोदय, छत्तीसगढ़ की सरकार ने जो बजट में प्रावधान रखे हैं, कहीं न कहीं उस बजट में भेदभावपूर्ण बातें रखी हैं। मैं इस बजट का विरोध करते हुए अपनी बात को यहीं पर समाप्त करता हूं। माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री पुन्नूलाल मोहले (मुंगेली) :- माननीय सभापति महोदय, माननीय वित्त मंत्री जी द्वारा प्रस्तुत किये गये 2024-25 के बजट भाषण का समर्थन करता हूं। मैं कुछ बातें ही कहना चाहूंगा। माननीय वित्त मंत्री जी ने गरीब, मजदूर, किसान और जवान के लिए बजट में प्रावधान किया है, जो गरीब परिवार, मजदूर, किसान, युवाओं के लिए कल्याणकारक है। माता-बहनों के लिए भी उन्होंने ऐसी योजना का प्रावधान किया है जो सराहनीय है। पूर्व में हमारी सरकार नहीं थी। उसके पहले भारतीय जनता पार्टी के नेताओं के द्वारा घोषणा-पत्र में घोषणा की गई थी कि अगर भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनेगी तो भारतीय जनता पार्टी की सरकार में महिलाओं को महतारी वंदन योजना के अंतर्गत 1 हजार रुपये प्रति महीने दिया जायेगा। उसमें हमारे माननीय वित्त मंत्री जी ने महतारी वंजन योजना के लिए बजट में 1200 करोड़ रुपये का प्रावधान रखा है। विवाहित महिलाओं को हर महीने 1 हजार रुपये दिया जायेगा और उन्हें 12 महीने में 12000 रुपये मिलेंगे। माननीय मंत्री जी द्वारा इस योजना के लिए जो 1200 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है, इसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूं। जिससे हमारी बहनें स्वावलंबी बनेंगी और अपने परिवार के पालन-पोषण के लिए वह समर्थ होंगी, इससे नारी का सम्मान बढ़ेगा।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय सभापति महोदय, विवाहित महिलाओं के लिए सब चीज है। अभी जस्ट मैं लाइब्रेरी से निकल रही थी तो कुछ कॉलेज की लड़कियां और उनकी शिक्षिकायें आयी थीं। शिक्षिकायें अविवाहित हैं, उसकी उम्र 48 की होगी। उसकी एक मांग थी तो मैं इस सभा के समक्ष रखना चाहती हूं। उसकी एक मांग थी कि विवाहित महिलाओं के लिए योजना है लेकिन जो अविवाहित महिलायें हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- तोला टोके बर मोहले जी ही मिलिस, एकर पहले दूसरा ला नई टोक सकत रहेस।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- अभी सुन के तो आये हौं। सभापति महोदय, मैं सरकार से यह निवेदन करती हूं कि अविवाहित महिलाओं के लिए भी कुछ बजट रहना चाहिए।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय सभापति महोदय, मैं जब-जब खड़ा होता हूं तो क्या बात है मेरी बात में जरूर जवाब देती हैं। (हंसी) उनकी मांग ठीक है, वह अपने भाषण में कहें। जो शिक्षिकायें हैं, वह खुद वेतन पाती हैं। उनको देने की तो मैं आवश्यकता नहीं समझता हूं।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय सभापति महोदय, अभी तो अविवाहित शिक्षिका की बात मैंने बताई है। लेकिन हमारे ग्रामीण क्षेत्र में ही कई अविवाहित महिलायें हैं जो रोजी-रोटी का काम करती हैं, मैं उनके लिए यह बात बोल रही हूं।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय सभापति महोदय, मैं मंत्री तो नहीं हूं। मैं तो भाषण करता हूं। माननीय मंत्री जी इसमें जरूर विचार करेंगे, ऐसी मैं आशा करता हूं।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- आप सीनियर हैं, आपको मंत्री बनाना था।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- क्योंकि जो अविवाहित महिलायें हैं, उसके बारे में भी कुछ विचार करेंगे। अभी तो पहला बजट है, आगे आने वाले बजट में जरूर सोचेंगे।

श्री रामकुमार यादव :- बबा, हमर चाहत रहेन कि तैं मंत्री बन, लेकिन आने ला लूहूट गे, का करबो।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- हम ला उम्मीद रहिस कि आप मंत्री बनहू।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- मुझे देखकर आपको कैसा लगता है? माननीय सभापति जी, दूसरी बात है कि हमारी माननीय विष्णुदेव जी की सरकार ने क्या काम किया। लोगों को यह विपक्ष की सरकार जो नहीं दे पाई, 05 साल तक गरीब लोग देखते रहे, ताकते रहे। जिसकी छत नहीं है, जिनके मकान बने हुए थे, पूर्व में उनके आवास पास थे, उन आवासों की भी यह राशि नहीं दे पाये थे और लोग आवास बनाने के लिये तरस गये थे। आप एक झोपड़ी बनाने के लिए मकान नहीं दे पाए तो हमारी सरकार ने उनको 18 लाख मकान देने की घोषणा की है, उसको पूरा करने के लिए बजट में 8 हजार करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया है, इसके लिए मैं हमारी सरकार को, माननीय मंत्री जी को धन्यवाद देता हूं, जिससे 18 लाख लोगों को लाभ मिलेगा। (मेजों की थपथपाहट) 18 लाख ऐसे लोगों को लाभ मिलेगा, जो मकान के लिए तरस रहे थे। कितने साल तक? वे पांच साल तक उदास थे। उन्हें मिल गया आवास और हमारे मंत्री ने कर दिया पास। इसलिए मैं उनको बहुत-बहुत धन्यवाद दूंगा, बधाई दूंगा। अब उन लोगों में खुशी की लहर है। जब हम गांवों में जाते हैं तो हम देखते हैं कि उनका आवास बनने वाला है। उनको अगले महीने किश्त मिलेगी। पहले इन लोगों ने किश्त को भी रोका था, वह पूर्व किश्त को दिया जा रहा है। उनको आवास प्लस भी दिया जा रहा है। मैं माननीय मंत्री जी से अनुरोध करना चाहूंगा कि ऐसे बहुत से गरीब लोग हैं, जिनके पास सही में मकान नहीं है और वह झोपड़ी में रहते हैं। इस योजना में यदि उनको लाभ नहीं मिला है तो मैं आशा करूंगा कि ऐसे लोगों का नाम आवास प्लस में जोड़ देंगे या अन्य ऐसी योजना बनायेंगे। कम लोग ही बचे होंगे। मुश्किल से 50 हजार या 30-40 हजार लोग होंगे। मैं आशा करूंगा कि ऐसे भी लोगों को मकान दिलाने के लिए सुनिश्चित करेंगे, उनके लिए प्रावधान करेंगे, अपने बजट भाषण कहेंगे। जिससे जो और आम गरीब लोग हैं, गरीब से गरीब लोग हैं, जिसके पास झोपड़ी हैं, सामान्य घर है, दूसरे के घर में रहते हैं। चूंकि उसका सर्वे लिस्ट में नाम नहीं है। पहले आप भाषण में

बोल चुके हैं कि इसको जरूर विचार में रखेंगे या प्रावधान करेंगे, ऐसी मैं अपने भाषण में आपसे आशा करता हूं। वर्ष 2015-2016 का बोनस नहीं देने का आपने बोनस योजना लागू किया और आपने 03 हजार 716 करोड़ रूपये का प्रावधान करके डायरेक्ट उनके खाते में हमारी सरकार ने पैसा जमा कर दी है। (मेजों की थपथपाहट) मैं ऐसे किसानों को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं, बधाई देता हूं। जिससे किसान बहुत खुश हैं। हम लोग सरकार में नहीं थे। क्यों नहीं थे? हमने दो साल का बोनस नहीं दिया था। लोगों को हमारे प्रति नाराजगी हुई। उस नाराजगी को दूर करने के लिए हमारी सरकार ने, हमारी पार्टी ने यह घोषणा की।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- मतलब आप कबूल कर रहे हैं कि आपके साथ नाराजगी हुई थी, इसलिए आप अभी बोनस दे रहे हैं।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- संगीता जी, हमारे सुनते रहिए भागवत गीता जी। सुन ले मेरे संगीता बहन जी, करो कुछ सहन जी। मंत्री जी, मैं आपको धन्यवाद दूंगा। उनको बोनस की राशि मिल गई है, जिससे किसान बहुत खुशी में हैं। वह सरकार को आशीर्वाद दे रहे हैं। मैं हमारे वित्त मंत्री जी को धन्यवाद, बधाई दूंगा एवं माननीय विष्णु देव साय जी के नेतृत्व में हमारी जो सरकार चल रही है, उनको भी धन्यवाद देता हूं। किसान भाईयों के लिए भी घोषणा हुई थी कि किसान भाईयों का प्रति एकड़ 21 क्विंटल धान खरीदा जाएगा और 21 क्विंटल धान सरकार ने खरीदी और 3100 के भाव में समर्थन मूल्य में पेमेंट किया। ऐसे लगभग 22 लाख किसान उसका फायदा ले रहे हैं।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय सभापति जी, अब अगर मैं हा बोलहूं ता आप ज्यादा होवत हे कहूं, लेकिन आप मन 3100 रूपये समर्थन मूल्य देहे के बात कहे रहेओ, लेकिन अभी तक नई देहे हौ। आप मन हमर किसान भाई मन ला धोखा देवत हौ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- यह काम धोखा नहीं है, यह काम चोखा है। हमें मिल गया मौका है और हमने मारा चौका है। (हंसी) (मेजों की थपथपाहट)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- हमर किसान भाई मन ला 3100 रूपये एकमुश्त राशि कब तक मिलही?

श्री पुन्नूलाल मोहले :- किसान नहीं हैं परेशान, विपक्ष के लोग हो रहे हैं परेशान। आपको देना है ध्यान, किसान का बढ़ रहा है स्वाभिमान। स्वाभिमान कैसे बढ़ रहा है? उनको 2206 रूपये के भाव में समर्थन मूल्य मिल गया है। अब फिर से हमारे वित्त मंत्री जी ने बजट में किसान भाईयों के लिए 10 हजार करोड़ रूपये का प्रावधान रखा गया है। वह राशि पास होने के बाद राज्यपाल महोदय के दस्तखत होने के बाद अगले महीने उनको किश्त मिल जाएगा। आप लोग तो किसान भाईयों को झूला-झूला कर पैसा देते थे। आप लोग चार किश्त में पैसा देते थे।

श्रीमती हर्षिता स्वमी बघेल :- माननीय मोहले जी, आप लोगों ने एकमुश्त में समर्थन मूल्य देने की बात कही थी। आप लोगों ने क्यों नहीं दिया है? हमारे समय में तो चार किश्त में दे रहे थे।

श्री पुन्नूकलाल मोहले :- आपकी सरकार ने भी कहा था, आप लोग चार किश्त में बोनस दे रहे थे किस बंदी, आपकी सरकार थी लंदी-फंदी। (हंसी)

श्रीमती हर्षिता स्वमी बघेल :- माननीय मोहले जी, आपकी सरकार ने एकमुश्त राशि देने की बात कही है तो अभी तक 3100 रूपये का समर्थन मूल्य क्यों नहीं दिया गया है?

श्री पुन्नूलाल मोहले :- हम है ही नहीं सुस्त, हम अगले महीने देंगे एकमुश्त। (हंसी) (मेजों की थपथपाहट) सभापति महोदय, हमारी सरकार की हर योजना महिलाओं के उत्थान के लिए है। महिला मितान योजना में हर जगह महिलाओं के लिए भवन बनेगा। महिलाओं का सम्मान बढ़ेगा। अगर मैं दूसरी बात करूं तो माननीय मुख्यमंत्री जी ने बजट में हमारे क्षेत्र मुंगेली जिले में फास्ट ट्रैक कोर्ट की स्थापना के लिए प्रावधान रखा है। इसलिए मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देता हूं, बधाई देता हूं। इन्होंने गिरौधपुरी में भी तीर्थस्थल के लिये राशि का प्रावधान किया है इसके लिये मैं धन्यवाद देता हूं । तीर्थस्थल बनेगा तो लोगों को सुविधा होगी और लोग तीर्थस्थल को देखने जायेंगे । तीर्थस्थल के बढ़ावा के लिये चूंकि जिस तरह अयोध्या में रामलला मंदिर जाने के लिये लोगों के जाने की व्यवस्था की गई है इसके लिये मैं माननीय मंत्री जी को धन्यवाद दूंगा, माननीय वित्तमंत्री जी को बधाई दूंगा । लोग अयोध्या दर्शन के लिये भी जायेंगे । शक्तिपीठ की स्थापना के लिये भी राशि का प्रावधान है । शक्तिपीठ, ठोकेंगे उसकी पीठ, यह है शक्तिपीठ, विपक्ष को नहीं बनना है ढ़ीठ, यह है शक्तिपीठ । (मेजों की थपथपाहट) माननीय सभापति महोदय, माननीय मंत्री जी ने कटघोरा से डोंगरगढ़ तक रेल लाईन के विस्तार के लिये भी प्रावधान रखा है । लोगों को जमीन का मुआवजा देने के लिये प्रावधान रखा है ।

श्रीमती उत्तरी गनपत जांगड़े :- भैया, सारंगढ़ ला घला जुड़वा लूहू ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- जिससे कटघोरा से लेकर डोंगरगढ़ तक आम लोगों को रेल लाईन की सुविधा, आने-जाने की सुविधा, उन्हें नहीं होगी दुविधा । उसके बाद कई लाख लोगों को उससे रोजगार मिलेगा ।

श्रीमती हर्षिता बघेल :- माननीय मोहले जी, वंदे भारत असन तो नइ बना दूहू न । वंदे भारत असन महंगा तो नइ बना दुहू ? कटघोरा से डोंगरगढ़ तक आम जनता बर रइही नहीं ?

श्री पुन्नूलाल मोहले :- आप भी जायेंगी न । हम दोनों चलेंगे न । (हंसी)

श्रीमती हर्षिता बघेल :- आम जनता के थोड़ा ध्यान रखहू ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- आम जनता के लिये रेल लाईन का मतलब ही होता है रेल लाईन बनेगी तो सब लोग रेल में जायेंगे । रोज हमारे इधर क्षेत्र के कटघोरा से लेकर मुंगेली वगैरह, डोंगरगढ़, आपका पंडरिया वगैरह सब । गांव के कई बेचारे लोगों ने रेल लाईन तक नहीं देखी है कि रेल लाईन कैसी होती

है, रेल में चढ़े भी नहीं हैं । बहुत से ऐसे लोग हैं, उनको रेल में चढ़ने की सुविधा होगी । कम खर्च में आयेंगे, वहां के लोग अपना व्यवसाय भी करेंगे ।

श्रीमती उत्तरी गनपत जांगड़े :- बबा, गैस के ला घलो बता दूहू ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- देखिए, गैस मुफ्त में मिल रहा है । हमारे माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी मुफ्त में गैस का वितरण कर रहे हैं । हमारी सरकार में, भारतीय जनता पार्टी के घोषणा-पत्र में था कि 500 रूपये में गैस दिया जायेगा ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय, 500 रूपये में गैस-सिलेण्डर दिया जायेगा लेकिन अभी तक कोई घोषणा नहीं हुई है और आज तक आप लोगों ने कोई भी प्रावधान नहीं लाया है ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- आप मेरी बात सुनते जाईये न ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- ता बता न, कब मिलही ? (व्यवधान)

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय सभापति महोदय, मैं जब भी बोलता हूं तो आप लोग बार-बार मेरी ओर देखती हैं । (व्यवधान)

सभापति महोदय :- माननीय सदस्यगण कृपया सभा की गरिमा का और इसकी परम्परा का ध्यान रखें । सीधे आप लोग न बात करके आसंदी को देखकर बात करें ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय सभापति महोदय, मैं तो आपको ही देख रहा हूं । जब यह मुझे देखती हूं तो मैं क्या करूं ? मुझे उधर भी देखना पड़ रहा है । आप ही बता दीजिये कि जब कोई मुझे ईशारा करेगा तो मैं क्या करूंगा ? (हंसी)

सभापति महोदय :- चलिये ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय सभापति महोदय, 500 रूपये में गैस का प्रावधान किया गया है लेकिन कृपया सभी ध्यान देंगे । माननीय वित्तमंत्री जी हैं, मैं आशा करूंगा कि 1000-1000 रूपये दे सकते हैं, यह 500 रूपये है । मैं ऐसी आशा करता हूं कि देंगे केश, जरूर देंगे केश । मैं निवेदन करूंगा कि इस तरह से पूरे देश में महिलाओं का सम्मान बढ़ाने के लिये राशि भी दी जा रही है, उसे सम्मान निधि भी दी जा रही है उसके बाद यहां तक कि महिलाओं को आगे बढ़ाने के लिये प्रत्येक जिले में महिला सदन, काम हो रहा है दनादन, बनेगा महिला सदन । इसके लिये मैं बधाई देता हूं ।

श्रीमती अम्बिका मरकाम :- माननीय सभापति महोदय, देखिये सदस्य महोदय इधर ही देखकर बात करते हैं ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय सभापति महोदय, मैं आशा करता हूं कि अपने मुंगेली विधानसभा क्षेत्र में चूंकि मैंने देखा कि नये बजट में मुंगेली विधानसभा क्षेत्र के रोड का प्रावधान नहीं है तो मैं चाहूंगा कि बहुत से ऐसे गांव हैं, जो कि रोडविहीन हैं, जो आवागमन की सुविधा से अवरूद्ध हैं । वहां बहुत सारी असुविधाएं हैं इसके लिये मैं यह कहना चाहूंगा कि एक नहर है, रोहरा से चमारी मार्ग,

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

जो कि लगभग 3 किलोमीटर है । मैं ऐसी आशा करता हूं कि आप जरूर प्रावधान करेंगे । जोड़ापुल चारभाठा से जोगीपुल रोहरा तक है उसको भटलीकला से खुर्सी । अनेक वर्षों से चूंकि मैं दो बार और बता दूं कि बजट में यह निकल चुका है, पिछली सरकार में भी प्रावधान था । पिछले समय अपनी सरकार में भी था, चूंकि दो साल के बाद वह बजट से निकल जाता है । मैं माननीय वित्तमंत्री जी से आशा करूंगा, चूंकि बजट में कोई प्रावधान होता है लेकिन उसकी प्रशासकीय स्वीकृति नहीं मिलने के कारण वह लेप्स हो जाता है । मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि उसको 5 वर्ष किया जाये । चूंकि सरकार का कार्यकाल 5 वर्ष का होता है, विधायक लोग भी 5 वर्ष के लिये चुने जाते हैं, पिछले समय जब हम प्राक्कलन समिति की बैठक में थे तब हमने निर्णय भी किया था । मैं आपसे आशा करता हूं कि वित्तमंत्री जी इस बात पर जरूर ध्यान दें जिससे हर समय के बजट को 2-2 साल में बदला जा सके । मैं इस बजट के लिये आशा करूंगा कि कोई भी बजट होता है, बजट में तो बहुत से प्रावधान हो जाते हैं, मैंने अपने कार्यकाल में इतने राजनीतिक अनुभव देखे हैं कि हर कार्य का बजट में प्रावधान हो जाता है, पर बहुत से कार्य बजट में लैप्स हो जाते हैं। मैं माननीय वित्त मंत्री से अनुरोध करूंगा कि कार्यकाल में जो बजट का प्रावधान होता है, दो साल, तीन साल, एक साल में पूरा करें। प्रशासकीय स्वीकृति हो जाये या टेण्डर हो जाये, इस बात को सुनिश्चित करेंगे, जिससे वह पूरा बजट का जो प्रावधान वाला कार्य है, कोई भी कार्य है, किसी भी विभाग का हो, वह होगा और इससे लोगों में उम्मीद जागेगी नहीं तो पूर्व सरकार जो अभी विपक्ष में है, बजट में राशि रख देते थे और एक-एक रूपये टोकन में डाल दिया जाता था और पूर्व सरकार अपना सेखी मारे, इसी कारण अनदेखी में इधर बैठ गये हैं। हमें और अगले समय तक सत्ता में बने रहना है तो इस बात को ध्यान देंगे, मैं ऐसी आपसे आशा करता हूं और ऐतिहासिक स्थल के बारे में कहूं, ऐतिहासिक स्थल के महत्वपूर्ण अभिलेखों को, दस्तावेजों का आपने डिजिटलाइजेशन करने का प्रावधान किया है, जिससे लोगों में उम्मीद बढ़ेगी। शराब की अगर बिक्री में आपने ऑनलाइन और ऑफलाइन, ये करते थे ऑफलाइन, हमारी सरकार ने किया ऑनलाइन, आपने कर दिया साइन, किसी का गडबड़ करेगा तो होगा फाइन, ये है भा.ज.पा. का डिजाइन। (मेजों की थपथपाहट) इसके लिए मैं आप सबको बहुत-बहुत बधाई देता हूं। आपने ऐसा कार्य किया, जिससे सरकार की उपलब्धि बढ़ेगी। मुख्यमंत्री जन पर्यटन योजना में भी आपने राशि दी है। गोंडी भाषा को हिन्दी भाषा में डायवर्ट करने के लिए आपने प्रावधान किया है, इसके लिए मैं धन्यवाद देता हूं। गोंडी भाषा के लिए सॉफ्टवेयर निर्माण के लिए और अन्य छत्तीसगढ़ी बोली के लिए आपने सॉफ्टवेयर निर्माण करके अच्छा एक लाइन की पटरी पर लाया है। उसके लिए मैं धन्यवाद और बधाई देता हूं। अगर गृह विभाग के बारे में कहूं, गृह विभाग में साइबर क्राइम के प्रकरण में बढ़ोत्तरी हो रही है, उस बढ़ोत्तरी की संख्या को देखते हुए राजनांदगांव जिले एवं अन्य जिले में कबीरधाम में साइबर पुलिस थाने की स्थापना के लिए आपने प्रावधान किया है। उसके लिए मैं धन्यवाद और बधाई देता हूं। प्रदेश में सभी जिलों में..।

श्री अजय चन्द्राकर :- दशरथपुर के बता दे।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- दशरथपुर के आवश्यकता ही नहीं हे। जब क्षेत्र में हो रहा है तो दशरथपुर में होना ही होना हे। आपने 7 जिलों के लिए आदर्श जिला चिकित्सालय बनाने का प्रावधान किया है। आपने जिला अस्पताल को शामिल किया है, उसके लिए मैं धन्यवाद देता हूं। बधाई देता हूं और बहुत से ऐसे महत्वपूर्ण काम किये, जिसे मैं और बताना चाहता हूं।

श्री दलेश्वर साहू :- सभापति महोदय जी, मोहले जी का लगातार चुनाव जीतना अपनी योग्यता के आधार पर हो या जैसे भी हो, चुनाव जीतने के लिए ऐसे बजट के कौन सी मांग शीर्ष संख्या में बजट का उपयोग करते हैं, थोड़ा सा बता दीजिए।

पुन्नूलाल मोहले :- ट्रेनिंग लेना है तो अंदर आइए न। बाहर क्या बात करेंगे? यह हाउस है। अपने हाउस में आइए, मैं आपको पूरी ट्रेनिंग दे दूंगा। ठीक है। मैं इतना ही कहते हुए अपनी वाणी को विराम देता हूं। आप सबको बहुत-बहुत धन्यवाद। (मेजों की थपथपाहट)

सभापति महोदय :- श्री रामकुमार यादव जी।

श्री अजय चन्द्राकर :- तबीयत ठीक हे?

श्री रामकुमार यादव (चन्द्रपुर) :- बहुत बढिया। तुम्हर बिगड़ने वाला हे, अब देखव। माननीय सभापति जी, मैं वर्ष 2024-25 के जो बजट पेश करे हे पूर्व कलेक्टर, युवा, अभी के वित्त मंत्री, रायगढ़ के सम्माननीय विधायक, मोर बहुत ही प्रिय मित्र, हमर युवा मन के आईकॉन, इंग्लिश में कहिथे, मैं उन सब ला नमस्ते करथव और मैं ये बजट के विरोध में इसलिए खड़े हों कि ये जो बजट बनिस, अउ ये बजट ला मैं..।

श्री अजय चन्द्राकर :- रामकुमार जी तैं ये बजट के विरोध में एखर सेती हस, सही मन के बात बोल कि नरवा, घुरवा, गरूवा, बाड़ी बर कुछ नहीं लिखाये हे।

श्री रामकुमार यादव :- आही-आही। चन्द्राकर जी। हड़बड़ावव झन न।

श्री अजय चन्द्राकर :- नरवा, घुरवा, गरूवा, बाड़ी में कुछ नहीं हे।

श्री रामकुमार यादव :- जब ले मुख्यमंत्री नहीं बनाये हे न तुमन ला, आएं, बाएं, साएं होगे हो तुमन। (हंसी) तुमन के चेहरा से पूरा लालिमा उड़ गे हे। ओ हमन जानथन अउ ओहा पूरा तुमन के दिखथे।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय सभापति महोदय, अगर सबके सब मंत्री बन जाते तो बोलता कौन, हम लोग बोलने वाले के लाइन में लाये गये हैं। वे गलत सोचते हैं।

श्री दलेश्वर साहू :- मजबूरी से बोलथे।

श्री रामकुमार यादव :- बढिया हे, बढिया हे।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अटल श्रीवास्तव :- आपको मार्गदर्शक मंडल में शामिल करने की बहुत बहुत बधाई ।

श्री रामकुमार यादव :- सभापति जी, वैसे तो मैं बहुत कम पढ़े लिखे हों । लेकिन आदमी मन के बातचीत ला सुनथन, बजट ला देखत रेहेन । तो बजट ला देखत रेहेव तो चूंकि मैं गरीब घर के अंतिम छोर के व्यक्ति हौं । बजट ला देखथौं तो बजट मा देखे के प्रयास करथौं के मोर अंतिम छोर के गरीब आदमी जेन दो वक्त के रोटी कमाथे । संध्या होथे, घर मे आथे, दो रोटी खाकर एक मुट्ठा भात खाके कहिथे हे परमात्मा तैं हस करके सो जाथे । वो गरीब के लिए वो बजट मा का हे । वो भेड़ी चरइया मन के लिए का हे, मैं देखत रेहेंव । आज बजट कतको के राहै, 1 लाख करोड़, 2 लाख करोड़, 10 लाख करोड़ । कतका न कतका पइसा के बजट एमन लाथे लेकिन छत्तीसगढ़ी में कहावत हे कि भरे ला भरे अउ जुच्छा ला ढरकाए । बड़े ला अउ बड़े, अरबपति, खरबपति बनत हे । खरबपति अउ ऊपर जात हे । लेकिन वो गांव में रहने वाला, जे दो वक्त के रोटी कमाथे, जंगल मा जाके छेरी, भेड़ी ला चराथे । रोज छेरी ला गनत रथे, मोर 6 ठ हे, 10 ठ हे, 12 ठ हे । ओकर लिए बजट मा का हे ओला मैं खोजत रहे हौं । सभापति जी, मोर सम्मानित साथी मन ला मैं कहना चाहत हौं । मैं अइसने बजट के विरोध में नइ खड़े होए हौं । ए छत्तीसगढ़ के जन संख्या लगभग 3 करोड़ हे । ए तीन करोड़ में आप सर्वे कराकर देख लो, बहुत सारा अइसे व्यक्ति हे जे रोज कमाथे, रोज खाथे, ओकर बर एक जमीन नइ हे । आज आइस हे गरीब आदमी, हम देखे हन यहां पर । मैं अभी बजट ला देखत रहे हौं, पढ़त रहे हौं महू सोचंव कि गरीब आदमी बर कुछु हो ही । लेकिन सिर्फ गरीब आदमी ला हमर छत्तीसगढ़ मा जो भाजपा के सरकार बने हे ओखर संग दे बर जिही, ओखर बर कुछ नइ लिखाए हे, ओखर अधिकार के बाद नइ लिखाए हे । पहले हमर जमाना रहिस हे, ए प्रदेश में अउ सरकार चलय । जब हमन छोटे-छोटे लइका रहन तो गांव मा लोन मिलय, भंइसा के लोन, छेरी के लोन, गाड़ा के लोन अउ वो गरीब आदमी उही लोन ला लेकर आगे बढ़य । लेकिन ये बजट में बड़े बड़े उद्योपति के लिए लोन दे के प्रावधान हे । लेकिन गरीब आदमी के लिए एक पइसा, फूटी कौड़ी नइ हे । हम अइसे नइ खड़े हन, बहुत बड़े विद्वान् पूर्व कलेक्टर अउ वर्तमान वित्त मंत्री जी से यही कहना चाहत हों । नेल्सन मंडेला के विचार ला बजट मा लिखे रहा । ए छत्तीसगढ़ का महापुरूष इउ ऋषि मुनि की धरती हे । रविदास का कहे रिहिस । अइसे राज चाहूं मैं, सबन को मिले अन्न, छोट बड़ सम रहे, रविदास प्रसन्न । एला रविदास जी कहे रहिस हावय । कबीर साहब का कहे रहिस हे, ए छत्तीसगढ़ के धरती मा जन्म लेकर गुरू घासीदास जी के वंशज बइठे रहिस हे । गुरू घासी दास जी कहे रहिस हावय - रोटी कपड़ा और मकान, ये तीनों है सतलोक समान । ओखर वंशज हा इहां बइठे रहिस हे । आज इस विषय को लेकर छोटे बड़े सबके ।

सभापति महोदय :- माननीय सदस्य का भाषण पूर्ण होने तक भोजन अवकाश के समय में वृद्धि की जाए । मैं समझता हूं सभा सहमत है ।

सभा द्वारा सहमति प्रदान की गई ।

श्री रामकुमार यादव :- महोदय, मैं बहुत जयादा नइ बोलव, व्यवहारिक बात कहने वाला व्यक्ति हौं । आंकड़ा के बात ला यदि कही तो मोर पीछू मा बहुत बड़े विद्वान बइठे हैं । जिन्हें अभी आप मन ला सुनना है । मैं उही कहना चाहत हौं, ये प्रदेश हा सबके हे । यह आपेच मन के ठेका नो हे, कि आप मन के सरकार बन गे, मंत्री बन गे, मुख्यमंत्री बन गे । हमू मन ला अपन क्षेत्र के लोग भेजे हे कि जा तोला हमन विधायक बनाकर भेजत हन, तहूं गरीब के बात करबे, प्रदेश के बात करबे । हम सिर्फ चंद्रपुर के विधायक नो हन, सिर्फ मरवाही के नो है, सिर्फ पामगढ़ के नो है। ये प्रदेश के हम अउ प्रदेश के बात हम कहत हन। माननीय धर्मजीत भईया हमर बहुत सीनियर नेता ए, बहुत अच्छा बोलथे, ओला परमात्मा हा बहुत अच्छा-अच्छा शब्दकोष दे हे। लेकिन ओखर में एक ठन कला हे, विपक्ष में रहिथे ता कइसे बोलना हे, अउ पक्ष में जाना हे तो कइसे बोलना हे, परमात्मा ओला दोनों कला दे दे हावए। (हंसी) हमर गुरू घासीदास जी के वंशज भी आए हे। आप ला जब ए प्रदेश में हमर मुख्यमंत्री बना करके भेजिन त ए प्रदेश ला संवारे के लिए भेजिन। ठीक हे, हमर से जतका बन सकिस ए प्रदेश ला आगे बढ़ाय के काम करेन, आप मन ला मौका मिलिस ता आप ला प्रदेश ला बढ़ाना चाहिए, ना कि जइसे ही आप सरकार में बईठा, बईठते साथ, जेला बजट देबर तुमन बना थो, जंगल नई रही, जंगल में रहने वाला, आदिवासी नई रही तो बजट ला हमन चाटबो, जंगल हा कहां जाही। आज दस जगह ला उजाड़े के काम करत हे।

श्रीमती रायमुनी भगत :- सभापति महोदय।

श्री रामकुमार यादव :- तहूं आदिवासी अस मोर बहिनी। सुन ले ऐती जवाब पूछही, जब जंगल हा बचत रहिस ता 10 जगह उजड़िस, ता ओ गरीब आदिवासी के एक ही बात तहूं ला पूछही, तैं ऐला भूलबे झन। दीदी सुन ले, आज ते यहां हावस, महूं हावव, भगवान करे तैं लंबा उमर जी। 120 साल तक जी। लेकिन जब संसार ला एक ना एक दिन छोड़ के जाबो ता 50 साल के बाद तहूं ला पूछही। तोरे समाज के जंगल हा उजड़त रहिस हे।

श्रीमती रायमुनी भगत :- सभापति महोदय, सुन ले भईया, आप बजट की बात कर रहे हैं। मैं याद करती हूं कि आपने पिछली सरकार में नरवा, गरवा, घुरूआ, बाड़ी का बजट बनाया। वह बजट में शामिल ही नहीं था, आपने उसके लिए बजट में अलग से प्रावधान किया था। केवल और केवल डी.एम.एफ. नरेगा और 14 वें वित्त और 15वें वित्त के पैसे से आपने नरवा, गरवा और घुरूआ बाड़ी चलाया है।

श्री रामकुमार यादव :- तोरे समाज के गांव ला उजाड़िस अउ ते मुंह मा लाड़ू ला धर के बइठे रहेस, तहूं ला पूछही बहिनी। तेखर खातिर ए करा कुछ गोठिया। माननीय महोदय जी, ए मोर दिल के बात ए, काबर मैं पढ़े लिखे नई हों, मैं साहित्यिक भाषा नई जानव, हो सकथे आप ला कोई बात बुरा लग जाही। लेकिन मैं जेन जिला के रहने वाला हो, ओ सक्ती जिला ए। बांगो बांध आए हे, अउ जे जंगल ला ए मन उजाड़त हे, तिहां ले ओ नरवा निकल करके आए हे। नरवा के स्वरूप ला तुंहर अकन

नई बना सकन, ओला तो परमात्मा बनाय हे। जइसे, गंगा जमुना त्रिवेदी ऐ जो नदी ला परमात्मा अपन स्वयं प्रकृति हा बनाय हे, उसी प्रकार के नाला ला प्रकृति बनाय रथय। अउ जो प्रकृति हा नाला बनाय हे, ओला छेड़खानी करत हे। उही कर एमन गड्ढा कोड़त हे, नाला के स्वरूप हा बिगड़ जाही, तो उहां डेम मे पानी हा कहां ले आहि। जब डेम में पानी नई आही तो सक्ती जिला, जेला हमन छाती ठोक के कथन, जय जवान, जय किसान। आज हमर बड़े-बड़े अधिकारी बइठे हे, ओमन के वेतन डेड़ लाख, दो लाख रूपया रथय। ए मेर तुमन हमन बइठे हन, बड़े-बड़े मंत्री मिनिस्टर हन, सब लाल बत्ती में घूमत हन, आगे पीछे गाड़ी, सब हमन ला बंदूक सुरक्षा बर मिले हे। काखर खातिर मिले हे, ओ काम करथन तेखर खातिर मिले हे। लेकिन आप मन जइसे ही बइठेव, ओला उजाड़े के काम करत हव। ओ किसान जे मेर ले नहर गे हे, ओ नहर में जब डेम के पानी नई आही तो सक्ती में कहां से पानी जाही। ओ किसान मन के तुमन ला एक दिन हिसाब देबर लागही। ए धरती हा जब तक चंदा सूरज रही तब तक रही, लेकिन तुहर हमन आज हन कल नई रबो ऐखर जवाब ला कोन दिही। एखर खारित मैं आप ला कहत हंव, हम सुनत रेहेन, चंद्राकर जी कहां चल दिस, ओ डायलाग मारथे, भाग जाथे। हमन छोटे छोटे रेहेन ता अलग अउ दल के देखन, अपन पारी ला निकाले अउ पारी में नाश्ता करे बर भाग जावए।ओ हा ओसने हरय। अपन पारी में गोठयाही, डायलाग मारही ताहन भाग जाथए। सुनतिस ता आज मे कतेव, हम सुने हन। जब ओ हा विपक्ष में रहिस हे, हमन ला कइसे ताना मारए। हमन ला कइसे कइसे गोठायाए। लेकिन आज ओला देखे हन। सभापति जी, असली बात ओखर कसूर नो ए, ओ मंत्री नई बने हावए, ता ओखर मती बिछा गे हे, अइसे लागथए मोला। खैर ओ हा ओखर विषय ए, ओला मंत्री बनाए। मैं तो इही बात ला कथव, मेहनत करे मुर्गी, अंडा खाय फकीर। कई झन ला बुरा लाग जाही। ए मन जम्मो मन हमन पाबो करके खड़े रिहिन हे, अउ अंते हा दुल्हा डउका कस आ के बईठ गे हे तो तकलीफ तो जरूर होत होही। खैर ओ हा ओखर मन के विषय ए। मैं आज छत्तीसगढ़ के परंपरा के बात कहना चाहत हंव। जइसे हमर अनुज शर्मा जी हा बोलत रहिस हे, छत्तीसगढ़ के पानी अउ छत्तीसगढ़ के जवानी, ए दोनों मैं नई कहे हंव, हमर पुरखा हा बोल के गे हावए। ए दोनों के कोई मुकाबला नई हे, काबर देखा, तुंही मन अगल बगल के प्रदेश चला जावव, इंहा कस नदी नई पावव। इंहा कस जंगल झाड़ी नई पावव। जर्मनी, इटली, रूस, फ्रांस ए बड़े-बड़े कंपनी मन पानी के तलाश में आवत हे। अगर पानी कहीं पे हे तो हमर छत्तीसगढ़ में पानी हे। ओखरे खातिर कहे गेहे कि कोश-कोश में पानी बदले अऊ 15 कोश में बानी। सुन लो, मैं ज्यादा पढ़े-लिखे नई हो, लेकिन मोर मांप-बाप मन कहे हैं, तेला मैं सुने हो। ए छत्तीसगढ़ कइसने हे ? एक कोश ले दूसरा कोश में जाहूं ता पानी पतला, मोटा, चुंदी लट जाथे, पानी झरत हे, चुंदी झरत हे, दाल नहीं चुरत हे अऊ 15 कोश में जाहूं तो बोली-बात हा बदल जाथे। इहा 15 कोश में बोली-बात भी बदल जाथे। एखर खातिर मैं आपसे कहना चाहत हो कि आप मन ए बोली, संस्कृति ला संजो के रखों। लेकिन मैं आप मन ला देखत हो कि इंहा इंग्लिश में बोलथो। मैं राज्यपाल

महोदय बर कोई टिप्पणी नहीं करो, काबर कि ओहा हमर राज्यपाल हें। लेकिन मैं कहना चाहत हो कि इंही मेर ओहा इंग्लिश में गोठियइस तो मोर बबा मन बताओ कि कोन समझिस ?

सभापति महोदय :- रामकुमार जी, अभी पूरा महीना है। समाप्त कीजिए।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय सभापति महोदय, जल्दी करीहौं। काहे कि इही हा तो मेन बजट पे चर्चा हे अऊ इही में नहीं गोठियाबो तो का हमन जाके तरिया-घोटंगा में गोठियाबो ? आप सदन के बैठक ला अऊ बढ़ा देऔं। इंहु सब मन बोलही। हमन एखरे खातिर विधायक बने हन। सदन के बैठक ला बढ़ा दों, लेकिन हम सुने हन कि ओती वाले मन गोठियाथे तो आप ओमन ला नहीं कहाव। हमो मन घलो थोड़ा शुरू करे हन। हमन अंतिम छोर के गरीब के गोठ ला गोठियाथन। मैं आपसे कहना चाहत हो कि अपन बोली, संस्कृति ला संजो के रखों। ठीक हे कि आज इंग्लिश जरूरी है, लेकिन अगर आप गांव में जाहूं तो गांव में अंतिम छोर के व्यक्ति संग इंग्लिश में गोठियाहुं तो ओहा हांसही अऊ तुमन ला पगला कहही। आप ला ओखर भाषा में गोठियाएल लागही। लेकिन मैं ए सदन के अंदर देखे हव कि पटल में ओखर बोली, संस्कृति ला संजो के रखे बर आप मन कोई धनराशि अर्जित नहीं करे हों।

श्री अनुज शर्मा :- पिछली सरकार हा 5 साल में बोली, संस्कृति के राजभाषा आयोग के अध्यक्ष नहीं बना पाए रीहिस। सुन लो, अभी गोंडी ला संरक्षित करे बर ओखर सॉफ्टवेयर बनाये बर बजट में प्रावधान करे गेहे। ताकि छत्तीसगढ़ी अऊ हिंदी में ओला समझे जा सके। आपके ए बात गलत हे।

श्री रामकुमार यादव :- महाराज, आप गांव में जाके छत्तीसगढ़ी में गीत गाथों अऊ गोठियाथो अऊ जइसे ही विधान सभा में आथों तो सुर बदल गे। इंहा हिंदी झाड़त हो।

श्री अनुज शर्मा :- कइसे, अभी हिंदी मा बोलत हो कि छत्तीसगढ़ी में बोलत हो ?

श्री रामकुमार यादव :- मैं कल तुंहर भाषण ला सुने हो।

सभापति महोदय :- सदस्यगण आमने-सामने बहस न करें।

श्री रामकुमार यादव :- आप जब ले विधायक बने हों, तब ले आपके सुर बदल गेहे। छत्तीसगढ़ में गीत गाथों अऊ इंहा हिंदी झाड़थों। (व्यवधान)

श्री अनुज शर्मा :- ठीक है। में दुनों भाषा ला जानथो। (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- कल आप गोठियाए रहे हों। ज्ञान होना चाहिए।

श्री प्रणव कुमार मरपची :- यादव जी, आप इंग्लिश का इतना विरोध कर रहे हैं कि हमारे राज्यपाल महोदय जी ने इंग्लिश में बोलकर गलत किया है और आप पूरे छत्तीसगढ़ में आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

श्री रामकुमार यादव :- नहीं, मैं हिंदी के विरोध नहीं करत हो। मैं अपन खातिर कहात हो कि आप राज्यपाल जी ला हिंदी सिखो दो।

श्री प्रणव कुमार मरपची :- यादव जी, आप पूरे प्रदेश में आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल खोलने का प्रचार कर रहे थे, जिंहा पूरा लइका मन पढ़ी। लेकिन आप वही चीज के विरोध करत हो। आपकी डबल मानसिकता और मापदण्ड नहीं होनी चाहिए।

श्री धर्मजीत सिंह :- यादव जी, राज्यपाल महोदय ने अंग्रेजी में अभिभाषण दिया तो आप आपत्ति कर रहे हैं। आप यह बताइये कि जब के.सी. वेणुगोपाल जी अंग्रेजी में बोलते हैं तो क्या आप जल्दी से समझ जाते हैं ? आप जानते हैं कि के.सी. वेणुगोपाल कौन हैं ?

श्री रामकुमार यादव :- ओखर भाषा ला समझ जाथो।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप ओखर अंग्रेजी ला समझथो।

श्री रामकुमार यादव :- काखर ला ?

श्री धर्मजीत सिंह :- के.सी. वेणुगोपाल जी का।

श्री रामकुमार यादव :- हमन नेता कोन हें ? हमर नेता राहुल गांधी हें अऊ ओ हिंदी में बात करथे। तुमन आए, बाए, साए गोठियाथो।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय सभापति महोदय, सोनिया गांधी जी किस भाषा में बात करती हैं ?

श्री रामकुमार यादव :- ओहा सब भाषा में बात करथे।

श्री अनुज शर्मा :- ओहा कागज देख के पढ़थे अऊ बाकी समय तो अंग्रेजी में बोलथे।

श्री रामकुमार यादव :- महाराज, आप मोरे गोठ ला गोठिया लो।

श्री पुरन्दर मिश्रा :- दिनांक 25 फरवरी, 2023 को जब तुंहर कांग्रेस पार्टी के अधिवेशन होए रीहिए तो ओ में ओहा अंग्रेजी में भाषण दे रीहिस हें तो का समझ गे रहे हंव ?

श्री अनुज शर्मा :- आप ला उंहा खड़े होके कहना रीहिस हे कि छत्तीसगढ़ी अऊ हिंदी में बोलो।

सभापति महोदय :- माननीय सदस्यगण गरिमा का ध्यान रखें। आप सदन में चर्चा कर रहे हैं। रामकुमार जी, आप जल्दी समाप्त कीजिए।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय सभापति महोदय, मैं कहना चाहत हो कि आज बड़े-बड़े पइसा वाले महिला मन बड़े-बड़े हमाम साबुन, रैक्सोना साबुन चुपरत हें, लेकिन तुंहर-हमर घर के दाई-बहिनी मन अऊं गांव के गरीब महिला मन गोबर ला बेच के ऊंहु मन साबुन ला चुपर ले, कभु सैंपो मा मुड़ ला मिंज लेवे। तेला ए मन आज बंद करे के काम करे हें। महाराज जी, आप मन महिला मन के बात करथों। आप मन कहे रहे हों कि हमन महतारी वंदन योजना के माध्यम से विवाहित महिला मन ला प्रति महीना पइसा देबो। तुमन ए नहीं कहे रहे हों कि हमन मितानीन ला नहीं देन। मितानीन ला कतेक पईसा मिलथे। आंगनबाड़ी ला नहीं देवव । वह गांव में रहने वाला स्वीपर जो काम करथे, जेन मन बड़ा मुश्किल से अपन घर में 12 सौ, 15 सौ रूपिया लाथे, उहू ला तुमन ए नाम से काट दे हवव । पूर्व मंत्री जी

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

(श्री पुन्नूलाल मोहले की ओर इशारा करते हुए) ह कहात रिहिसे कि जम्मो महिला ला देबो त देथौ का ? 60 साल से ऊपर के एक्को महिला मन ला तुमन एक रूपिया नहीं देवथौ । याद रखिहौ लबारी ज्यादा दिन चलने वाला नहीं हे, एकर खातिर कतना दिन ले लबारी चलही ? सभापति जी, मोर आपसे प्रार्थना हे कि आप मन बजट ला बनाए हवव, वित्त मंत्री जी ला एक बात के ख्याल करना रहिसे कि जम्मो वर्ग एमा आवथे या नहीं आवथे ? गरीब के हित में हे या नहीं हे, लेकिन आज जईसे ही हमन बजट ला देखथन, गरीब के लिए कुछ नहीं हे, ए बजट ला कुछ खास व्यक्ति मन के ही ला देखकर के बजट ला बनाए गे हे ।

सभापति महोदय :- रामकुमार जी, आपको बोलते हुए 15 मिनट हो गए हैं, आगे और अवसर मिलेंगे । ऐसा नहीं है कि यह अंतिम अवसर है । जल्दी समाप्त करें ।

श्री रामकुमार यादव :- सभापति महोदय, एमन किसान मन ला पईसा देवथे। अईसे लागथे कि हमन खेत का बेचके देवथन । एकर पहिली भी सरकार रहिसे, उहु किसान मन ला दे हे, एकर बाद अउ 50 साल बाद सरकार बनही, तेन सब दिही, तुहर-हमर खेत डोली के पईसा नो हवय । ओमन जाकर के मेहनत करथें, वहां से रायल्टी आथे अउ रायल्टी ह सरकारी खजाना में आथे त उही में हमन सियानी करथन । ओकर हक अउ अधिकार के पईसा हे । कभी ये मत कहिहौ, छाती मत ठोकिहौ कि मोर पईसा हे। ओ गरीब के पईसा हे । हमला खुशी तब मिलतिस, जब आप मन गरीब किसान के कर्जा माफ करतेव । आप मन धान के बदला में पईसा देवथौ, पसीना के बदला में पईसा देवथौ । ओला आगे बढ़ाए के लिए आप मन कुछ नहीं करे हव । छत्तीसगढ़ के किसान ह ए बात ला देखथे ।

सभापति महोदय, आप मन युवा मन के बात करे हव । हमन चौधरी जी युवा हे, तेज तर्रार हे, हमर अनुज शर्मा जी हे, सुशांत शुक्ला मोर महाराज जी हे, हमर आदरणीय गुरू गोसाई जी हे, सब युवा हे । हमन युवा मन ला बेरोजगारी भत्ता देत रेहे हवन । आप ला जवाब देला लगही, हमन तो ढाई हजार रूपिया देत रेहे हवन, आप मन कतका देहौ ? काबर कि आप मन युवा हव, युवा मन जरूर आपले जवाब मांगही । ये सबला आप मन ला बताए बर लागही । सभापति जी, मैं ज्यादा बात नहीं करौ क्योंकि आप मन बोले हव कि अनुदान मांग में बोलिहौ, ओमा मैं जरूर बात करिहौं । सेठ जी ह मोला बार-बार बोले हे अउ इहां ले ओ ह देखथे और हमर वरिष्ठ नेता ला अंबिकापुर में अईसे ठग के आए हे, जेकर कोई सीमा नहीं हे । आज ओ क्षेत्र के मन हमर अग्रवाल जी ला भी देखत होही । अग्रवाल जी, अउ मैं कहात हवव, उहू बात ह लागू होवथे, तुहर बात के मैं सम्मान करते हुए यही आशा के साथ कहना चाहथौं कि चौधरी साहब मोर आदरणीय भाई बरोबर हे । जब भी कोई बजट बनाही, त गरीब डहार देख लिही । गरीब गौटिया के साथी मोला जरूर बनावय । मैं चौधरी साहब ला कहना चाहथौं कि डबरा मा विद्युत के अनुभाग भी जोड़ देहौ, मालखरौदा में पुलिस अनुभाग अउ मांड, जेन तुहरे घर से मांड नदी आए हे, ओला लाईनिंग के कार्य करा देहौ । साराडीह में लिफ्ट के द्वारा पानी चढ़ा दे रहिथौ,

ताकि ऊंहा के पानी ह बड़े-बड़े उद्योगपति मन मेर जावथे, लेकिन किसान मन ला एक बूंद नहीं मिलय तो उहां के लिफ्ट के द्वारा किसान ला भी पानी मिल जतिस ।

सभापति महोदय, आप मन तीर्थ यात्रा करावथौ, राम मंदिर में घूमावथौ, अच्छा बात हे । हमु मन सब भगवान ला मानथन, हमु मन जाबो । मोर तो नाम ही रामकुमार यादव हरे । गुरू घासीदास जी यही जनम लेहे, ऊंहो बर एको ठी बस चला देवव, ट्रक चला देवव, ताकि ए क्षेत्र के व्यक्ति मन जब देखही कि मोर गुरू गौसाई जी बईठे हे, हमन गुरू घासीदास जी के दर्शन कर लेतेन । स्वयं राम भगवान ला जेन जनम देहे, कौशिल्या मॉ के यहीं जन्म स्थल हे, ओकरो जाए बर हर विधान सभा ले एक ठी जीप, कार चला देवव या हमू मन ला एक, दो लाख रूपिया फंड दे देवव त हमूं मन कौशल्या मॉ के मंदिर ला अपन क्षेत्र के मन ला ले आबो, कईसे तुंहर से निवेदन करथन । काबर के जेन राम भगवान ला पैदा करे हे ओ महतारी के जगह देखय, आउ अच्छा बात हे। जे गुरूघासीदास हा शांति के पैगाम दे हे, रोटी कपड़ा अउ मकान कहे हे, उनखरो दर्शन करना बड़ा पुण्य के काम हे। ओहू ला बजट मा जोड के प्रत्येक विधानसभा ला दो-दो लाख रूपया दे देहा ताकि वहां के जनता मन लान के देखा सकी। ये बजट मा गरीब के लिए कुछ नहीं हे। यह सिर्फ खोदा पहाड़ निकला चुहिया के बराबर हे। एखर खातिर मैं ऐखर विरोध करते हुए मैं अपना भाषण बंद करत हंव। सभापति महोदय, आप मोला बोले के मौका दे हा, एखर लिए बहुत बहुत धन्यवाद।

सभापति महोदय :- सभा की कार्यवाही भोजन अवकाश के लिए अपराह्न 3.00 बजे तक के लिए स्थगित।

(1.46 बजे से 3.00 बजे तक अंतराल)

समय :
3.00 बजे

(सभापति महोदय (श्री प्रबोध मिन्ज) पीठासीन हुये)

श्री रामविचार नेताम :- सभापति महोदय, आपका अभिनन्दन है, वंदन है, आप इसी तरह शोभायमान होते रहिये । बहुत-बहुत बधाई । आप अच्छे लग रहे हैं।

सभापति महोदय :- जी, धन्यवाद । माननीय धर्मजीत सिंह जी ।

श्री धर्मजीत सिंह (तखतपुर) :- माननीय सभापति महोदय, आपको सभापति तालिका में देखकर सदन के सबसे वरिष्ठ सदस्य श्री रामविचार नेताम जी से हम सब बहुत ही प्रसन्नता महसूस कर रहे हैं और आपके यशस्वी भविष्य की कामना भी करते हैं । हमारे बहुत ही विद्वान और लोकप्रिय वित्त मंत्री श्री ओ.पी.चौधरी जी ने गरीबों के हितैषी मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी की सरकार का पहला बजट उन्होंने पेश किया है । सभापति महोदय, अभी तो बजट पेश ही हुआ है, पिछले तीन दिनों से विपक्ष ने हाय-तौबा मचा लिया है । ऐसा लग रहा है कि यह सरकार क्या बन गई है, सारा आफत छत्तीसगढ़ के

अशोधित/प्रकाशन हेतु नहीं

ऊपर गिर गया । भूकम्प आ गया, भूचाल आ गया, सुनामी आ गई, सड़कें उखड़ने लगी, हत्या होने लगी, बलात्कार होने लगा, अपराध चरमसीमा पर है, यह सारा कुछ दो महीने में ही हो गया, ऐसा इनके भाषण से दो-तीन दिनों से महसूस हो रहा है । सभापति महोदय, इनके लिये दो शब्द बोलकर अपना भाषण शुरू करूंगा । बहुत अच्छे शायर हैं, इकबाल साहब । उन्होंने कहा है कि-

अपने किरदार पर डालके पर्दा इकबाल
हर शख्श कह रहा है कि जमाना खराब है

सभापति महोदय, यहां जो आ रहा है, वही कह रहा है कि जमाना खराब आ गया है। सभापति महोदय, इस देश में, इस प्रदेश में, हर क्षेत्र में दो प्रकार के नेता होते हैं ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय सभापति महोदय, अब इसमें अजय भईया से चाहूंगा कि व्यवस्था की कोई बातें नहीं आ रही है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप गा रहे थे, पढ़ थोड़ी रहे थे ?

श्री धर्मजीत सिंह :- थोड़े दिन बाद आप यहां तबला, मंजीरा लेकर आने की तैयारी कर लेंगे । (हंसी)

श्री अजय चन्द्राकर :- वैसे आप पांच बार पढ़ लीजिए, लेकिन गाने की अनुमति तो नहीं मिलनी चाहिये, जो मेरा मत है उसमें....।(व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- पार्लियामेंट में भी इसी भाषा में पढ़ा जाता है ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :-सभापति महोदय, मैंने भी पार्लियामेंट देखा है । मैंने माननीय सांसद मोहन मंडावी जी को गाना गाते हुये देखा है ।

श्री धर्मजीत सिंह :-गोमान्गो जी पार्लियामेंट के बाहर गाते थे ।

सभापति महोदय :- चलिये, कुंवर सिंह जी ।

श्री धर्मजीत सिंह :- हमको क्या है, टाईम भी कटेगा ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय सभापति महोदय, मैंने केवल छत्तीसगढ़ की संस्कृति को पटल में रखने का काम किया है । जो जनजाति विलुप्त हो रही है, मुझे उसके बारे में चिन्ता है । मैं 20 साल से उस संस्कृति से जुड़ा हूँ । आजकल लंगोट पहनने वाले टी शर्ट और जीन्स पहनने लगे हैं, इसलिये मुझे चिन्ता हो रही है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- निषाद साहब, मुझे आपकी निष्ठा पर कोई संदेह नहीं है। आप तो छत्तीसगढ़ के माटी के सपूत हैं, आपसे कौन बोल रहा है कि आप गलत हैं ? अब क्या है कि तबला मंजीरा भी रखके यहां से नहीं आ सकते, यह नहीं हो सकता है, इसलिये बताये हैं । सभापति महोदय, दो प्रकार के नेता होते हैं । सभापति महोदय, बृजमोहन जी सबसे ज्यादा बार जीतने वाले बैठे हैं, अन्य मंत्रीगण भी हैं । एक जबरदस्त नेता और दूसरा जबरदस्ती के नेता । इस देश में नरेन्द्र मोदी जी

जबरदस्त नेता हैं और जबरदस्ती के नेता आजकल घूम रहे हैं और सदन में भी आगे पीछे जबरदस्ती के नेता घूम रहे हैं । नरेन्द्र मोदी जी ने इस देश को गारण्टी दी है ।

श्री विक्रम मंडावी :- इससे पहले भी आप जिनको बता रहे हैं, उनके साथ रहे हैं। अभी तो उधर गये हैं। पहले आप कांग्रेस में वही नेता के साथ में थे।

श्री धर्मजीत सिंह :- मैं कहा रहा हूं ? मैं जोगी कांग्रेस के विधायक दल का नेता था।

श्री विक्रम मंडावी :- उससे पहले ?

श्री धर्मजीत सिंह :- उससे पहले छोड़िये न। उसके पहले जब मैं था न तो ये नेता जी का नहीं चलता था, दूसरे नेताओं का चलता था। अभी आप चलाये जाईये। कुमार गौरव के लिये जितनी पिक्चर बनाओगे, हिट नहीं होना है। आप कुमार गौरव को जानते हैं, अभिनेता राजेन्द्र कुमार जी के बेटे हैं।

श्री विक्रम मंडावी :- वह समय बतायेगा कि हिट होगा या नहीं होगा ?

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति जी, मोदी जी ने गारंटी दिया, देश को जो गारंटी दी, उसको उन्होंने पूरा किया। प्रदेश के चुनाव में मोदी जी ने गारंटी दी कि हम किसानों को 3100 रुपये प्रति क्विंटल धान की कीमत देंगे। उन्होंने गारंटी दी कि इस प्रदेश में महतारी वंदन योजना लागू करेंगे। उन्होंने गारंटी दी कि छत्तीसगढ़ के होनहार युवाओं के साथ जो पक्षपात हुआ, अधिकारियों और बड़े-बड़े प्रभावशाली लोगों की मिलीभगत से पब्लिक सर्विस कमीशन में जो घपले हुए, हम उसकी सी.बी.आई. जांच करायेंगे। (मेंजों की थपथपाहट) जनता ने जनादेश दिया, इनके 75 पार के नारों को खारिज करके जनता ने नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी को जनादेश दिया और इस प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय बन करके इस राज्य का नेतृत्व करने के लिए आये। उनके वित्त मंत्री के रूप में एक आई.ए.एस. अफसर के कैरियर को छोड़ करके जनसेवा के लिए समर्पित ओ.पी.चौधरी जी, युवा जिनका विजन हैं, जिनके पास सोच है, जो समझते हैं, गरीबी देखे हैं, गांव में रहते हैं, गरीबों की बात करते हैं, जिन्होंने अपना 05 वर्ष गरीबों की समस्याओं के अध्ययन में बिताया है, उन्होंने अपना ये बजट प्रस्तुत किया। यह बजट ऐतिहासिक बजट है। यह बजट आर्थिक अनियमितताओं को रोकने के लिए उनके संकल्प का प्रतिबिंब है। यह बजट युवाओं में उत्साह भरने वाला बजट है, छत्तीसगढ़ की economy growth को आगे बढ़ाकरके बहुत आगे ले जाना वाला बजट है। इस काम के लिए ओ.पी. चौधरी जी ने अपना सर्वस्व ज्ञान इसमें समर्पित किया है। माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बजट 1 लाख 47 हजार करोड़ रुपये का है।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय महोदय जी, ये सभापति जी हे, उती अध्यक्ष जी देखत होगी, सभापति जी बैठे हे। तुहर मन ले जब से ओती गेहे, सब आने दिखत हे। आम हा इमली दिखत हे, बीही हा केला दिखत हे।

श्री धर्मजीत सिंह :- ठीक है। वहां पहुंचना ही कठिन काम है। मैंने उनको ऊंचे पद से संबोधित किया न, छोटे पद से संबोधित नहीं किया हूं। यह समझने की बात है। 1 लाख 47 हजार करोड़ रुपये के बजट में स्कूल शिक्षा विभाग को 21,489 करोड़ रुपये, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग को 17,526 करोड़ रुपये, कृषि विभाग को 13,435 करोड रुपये, लोक निर्माण विभाग को 8,017 करोड़ रुपये, ऊर्जा विभाग को 8,009 करोड रुपये, गृह विभाग को 7,570 करोड़ रुपये, लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग को 7,500 करोड़ रुपये, खाद्य नागरिक आपूर्ति विभाग को 6,400 करोड़ रुपये, नगरीय प्रशासन विभाग को 6000 करोड़ रुपये से ऊपर, महिला एवं बाल विकास विभाग को 5,683 करोड़ रुपये, लोक स्वास्थ्य यांत्रिक विभाग को 5,400 कुछ करोड़ रुपये दिये गये हैं। सभापति महोदय, मैं इसमें आपको यह बताना चाहता हूं कि पिछले साल के और इस साल के बजट में जो अंतर है, उसको आप समझने की कोशिश करिये। आप भी समझिये, हम लोग भी समझने की कोशिश कर रहे हैं। महिला बाल विकास विभाग में पिछले साल जो बजट आवंटित किया गया था, उसमें 112 प्रतिशत की वृद्धि बजट के प्रावधान में की गई है। (मेंजों की थपथपाहट) लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग में 97 प्रतिशत की वृद्धि बजट प्रावधान में की गई है। (मेंजों की थपथपाहट) खनिज साधन विभाग में 80 प्रतिशत की वृद्धि बजट प्रावधान में की गई है। लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग में 37 प्रतिशत की वृद्धि बजट प्रावधान में की गई है। (मेंजों की थपथपाहट) कृषि विकास और किसान कल्याण में 33 प्रतिशत की वृद्धि बजट प्रावधान में की गई है, ऊर्जा विभाग में 20 प्रतिशत बजट प्रावधान में बढ़ा है, गृह विभाग में बजट प्रावधान में 16 प्रतिशत बढ़ा है, नगरीय प्रशासन विभाग में 13 प्रतिशत बजट प्रावधान में बढ़ा है और शिक्षा विभाग में 10 प्रतिशत बजट प्रावधान में बढ़ा है। हमारी जो प्रमुख योजनाएं हैं, मैं उनके बारे में भी बता देना चाहता हूं, जिसमें यह बजट खर्च किये जायेंगे, जो जन-कल्याण से संबंधित योजना है, जो समाज के सभी तबकों को लाभांवित करेगा, जो समाज के सभी वर्गों तक पहुंचने का प्रयास करेगा। सभापति महोदय, अभी तो यह बजट यहां पर पास भी नहीं हुआ है। जब यह बजट पास होगा तो कृषक उन्नति योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, जल जीवन मिशन योजना, हायर सेकेण्डरी एवं हाई स्कूल शिक्षा विभाग, मुख्यमंत्री खाद्यान्न सहायता योजना, रामलला के दर्शन योजना, जिसको आप लोग पसंद नहीं करते हैं। एच.पी. कृषि पंपों के लिए मुफ्त बिजली, महतारी वंदन योजना, शहीद वीर नारायण सिंह आयुष्मान योजना, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, अमृत मिशन, इनवेस्ट छत्तीसगढ़, दीनदयाल भूमिहीन कृषि मजदूर, राज्य राजधानी क्षेत्र जो दिल्ली एन.सी.आर. के तर्ज पर बनने वाला है, जिसमें भिलाई, दुर्ग या आसपास के सब शहर एक होंगे। जहां अभी मिलना जाना समझना मुश्किल होता है, वह एक तर्ज पर एक बड़े शहर के रूप में विकसित होगा। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना और सबसे बड़ी बात है कि जैसे बाबा योगीनाथ जी ने विश्वनाथ कॉरीडोर की स्थापना कराई है, जैसे वहां पर आयोध्या में रामलला का मंदिर बना है, वैसा ही हमारे पांच शक्तिपीठों को डेव्हलप करने के लिए कॉरीडोर की कल्पना इस बजट में

की गई है, जिसे हम क्रियान्वित करने जा रहे हैं। (मेजों की थपथपाहट) जहां एक तरफ हमारे मेहनत को सम्मान मिल रहा है, जहां एक तरफ हमको शिक्षा देने के लिए सरकार तत्पर है, वहीं हमारे धार्मिक आस्था जिस पर हम सम्मान करते हैं, उसको भी देने का काम यह सरकार कर रही है। मैं समझता हूं कि ऐसा कोई भी वर्ग नहीं है जो इससे अछूता हो। लेकिन आपको पांच मिनट भी धैर्य नहीं है। संगीता जी बोलने लगी कि यह नहीं मिला। हमने महतारी वंदन योजना में भी अभी फार्म भरवाया है। उसमें फार्म भरने दीजिए, योजना क्रियान्वित होने दीजिए। यदि उसमें कोई कमी होगी तो आप बताईये, हम उसको दूर करेंगे। यह योजना महिलाओं के सम्मान और महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए है। अगर उसमें कोई कमी होगी तो, हमारे वित्त मंत्री जी का कोई जिद्दी नहीं है कि जो वह बोल दिए वही रहेगा, वह उस कमी को सुनेंगे, उसको सुधारेंगे और सुधार की प्रक्रिया के लिए रिफार्म का प्रावधान माननीय वित्त मंत्री जी ने इस बजट में किया है। आप बहुत उंगली दिखा रहे हैं। यह सरकार दो महीने में ऐसा कर डाली, वैसा कर दी, ऐसा है, वैसा है। जब आप उंगली उठा रहे हैं तो याद रखिए कि तीन उंगली आपके तरफ भी इशारा कर रही है कि बोलने के पहले अपनी तरफ तो जरा देखिए। आपने पांच साल क्या किया? स्कूल शिक्षा विभाग में क्या हुआ था? स्कूल शिक्षा विभाग में मंत्री के घर में दुकानदारी हो रही थी। स्कूल शिक्षा विभाग में सत्तारूढ़ पार्टी के विधायकों ने कहा था कि मंत्री का पी.ए. पैसा ले रहा है। (शेम-शेम की आवाज) स्कूल शिक्षा विभाग में अधिकारी पैसा लेकर जिसको जहां चाहे ट्रांसफर कर रहे थे। कई लोगों के ऊपर एफ.आई.आर. दर्ज हुआ है। कई लोग जेल जाने के कगार पर है। सारे Teachers इधर से उधर फेंके गये। जिनको आप नजदीक में रख सकते थे। पहले पैसा लेने के नाम पर उनको दूर किया, फिर पैसा लेकर उनको नजदीक किया। मतलब आपके लोग बिरबल की संस्कृति में पैसा खा रहे थे। आप तो थे नहीं, लेकिन आपके मंत्री जी का तख्तापलट हो गया। उनको यहां से जाकर उधर जाकर बैठना पड़ा था। आप नहीं थे। आप लोगों ने शिक्षा विभाग में क्या? बजमोहन जी, वह मंत्री जी परेशान होंगे। कहां-कहां का समस्या, कैसा-कैसा समस्या, वाह शिक्षा मंत्री, वाह हिम्मती मंत्री। बृजमोहन जी, आपने शिक्षा विभाग लिया है, मैं आपकी दाद देता हूं। आपने क्या किया? आपने जिद्द में बोधघाट परियोजना लागू किया। उसका क्या हुआ? हम लोग छत्तीसगढ़ में बोधघाट परियोजना का बड़ा-बड़ा होर्डिंग देखते थे। यहां जब बोलते थे तो एक हमारे गुरूदेव यहां बैठा करते थे। वह बहुत वरिष्ठतम मंत्री, वह भीष्म पितामह थे। उन्होंने कहा कि हम बोधघाट को जरूर बनायेंगे। कहां हुआ? हम चुनौती स्वीकार करते हैं। टाय-टाय फीस। खोदा जहाड़, निकली चुहिया । कुछ नहीं था । आप तो बोधघाट वाले क्षेत्र के हैं । आप लोग तो कुछ बोल भी नहीं पाये । लखेश्वर बघेल साहब, यह तो मैं जानता हूं कि आपकी क्या स्थिति थी और दुर्दशा थी । आपको कितनी पीड़ा थी उसको हम समझ रहे हैं । मैंने उस दिन जब बोल दिया था कि कोई हिम्मत करके खड़े भी नहीं हो पाता था, देखकर चुपचाप बैठ जाते थे । ऐसा नहीं है । हमारे विष्णुदेव साय जी शांतचित्त आदमी हैं । वे बिल्कुल गुस्सा नहीं करते हैं । वे तो दिमाग में यह

सोचते भी नहीं हैं कि किसी को तंग करना है, तूफान मचाना है या परेशान करना है । वे जिद में भी नहीं अड़ते हैं । भैंसाझार क्यों नहीं बना ? बिलासपुर की भैंसाझार परियोजना का 25,000 हेक्टेयर में सिंचाई होने का प्लान था । आजतक 5 साल में 25,000 तो 25,000, 20,000 हेक्टेयर भी उसमें सिंचाई नहीं हो पा रही है । जबकि वह उस क्षेत्र के लोगों का ड्रीम प्रोजेक्ट है । वह भाजपावालों का भी ड्रीम प्रोजेक्ट था और कांग्रेसवालों का भी ड्रीम प्रोजेक्ट था । आप कुछ नहीं कर पाये । जब आप जल संसाधन मंत्री थे तो आपने बनवाया था । जब आप जल संसाधन मंत्री थे लेकिन उन 5 सालों में वह भैंसाझार परियोजना कहीं आगे नहीं बढ़ पायी थी । आपने बघवा योजना लागू की है । आपने उसका बढ़िया बघवा नाम रखा है । बघवा यानी शेर । शेर का क्या हाल था ?

माननीय सभापति महोदय, अचानकमार टाईगर रिजर्व में जहां गरीबों के लिये सड़क तक नहीं बनने दी जाती थी, Forest Conservation act लागू होता था । वहां पर बड़े-बड़े पोकलेन और मशीन भेजकर के तालाब गड्ढ़ा कर रहे थे । कोई-कोई मद से काम निकालकर ठेकेदार को उसकी अनुमति थी । लेकिन गांव में मिट्टी की सड़क नहीं बन सकती थी । पोकलेन में शेर दब गया । पोकलेन में कहीं से बेचारा भूला-भटका, दीन-हीन शेर आया था, वह उसमें दब गया, उसको लाये और कानन में उसकी मौत हो गयी । वहां पर बघवा का तो यह हाल है । हाथी तबाह, करेंट से मरते थे, गड्ढे में फंसकर गिर जाते थे, मर जाते थे । जब पूछो तो एकाध...।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय सभापति महोदय, एक ठक हाथी के बात करत हे । एमन उंहां जंगल ला काटत हें तो उंहां के हाथी जतका मन किंदरत हें अउ मैं तो डरात हंऔं कि विधानसभा ला भी हाथी से सुरक्षा देबर लागही । तीरे-तीर मा आ गे हे । पूरा हाथी किंदरत हे, इंहों सुरक्षा दे बर लाग जही । एक हाथी नहीं, हजारों हाथी किंदरहीं ।

श्री धर्मजीत सिंह :- रामकुमार जी, आप हाथी के सपाटा में पड़े ही नहीं हैं । आप तो मैदानी ईलाके में रहते हैं । एक एस.पी. था, इसी प्रदेश में, आपकी ही सरकार में एक एस.पी. साहब थे । उनको बताया गया कि मरवाही के पास में हाथी आया है तो एस.पी. साहब बोले कि चलो हम हाथी देखेंगे । अपना गये तो गये, अपनी धर्मपत्नी को भी ले गये । वह थोड़ी न जानता है कि आप एस.पी. हो, डी.जी. हो, चीफ सेक्रेटरी हो या एडिशनल चीफ सेक्रेटरी हो । वह नहीं जानता है कि आप आई.ए.एस. ऑफिसर हो या नगरजोत्ता नागरिक हो । हाथी ने सूंड में फट्ट से मारा और एस.पी. साहब पत्थर में गिरे, वह घायल थे । उनको एयरलिफ्ट करके बिलासपुर-रायपुर लाकर यहां ईलाज कराना पड़ा । उनसे जो लोग तबाह होते हैं, मैं आपको भी हाथी की खासियत बता देता हूं, आप भी सुन लीजिये । यदि हाथी किसी घर में पहुंचा तो वह घर के उसी हिस्से को तोड़ेगा जहां अनाज रहता है, महुआ-अनाज जिसमें खुश्बू आती है । खाने-पीने की चीज हो, चावल हो, दाल हो, मक्का हो, घी हो या महुआ हो, ज्वार हो, बाजरा हो उसको वह तोड़ता है और जब हाथी जंगल से निकलता है तो रेल्वे के ट्रेक में पहले वह पैर रखता है,

पैर इसलिये रखता है कि उसके पैर के गद्दे में इतना सेंसर रहता है कि 1-2 किलोमीटर दूर से आने वाले ट्रेन की झनक उसको मिल जाती है और उसके बाद भी हाथी में इतना सेंस होता है कि वह अपनी सूंड को मोड़कर ट्रेन की पटरी में रखता है और उससे उसको पता चल जाता है कि कोई ट्रेन तो नहीं आ रही है तब वह पार करता है । उसकी याद्दाश्त इतनी तेज रहती है, आपके और हमारी जैसी उसकी याद्दाश्त नहीं है । हमसे कहीं बहुत तेज है, वह 22 साल पुरानी जगह को भी याद करके आता है । उस हाथी के आतंक से जब गांववाले परेशान होते थे और जब उनकी मदद के लिये आपकी सरकार से हम लोग गुहार लगाते थे तो कोई सुनवाई नहीं होती थी । कोई हमदर्दी के 2 शब्द भी सदन में नहीं बोले जाते थे। हाथी जाकर तोड़ता था। हाथी पैर में कुचलता था। हाथी सूंड में पटक देता था। बताया न कि एस.पी. साहब को पटक दिया। उससे बड़ा आदमी आपके लिए कहां से लाउं (हंसी)

श्री अटल श्रीवास्तव :- भैया, हाथी ने तो राजनीतिक रूप से भी कई लोगों को पटका है। लोरमी विधान सभा में भी हाथी ने पटका। कई-कई और विधान सभा हैं, जहां हाथी लगातार पटक रहा है, उसके बारे में भी थोड़ी बात हो जाए। राजनीतिक रूप से भी हाथी बहुत जगह पटक रहा है। उसके बारे में भी थोड़ी बात हो जाए।

श्री धर्मजीत सिंह :- लोरमी में कोई नहीं पटक पाया।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- बिलासपुर से यहां आकर एक हाथी ने पटका है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अटल, हाथी के कारण बचे हो। (हंसी) अगर हाथी ज्यादा घूम देता न तो बचते नहीं।

श्री अटल श्रीवास्तव :- पता नहीं, आप साइज की बात कर रहे हैं या वहां रहने वाले हाथी की बात कर रहे हैं। पर मैं हाथी से बचा हूं।

श्री धर्मजीत सिंह :- नहीं-नहीं, अटल साहब समझ लो, सारा आपके लिए है, आप समझ लीजिए। सभापति महोदय, बघवा की परियोजना को लाने की मंशा यह है कि फॉरेस्ट का प्रोटेक्शन करना है, वाइल्ड लाइफ को आगे सुरक्षित रखना है। अचानकमार के अभ्यारण्य में मैंने पिछली सरकार में भी आरोप लगाया है और आपको भी बता रहा हूं। सतना और रीवा के शिकारियों का कनेक्शन अचानकमार के अभ्यारण्य में और बिलासपुर जिले के जंगलों में उनका कनेक्शन है। कोचर आते हैं और कोचिंग करके चले जाते हैं। शिकार और खाल की अवैध तस्करी करते हैं। वन विभाग की क्षमता और योग्यता सिर्फ जुल्म और सितम के ऊपर उनको आप देखिए। जुल्म और सितम करने में उन्हें महारत हासिल है। मैं पिछली विधान सभा में निवासखार गांव की 70 साल की वृद्धि महिला से एक रेंजर ने मार-पीट किया। मैं आधे घंटे, पौन घंटे तक के यहीं संदीप जहां बैठा है, वहां से बैठ-बैठ के चिल्ला रहा था। सरकार उसके ऊपर कार्रवाई करने से भी इंकार कर रही थी। मेरे बहुत निवेदन और गिड़गिड़ाने के बाद उसको निलंबित किया गया। सभापति महोदय, वह रेंजर इतना शक्तिशाली है कि विधान सभा में निलंबन के एक हफ्ते

के बाद वह कांकेर में पदस्थ कर दिया गया और वह कांकेर में वहां के एक बहुत बड़े नेता जो यहां की सत्ता और सरकार में बहुत प्रभावी थे, उनके घर में सब्जी-भाजी पहुंचाने का काम रहा था। अभी भी जरा देखिए कौन है वन मंत्री जी। उसको जरा केयर करिए। ये सब्जी-भाजी वाले लोगों के भरोसे में जंगल नहीं बचने वाला है। लेंटाना, लेंटाना specialist हमारे पास ही बैठे हैं। हमें किसी विभाग में कुछ जानना हो तो यहां पूछ लो दो मिनट के अंदर आधे घंटे का भाषण बन जाता है। लेंटाना में करोड़ों रूपया। ये लेंटाना क्या है, बताइए। अरबों रूपया है। जानते हैं लेंटाना? घास उखाड़ने के लिए करोड़ों रूपया। उसका क्या हिसाब है? वह ऑडिटर जनरल क्या उसका बाप भी जांच कर लेगा तो बताना । बहुत बड़ा ऑडिटर जनरल होता है न दिल्ली में वह लेंटाना को देखकर बताये कि वह कैसे निकलेगा? मेरे पिताजी भी नहीं देख सकते। लेंटाना है, वह घास है, एक घास उखाड़े, नहीं उखाड़े, उसका क्या रिकॉर्ड है? सभापति महोदय, लेंटाना बहुत बड़ा खेल का माध्यम था।

श्री कवासी लखमा :- क्या है लेंटाना। (हंसी)

श्री धर्मजीत सिंह :- वही तो हर मंत्री उस समय यही कहता था, जो आप कह रहे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- दादी, अभी जो आप लेटकर आ रहे हैं, उसे लेंटाना बोलते हैं। (हंसी)

श्री अजय चन्द्राकर :- दादी, आप एफ.आई.आर. करवाइए।

श्री कवासी लखमा :- लेंटाना के लिए?

श्री अजय चन्द्राकर :- लेंटाना के लिए नहीं, जो आपका हिस्सा लेकर फरार है, उसके लिए। (हंसी)

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति महोदय, वित्तीय व्यवस्था के बारे में बात होती है। मैंने इस विधान सभा में आबकारी डिपार्टमेंट का एक प्रश्न पूछा था कि भाई फलां-फलां दुकान में बिक्री होकर कुल कितना रूपया आया और खजाने में कितना जमा हुआ? यह बताया गया कि इतने-इतने रूपये की बिक्री हुई और 2800 करोड़ रूपया जमा नहीं हुआ। हमने पूछा कि यह 2800 करोड़ रूपया जमा क्यों नहीं हुआ? तो ये बताये कि वह चिल्हर खर्च के लिए रख लिये थे। सभापति महोदय, 10 रूपए, 50 रूपए और 100 रूपए भी खजाने में जमा होते है । विधान सभा में लिखित जवाब है कि 2800 करोड़ को चिल्हर खर्च के लिए रख लिया गया था । अब आप बताइए कि 2800 करोड़ रूपए चिल्हर खर्च हो रहा है तो कहां से बजट जनता तक पहुंचता ? इसी लीकेज को रोकने के लिए फुल प्रूफ प्रोग्राम लेकर हमारे वित्त मंत्री जी आए हैं । 2800 करोड़ का जवाब यह था कि चिल्हर खर्चे के लिए । मैंने तो ध्यानाकर्षण भी लगाया है, हो सकता है कि चर्चा में आए तो उस पर बात भी करेंगे । सभापति जी, यहां चखना दुकान का उद्योग चलता था । एक तो सारी दुकानें नियम के खिलाफ खुली थीं । 100 मीटर दूर होनी चाहिए थी लेकिन दूर नहीं थीं । फिर वहां एक नम्बर का आएगा, दो नम्बर का आएगा, असली वाला आएगा, नकली वाला आएगा । यह तो बड़े लेवल का मामला था, उस मामले में अभी कई अंदर पहुंच चुके हैं । सभापति जी, चखना दुकान एक छोटा उद्योग । सत्तारूढ़ पार्टी के बड़े-बड़े नेताओं के घर चखना दुकनों से भी रोज 2-

2 हजार, 5-5 हजार, 10-10 हजार रूपए पहुंचते थे । जब मैं तखतपुर विधायक बना तो मैंने पहले दिन यही काम किया कि एक्साइज़ वाले अफसर को बोला बुलडोजर लेकर जाइए और तखतपुर विधान सभा की सारी चखना दुकानों को तोड़कर, ज़मींदोज़ कर वापस आइए (मेजो की थपथपाहट) । रोज 10 हजार रूपए, रोज 15 हजार रूपए, विधायक महोदया के पास जाए, ये किस प्रकार के जनकल्याण का काम था । आपने शराबबंदी की बात की थी, आपने नहीं की, वहां तक ठीक है लेकिन यह शराब के नाम से असंवैधानिक सत्ता का केन्द्र चलाने वाले रायपुर में बैठे थे । सरकार में बैठे हुए लोगों को भनक तक नहीं थी ।

श्री रामकुमार यादव :- भइया, बढ़िया बोलत हौ, अच्छा है । आप ला देखकर अइसने लागते कि तोला फिलिम मा रोल मिल जाए ता तोर असर डबल रोल करे ला कोई नइ जानय ।

श्री धर्मजीत सिंह :- बड़े-बड़े लोगों ने डबल रोल किया है, दिलीप कुमार, राजेन्द्र कुमार, धर्मेन्द्र किया है ।

श्री रामकुमार यादव :- तुंहर डबल रोल बहुत अच्छा हे लेकिन शराब के बात किये हे तो इमन बोले हे कि अगर कोई दारू भट्ठी मा दारू पिऐ बर आए तो ओला अगरबत्ती जलाना हे । ओला बढ़िया से बर्ताव करना है, अच्छा व्यवहार करना हे । यानी शराबी ला अउ शराबी बनाना है, एमन कहात हावय ।

श्री अटल श्रीवास्तव :- सभापति महोदय, शराब की जितनी भी नीतियां बनी हैं और अभी भी चल रही हैं वह पिछली भारतीय जनता पार्टी के शासनकाल में बनी हुई नीतियां थीं । चाहे वह चखना सेंटर हो, चाहे दुकान को सरकारी कर्मचारी द्वारा चलाना हो, उसमें कोई फेर-बदल नहीं किया गया था । सब भारतीय जनता पार्टी के द्वारा बनाए गए नियम कानून थे ।

सभापति महोदय :- धर्मजीत जी, 26, 27 मिनट हो गए । 10 और माननीय सदस्यों को बोलना है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- मैं तो अभी बोलूंगा साहब । आप थोड़ा टाइम दे दीजिए ना । मुझे वित्त मंत्री जी के समर्थन में बोलना है । मैं अपनी पार्टी से बोलना चाहता हूं । वहां पर बैठकर मैंने एक-एक घंटा लोगों को बोलवाया है, मुझे बोलने दीजिए ।

श्री सुशांत शुक्ला :- सभापति जी, अटल श्रीवास्तव जी ने बताया कि नियम पुराने हैं तो क्या सेकेंड काउंटर खोलने का नियम हमने दिया था क्या ? नकली होलोग्राम बनाने का नियम हमने दिया था क्या ?

श्री धर्मजीत सिंह :- असंवैधानिक सत्ता का केन्द्र चलाने वाले अलग से बैठकर शराब की दुकानों का हिसाब किताब रखते थे । ई.डी. ने ढाई हजार करोड़ का मामला दर्ज किया है । लेकिन मैं यह बता देना चाहता हूं कि यह पैसा आपने चाहे जिस जुगत से भी कमाया हो । आपके हाथ में पांच रूपया भी

लगने वाला नहीं है, मानकर चलिए कि वह गायब हो गया आपको सिर्फ पुलिस का केस मिलेगा । सभापति जी, कानून व्यवस्था के बारे में बात हुई । वित्त मंत्री जी ने कानून व्यवस्था ठीक करने के लिए 1008 पद स्वीकृत किया है । जब डॉ. रमन सिंह जी की सरकार थी तो विधायकों के लिए कालोनी बनी थी, उसमें एक क्लब बना था । वित्त मंत्री जी, आप ज़रा नोट कीजिएगा । हम लोग सब उसके उद्घाटन में बढ़-चढ़कर गए थे । उसका नाम था क्वीन्स क्लब । क्वीन्स क्लब फॉर MLAS. और बाकी व्ही.आई.पी. रोड में जनरल भी चला था। मैं पूछ सकता हूं, सरकार आज की तारीख में मुझे यह बताए कि यह क्वीन्स क्लब कहां है ? माननीय वित्त मंत्री जी, क्वीन्स क्लब चोरी हो गया है। (शेम-शेम की आवाज) क्वीन्स क्लब कहां है, मैं ढूंढ रहा हूं। इसमें से कोई विधायक कभी क्वीन्स क्लब गया हो तो बताए। कभी किसी को 5 रूपए की छूट मिली हो तो बताए। करोड़ों की प्रापर्टी को सरेआम कैसे बेचना है, इस नंगा उदाहरण अगर देखना था तो इस सरकार में देखना था, जो इन लोगों ने किया है। आप क्वीन्स क्लब की पूरी रिपोर्ट मंगवाईए। वह कौन खरीदा, कौन बेचा, फिर कौन खरीदा, कौन बेचा, फिर कौन खरीदा कौन बेचा, उनका नाम इतना कठिन अंग्रेजी में लिखा है कि उसको दूसरा तो कोई पढ़ भी नहीं सकता है। सभापति महोदय, वह विधायकों की संपत्ति है, उसे आप विधायकों के क्लब को दीजिए और नहीं तो वहां पर लाईब्रेरी बनाईए। आप क्या-क्या लाईब्रेरी बनाने वाले हैं, वह बना दीजिए या सी.एम. का गेस्ट हाउस बना दीजिए।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय सभापति महोदय, उस क्वीन्स क्लब वाले को इतना अधिकार प्राप्त है कि वहां गोली चलेगी तो भी पुलिस कार्रवाई नहीं करती। अभी जैसे उधर क्लबों में कार्रवाई कर रही है, वह गोली यदि क्वीन्स क्लब में चल जाएगी तो पुलिस कार्रवाई नहीं करेगी। इतना विशेषाधिकार प्राप्त है, इन लोगों ने इतना दिया है। कोरोना में क्वीन्स क्लब में अवैध शराब पकड़ाते हुए गोली चली तो आप लोगों ने कोई कार्रवाई नहीं की, गोली चलाने वालों को बंबई भेज दिया।

श्री विक्रम मण्डावी :- अजय भैया, अभी आपकी सरकार है तो कार्रवाई करिए ना। जो पिछला हुआ है, उसको भूल जाईए, जो अभी हो रहा है, आप उसको बताईए।

श्री धर्मजीत सिंह :- दो ही महीने में सब कर दें क्या ? अभी करने के लिए बता तो रहे हैं। वहीं तो बता रहे हैं । बुलडोजर लगाईए, दो बत्ती...।

श्री रामकुमार यादव :- ए मन ला करना कुछ नई हे, ए पांच साल के बंशी ला बजाही करना कुछ नई हे। पांच साल वाला बंशी बजाना हे।

श्री विक्रम मण्डावी :- आप सरकार में बैठे हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- इसमें 10, 5 बुलडोजर का भी प्रावधान करिए।

वित्त मंत्री (श्री ओ.पी. चौधरी) :- बिल्कुल।

श्री धर्मजीत सिंह :- उसको प्रैक्टिस में रखिए, डीजल डालकर ऐसा-ऐसा उठाते रहें, आवाज देते रहे। माननीय मंत्री जी, यह इस टाईप से जितने चिंदी चोर लोग हैं, इन सबको ठीक करिए। सभापति महोदय, इस प्रदेश के शांतिपूर्ण फिजा में पहली बार पिछली सरकार के संरक्षण में बिरनपुर में सांप्रदायिक हिंसा की घटना हुई। (शेम-शेम की आवाज) उसमें एक निर्दोष व्यक्ति मारा गया। वह घटना सांप्रदायिक रूप से हुई थी। घटना दुर्भाग्यपूर्ण थी। मैं किसी समाज, किसी जात के खिलाफ नहीं बात कर रहा हूं लेकिन इस सरकार के दो कदम भी नहीं बढ़ सके। उसका पिता यहां विधायक बनकर आया हुआ है। (मेजों की थपथपाहट) जनता ने इनको अपने समर्थन से यहां भेजा है। जब इसका बेटा मरा, सरकार का एक भी आदमी, एक भी विधायक, एक भी सांसद, एक भी मंत्री, इसके घर तक नहीं पहुंचा। इनके बेटे की मांग को उठाने के एवज में हमारे उप मुख्यमंत्री 10-10 बार जेल के अंदर गया, उनको 10 बार जेल भेजा गया क्योंकि वे इनकी आवाज उठाना चाहते थे। ये सांप्रदायिक हिंसा के खिलाफ आवाज उठा रहे थे। आप तुष्टिकरण की इतनी दूर तक राजनीति मत करिए कि कोई बेबस मारा गया हो, लाचार मारा गया हो और उनके घर में संवेदना के दो शब्द भी नहीं बोल सकते, धिक्कार है।

श्रीमती यशोदा निलांबर वर्मा :- सभापति महोदय, अनुमति है तो मैं भी कुछ बोलना चाहती हूं।

श्री धर्मजीत सिंह :- बोल लीजिए।

श्रीमती यशोदा निलांबर वर्मा :- सभापति महोदय, अभी हमारे भैया जी बहुत सी बात बोल रहे थे। बिरनपुर की घटना हुई थी, उसमें हमको भी पीड़ा है, उन्होंने अपना बेटा खोया है। मैं ईश्वर भैया से क्षमा भी चाहती हूं। वही कांड अभी साजा विधान सभा के बाद कवर्धा विधान सभा में हुआ है। गौ-सेवक साधराम यादव की गला काटकर मृत्यु हुई है लेकिन भा.ज.पा. के हमारे भैया भी गये थे, ...।

श्री ओ.पी. चौधरी :- बुलडोजर चल चुका है।

श्रीमती यशोदा निलांबर वर्मा :- अभी वीडियो भी वायरल हुआ है, वहां साजा विधान सभा के विधायक मौजूद हैं, भा.ज.पा. के एक-एक कार्यकर्ता वहां गये हैं और उनकी मां को 5 लाख रूपए में चुप कराने के लिए गये हैं। (शेम-शेम की आवाज)

श्री सुशांत शुक्ला :- माननीय सभापति महोदय, माननीया सदस्य को जानकारी का अभाव है। संबंधित अपराधी के विरूद्ध कार्रवाई सुनिश्चित की जा चुकी है।

श्रीमती यशोदा निलाम्बर वर्मा :- एक तरफ आप लोग उनको सरंक्षण भी देते हैं और दूसरी तरफ महिलाओं की बात करते हैं। (व्यवधान)

श्री अटल श्रीवास्तव :- आप जाकर देख लीजिए। (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- ओखर पिताजी ला नौकरी में लगा दो। (व्यवधान)

श्रीमती यशोदा निलाम्बर वर्मा :- नहीं हुआ है। उसका वीडियो वायरल हुआ है। उस मां की ममता ने कहा कि मुझे 5 लाख रूपये की कोई जरूरत नहीं है। वह मां आज भी कह रही है कि मुझे न्याय

चाहिए। मुझे इस प्रश्न का जवाब चाहिए कि क्या आपकी सरकार ने उसको न्याय दिया या 5 लाख रूपये देकर उसको चुप कराने की प्रक्रिया की ?

श्री रामकुमार यादव :- माननीय सभापति महोदय, ए मोर डाहर के सगा हे, एखरे खातिर मोर एक ठन निवेदन हे कि ओहा गो सेवा आयोग के सदस्य रीहिस हे। ओहा गरूआ-बछरू चराए। ठाकुर साहब बहुत अच्छा हे। ओ सरकार ला इशारा करथे। सरकार ओखर इशारा में चलथे। मोर आपसे निवेदन हे कि ओखर पिताजी ला आप घर में कुछ नौकरी लगा दो। हमो ला ओखर लिए दु:ख हे। आपसे निवेदन हे कि आप सदन ला बोलकर करवा लेवो।

श्रीमती यशोदा निलाम्बर वर्मा :- वह भी तो किसी मां का बेटा है इसिलए उसको भी न्याय चाहिए। वह उप मुख्यमंत्री जी का विधान सभा क्षेत्र है।

श्री धर्मजीत सिंह :- ठीक है। आपने जो बात कही है, उसको हम समझ गये। आप बहुत अच्छा बोली हैं। कम से कम आप में इतनी हिम्मत तो है कि आप बोल रही हैं।

श्रीमती यशोदा निलाम्बर वर्मा :- हम विरोधी नहीं हैं। आप लोग इस सदन में कहते हैं कि विष्णु देव जी की सरकार सबकी पालनहार सरकार है तो आप लोग दुआ-भेदी क्यों करते हैं ? आप सबका पालन कीजिए और सबके साथ न्याय कीजिए। आप एक के साथ न्याय करते हैं और दूसरे के अन्याय करते हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- आपमें इतनी हिम्मत है कि आप किसी गलत घटना के बारे में बोल रही हैं। आपकी पुरानी सरकार के लोगों में तो हिम्मत नहीं थी। मैं आपको एक बात बता दूं कि हमने वहां बुल्डोजर भेजवा दिया है, सब टूट जाएगा।

श्रीमती यशोदा निलाम्बर वर्मा :- आप बुल्डोजर चलवाकर अपने आपको महान समझते हैं। आप गरीब के घर पर बुल्डोजर चलवाते हैं। यदि आपको बुल्डोजर चलवाना है तो उस बड़ी कंपनी जिसने कब्जा किया है, उसके ऊपर बुल्डोजर चलवाइये।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- धर्मजीत भैया, बुल्डोजर चलने से उसके परिवार को न्याय नहीं मिलेगा।

श्री धर्मजीत सिंह :- कोर्ट का काम कोर्ट करेगा।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- केवल बुल्डोजर चलाना।

श्री अटल श्रीवास्तव :- आप उसको संविधान के तहत् न्याय दीजिए। यह बुल्डोजर तो दादागिरी है।

सभापति महोदय :- माननीय सदस्यगण सदन की गरिमा का ध्यान रखें। यह प्रश्नोत्तरी नहीं है। यहां बजट पर चर्चा हो रही है इसलिए बजट के बारे में बात कीजिए।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, एक बहुत बड़ी समस्या रेत की थी। जिसे आप लोग पैदा करके यहां से गये हैं। रेत नीति में सभी किस्म के गुण्डे, मवाली, लुच्चे, लफंगे ने ठेका ले लिया

है और अब दादागिरी कर रहे हैं। इनकी सरकार में उससे भी बड़ी दादागिरी होती थी कि मान लीजिए कि किसी A ने ठेका लिया है तो उसको फोन जाता है कि बलरामपुर की नदी का ठेका A ने लिया है तो उसमें वह B को 50 प्रतिशत पार्टनरशिप दें। माननीय मंत्री जी, आप यह रेत नीति बंद कराइये। आपको इस रेत से कितने पैसे मिलते हैं ? 100, 200, 500 करोड़ रूपये मिलते होंगे। गली-गली में रेत के कारण जो अराजकता की स्थिति निर्मित हो रही है। इससे लॉ एण्ड ऑर्डर में जितना पैसा लगता है, जितना nuisance create होता है, उसको बंद कराइये। इसका कोई मतलब नहीं है। चूंकि रेत की कोई फैक्ट्री नहीं है इसलिए रेत को तो बेचना पड़ेगा। आप रेत को ग्राम पंचायत को दे दीजिए। आपने उनके अधिकार तो छीन लिये थे। आपके एक विधायक रात में जाकर ग्राम पंचायत का काम भी कर लेते थे। सरपंच के काम को खुद ही कर लेते थे। डॉलर ले लेते थे। वह बोलते थे कि बिना डॉलर के कोई काम नहीं होगा। आप हारेंगे नहीं तो क्या होगा ? आपकी ही तो छोटी वाली मंत्री थीं। ऐसी मंत्री, जिनको 2 किलोमीटर दूर से फाइल देखने का पॉवर नहीं था।

माननीय सभापति महोदय, माननीय वित्त मंत्री जी ने ई-कोर्ट न्यायिक सुधार के लिए 500 करोड़ रूपये का प्रावधान किया है। छत्तीसगढ़ के खेलकूद और भाषा के बारे में आप बहुत चिंतित थे तो छत्तीसगढ़ के खेल के संरक्षण के लिए 20 करोड़ रूपये का प्रावधान किया है। परंतु इसमें राजीव युवा मितान क्लब के नाम से घपला, घोटाला करने का कोई प्रावधान नहीं रहेगा।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- कोई घोटाला नहीं हुआ है।

श्री धर्मजीत सिंह :- क्या नहीं हुआ है ?

श्री कुंवर सिंह निषाद :- धर्मजीत भैया, यदि आपकी उसके बारे में शंका है तो उसको दिखवा लीजिए और उसकी जांच करा लीजिए। वह युवा, जिसने गांव की संस्कृति, खेल और परंपरा को एक मंच पर लाकर साझा करने का काम किया। यदि आप उसके खिलाफ बात कर रहे हैं तो मैं समझता हूं। (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- जांच होगी। यदि आप बोलेंगे तो जांच होगी और यदि नहीं बोलेंगे तो भी जांच होगी। उसकी जांच तो होनी ही होनी है। (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- ए 20 करोड़ रूपये हा बड़े-बड़े आदमी मन बर हरे। क्रिकेट, हॉकी खेले बर हे। गरीब बर नहीं हरे। (व्यवधान)

श्री गजेन्द्र यादव :- माननीय सभापति महोदय, मैं आपसे एक बात कहना चाहता हूं कि राजीव युवा मितना क्लब में सारे विधायक लोग। (व्यवधान)

श्री सुशांत शुक्ला :- माननीय सभापति महोदय, यह एक दल के युवा नेताओं को तनखइया व्यवस्था में जोड़कर न्याय की बात कर रहे हैं। मैं चुनौती के साथ कह रहा हूं कि आप इसकी जांच करा लीजिए।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- सुशांत भाई, यह गलत बात है। कोई तनखइया व्यवस्था नहीं थी। हमने नि:स्वार्थ सेवा की है और छत्तीसगढ़ की संस्कृति और खेल परंपरा को एक मंच में लाकर साझा किया है। (व्यवधान)

श्री सुशांत शुक्ला :- आपने किसमें किया है ? छत्तीसगढ़िया ओलम्पिक।... (व्यवधान)

सभापति महोदय :- माननीय सदस्यों से आग्रह है कि आपस में बहस न करें। आप बैठिये। (व्यवधान)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- हमने छत्तीसगढ़ की संस्कृति और खेल परंपरा को एक मंच पर लाकर साझा किया, जिसे लोग भूल गये थे। (व्यवधान)

श्री सुशांत शुक्ला :- माननीय सभापति महोदय, युवाओं के लिए जो राजीव गांधी युवा मितान क्लब योजना थी, उसमें सब एक दल के युवा नेता थे। आप उसकी सूची निकलवा लीजिए।...(व्यवधान)

सभापति महोदय :- सुशांत जी। सदस्यगण आपस में बहस न करें।

श्री रामकुमार यादव :- तुमन सब भा.ज.पा. वाले मन दूध के धुले हों। (व्यवधान)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- कोई एक दल के नहीं थे, वह केवल गांव के युवा थे। (व्यवधान)

श्री सुशांत शुक्ला :- सूची निकलवाकर देख लीजिए । (व्यवधान)

सभापति महोदय :- सदस्यगण आपस में बहस न करें ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :-:- आपकी सोच गलत है, आपकी मानसिकता गलत है। आपने युवाओं को राजनीतिक रूप से जोड़ा । (व्यवधान)

श्री सुशांत शुक्ला :- आप लोगों ने किसी तो नहीं छोड़ा ।

श्री रामकुमार यादव :- भाजपा वाले मन दूध के धुले हव । (व्यवधान)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- वह केवल युवा थे, किसी राजनीतिक पार्टी के नहीं थे।

श्री सुशांत शुक्ला :- वे युवा थे, लेकिन उनके आहरण का अधिकार राजनीतिक पार्टी को था । (व्यवधान)

सभापति महोदय :- आप लोग बैठिए, आपस में चर्चा न करें ।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप लोगों ने तो किसी को बेरोजगारी भत्ता नहीं दिया था । आप सरकार के पैसे को कांग्रेसियों को बेरोजगारी भत्ता दे दिए । वही तो रोक रहे हैं, वही तो आपको पीड़ा हो रही है ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- कांग्रेसियों को नहीं, युवाओं को बेरोजगारी भत्ता दे रहे हैं । हर महीने 30 तारीख को उनके खातों में जा रहा था । आपकी सरकार 3-4 महीने में बेरोजगारी भत्ता दी है तो बता दें ।

अप्रकाशित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- आपने तो बजट में बेरोजगारी भत्ता के लिए कोई बजट रखा ही नहीं है । बेरोजगारी भत्ता को आपने इस बजट में शामिल ही नहीं किया है ।

श्री सुशांत शुक्ला :- मेरे विपक्ष के साथी बता दें कि बेरोजगारी भत्ता की कितनी संख्या थी ? (व्यवधान)

सभापति महोदय :- सुशांत जी, बैठिए । माननीय धर्मजीत सिंह जी, आप वरिष्ठ सदस्य हैं, बाकी अन्य सदस्यों के लिए भी समय देना है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति जी, ई बस सेवा के लिए 103 करोड़ रूपए, लेमरू हाथी रिजर्व परियोजना के लिए 20 करोड़ रूपए, बिलासपुर सिम्स के लिए 700 करोड़ रूपए का प्रावधान है । जब अजीत जोगी जी मुख्यमंत्री बने थे तो बिलासपुर सिम्स के अस्पताल को जिला अस्पताल में खुलवाये थे । उन्होंने प्रयास किया कि बिलासपुर में मेडिकल कॉलेज हो और खुला, लेकिन उसके बाद बिल्डिंग नहीं बन पाई, पांच साल में ये लोग बिल्डिंग नहीं बनवाये ।

श्री अटल श्रीवास्तव :- 15 साल तो आपका शासन था, तब सिम्स की बिल्डिंग कैसे नहीं बन पायी ।

श्री धर्मजीत सिंह :- पांच साल में पहल तो करते ।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- 15 साल तो आपका शासनकाल था, उसके बाद उस अस्पताल की स्थिति जर्जर थी । आप लोगों ने क्यों नहीं बनवाया ?

श्री रामकुमार यादव :- ऊंहा के गरीब आदमी मन ह आंखी के आपरेशन करवाए बर अस्पताल जावै । आपरेशन के पहिली ओमन ला दिखै, उहूं आपरेशन के बाद मा बंद हो जात रिहीसे ।

श्री धर्मजीत सिंह :- अटल श्रीवास्तव जी, आप तो सुपर सी.एम. थे । हेलीकाप्टर से लेकर वापसी में हेलीकाप्टर में बिठाते तक आप ही रहते थे । उस समय भवन के लिए बोल दिए रहते । ओ.पी. चौधरी साहब ने सिम्स के लिए 700 करोड़ रूपए दिये न । वे कहीं न कहीं रायगढ़ वाले हैं तो बिलासपुर की माटी का प्रेम उनके दिल में भी है । उन्होंने 700 करोड़ रूपए दिया, मैं उनको बिलासपुर की जनता की ओर से धन्यवाद देता हूं क्योंकि वह गरीबों का अस्पताल है (मेजों की थपथपाहट) और एक थे बेचारे, उनको तो आपने झंडा फहराने के लायक नहीं छोड़ा था ।

सभापति महोदय, बिलासपुर, जगदलपुर, अंबिकापुर के एयरपोर्ट की सुरक्षा उपकरणों की खरीदी के लिए 30 करोड़ का प्रावधान है । आप बोलते हैं कि हवाई सेवा में खर्च करो, हवाई सेवा में खर्च करो । आपकी जान को जोखिम में डालकर हवाई सेवा बिना सुरक्षा उपकरण के थोड़ी उड़ा देंगे । सुरक्षा उपकरण खरीदना है तो उसके लिए वित्त मंत्री जी ने 30 करोड़ का प्रावधान बजट में किया है। गोड़ी भाषा के विकास के लिए हिन्दी और छत्तीसगढ़ी में अनुवाद करने वाले साफ्टवेयर के लिए 12 करोड़ का प्रावधान है । गोढ़ की बात करोगे, गोंढ़ का अपमान हो गया, गोंढ़ का ख्याल नहीं कर रहे हैं। आपने

भाषा को समृद्ध करने के लिए कभी सोचा ? वहां तक तो आपका दिमाग ही नहीं गया । ऊर्जीकरण के लिए कृषि मंत्री विद्युत पम्प लगाएंगे । हमारे अनुभवी मंत्री, सुदूर बलरामपुर जिले के रहने वाले रामविचार नेताम जी हार्टीकल्चर कॉलेज, एग्रीकल्चर कॉलेज कॉलेज खोल रहे हैं । कृषि का जिम्मा इनको दिया गया है और याद रखिए, पिछली बार कृषि विभाग में जो बीज निगम था, उसका बीज बांटने का काम दाल तड़का लगाने वाला करता था । दाल तड़का बेचने वाला बीज बेचता था । आप देख लेना, पता कर लेना ।

श्री अजय चन्द्राकर :- बीज सप्लाई में दाल तड़का होता था ?

श्री धर्मजीत सिंह :- दाल तड़का वाला, जिसको बीज के बारे में ए,बी,सी,डी नहीं मालूम था, वह बीज देता था । आप लोग सब चुप बैठे रहते थे । सी.एम. हाऊस में [xx] हुआ, ये बोले तो आप नाराज हो गए । क्यों नाराज हो गए ? हम कोई अपमान करने के लिए बोल रहे हैं क्या ?

श्री कुंवर सिंह निषाद :- सी.एम. हाऊस में [xx] की बात नहीं है, पर्टिक्यूलर आपने महिलाओं को बोला था । महिलाओं के संबंध में बात आई थी । [xx] छत्तीसगढ़ की संस्कृति में नहीं है क्या, यह बता दें । (व्यवधान)

श्रीमती यशोदा नीलाम्बर वर्मा :- महिलाओं का अपमान होगा तो बात तो आएगी, हम बोलेंगे ही। (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- हमने वीडियो में देखा है, उसी को तो बोलेंगे ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- लेकिन आपने पर्टिक्यूलर महिलाओं पर फोकस किया।

श्री धर्मजीत सिंह :- वही लोग तो डांस कर रही थीं ।

श्रीमती यशोदा नीलाम्बर वर्मा :- अपने प्रदेश की संस्कृति का ख्याल करेंगे तो [xx] वाली बोले दिए । (व्यवधान)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- महिलाओं के प्रति कितना सम्मान है, यह पूरे सदन में दिख रहा है ।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- यही सम्मान मिल रहा है, यह समझ में आ रहा है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- उसमें अपमान क्या हो गया ? (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- धर्मजीत जी महिला को पुरूष बोलने के लिए तैयार हैं ।

श्रीमती यशोदा नीलाम्बर वर्मा :- आप लोग हमेशा महिलाओं का अपमान करने की बात करते हैं। (व्यवधान)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- आप बहाना मत बताईए । जो सम्मान है, वह दिख रहा है । आप लोग महिलाओं का कितना सम्मान करते हैं, वह दिख रहा है । आप लोगों की सोच पर तरस आता है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- उसमें अपमान क्या हो गया ? (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- महिलाओं को कितना सम्मान मिल रहा है, यह समझ आ रहा है । (व्यवधान)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- वह दिख रहा है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- इन्होंने महिलाओं को पुरूष बोल दिया न ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- वैसा नहीं होता ।

श्री कवासी लखमा :- सभापति जी, ये इनका एक वक्ता है, यह दिन भर भाषण देते रहेंगे क्या ? (व्यवधान)

सभापति महोदय :- माननीय धर्मजीत जी, दो मिनट में अपनी बात समाप्त करें ।

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति महोदय, यह बहुत दूर के सोच का बजट है, यह गरीबों का बजट है, यह आदिवासियों के हित को ध्यान में रखकर बनाया गया बजट है । यह आम जनता के हित में बनाया गया बजट है । (व्यवधान)

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- महिलाओं के अपमान वाली बात मत करिए। (व्यवधान)

सभापति महोदय :- आपको चर्चा के लिए और समय मिलेगा, कृपया शांत रहें। (व्यवधान)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- छत्तीसगढ़ की संस्कृति पर विरोध कर रहे हैं, मैं सुनने तो तैयार नहीं हूं । (व्यवधान)

(भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्यों द्वारा नारे लगाए गए)

सभापति महोदय :- सदस्यगण बैठिये, शांत रहे, सदस्यगण मेरी बात मानिये। (व्यवधान) माननीय सदस्यों से मेरा अनुरोध है कि आप सब लोग बैठ जायें। (व्यवधान) आप लोग बैठ जायें, शांति रखें। सुशांत जी, श्रीमती रायमुनी जी बैठ जाईये। मैं खड़ा हूं, आप लोग बैठ जाईये।

श्रीमती चातुरी नंद :- सभापति महोदय, बार-बार महिलाओं के ऊपर बोल रहे हैं।

श्री रामकुमार यादव :- जब छत्तीसगढ़ी परम्परा ला कोई आदमी अपनावत हे तो ये मन ला गलत लागत हे। ये मन सलमान खान लावय, ऐशवर्या राय ला नवचाय बर लानय। (व्यवधान)

सभापति महोदय :- देखिये, मैं खड़ा हूं, आप सब लोग कृपया शांति बनाकर रखें, बैठे।

श्रीमती चातुरी नंद :- सभापति महोदय, महिलाओं को टारगेट करने के बजाय जनता की जो समस्या है, ओ समस्या ला निपटाय के प्रयास करय, तब मजा आही।

सभापति महोदय :- धर्मजीत जी, दो मिनट में अपनी बात को समाप्त करें।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- मैंने कल भी इसी बात को कहा था।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री बृजमोहन अग्रवाल) :- सभापति महोदय, धर्मजीत जी ने ऐसी कोई बात नहीं कही है। वैसे भी जो डांस है, अगर वह अच्छा लगता है तो महिलाओं का डांस ही अच्छा लगता है। इसलिए उसमें कोई गलत बात नहीं है।

श्रीमती चातुरी नंद :- महिला मन के डांस अच्छा लगता है, करके एकदम व्यंग्यात्मक ढंग से बोले हे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप लोग दो मिनट बैठिये। मैं संस्कृति मंत्री हूं। अगर हमे गाना गंवाना है, यदि हमें मंच का संचालन करना है तो महिलाएं संचालन करती हैं तो कान को अच्छा लगता है। महिलाएं डांस करती है तो आंख को अच्छा लगता है। तो मुझे लगता है कि इसमें किसी को नाराज नहीं होना चाहिए। उन्होंने महिलाओं के खिलाफ ऐसा कोई ऐसा शब्द नहीं कहा है, जिसमें नाराजगी की बात हो।

श्री धर्मजीत सिंह :- मैंने तो कुछ बोला ही नहीं है। (व्यवधान) सभापति महोदय, मैंने सिर्फ यह नहीं कहा है कि डांस हुआ, बल्कि मैं इनका गाना भी बता देता हूं " तोर मन कैसे लागे राजा महल मा" भीतरी वाला गाना भी गाया था।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- उसमें मैं भी हूं।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप गाना गाये थे ?

श्री कुंवर सिंह निषाद :- हां।

श्री धर्मजीत सिंह :- मेरे पास सेफ है।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- मैं डांस भी किया हूं।

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति महोदय, जब ये सत्तापक्ष पर आरोप लगाते हैं, जब ये सत्ता पक्ष को ऊंगली दिखाते हैं, जब सत्तापक्ष को कटघरे में खड़ा करते हैं, तो ऐसा लगता है, जैसे कहा जाता है कि कोई सही आदमी को गलत बोलता है, आरोप लगाता है तो ऐसा लगता है जैसे शैतान बाइबिल का पाठ पढ़ रहा हो। सभापति महोदय, धन्यवाद।

श्री इन्द्रशाह मण्डावी (मोहला-मानपुर) :- आदरणीय सभापति महोदय, आज मैं वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए प्रस्तुत बजट के विरोध में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। सभापति महोदय, आज देश अमृत काल की चर्चा कर रहा है। अमृत एक ऐसा पेय है, जिसको छत्तीसगढ़वासियों को पिला भी दें तो यह अच्छा रहेगा। तो मैं चाहता हूं कि यहां पर लोगों को अमृत पिला दें और अमृतकाल को बंद कर दें।

माननीय सभापति महोदय, इस विकास यात्रा में हमारे छत्तीसगढ़ का क्या होगा, इसको बनाने का मौका भारतीय जनता पार्टी को दिया गया है तो इस प्रदेश को अच्छा विकास की ओर ले जाये, यही हम चाहते हैं। जनता की ऊंगलियों पर लगे स्याही का निशान, ये जीत का सेहरा बांधे हैं या हो सकता है कि ई.वी.एम. में निशान हो, जिसकी वजह से हुआ हो। यह भी हमारे लिए अमृत काल हो सकता है।

समय :
3:49 बजे

(सभापति महोदय (श्री धर्मजीत सिंह) पीठासीन हुए)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सभापति महोदय, वैसे नीतिगत विशेषताओं में खाद्य सुरक्षा, बिजली बिल सब्सिडी में अच्छा राशि मिला है। बिजली बिल में आधा सब्सिडी मिला है, मैं इसका स्वागत करता हूं। साथ ही आयुष्मान योजना में माननीय मंत्री जी को अवगत कराना चाहूंगा कि इसमें ए.पी.एल. वालों को 50 हजार रूपये की छूट मिली है। हमारा छत्तीसगढ़ प्रदेश किसानों का प्रदेश है। यहां छत्तीसगढ़ में पांच एकड़ का किसान भी गरीबी में गुजर-बसर करते हैं। अत: 50 हजार की सब्सिडी है, मुझे वह कम लगता है, इसे बढ़ाने की अपार दया करेंगे तो हमारे किसानों को स्वास्थ्य योजना का लाभ मिलेगा, यह मेरा विशेष आग्रह है । उसी प्रकार से पी.एस.सी. की बात हुई है, पी.एस.सी. में वर्तमान में ही नहीं, पहले भी वर्ष 2003 और 2005 में भी जो वर्षा डोंगरे का प्रकरण है, आज तक चल रहा है । इसमें बहुत सारे आई.ए.एस. भी हो गये, आई.पी.एस. भी हो गये, उनको भारी प्रमोशन मिला है और अभी भी वह कोर्ट में चल रहा है । इसका भी विशेष ध्यान रखेंगे कि वह पेंडिंग है । यह कोर्ट में चल ही रहा है, उसको भी थोड़ा पर्सू करेंगे, उससे हमको फायदा मिलेगा और जो युवा वंचित है, आप खुद युवा हैं, युवाओं के लिये सोच, विजन बहुत अच्छा रहेगा । यह मारे सभी दल वाले मानते हैं, हम तो यही चाहते हैं कि एक तो रिव्यू करे और उसका बढ़िया निराकरण करें, यही मेरा विशेष आग्रह है । सभापति महोदय, मैं मानपुर मोहला जिला से हूँ, इस बजट में वहां पर कोई भी सिंचाई का प्रावधान नहीं रखा गया है । मैं आपको बताना चाहूंगा कि वहां पर मरकाटोला जलाशय है, वैसे ही एक डिस्प्री जलाशय है जो पिछले बजट में जुड़ा हुआ है । वैसे ही कढ़ीपुर है भुरसाटोला, वहां चार परियोजनायें हैं, जिसमें 70 परशेंट काम हो चुका है । मरकाटोला जलाशय का 18 करोड़ फॉरेस्ट को देने का है, यहां पर पैसा भी आ गया है, उसका भुगतान नहीं हुआ है । अभी हमारे सिंचाई मंत्री जी नहीं है, अगर वह हो जाता है तो हमारे मोहला मानपुर के लिये एक वरदान साबित होगा और उससे पानी की समस्या का निराकरण हो जायेगा । सभापति महोदय, यहां 70 परशेंट ट्राईवल निवास करते हैं, वहां पर कोई ऐसा बजट भी नहीं आयेगा और कोई परेशानी भी नहीं होगी । आज की तारीख में बड़ी-बड़ी योजना लाने से नुकसान होता है, मानवधिकार आयोग भी उसमें सामने आते हैं, इन छोटी योजनाओं में वहां पर जंगल भी है, ऐसी कोई परेशानी नहीं होगी । मेरा विशेष आग्रह है कि इसमें आप विशेष ध्यान देंगे । सभापति महोदय, सहकारिता में कहना चाहूंगा कि यह किसानों का रीढ़ है और जिसमें सबसे पहले मुख्यमंत्री श्री अजीत जोगी जी बने थे, महज 11 माह के अल्पकाल में भोरमदेव शक्कर कारखाना की अवधारणा प्रतिपादित किये थे । माननीय डॉ.रमन सिंह जी के कार्यकाल में भी हुआ और 36 माह के कार्यकाल में पंडरिया कारखाना बना । यहां पर ऐसे ही कुछ और कारखाने बन जाते तो उससे भी क्षेत्र को लाभ मिलेगा और बजट में भी आय का स्त्रोत बढ़ेगा, ऐसा मैं चाहता हूँ । सभापति महोदय, पंचायत और ग्रामीण विकास में हमारे क्षेत्र को एक भी योजना का लाभ नहीं मिल रहा है, मेरा विशेष आग्रह था कि यह महाराष्ट्र से लगा हुआ है, जामड़ी से रायमनोरा 9 किलोमीटर, जहां पर आज भी सड़क नहीं है । आजादी के 75-76 साल बाद भी वहां पर सड़क का

अभाव है । सेमरबांधा से बोड़ेगांव, हालेपहली से महाराष्ट्र सीमा तक, जामरी से गहनगट्टा, मानपुर मेनरोड से कामखेड़ा तक, ऐसे काफी जो जगह है, जहां बहुत परेशानी का सामना करना पड़ रहा है, अत: वित्त मंत्री जी से गुजारिश है कि यहां पर भी थोड़ा सा ध्यान देंगे । सभापति महोदय, मैं इधर-उधर की बात तो नहीं करूंगा, वैसे ही पोषण आहार के रूप में बस्तर और सरगुजा को गुढ़ दे रहे हैं, मोहला-मानपुर पूरा ट्राईवल जिला है, वहां पर इसे देने का प्रयास करें तो बहुत अच्छा रहेगा । सभापति महोदय, खेल एवं युवा कल्याण में प्रोत्साहन देने के लिये हमारे यहां कबड्डी में लगभग 50-100 बच्चे स्टेट और नेशनल खेले हैं । वहां पर खेल अकादमी की भी आवश्यकता है, यह उपलब्ध हो जाये तो बड़ी मेहरबानी होगी । सभापति महोदय, हमारे यहां मोहला में न्याय व्यवस्था के तहत एक भी कोर्ट नहीं है, जिला बनने के बाद डिस्ट्रिक्ट कोर्ट नहीं तो ए.डी.जे.कोर्ट और चौकी में एक उप जेल भी बन जायेगा तो राजनांदगांव वहां से 100 किलोमीटर है, वहां जाना नहीं पड़ेगा । यह क्षेत्र नक्सलियों का गढ़ है, इससे पुलिस को भी ज्यादा परेशानी नहीं होगी, ऐसा मेरा सोच है । यहां पर विशेष ध्यान देंगे । सभापति महोदय, पर्यटन और संस्कृति में भी वहां ज्यादा कुछ नहीं है, लेकिन वहां पर मोंगरा जलाशय है, जो माननीय अजीत जोगी जी के कार्यकाल में प्रारंभ हुआ था । हालांकि आपके कार्यकाल में बना है, उसे भी पर्यटन के रूप में विकसित किया जा सकता है । हम लोग इस वर्ष वहां पर गेस्ट हाऊस बना रहे हैं, अभी काम चालू है । उसे इन्क्रीज करेंगे तो मैं समझता हूँ कि उससे लाभ मिलेगा । सभापति महोदय, हमारे इस क्षेत्र में शिक्षा की व्यवस्था बहुत लचर है, शिक्षक वहां पर कुछ दिनों के लिये नौकरी ज्वाईन तो करते हैं, लेकिन कुछ दिनों बाद भारी रकम देकर अटैचमेंट के लिये ट्रांसफर करवा लेते हैं । यह अभी चल ही रहा था । मैं चाहता हूं कि वहां पर पूरा काम करवाये। हमारे यहां जो हाई स्कूल हैं, उसके आस-पास 20-20 किलोमीटर तक कोई भी स्कूल नहीं है। जिसमें विशेष रूप से वासड़ी, करमतरा, टोहे, ईरागांव, सीतागांव, बसेली, घोटिया, डोकला, दिघवाड़ी, सरखेड़ा, मदनवाड़ा, कोराचा, ककईपार, रानाटोला, भोजटोला, कन्दाड़ी, मुकादाह, पेन्दाकोड़ो, यदि इसका उन्नयन करके हायर सेकेण्डरी स्कूल बना देंगे तो यह पूरा जो सराउंडिंग एरिया है, वहां 20-20 किलोमीटर का अंतर है और ट्राइबल क्षेत्र में 20 किलोमीटर जाने के लिये सड़क की व्यवस्था नहीं है, उसमें बहुत दिक्कत होती है। मैं चाहता हूं कि यहां पर हाई स्कूल का हायर सेकेण्डरी में उन्नयन कर देंगे तो हमारे बच्चे जो अनपढ़ है, वह शिक्षित हो जायेंगे। वहां पर तो पहनने के लिये कपड़े भी नहीं है, वहां ऐसी स्थिति है। आप इसको बनवा देंगे तो बहुत मेहरबानी होगी।

सभापति महोदय, वैसे ही उद्योग का क्षेत्र है। वहां पर थोड़े-से भी उद्योग का संचालन नहीं है। वहां उद्योग की स्थापना के लिये वनोपज पर आधारित कोई भी प्रसंस्करण चाहे मक्का का हो, चाहे कोई भी वनोपज का हो, इसका भी वहां पर विजन रखेंगे तो हमारे युवा साथियों की जो रोजगार मूलक समस्याएं हैं, वह समस्याएं दूर होंगी। यदि कोई वनोपज आधारित उद्योग भी रख देंगे तो यह भी काम आ जायेगा।

सभापति महोदय, ऊर्जा विभाग के संबंध में कहना चाहूंगा। वहां आजादी के बाद से लेकर आज तक बिजली नहीं पहुंची है। मैं आपको जिन गांवों के बारे में बता रहा हूं, जो 17 गांव है, वहां आज तक लोग अंधेरे में रहते हैं। वहां माननीय पूर्व मुख्यमंत्री, रमन सिंह जी के कार्यकाल में सोलर पैनल लगे थे, उसके बाद आज तक कोई काम नहीं हुआ है। मैंने पिछले कार्यकाल में भी इस बात को उठाया था, जिसमें कातुलझोरा, बोदरा, सुड़ियाल, सम्बलपुर, गट्टेगहन, पुगदा, आमाकोड़ो, बुकमरका, यह जिन जगहों के नाम हैं, वह बहुत खतरनाक जगह है, परंतु वहां पर बिजली ले जा सकते हैं, कोई दिक्कत नहीं है। जो पीटेमेटा क्षेत्र है, वह चारों तरफ से घिरा हुआ है। मैं हर गांव में गया हूं, मुझसे कोई गांव नहीं छूटा है। टाटेकसा, एड़समेटा, कुजकन्हार, कुडकाल, रायमन्होरा, आमपायली, मुंदेली, घोटिया कन्हार, ऐसे 17 गांव है, जिनको नक्सलियों का गढ़ भी मानते हैं। मैं वही चाह रहा हूं कि यदि वहां पर बिजली की व्यवस्था हो जाती तो हमारे बच्चों को स्कूलों का भी फायदा होता और उनके रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे। अभी उनको मोबाईल चार्जिंग के लिये वहां से 15-20 किलोमीटर दूर जाना पड़ता है, वह वहां से मोबाईल चार्ज कर के ले जाते हैं और सफर करते हैं। वहां सड़क भी नहीं गई है और उनके आने जाने का भी कोई साधन नहीं है। वह क्षेत्र बरसात में एक टापूनुमा क्षेत्र बन जाता है। मैं चाहता हूं कि इसको भी बजट में जोड़े। मैं आज और ज्यादा नहीं कहूंगा। इतना ही कहूंगा कि यह बजटीय भाषण मेजें थपथपाने के लिये नहीं है, यह बजट का भाषण धरातल पर दिखाने के लिये होना चाहिए। यह निवेदन के साथ मैं अपनी वाणी को विराम देता हूं। सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिये बहुत-बहुत धन्यवाद्।

सभापति महोदय :- श्री इंद्र कुमार साहू।

श्री इंद्र कुमार साहू (अभनपुर) :- सभापति महोदय, मैं वर्ष 2024-25 के बजट के समर्थन में बोलना चाह रहा हूं। हमारी सरकार ने अमृतकाल का पहला बजट या यह कहे कि यशस्वी प्रधानमंत्री मोदी जी की गारण्टी वाला बजट प्रस्तुत किया है। पिछले वर्ष की तुलना में 22 प्रतिशत वृद्धि के साथ माननीय वित्त मंत्री महोदय ने 01 लाख 47 हजार 500 करोड़ रूपये के इस वृहद बजट के केंद्र बिन्दु में ज्ञान का होना बताया है। इसमें गरीब, युवा, किसान तथा महिलाओं का विकास ही हमारी सरकार की पहली प्राथमिकता के क्रम में है और इस बजट को मोदी जी की गारण्टी का बजट कहते हैं क्योंकि मोदी जी के नेतृत्व में जिन वादों एवं गारण्टी के साथ हम प्रदेश की जनता के बीच में गये थे, उनसे किये वादों को पूरा करना ही हमारी सरकार का लक्ष्य है। हमारी सरकार प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 18 लाख परिवारों को आवास, महतारी वंदन योजना, कृषक उन्नति योजना, जल जीवन मिशन, तेंदू पत्ता संग्राहकों को 5500 रूपये प्रति मानक बोरा भुगतान, राम लला के दर्शन, छत्तीसगढ़ उद्यम क्रांति योजना, राजधानी क्षेत्र का विकास, इनवेस्ट छत्तीसगढ़ तथा राज्य के 5 शक्तिपीठों के विकास के लिये प्रतिबद्ध है।

माननीय सभापति महोदय, हमारा प्रदेश, गांवों का प्रदेश है। हमारे प्रदेश की ज्यादातर आबादी आज भी गांव में रहती है। हमारे प्रदेश के विकास के लिये पंचायत एवं ग्रामीण विकास अत्यंत आवश्यक है। जिसके लिये हमारी सरकार कृतसंकल्पित है । हमारी सरकार द्वारा आगामी वित्त वर्ष हेतु पंचायत एवं ग्रामीण विकास के लिए 17 हजार 526 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया है, जिसमें मनरेगा हेतु 2 हजार 788 करोड़ रूपये और प्रधानमंत्री आवास हेतु 841 करोड़ रूपये, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन हेतु 561 करोड़ रूपये, पंचायतों के बिजली भुगतान हेतु 500 करोड़ रूपये, स्वच्छ भारत मिशन हेतु 400 करोड़ रूपये, पी.एम. जनमन योजना हेतु 300 करोड़ रूपये तथा मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना हेतु 94 करोड़ रूपये, मुख्यमंत्री ग्राम गौरव पथ योजना हेतु 50 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया है।

माननीय सभापति महोदय, उपरोक्त योजनाओं के क्रियान्वयन से गांव की जनता की मूलभूत आवश्यकताएं जैसे सड़क, आवास, ग्रामीण आजीविका एवं रोजगार, स्वच्छता एवं पेयजल हेतु विद्युत आदि को उपलब्ध कराना संभव हो पाएगा।

माननीय सभापति महोदय, राजस्व विभाग के आंकड़ों के अनुसार हमारे प्रदेश का कुल क्षेत्रफल एक करोड़ सैंतीस लाख उन्यासी हजार आठ सौ छत्तीस हेक्टेयर है। वर्तमान में प्रदेश में 5 राजस्व संभाग, 33 जिले, 96 अनुभाग, 246 तहसील, 730 राजस्व निरीक्षक मण्डल है। प्रदेश में गांवों की कुल जनसंख्या 20 हजार 230 है। इतनी बड़ी व्यवस्था का सुचारू रूप से संचालन तथा कार्यों में पारदर्शिता को सुनिश्चित करने के लिए राजस्व एवं आपदा प्रबंधन विभाग द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी के व्यापक प्रयोग की ओर केन्द्रित किया जा रहा है। कृषकों को सुविधा तथा समय के बचत के उद्देश्य से राज्य के समस्त राजस्व अभिलेख आज राजस्व विभाग की वेबसाईट पर उपलब्ध कराये जा रहे हैं।

समय
4.02 बजे **(सभापति महोदय (श्री बघेल लखेश्वर) पीठासीन हुए)**

माननीय सभापति महोदय, प्रदेश में भू नक्शा, खसरा बी-वन, परिवर्तित भूमि, संधारण खसरा, नजूल भूमि आज भी भूमि स्वामित्व के लिए राजस्व विभाग की वेबसाईट भुंईया पर उपलब्ध है। इन सभी के अतिरिक्त भूमि का सीमांकन, बटांकन, व्यपवर्तन आदि का आवेदन भुंईया वेबसाईट के माध्यम से किया जाना संभव हो गया है। राजस्व न्यायालयों में चल रहे समस्त प्रकरणों की अद्यतन जानकारी रेवेन्यू कोर्ट की बेवसाईट पर सभी के लिए उपलब्ध कराया जा रहा है। निश्चित रूप से राजस्व विभाग का यह प्रयास प्रदेश के किसान भाईयों के लिए अत्यन्त सुविधाजनक है। हमारी सरकार द्वारा राजधानी क्षेत्र में राजस्व प्रकरणों की बढ़ती हुई संख्या के निराकरण हेतु तहसीलदार के 30 पद तथा नायब तहसीलदार के 15 नये पदों का सृजन राजधानी के तहसील हेतु किया गया है। जो हमारी सरकार द्वारा जन-जन तक सुशासन के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

मानननीय सभापति महोदय, हमारी सरकार की समस्त योजनाएं किसानों, महिलाओं, युवाओं तथा गरीबों के कल्याण को केन्द्रित कर बनायी गईं हैं। हमारी सरकार शिक्षा एवं स्वास्थ्य, सड़क एवं पेयजल, ग्राम विकास, कृषि, सिंचाई, पशु पालन, रोजगार, प्रौद्योगिकी सेवा पर्यटन तथा संस्कृति सभी क्षेत्रों में पूरी तत्परता तथा निष्ठा से प्रदेश के आमजन के जीवन के सभी पहलुओं के समग्र विकास के लिए पूरी संवेदनशीलता के साथ प्रतिबद्ध है।

मानननीय सभापति महोदय, मुझे एक बार पुन: इस चर्चा में बोलने का अवसर देने के लिए तथा पूरे धैर्य से सुनने के लिए, मैं आपको एवं सदन के सभी मानननीय सदस्यों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

सभापति महोदय :- आपको धन्यवाद्। श्री विक्रम मण्डावी।

श्री विक्रम मण्डावी (बीजापुर) :- मानननीय सभापति महोदय, मैं इस बजट के विरोध में अपनी बात रखने के लिए खड़ा हुआ हूँ।

मानननीय सभापति महोदय, मानननीय वित्त मंत्री श्री ओ.पी. चौधरी जी इस सरकार का पहला बजट पेश कर रहे थे। हम सबको उम्मीदें थीं कि वह भारतीय प्रशासनिक सेवा जैसे बड़े पद से इस्तीफा देकर, राजनीति में आएं हैं और वित्त मंत्री बनकर, सरकार का पहला बजट पेश कर रहे हैं। हमें बहुत ही उम्मीदें थीं कि वह ऐसा बजट पेश करेंगे, जिस पर पूरे प्रदेशवासियों को बहुत आशा और विश्वास था कि यह बजट प्रदेश के हित में होगा, लेकिन इस तरह का बजट को देखने के बाद, हम सब को यह लग रहा है कि कि इससे पूरे प्रदेशवासियों को निराशा हुई है। अपने बजट में मानननीय वित्त मंत्री जी ने केवल लच्छेदार शब्दों, शेरो-शायरियों का जाल फैलाकर 10 स्तम्भों के जरिये प्रदेश के विकास का जो संपना दिखाया है, इसमें कुछ भी नया नहीं है। यह सब नई बोलत में पुरानी शराब जैसे है। मानननीय सभापति महोदय, हमारा प्रदेश किसानों का प्रदेश है, इस बात को केन्द्र में रखकर हमारी पिछली कांग्रेस की सरकार ने काम किया और किसानों को धान का 2500 रुपये समर्थन मूल्य देने का वादा किया था, उसे पूरा किया। उसके साथ-साथ किसानों का कर्ज माफ किया। किसानों की आय बढ़ाने के लिए लगातार हमारी सरकार ने काम किया। भाजपा सरकार 15 साल सत्ता में रही और हर बार धान का समर्थन मूलय 2100 रुपये और कर्ज माफी की बात करती थी और जैसे ही चुनाव जीतते, इसको भूल जाते और अपने वादे से पीछे हट जाते थे। उन्होंने 15 साल सत्ता में रहने के बावजूद भी कभी भी अपने वादों को पूरा नहीं किया। इस बार किसानों को धान का 3100 रुपये समर्थन मूल्य देने की बात की है, अगर वह दे रहे हैं तो इसका सबसे बड़ा श्रेय कांग्रेस की सरकार को जाता है। वह इसलिए कि अगर हम पिछली बार धान का समर्थन मूल्य 2500 रुपये नहीं देते तो आज वह किसानों को धान का समर्थन मूल्य 3100 रुपये नहीं देते। इसका श्रेय हमारी सरकार को जाता है। भाजपा सरकार ने अपने 15 साल के कार्यकाल में जितनी धान खरीदी है, उतनी सिर्फ हम लोगों ने पिछले 5 सालों में धान खरीदी की है। आप जो 145

लाख मीट्रिक टन की बात कर रहे हैं, उसका श्रेय हमारी कांग्रेस की सरकार को जाता है। हमारे सत्तापक्ष के साथी बार-बार भ्रष्टाचार की बात कर रहे थे कि पिछली सरकार में बडे-बड़े भ्रष्टाचार हुए हैं, पी.एस.सी. का घोटाला हुआ है। मैं हमारी सत्तापक्ष के माननीय साथियों से अनुरोध करता हूं कि वह वर्ष 2008, 2013, 2018 में जो पी.एस.सी. की परीक्षायें हुई थीं, उसके बारे में थोड़ा जानकारी ले लें। सभी परीक्षायें लगातार विवादास्पद रही हैं। वर्तमान में बहुत सारे प्रकरणों में सुप्रीम कोर्ट से स्टे भी है। वर्ष 2005 में जो पी.एस.सी. की परीक्षा हुई थी, उसको सरकार ने निरस्त भी किया था। यह कहना कि कांग्रेस सरकार के कार्यकाल में ही पी.एस.सी. के मामले हुए हैं, इस तरह से जो प्रकरण सामने आये हैं, उससे पहले नहीं हुए हैं, यह कहना गलत है। मैं हमारे माननीय सरकार के मंत्रियों से अनुरोध करता हूं कि अगर इसकी जांच करायेंगे तो पुराने प्रकरणों की भी जांच कराईये। उसमें जो दोषी हैं उनके ऊपर भी कार्रवाई करिये। हमारे सत्तापक्ष के साथी बार-बार जिस तरीके से बड़ी-बड़ी मोदी की गारंटी योजना की बात कर रहे हैं। आपने चुनाव में जो बात की कि हम मोदी की गारंटी योजना लागू करेंगे। आज जो आप मोदी की गारंटी योजना लागू कर रहे हैं, उन दोनों में कितना अंतर है, आप इस बात को देखिये। आपने चुनाव के पहले बोला था कि हम सभी महिलाओं को महतारी वंदन योजना के माध्यम से हर महीने 1000 रुपये की दर से साल में 12 हजार रुपये देंगे। उसमें आपने कभी भी क्राइटेरिया तय नहीं किया था कि आप इन महिलाओं को देंगे, इन महिलाओं को नहीं देंगे। लेकिन आज सरकार में बैठने के बाद नियम-शर्तें लागू कर रहे हैं। आप उसमें यह कह रहे हैं कि हम नियम-शर्तों के आधार पर देंगे। आपने शुरू में पूरे विधान सभाओं में बड़े पैमाने पर फार्म भरवाया था। सरकार को, प्रशासन को हस्तक्षेप करना पड़ा और फार्म को भरने से रोकना पड़ा। उसके बाद कहीं न कहीं स्थिति नियंत्रण में हुई थी। जो महिलाओं ने फार्म भरी हैं उनका क्या होगा? वर्तमान समय में हमारे मंत्री जी ने जो बजट प्रस्तुत किया है, उसको पढ़ रहा था। जिस तरीके से आपने जो नियम-शर्तें लागू की हैं, हमारी जनसंख्या लगभग 3 करोड़ के आसपास है। उसमें से अगर डेढ करोड़ भी महिलाओं को मानते हैं, उसकी आधी जनसंख्या भी हम लोग महिलाओं की मानते हैं तो 70-80 लाख तो महिलायें होती हैं। आप जिन नियम-शर्तों को लागू करके देने का काम करके रहे हैं, उसमें कितनी महिलायें आयेंगी। उस क्राइटेरिया में मुश्किल से 20 से 25 लाख महिलायें ही आ सकती हैं। उसमें इस बात का पहले उल्लेख नहीं था कि आप उनको नहीं देंगे। आपने महिलाओं के साथ भी लगातार न्याय करने का काम नहीं किया है। आपने मोदी जी की दूसरी गांरटी का जो वादा किया है कि हम सबको आवास देंगे, 18 लाख आवास देंगे। आपने बड़े-बडे होर्डिंग्स लगाये हैं। आप 18 लाख आवास किसको देंगे और यह 18 लाख व्यक्ति कौन हैं, इस बात की भी कहीं पर आपने स्पष्ट उल्लेख नहीं किया है। मैं सदन को बताना चाहूंगा कि अब तक 9 लाख 55 हजार 390 मकान पूर्ण हो चुके हैं, 2 लाख 20 हजार 752 मकान निर्माणाधीन हैं, इस प्रकार कुल 11 लाख 76 हजार 142 मकान जो पहले से आरलेडी बन चुके हैं। उसके बाद भी आप यह कह रहे हैं कि 18 लाख

मकान देंगे। अगर आप इनको छोड़ रहे हैं तो क्या आप नये सिरे से 18 लाख मकान देंगे? इस बात का भी यहां पर स्पष्ट उल्लेख नहीं है। जिस सतरीके से आपने महतारी वंदन योजना में जो फार्म भरवाये, इसमें भी फार्म भराये हैं। उन फार्मों का क्या होगा जो आलरेडी आप पहले से फार्म भरवा चुके हैं। इसका भी कहीं स्पष्ट उल्लेख नहीं है। लगातार हमारी जनता को गुमराह करने का काम इस सरकार ने किया है। हमारे वित्त मंत्री जी जो 10 Pillars की बात कर रहे हैं, उसमें एक Pillar "बस्तर-सरगुजा की ओर भी देखो" भी था। इससे पहले भी 15 साल आपकी सरकार थी। बस्तर-सरगुजा की हालत कैसी थी, यह सभी जानते हैं। यहां ज्यादातर हमारे पुराने सदस्य भी हैं। उससे कुछ छिपा हुआ नहीं है। मैं बस्तर से आता हूं। पिछले 15 सालों में बस्तर में क्या स्थिति थी? बस्तर की पहचान नक्सली घटनाओं से होती थी। पिछले 15 साल में उस पहचान के कारण वहां पर न मंत्री, विधायक से लेकर कोई भी अधिकारी, बड़े व्यक्ति बाई रोड चलने का हिम्मत नहीं कर पाये, लेकिन पिछले पांच सालों में हमारी सरकार के कार्यकाल में मंत्री से लेकर विधायक तक तमाम लोगों का अंदरूनी क्षेत्रों में पहुंचाने का काम हुआ। पिछले 5 सालों में अंदरूनी क्षेत्र, संवेदनशील क्षेत्र, नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में भी विकास पहुंचा है। हमारे गृह मंत्री जी सिलगेर जाने की बात कर रहे थे, वह सिलगेर रोड किसने पहुंचाया? हमने सिलगेर पार करते रोड को सुकमा तक पहुंचाया। उन तमाम नक्सली क्षेत्रों में रोड बनना, पुल-पुलिया बनना, विकास होना, मूलभूत सुविधाएं प्रदान होना, यह पिछले पांच सालों में बड़े स्तर पर हुआ है। मैं यह नहीं कहता हूं कि पिछले 15 साल में नहीं हुआ है, लेकिन उससे भी ज्यादा जो तीव्र गति से काम होना था, वह काम पिछले पांच सालों में उन क्षेत्रों में हुआ है और बस्तर की पहचान वहां पर लगातार शांति है। पहले वहां पर आदिवासियों को जेल भेजना, आदिवासियों को फर्जी मुठभेड़ में मारना, आदिवासियों को जमीन लेकर उद्योगपतियों को देना, उन जमीनों को भी वापस करने का काम हमारी सरकार ने, हमारे पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी ने किया था। माननीय सभापति महोदय, पिछले पांच सालों में जिस तरीके से बस्तर में काम हुए, वहां की भाषा, बोली, संस्कृति, रहन-सहन को लगातार जो सामने लाने का काम हुआ, उसको संरक्षित करने का काम हुआ, वह 15 सालों में नहीं हुआ। पिछले पांच सालों में बस्तर का अंदरूनी से अंदरूनी जगह का आदमी का बात सरकार के सामने रखने काम हुआ है। माननीय सभापति महोदय, जिस तरीके से आपने जाना कि इस सरकार बनने के बाद में लगातार बड़े-बड़े वादे करना और उसमें यह कहना कि हमारी सरकार बनने के बाद हमारी मोदी की गारंटी योजना को लागू करेंगे। उसमें शुरूआती तौर पर बात को कहना और अभी कहने में बहुत ज्यादा उसमें अंतर है। बहुत ही लंबे समय के बाद हमारे बीजापुर जिलावासियों की भी मांग थी कि बीजापुर जिला में जिला एवं सत्र न्यायालय हो। मैंने पिछले बार भी लगातार सरकर के सामने अपनी बात रखी थी और इस बार हमारे बीजापुर जिला के लिए जिला एवं सत्र न्यायालय का जो मांग था, उसके लिए मैं माननीय वित्त मंत्री जी को भी बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं कि आपने हमारे बीजापुर जिलावासियों की बड़ी मांग सुनी और उसको मांग को पूरा किया। मैं माननीय वित्त मंत्री जी से

भी अनुरोध करता हूं, क्योंकि यदि मैं पूरे बस्तर संभाग के परिप्रेक्ष्य में बात करूं तो इस बजट में बहुत सारे काम इस बजट में नहीं आई हैं। जो वास्तव में जरूरत की चीजें हैं। वहां पर मूलभूत सुविधाएं ज्यादा से ज्यादा बढ़ाएं। रोड की कनेक्टिविटी, पुल-पुलिया को लेकर साथ-साथ हम जितना आगे बढ़ेंगे, उसमें हम अन्य समस्याओं से बहुत जल्दी जल्दी से छुटकारा पायेंगे। मैं माननीय वित्ती मंत्री जी से उम्मीद करता हूं। आप अपने प्रशासनिक सेवा काल में भी दंतेवाड़ा जैसे जिले में रह चुके हैं। आप उसको नजदीकी से जानते हैं। कहीं न कहीं इसका लाभ हमारे बस्तर और बीजापुर जिले को निश्चित तौर पर मिलेगा। मैं माननीय वित्त मंत्री जी से अनुरोध करता हूं कि वहां जो भी काम छुटे हैं, उन कामों को लेते हुए एक अच्छा प्रयास करेंगे। आपसे ऐसा उम्मीद है। सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

सभापति महोदय :- श्री किरण देव। श्री मोतीलाल साहू।

श्री मोतीलाल साहू (रायपुर ग्रामीण) :- माननीय सभापति महोदय, छत्तीसगढ़ का बजट वर्ष 2024-25 की जितनी तरीफ की जाए, जितनी प्रशंसा की जाए, वह कम है। यह बजट लोक कल्याणकारी, लोगों की विश्वास पर खरा उतरने वाली और मोदी जी की गारंटी को अमलीजामा पहनाने वाला बजट है। इस बजट में गरीबों के लिए, युवाओं के लिए, महिलाओं के लिए, अन्नदाता किसान के लिए और सभी वर्गों के लिए, सबके हितों का ख्याल रखते हुए सर्वजन हिताय और सर्वजन सुखाय की कहावत को चरितार्थ करने वाली और धरातल में उतर करके छत्तीसगढ़ की सर्वांगीण विकास करने वाली बजट है। माननीय सभापति महोदय, इसके पूर्व वर्ष 2018 के चुनाव के समय कांग्रेस का जन घोषणा-पत्र जारी हुआ था । उसमें जो वायदा किया था और 5 सालों में छत्तीसगढ़ की जनता ने अपने आपको ठगा सा महसूस किया, उन्हें छला गया, उनके साथ धोखा हुआ । राजनीतिक घोषणा-पत्र से जनता का भरोसा उठ चुका था लेकिन भारतीय जनता पार्टी को अभी वर्ष 2023 के चुनाव में जनता ने जो आशीर्वाद दिया उसके अनुरूप अभी छत्तीसगढ़ को वर्ष 2024-25 के बजट में अब उनको फिर से विश्वास और फिर से भरोसा इस छत्तीसगढ़ की नवीन भारतीय जनता पार्टी की सरकार पर हो चुका है । इस प्रकार जब इन 5 सालों में देश के लोगों के बीच आम चर्चा हुआ करती थी कि जब देश में विकास की बात होती है तो लोग गुजरात मॉडल की ओर देखते हैं, जब अपराध की बात होती है तो बुल्डोजर चलाने वाली योगी सरकार की तरफ देखते हैं लेकिन इन 5 सालों में छत्तीसगढ़ में जो भ्रष्टाचार हुआ उसको देखते हुए यदि भ्रष्टाचार की बात होती थी तो छत्तीसगढ़ को कांग्रेस ने भ्रष्टाचार मॉडल बनाकर रखा था यह बहुत बड़े दुर्भाग्य की बात है ।

माननीय सभापति महोदय, अभी छत्तीसगढ़ को इस बदनामी से, इस भ्रष्टाचार से उबरने के लिये यह बजट है । अब फिर से छत्तीसगढ़ की जनता के मन में भरोसा कायम हुआ है । मैं माननीय वित्तमंत्री जी को बधाई देना चाहूंगा चूंकि छत्तीसगढ़ में 5 सालों में जमीनों के हाथ और पैर उगाये गये

हैं । कहीं सड़क के किनारे की जमीन पीछे चली गयी है, कहीं पीछे की जमीन सड़क के किनारे आकर बैठ गयी है । कहीं पर जमीन लापता हो गयी है, कहीं गुमशुदा हो गयी है । अब और तो और क्या कहें, कहीं-कहीं जमीन तो अपने मालिक का नाम तक बदलने में कामयाब हो गया है । छत्तीसगढ़ की यह 5 साल की व्यथा है । मैं माननीय वित्तमंत्री जी को बधाई देना चाहूंगा, धन्यवाद देना चाहूंगा कि उन्होंने अभी इन सब नवीन चीजों के निपटारे के लिये, राजस्व निपटारे के लिये नवीन न्यायालय का गठन करके 30 तहसीलदारों की और 15 नायब तहसीलदारों सहित इसके प्रकरण के शीघ्र निपटारे के लिये इन्होंने बजट में जो प्रस्ताव लाया है । छत्तीसगढ़ की ऐसी कोई जमीन नहीं बची, जिसमें किसी ने इन 5 सालों में लूट नहीं मचाया हो । हर जगह समाचार-पत्र, हर जगह सोशल मीडिया सब रंगा रहता था कि कांग्रेस और कांग्रेस के नेताओं ने जिस प्रकार से छत्तीसगढ़ की जमीन को लूटा और इस पर कब्जा किया है अब उसका हिसाब और जवाब जो है, अभी इस बजट में जो प्रावधान लाया गया है उसमें सबको मिलेगा । यह अभी कह रहे थे, मैं सुन रहा था । इनकी निराशा वाजिब भी है । चूंकि इन्होंने इन 5 सालों में छत्तीसगढ़ को जो लूटा है अब लगता है कि छत्तीसगढ़ में कुछ विकास के काम हो जायेंगे लेकिन इनको हासिल कुछ होना नहीं है तो इनकी तकलीफ और निराशा वाजिब ही है । यह कह रहे थे कि गरीबों के लिये कुछ हुआ नहीं है । हमारे रामकुमार यादव भाई यहां बैठे हुए हैं । वे कह रहे थे कि हमको गरीबों ने भेजा है, जनता ने भेजा है । यह कहना वाजिब भी है कि गरीबों ने भेजा है लेकिन हम लोगों को भी गरीबों ने भेजा है और इस बजट में गरीबों की चिंता की गयी है । (मेजों की थपथपाहट)

माननीय सभापति महोदय, प्रधानमंत्री आवास योजना । गरीबों के सिर से छत छीनने का जो काम इन 5 सालों में किया गया था, उसे अभी पूरा करने के लिये मोदी गारंटी है । अब छत्तीसगढ़ में गरीबों के लिये 18 लाख मकान बनने वाले हैं । यह किसके लिये है? गरीबों के लिये है । जो भूमिहीन कृषि मजदूर हैं उनको 1000 रूपये देने का जो निर्णय इस बजट में आया है वह किसके लिये है, गरीबों के लिये है। डॉ. रमन सिंह जी इस छत्तीसगढ़ में जो खाद्यान्न योजना लाये । कभी भूखे पेट हमारे बच्चे सोया करते थे । खाद्यान्न योजना लाकर के आज घरों तक चावल पहुंचाने का काम किसने किया ? भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने किया ।

श्री रामकुमार यादव :- मोती भैया, आप बहुत अच्छा बोलत हओ । धन्यवाद हे । पहला वक्तव्य हे । व्यक्तिगत रूप से मोर बड़े भैया हओ लेकिन आपके जानकारी मा बता दओं कि कांग्रेस के सरकार हे । जेन हा फूड कानून लाने रहिस हावय। अउ मनमोहन जी के सरकार हे। ते इंदिरा आवास के बात करथस। इंदिरा आवास कबके चलथे। ए मोदी जी आये हे तभी ले शुरू होये हे का या हमर वित्त मंत्री आये हे तब से शुरू होये हे। ए शुरू से चलत हाथे। नाम बदले हे सिर्फ नाम।

श्री मोतीलाल साहू :- यादव जी, आप और हम चलेंगे और पूरा सदन चलेगा।

सुश्री लता उसेंडी :- पंचायत में एक ठन, दू ठन देत रहिन हे। अभी पूरा दू-दू सौ ठन देथे। लोग मन इंतजार करत करत बूढ़ा जात रहिन हे।

श्री मोतीलाल साहू :- दीदी, एक मिनट।

श्री रामकुमार यादव :- आपके अउ हमर पुरखा रहे न, कांग्रेस हा शुरू करे हे एला।

श्री मोतीलाल साहू :- आप और हम पूरा सदन चलेगा कि एक भी इंदिरा आवास कहीं पर खड़ा दिखाई दे आज की तारीख में तो मुझे बता देना। उसको मैंने देखा नहीं है।

श्री रामकुमार यादव :- अउ जमीन के बात करथे। 15 साल के राज में जतका जो नेशनल हाइवे के रोड हे ओ जम्मो में जाकर देखव ओ किसान के जमीन ला 15 साल में करे हव।

सभापति महोदय :- यादव जी, बैठिए प्लीज। चलिए, बात रखिए।

श्री मोतीलाल साहू :- यादव जी, उसका दूध का दूध और पानी का पानी होने वाला है। अभी आप चिंता मत करिए। जिन गरीबों की आप चिंता कर रहे थे, जिन किसानों की चिंता कर रहे थे, ये बजट सिर्फ उन्हीं लोगों के लिए बनाया गया है कि उनका जीवन-स्तर ऊपर उठे और उठकर उनकी भूमिका, योगदान जो माननीय प्रधानमंत्री जी का सपना है कि मेरा भारत विकसित हो तो छत्तीसगढ़ भी विकसित होगा और छत्तीसगढ़ विकसित होगा तभी भारत विकसित होगा। इसी संकल्प को लेकर इस बजट का निर्माण किया गया है। मैं माननीय वित्त मंत्री जी को और भी बधाई देना चाहूंगा कि बिना किसी प्रकार के करारोपण के, बिना किसी प्रकार के कर में वृद्धि के 22 प्रतिशत राजस्व हेतु आज छत्तीसगढ़ के लिए इन्होंने प्रावधान रखा है, इनकी मैं क्षमता और योग्यता की भूरि-भूरि प्रशंसा करना चाहूंगा कि इन्होंने ऐसा प्रस्ताव लाया, ऐसा बजट लाया कि बिना किसी के ऊपर अतिरिक्त भार लगे इस बजट से छत्तीसगढ़ के राजस्व की आय होगी। छत्तीसगढ़ में महिलाओं की आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण की हम बात करते हैं तो पोषित, सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए 12000 रूपये है, यह बहुत ही महत्वाकांक्षी योजना है। निश्चित तौर पर हमारे विपक्ष के साथी कुछ-कुछ कह रहे थे कि पुरूष लोग पैसा रख लेते हैं, पैसा मिलता नहीं है, इसी उद्देश्य से तो भारतीय जनता पार्टी ने बजट में प्रावधान लाया कि बहनों और माताओं के विकास और उन्नति के लिए बच्चों के लिए और घर-परिवार के लिए वो 1000 रूपये बहुत बड़ा वरदान साबित होगा। ये किसानों के हित की बात करते हैं। किसानों के हित की बात तो भारतीय जनता पार्टी करती है। बिना ब्याज के ऋण अगर छत्तीसगढ़ में किसी ने दिया था तो डॉ. रमन सिंह जी ने शुभारंभ किया था। (मेजों की थपथपाहट) जिसकी वजह से किसान आज इस ऊंचाई तक पहुंचे हैं। नहीं तो कांग्रेस के समय में किसानों की जमीन कुर्की कर दी जाती थी। उनके गांव में जाते थे और आम नीलामी हुआ करता था। ये अपमान और जिल्लत भरे दिनों को भी किसानों ने झेला है, छत्तीसगढ़ की जनता ने झेला है तो इस प्रकार कृषक उन्नति योजना के माध्यम से 10 हजार करोड़ का

प्रावधान हमारे 24.72 लाख किसानों को मिलेगा, ये किसानों की उन्नति के लिए प्रगति के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण योजना है। इसी प्रकार..।

श्रीमती उत्तरी गनपत जांगड़े :- 2 लाख कर्जा माफी के घलो बता दूहू भैया। कब तक होही? कब तक होही, समय ला घलौ तूहू बता देवौ?

श्री मोतीलाल साहू :- 2 साल का बोनस, भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती को दिया। (मेजों की थपथपाहट)

श्री अटल श्रीवास्तव :- वह तो आपका पुराना पाप था, जो आपने अभी किसानों को दिया, वह वर्ष 2015-16 का पुराना पाप था।

श्री मोतीलाल साहू :- आपने वादा किया था, इसलिए मैं आपको याद दिलाना चाहूंगा। आप पहले अपने जनघोषणा-पत्र को पलटकर देखिए।

श्रीमती उत्तरी गनपत जांगड़े :- आपकी पिछली सरकार 15 साल की थी, वह बोनस आप लोग दिये हैं।

श्री मोतीलाल साहू :- आप वर्ष 2018 का अपना जन-घोषणा पत्र देखिए, उसमें आपने कहा था कि भारतीय जनता पार्टी ने दो साल का बोनस नहीं दिया है, उसे हम देंगे और आपके राष्ट्रीय नेता ने यहां आकर कहा था, मैं आपको वीडियो दिखा दूंगा कि हम दो साल का बकाया बोनस देंगे और साथ ही साथ हम आने वाला आगामी बोनस भी देते रहेंगे।

सभापति महोदय :- साहू जी, अपना भाषण समाप्त करिए। चलिए, 10 मिनट हो गया, अपनी बात समाप्त करें।

श्री मोतीलाल साहू :- इस प्रकार जो आपने कहा..।

सभापति महोदय :- चलिए, अपनी बात समाप्त करें। सारी बातें आ गई हैं।

श्री मोतीलाल साहू :- जी, इस प्रकार महोदय, यह अपना पहला-पहला है।

सभापति महोदय :- नहीं-नहीं, बोलने वालों की संख्या 15 है। दोनों पक्ष से 15 बचे हैं तो 10-10 मिनट में अपनी बात रखें। आज ही समाप्त करना है।

श्री मोतीलाल साहू :- जी-जी, थोड़ा और समय मिल जाता।

श्री रामकुमार यादव :- सभापति जी, ओ प्रोजेक्ट हमर हे, पहली ओहा कांग्रेस में रहिस, ओती चल देहे

श्री आशा राम नेताम :- यादव जी, वो प्रोजेक्ट, गंगाजल वाला प्रोजेक्ट ।

श्री सुशांत शुक्ला :- तहूं तो हाथी के रेहेस, पंजा में कइसे चले गेस ?

श्री रामकुमार यादव :- मैं जनरल हौं ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री मोतीलाल साहू :- यह बजट छत्तीसगढ़ के विकास और उन्नति की एक नई कहानी, एक नया अध्याय, एक नया आयाम लिखने वाला है । छत्तीसगढ़ में चहुंमुखी विकास और छत्तीसगढ़ के सर्वांगीण विकास का बजट है । मैं इस बजट के लिए हमारे प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय जी को और हमारे वित्त मंत्री श्री ओ.पी.चौधरी को बहुत बहुत बधाई देता हूं और इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूं, इसके लिए आप सबको धन्यवाद् देता हूं ।

श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह (अकलतरा) :- धन्यवाद् सभापति महोदय । मैं इस बजट के विरोध में खड़ा हुआ हूं । कुछ बातें मैं अपनी ओर से कहना चाहता हूं और मेरा निवेदन है कि वित्त मंत्री जी सुन भी रहे होंगे, ध्यान भी देंगे अगर उसको आगे लाया भी जाए तो इससे जनता का भला भी होगा । आदरणीय, जी.एस.टी. लागू होने से पहले जो कर इसके अंदर लाए गए, उसमें जी.एस.डी.पी. में राजस्व का 3 प्रतिशत था । 2018-19 में जी.एस.टी. के क्रियान्वयन का पहला साल था उसमें यह दर नीचे 2.7 पर आया । जुलाई 2017 से जून 2022 तक जीएसटी लागू होने के बाद 14 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि की गारंटी दी गई और यह कहा गया था कि अगर यह राज्यों के पास नहीं आता है तो उसके लिए कॉम्पन्सेशन फाइल किया जाएगा । 14 प्रतिशत कहीं नहीं पहुंचा और लगभग सभी मेन्यूफेक्चरिंग स्टेट्स ने कॉम्पन्सेशन के लिए फाइल किया था । अगर राज्यों की कुल जी.एस.डी.पी. 2018-19 और 2022-23 के बीच हम लोग देखेंगे तो यह वृद्धि लगभग 9.6 प्रतिशत से बढ़ी हुई है । 2022-23 का हमारा जीएसटी एस्टीमेट जो 11 प्रतिशत था, इसमें अनुमानित और एक्चुवल जो हुआ उसमें करीब 2 प्रतिशत का अंतर आया था । पिछले साल लगभग 14 हजार करोड का जीएसटी था, इस साल बजट के आखिरी में जब माननीय मंत्री जी बोल रहे थे तो उन्होंने बहुत अच्छी चीज कही कि न इस साल कोई कर लागू होगा न कोई नए टैक्सेस लगाए जाएंगे और लगभग सभी अब केन्द्र सरकार से डिसाइड होते हैं । कर भी नहीं बढ़ाया गया, नए टैक्सेस भी नहीं बढ़ाए जा रहे हैं । नेशनल एवरेज 9 प्रतिशत के आसपास पर घूम रहा है और छत्तीसगढ़ में हम अगला प्रोजेक्शन 25 प्रतिशत से बढ़ाने की बात कर रहे हैं । व्यापारियों में डर का माहौल है । अधिकारियों को शायद अंदरूनी बोला गया है कि अब जोर से टैक्स वसूलना शुरू करो, दुगुना करना है । व्यापारी डरा हुआ है, कोई नया जीएसटी तो वसूला नहीं जाएगा, व्यापारी अभी जीएसटी दे रहा है वहीं से यह जीएसटी वसूलने की बात हो रही है, भयभीत है। ग्रॉस स्टेट डोमेस्टिक प्रोडक्टस जी.एस.डी.पी., छत्तीसगढ़ का लक्ष्य 5 लाख करोड़ से 2028 तक 10 लाख करोड़ करने की बात हो रही है । इस अनुपात से 2047 तक 160 लाख करोड़ पर चला जाएगा । हर व्यक्ति की आय 32 गुना बढ़ रही है । मैं बजट भाषण पढ़ रहा था, उसमें हमारी सरकार के संबंध में बार-बार, कुशासन की बात कही गई है । सभापति महोदय, यही जीएसडीपी 8.95 की वृद्धि से बढ़ा है । बार-बार कहा जा रहा था, कुछ वरिष्ठ सदस्य भी कह रहे थे बड़ा बजट है, इतनी वृद्धि हुई, इतनी वृद्धि हुई, इसमें इतना बढ़ाया गया । बढ़ाना, एक्चुवल आना और खर्च करना । मैं तो वित्त मंत्री जी

को बधाई दूंगा और धन्यवाद् दूंगा कि यदि इतना 25 प्रतिशत नेशनल एवरेज से भी दुगुने से भी ऊपर हम अपने इस कलेक्शन को अगर ले आते हैं । सभा महोदय, यहां पर नेल्सन मंडेला जी के भी कोट्स आए, बहुत अच्छे कोट्स थे । यहां शेक्सपीयर की भी बात हुई, लेकिन मैं इमैनुवल कांट को भी यहां कोट करना चाहूंगा All our knowledge begins with the senses, proceeds then to the understanding, and ends with reason. तो यह बजट सेंसेस में तो जा रहा है, अंडरस्टैंडिंग करने की कोशिश हो रही है लेकिन रिज़निंग कहीं थोड़ी कम समझ में आ रही है । हम जब यहां पर नये सदस्य आते हैं तो बड़ा उत्सुक होते हैं कि अब हम लोग बजट की बात करेंगे, अपने क्षेत्र की बात करेंगे, आगे क्या होगा, किस तरह से विकास होगा, उसकी बात करेंगे। आजकल हम लोग यू-ट्यूब और अन्य डिजिटल साधनों से पुराने भाषण भी बहुत सुनते हैं। चाहे वह नेहरू जी का ट्रिस्ट विद डेस्टिनी हो, अटल जी का बहुत फेमस, यह देश और लोकतंत्र रहना चाहिए की बात हो। जब अटल जी ने नेहरू जी के लिए कहा था कि देश का प्रिय राजकुमार चला गया। ये सभी बातें हम लोगों को बहुत कुछ सीखाती हैं और सीखने को मिलती है। लेकिन लगभग दो दिन में कहीं ना कहीं यह पांच साल बनाम 15 साल की बात ही हो रही थी। कभी कांग्रेसियों को लुटेरा कहा जा रहा था, कभी हर 10 दिन में एक नया घोटाला आता है, यह कहा जा रहा था, ये मापदंड है? एक माननीय सदस्य ने यह भी कहा कि आप 34-35 पे इसलिए पहुंच गये क्योंकि आपने घोटाला किया। क्या यही मापदंड है ? 15 से नीचे जाने पर क्या मापदंड होते हैं ? क्या लोकतंत्र में यही मापदंड हम एक दूसरे को बताएंगे ? क्या हम नये सदस्य यही सीख रहे हैं ? अगर यू.पी.ए. की बात करे तो राईट टू इनफर्मेशन एक्ट, राईट टू एजुकेशन, ऐसी बहुत सारी अच्छी चीजें भी हुई हैं। स्वतंत्र भारत में कई सरकारें रहीं, सबने अपना काम किया और सिर्फ एक उदाहरण के लिए आप लिटरेसी रेट को देख लें। जब भारत आजाद हुआ तो लिटरेसी रेट कहां था और आज हम कहां खड़े हुए हैं। फिमेल लिटरेसी रेट कहां था और आज हम कहां खड़े हुए हैं। यहां महिला विधायकों की [xx] की बात हो रही है। मैं सुषमा जी को कोड करना चाहता हूं, यू.एन. में उन्होंने एक पत्रकारवार्ता में कहा था कि सभी सरकारें जो आती हैं, उन्होंने अच्छा काम किया है, तभी हम लोग धीरे-धीरे यहां पर पहुंचे हैं। आपका नारा पहले भी था, आपके बजट में भी उसका उल्लेख है, हमने ही बनाया है, हम ही संवारेंगे। अटल जी का भी धन्यवाद है, दिग्विजय सिंह जी का भी धन्यवाद है। हमें अजीत जोगी जी को और रामचंद्र सिंहदेव जी को धन्यवाद देना नहीं भूलना चाहिए जिन्होंने छत्तीसगढ़ की फायनेंसियल नींव रखी जिस पर आज यह ईमारत खड़ी हुई है। हमने बनाया में आपने त्रिपुरी अधिवेशन को भी भूल गये, आप ठाकुर प्यारे लाल को भी भूल गये, आप खूबचंद बघेल जी को भी भूल गये, आप ठाकुर छेदीलाल बैरिस्टर को भी भूल गये। सबने बनाया है और सबको संवारना हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी बनती है। अगर मैं रामचंद्र सिंहदेव जी, बिसाहू दास महंत जी, श्यामचरण शुक्ल जी की बात करूं। एरिगेशन की बात आ रही थी, ऐरिगेशन में कहीं कोई बहुत बड़ा प्रावधान नहीं रखा गया है। सभापति महोदय, सन्

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

1994 में बक्सर, पंतोरा, हेडसपुर, अंगारखार, कोरिया, यह मेरे विधान सभा क्षेत्र का एक बहुत छोटा सा एरिया है। हम लोग मानते हैं कि यहां पर 90 से ज्यादा प्रतिशत एरिगेटेड लैंड्स हैं। एरिगेशन डिपार्टमेंट की ही एक रिपोर्ट है, जिसमें 1500 हेक्टेयर केनाल के पास वाला एरिया एरिगेट नहीं हो पा रहा है। वहां लिफ्ट एरिगेशन की जरूरत है, वहां सर्वे की जरूरत है। हम उसकी ओर क्यों नहीं जा रहे हैं।

(माननीय सदस्य श्री धर्मजीत सिंह का सदन में आगमन)

श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह :- एक बहुत ही वरिष्ठ सदस्य आ भी गये हैं। अरपा भैंसाझार योजना की बात कर रहे थे। तू इधर उधर की ना बात कर की भी शायरी आ रही थी। पिछले दस साल से यह योजना 300 करोड़ से चालू होकर चौगुनी हो चुकी है। अब तक कम्प्लीट नहीं हुई है। मैं बहुत जिम्मेदारी से यह बात कह रहा हूं, अगर इसमें जांच करा ली जाए तो वही अरपा से जो सिंचित होने वाली जमीन है, वही किसी और योजना से भी सिंचित हो रही है।

आदिम जाति विकास मंत्री (श्री रामविचार नेताम) :- माननीय सभापति महोदय, मैं बीच में थोड़ा सा इंटरप्ट करूंगा।

श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह :- जी।

श्री रामविचार नेताम :- आपने अरपा भैंसाझार का नाम लिया। आपको गर्व होना चाहिए कि जब हमारी सरकार थी तो अरपा भैंसाझार को हमारे देश के उस समय के तत्कालीन उप प्रधानमंत्री, माननीय लाल कृष्ण आडवाणी जी के करकमलों के द्वारा शिलान्यास किया गया और उसे समय पर पूरा किया गया। बाकी काम इसके बाद काम करना था, हमारी सरकार नहीं रही। केनाल का पूरा काम बाकी रह गया। माननीय सभापति महोदय, हम लोगों ने उस समय हेड वर्क का पूरा काम कर दिया। बाकी काम आपके जिम्मे में था और उसको आप नहीं कर पाये। जबकि देश की आजादी के समय की योजना चल रही थी। वह योजना उस समय पूरी हुई। मैं तो यह चाहता हूं। आप शायरी बोल रहे हैं तो मैं भी बोल रहा हूं - तूं इधर-उधर की बात न कर, बता कारवां कैसे लूटा ? यह आरोप-प्रत्यारोप की बात नहीं है। यह हमारी प्रतिबद्धता है। मैं आपसे यह भी कहना चाहता हूं कि हम छत्तीसगढ़ के हित में काम करना चाहते हैं और हम काम करके उसको पूरा करेंगे। (मेजों की थपथपाहट)

श्री अटल श्रीवास्तव :- माननीय सभापति महोदय, यहां पर अरपा-भैंसाझार परियोजना की बात हो रही है तो मैं माननीय मंत्री महोदय से पूछना चाहता हूं कि आपने यह प्रोजेक्ट बनाया और उसे कम्प्लीट किया। उसकी कम्प्लीटेशन टाइम आपकी सरकार जाने के समय की थी।

सभापति महोदय :- अटल जी, आप अपने वक्तव्य के समय अपनी बात रखियेगा।

श्री अटल श्रीवास्तव :- जहां से नहर निकलनी है और नहर की जमीन का जो आधिपत्य है जो सरकार को देना था, वह आपके कार्यकाल में हुआ। उसमें करोड़ों रूपये का इतना बड़ा भ्रष्टाचार हुआ है

कि आज तक वह नहर नहीं बन पाई है। हाई कोर्ट में केसेज चल रहे हैं। जिनकी जमीन नहीं थी। आप उसकी बात कीजिए।...(व्यवधान)

सभापति महोदय :- आपकी बारी आएगी तो उसमें आप अपनी बात रखियेगा।

श्री सुशांत शुक्ला :- माननीय सभापति महोदय, मेरे साथी उस क्षेत्र से हैं। 5 साल तक एक निगम मण्डल के सम्माननीय अध्यक्ष रहे हैं तो उसकी जांच क्यों नहीं कराई ?

सभापति महोदय :- आप बैठिये।

श्री धर्मजीत सिंह :- मैं आपको बता रहा हूं। 25,000 हेक्टेयर भूमि में सिंचाई करने के लिए उसको टर्न की में ठेकेदार को दिया गया। उस ठेकेदार को 5 साल तक सरकार का संरक्षण प्राप्त था। उसमें 12,500 हेक्टेयर से ज्यादा भूमि में सिंचाई नहीं हो रही है। 12,500 हेक्टेयर भूमि में सिंचाई का हिसाब तो जनता पूछेगी ही और आपको उसको बताना ही पड़ेगा। आपने उसको क्यों संरक्षण दिया, उसको भी बताना पड़ेगा। आप एक बात बताइये कि आपने जब आंख दिखाया था कि अहिरन नदी का पानी खूंटाघाट के डेम में आएगा और खूंटाघाट का पानी बिलासपुर में आएगा। मैंने भूपेश बघेल जी की सरकार में कहा था कि न सिवरेज से पानी जाएगा और न अमृत मिशन में पानी आएगा। वह आज भी कायम है। न तो सिवरेज में पानी जा रहा है और न लोगों को अमृत मिशन से पानी मिल रहा है। मैंने बताया कि उंगली दिखाने से नहीं होगा। आप ऐसी उम्मीद भी मत कीजिए कि 2 महीने में सभी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। हमको किसी से सर्टिफिकेट भी नहीं लेना है। हमारी सरकार और हमारे वित्त मंत्री जी लगे हुए हैं। आप धीरे-धीरे देखिये। चंद्रमा में पहुंचने में भी समय लगा था। अभी तो बजट पास नहीं हुआ है। (मेजों की थपथपाहट)

सभापति महोदय :- चलिये, आप अपनी बात रखिये।

श्री अटल श्रीवास्तव :- माननीय सभापति महोदय, बिलासपुर में सिवरेज का प्रोजेक्ट भारतीय जनता पार्टी की सरकार के समय आया था। इसलिए बिलासपुर को खोदापुर बोलते थे। आज उसी सिवरेज में एक बूंद पानी नहीं जा रहा है। आप यह स्वीकार कर रहे हैं। जहां तक अरिहन से पानी लाने की बात है तो अभी आपने माननीय वित्त मंत्री जी से रिफॉर्म की बात की थी। जब उसका प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार होता है तो अिरहन से लेकर खूंटाघाट तक पानी आने का प्रोजेक्ट वायबल नहीं था, इसलिए वह आगे नहीं किया गया।

सभापति महोदय :- आप संक्षिप्त में अपनी बात कहें और अपने वक्तव्य के समय अपनी बात रखें। राघवेन्द्र जी, आप बोलिये।

श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह :- धन्यवाद, माननीय सभापति महोदय।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, अहिरन का न तो कोई प्रोजेक्ट बना है।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय सभापति महोदय, एक तो यह टेक्निकल विषय पर बात कर रहे हैं इसलिए आप इनको समय दीजिए। यह सब समझ नहीं रहे हैं। जब टेक्निकल बात हो रही है तो कोई नहीं बोल पा रहे हैं। This is clear.

श्री धर्मजीत सिंह :- मेरी बात पूरी होने दीजिए। सदन में होने से ठीक रहता है।

सभापति महोदय :- आप 2 मिनट में अपनी बात रखें।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, दिल्ली वाले जल का फॉरेस्ट क्लियरेंस नहीं है। वह कहां से प्रोजेक्ट बन जाएगा और कहां से लागू हो जाएगा ? आपको यह बात तो पहले दिन से मालूम थी कि वहां पर जंगल है। आप ताबीज बेचने वाले की तरह जबरदस्ती बोल दीजिए कि अभी थोड़ी देर में सांप उड़ेगा। आप ताबीज बेचेने वालों के समान जबरदस्ती सांप मत उड़ाइये। जो कार्य हो सकता है, उसे ही हमारे वित्त मंत्री जी कर रहे हैं। वह ताबीज नहीं बेच रहे हैं।

सभापति महोदय :- आदरणीय, आप बैठिये।

श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह :- माननीय सभापति महोदय, आपने जो अरपा-भैंसाझार परियोजना की बात की थी तो आपसे सहमत होते हुए ही मैं आपकी बात को आगे बढ़ा रहा था। आपने मुझे समय दिया है तो मैं आगे मोदी जी की गारंटी की बात करूंगा। आपने किसानों का कर्जा माफ करने की बात कही थी। लेकिन बाद में एक माननीय सदस्य ने कहा कि वह पहले की थी और बाद में सरकार में आने के बाद उन्होंने ऐसी बात नहीं कही। लेकिन चुनाव के बीच में पर्चे बांटे गये थे कि हमारे कर्जे माफ होंगे। मोदी की गारंटी में ही आपने लिखा था कि हम हर ग्राम पंचायत में केन्द्र खोलेंगे। लेकिन उसका कहीं कोई प्रावधान नहीं है। मैंने उस दिन भी यह बात उठाई थी कि अभी भी किसान बैंकों से समर्थन मूल्य और बोनस का अपना 50 प्रतिशत पैसा नहीं ले पाये हैं। A.T.M. ड्राई है। चेक बुक पूछने पर बताया जाता है कि अभी छपने गयी है। लेकिन पता नहीं कि कहां से छपकर आ रही है ? जब चुनाव चल रहा था तो महतारी वंदन योजना में लगभग 1 करोड़ महिलाओं से लगातार फॉर्म भरवाये जा रहे थे। वित्त मंत्री जी, मैं सभापति महोदय के माध्यम से आपसे पूछना चाहता हूं कि क्या वही फार्म होंगे या नये फार्म भरा रहे हैं, उसमें भी काम होगा ? इस तरह की बातें वहां पर लगातार आ रही थीं, आपने इस योजना में 19 से 21 साल की महिलाओं को छोड़ दिया । आपने पहले तो यह बात नहीं कही थी । उसके बाद if, But condition apply उसमें सारी चीजें चलती रहीं । सिलेण्डर की कहीं कोई बात नहीं है । अब आदरणीय मंत्री जी मेरे जिले के प्रभारी मंत्री भी हैं तो मैंने उनको अकेले में भी यह बात उनके संज्ञान में लाई है और मैंने शून्यकाल में भी यह बात कही । वहां पर इतनी ज्यादा अवैध शराब बिक रही हैं कि वहां पर महिलाएं थाना घेर रही हैं और बुल्डोजर चलने की जो बात आई, मेरे भी जिले में चखना दुकानें हैं, आपसे निवेदन है कि महिलाओं के हित को ध्यान में रखते हुए बुल्डोजर चलवा ही दीजिए ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सभापति महोदय, आपने शिक्षा की बात की । नेल्सन मंडेला जी का बहुत अच्छा कोड आदरणीय मंत्री जी ने किया Do make any macadam एक्जैक्ट नहीं कोड कर रहा हूं, लेकिन To make any country week आप वहां पर बच्चों को चिटिंग एलाऊ कर रहे हैं । साहब, चिटिंग एलाऊ करना यह तो नैतिक रूप से गलत है ही, लेकिन उसके पहले यह भी गलत है । मैंने एक प्रश्न पूछा था और उसमें जवाब आया है । मेरे विधान सभा क्षेत्र में 16 स्कूल विद्युतविहीन हैं, वहां बिजली नहीं है । 83 स्कूल में अहाता नहीं है । मैं एक और बात आपके संज्ञान में लाना चाहूंगा । हमारे यहां लगातार कोयले का, राखड़ के ट्रक का मूवमेंट होता है । उन्नयन की बात तो इस बजट में नहीं है । उन्नयन करने के लिए भी हमें कुछ नियमों को शिथिल करते हुए यह बात सामने लानी होगी कि एक ही गांव का बच्चा दूसरी ओर भी सड़क क्रॉस करता है । प्राथमिक स्कूल भी हैं, सेकेण्डरी स्कूल भी हैं । यह पार्टी का विषय नहीं है, सोचने का विषय है । आज एम.ओ.यू. किया गया था, जांजगीर जिला में बहुत सारे एम.ओ.यू. किए गए थे । वहां पर किसानों की जमीन अधिग्रहित की गई । अधिग्रहित करने के बाद आज 10 साल से ऊपर हो चुके हैं, उस जमीन पर किसान खेती कर रहा है । अभीतक वहां पर प्लांट नहीं लगा है । अगर आप वहां पर ऊपर से जाएंगे तो जगह-जगह कोयला, राखड़ दिखता है और मैंने यह सवाल भी उठाया था कि न Emergency risqué management, न Scope channel । बांध में दोनों चीज का कोई अता-पता नहीं है । इसको ध्यान देना होगा । जब 2018 से 2020 में बाढ़ आई थी तो इसमें मृत्यु भी हुई थी, लेकिन उस पर किसी का ध्यान जा ही नहीं रहा है ।

सभापति महोदय, हम लोग बार-बार Religious tourism की बात कर रहे हैं, यह बहुत अच्छी बात है । राम लला हमारे भी उतने ही हैं । हम राम जी की बात कर रहे हैं, लेकिन Eco tourism की बात भी हमें करनी होगी । आज हम लोग प्रोजेक्ट बघुवा ला रहे हैं । वित्त मंत्री जी, आप जिस जिले के प्रभारी मंत्री हैं, मैं आपको आदरणीय सभापति महोदय के माध्यम से एक बात सूचित करूंगा कि ये वही क्षेत्र है, जहां ग्रेट इंडियन बस्टर्ड भी थी, ब्लैक बक्स भी थे और चिंगारा भी थे । आज वहां पर तीनों में से कोई भी नहीं है । बाकी चीजें मैं नहीं बोलूंगा, बस एक चीज बोलूंगा । डॉ. रमन सिंह जी आसंदी पर हैं इसलिए उनका नाम लेता हूं । मैं पहले से ही यह बात बोल रहा हूं कि जब वे मुख्यमंत्री थे तो वहां पर पहरिया कॉलेज के लिए उन्होने दो-तीन बार घोषणा की थी, पर वह नहीं हो पाया था । मुझे लगता है कि इसको शामिल करना, बलौदा और अकलतरा बाईपास को शामिल करना बहुत जरूरी है । चूंकि समय कम है, बोलना बहुत कुछ था, लेकिन मैं अपनी बात सिर्फ ये बोलकर मैं समाप्त कर रहा हूं । आने वाले समय में हम 90 लोग इस प्रदेश के अगले पांच साल में दिशा और दशा तय करेंगे । आपका शायद ज्यादा रोल रहेगा क्योंकि आप सरकार में हैं । विपक्ष की भी उतनी ही भूमिका रहेगी कि हम आपको सुझाव भी दें, हम आपको टोकें भी और कहीं गलत हो रहा है तो आपको बताएं भी । सिर्फ इन पंक्तियों के माध्यम से मैं अपनी बात खतम करना चाहूंगा :-

Don't mourn only over the past, it has no pity for you

Don't cry over the present, it has no sympathy for you,

and Don't weep over the future, because then Chhattisgath's future will not have any mercy for both of us, if we don't do justice.

सभापति महोदय, आपने बोलने का मौका दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री रामकुमार यादव :- This is clear.

श्री गजेन्द्र यादव :- इंग्लिस नहीं आए तो उहू ला त मत बिगाड़ ।

श्री आशाराम नेताम :- देखिए, कुमार भैया । आप इंग्लिश का विरोध कर रहे थे और अंत में आ गए न ।

श्री रामकुमार यादव :- Please silent I

श्री आशाराम नेताम :- देखिए, हमारे जो राज्यपाल जी के भाषण का विरोध कर रहे थे, उसी भाषा में आ गए ।

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति महोदय, रामकुमार जी उन्हीं के जिले के हैं। उनका अंग्रेजी नहीं सीखोगे, नहीं समझोगे। उनका पूरा क्षेत्र में प्रभाव है। ऐसे धोखे में मत रहना।

श्रीमती गोमती साय (पत्थलगांव) :- सभापति महोदय, धन्यवाद। मैं वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए प्रस्तुत बजट के समर्थन में बोलने के लिए खड़ी हुई हूं। मैं, हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी और हमारे माननीय वित्तमंत्री श्री ओ.पी.चौधरी जी को बहुत-बहुत बधाई देती हूं कि वह हमारे छत्तीसगढ़ के लिए इतना अच्छा बजट लेकर आये। छत्तीसगढ़ का 1.47 लाख करोड़ का बजट ऐतिहासिक एवं सर्वहिताय बजट है। मैं कुछ पंक्ति बोलकर अपनी बात को आगे बढ़ाऊंगी।

"सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया।

सर्वे भ्रदाणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दु:खभाग् भवेत।"

सभापति महोदय जी, माननीय वित्तमंत्री जी यह बजट लेकर आये हैं। मैं सभी लोगों की बातों को बड़े गौर सुन रही थी, मैं कल से विपक्ष की बातों को सुन ही रही हूं। हमारे विपक्ष के साथी लोग बोल रहे थे कि जब हमारे वित्तमंत्री श्री ओ.पी. चौधरी जी बजट भाषण पढ़ रहे थे, तब हमारे साथी लोग बोल रहे थे कि रायगढ़ को सब चीज मिल रहा है, जशपुर को सब चीज मिल रहा है। मैं पहले सांसद भी रह चुकी हूं। यहां 5 साल विपक्ष की सरकार थी। आप लोगों ने जशपुर को क्या दिया है और क्या नहीं दिया है, रायगढ़ को क्या दिया और क्या नहीं दिया है, मैं, आप लोगों को उस विषय में बताना चाहती हूं। मैं जब जशुपर से रायगढ़ आती थी तब मुझे बहुत से लोग बोलते थे कि आप इस तरह की सड़क से जशपुर तक सफर करके कैसे जाती हैं, तो मुझे तकलीफ भी होती थी। इन्होंने जशपुर को 5 साल में काला पानी बना दिया था। यहां पर बैठे कितने विधायक साथी हैं, क्या आप लोग रायगढ़ होकर जशपुर गये हैं ? आप लोगों के पास सर्व सुविधायुक्त सभी चीजें हैं। औद्योगिक क्षेत्र के मामले में रायगढ़ जिला दूसरे

नंबर पर आता है। रायल्टी देने में भी दूसरे नंबर पर आता है। रायगढ़ क्षेत्र खनिज सम्पदा से भरा हुआ भी है। मुझे बहुत अफसोस हो रहा था, लेकिन कह रहे थे तो मैं सुन रही थी। यदि आप लोग उस जर्जर सड़क पर जाकर देखते, तब आप लोगों को समझ में आता कि आप लोगों ने 5 साल में जशपुर और रायगढ़ को क्या दिया है ?

श्रीमती अनिला भेंडिया :- सभापति महोदय, गोमती बहन रायगढ़ वाला रोड हा 15 साल तक सरकार के ठेकेदार मन के रहिस हे। ओ हा बनाबेच नइ करत रहिस हे तो का करही। सरकार हा कोशिश करिस हे।

श्रीमती उत्तरी गनपत जांगड़े :- सभापति महोदय, गोमती दीदी, राज्य मार्ग था, उसमें सारंगढ़ भी जुड़ा है।

श्रीमती गोमती साय :- सारंगढ़ वाली सड़क अच्छी थी।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- तभे तो बतावत हव, ओ ठेकेदार हा तुंहरे सरकार वाला रहिस हे।

श्रीमती उत्तरी गनपत जांगेड़े :- पूरा 15 साल गड्ढा करके रखे रहिस हे।

श्रीमती गोमती साय :- लेकिन बीच में 5 साल तो आप लोगों की ही सरकार थी। अगर पांच में सड़क बनना होता तो अच्छे से बन गया होता। वहां हास्पिटल की सुविधा नहीं है, शिक्षा का स्तर इतना नीचे गिर गया था कि जिसका कुछ कहना ही नहीं था।

श्रीमती उत्तरी गनपत जांगेड़े :- दीदी, 15 तक साल तक सड़क में काफी गड्ढे थे। हमारे शासनकाल में बहुत ज्यादा सड़क बनवाये गये हैं।

श्रीमती गोमती साय :- सभापति महोदय, आज इस बजट के माध्यम से जशपुर को भी मिलेगा, रायगढ़ को भी मिलेगा और पूरे छत्तीसगढ़ को भी मिलेगा। मैं आप लोगों को एक चीज बता दे रही हूं कि यह बजट need से निर्माण का बजट है। (मेजों की थपथपाहट) यह बजट प्रदेशवासियों के लिए उनके सपने सच होने की महत्वाकांक्षी योजनाओं का पिटारा का बजट है। यह बजट पिछली उपेक्षित जनता को उनका अधिकार वाला बजट है। यह बजट नये छत्तीसगढ़ का बजट है, जो कि सर्वसमावेशी है, जहां गांव, गरीब, किसान, मजदूर, महिला, युवा सभी वर्गों के हितों का न सिर्फ ध्यान रखा गया है, बल्कि उनके सशक्तीकरण के सारे प्रयास स्पष्ट देखे जा सकते हैं । यह बजट छत्तीसगढ़ के भविष्य की प्रेरणा का बजट है । कभी-कभी कुछ विषयों पर ध्यानाकर्षण करना पड़ता है, अमृतकाल के नींव के इस बजट में चर्चा से पहले आप सभी का ध्यानाकर्षित करना चाहती हूँ, यहां हमारे विपक्ष के साथी लोग भी बैठे हैं । प्रधानमंत्री स्व. नरसिम्हाराव जी ने जब देश संभाला तो खजाना खाली था, देश का 21 टन सोना गिरवी रखा गया था, नरसिम्हाराव जी ने किसी नेता को वित्त मंत्री बनाने के बजाय एक अर्थशास्त्री को वित्त मंत्री बनाने का निर्णय लिया । मनमोहन सिंह जी के वित्त मंत्री बनते ही उदारीकरण का दौर शुरू हो गया, जो सच है उसे बोलना ही चाहिये । आज तीन दशक बाद भी उनके निर्णय प्रासंगिक हैं । मैं हमारे

मुखिया विष्णु देव साय जी की प्रशंसा करती हूँ और बहुत धन्यवाद देती हूँ कि साय जी ने छत्तीसगढ़ को विकास की नई ऊँचाई तक ले जाने के लिये एक पूर्व आई.ए.एस. ओ.पी.चौधरी जी को वित्त मंत्री बनाने का साहसिक निर्णय लेते हुये मुख्यमंत्री के पास वित्त विभाग रखे जाने की परम्परा तोड़ी है । वित्त मंत्री रहते हुये ओ.पी.चौधरी जी ने सूझबूझ भरा जो बजट पेश किया है, उसे विष्णु देव साय सरकार की सोच आम जनता के समक्ष उजागर होती है, जिनकी संकल्पना अंतिम व्यक्ति का विकास है । सरकार द्वारा पेश किया जाने वाला बजट एक आईना होता है, जिससे जनता के हितों को स्पष्ट देखा जा सकता है । सभापति महोदय, विधान सभा चुनाव से पहले मोदी जी द्वारा दी गई गारण्टी को पूरा करने का एक मजबूत संकल्प है । इस बजट में देखा जा सकता है कि यह गांव, गरीब, किसान, महिलाओं के विकास का बजट है और पांच साल बाद सरकार जनता का दिल कैसे जीतेगी, इसका चिंतन भी इस बजट में देखा जा सकता है । सभापति महोदय, मैंने सभी लोगों को सुना है, लेकिन हमें सच को स्वीकार करने की आदत होनी चाहिये । भूपेश सरकार ने जिस तरह से विगत पांच सालों में भ्रष्ट्राचार की सीमा लांघी थी, उसे कहने की आवश्यकता नहीं है, इसका जवाब जनता ने दिया है और उसका परिणाम हमारे सामने है । सभापति महोदय, किसी भी इमारत की मजबूती उसके स्तंभों पर निर्भर करती है, इस बजट में भी ऐसे ही 10 मजबूत स्तंभों की कल्पना की गई है, इससे जनता के सपनों का महल मजबूती से निर्मित हो पायेगा । सभापति महोदय, आज इन स्तंभों के रूप में गरीबी, शिक्षा, किसान और नारी को धयान में रखते हुये इसकी चर्चा की गई है, क्योंकि यही चारों हमारे प्रदेश के विकास के केन्द्रबिन्दु हैं । सभापति महोदय, तकनीकी आधारित हमारे रिफार्म और सुशासन के तीव्र आर्थिक विकास जैसे स्तंभ की चर्चा इसलिये जरूरी है कि मोदी जी का यह नारा है कि न खाउँगा, न खाने दूंगा और इन नारों को यह स्तंभ साकार करेगी । सभापति महोदय, आज सरकारी कामों पर पारदर्शिता की चर्चा हो रही है और तकनीकी आधारित रिफार्म इसे साकार करेगा । तमाम चुनौतियों के मध्य अधिक से अधिक पूंजीगत व्यय का स्तंभ, बजट के रूप में 20 प्रतिशत की वृद्धि को सरकार करेगी । सरकार के 100 रूपये के व्यय से सरकार के जीडीपी में 247 रूपये की वृद्धि होगी । सरकार यह बजट लेकर आई है ।

सभापति महोदय :- चलिये, संक्षिप्त में बात रखियेगा । अभी बहुत लोग बोलने वाले हैं ।

श्रीमती गोमती साय :- सभापति महोदय, हम लोगों को पहली बार बोलने के लिये मौका मिला है, साल में एक बार हमको बजट में बोलने के लिये अवसर मिलेगा।

सभापति महोदय :- हॉ, अभी और बोलने का समय है । मेन बजट में बोलियेगा । अभी बहुत सारे लोग बोलने का है । संक्षिप्त में रखिये ।

श्रीमती गोमती साय :- सभापति महोदय, छत्तीसगढ़ की धरती रत्नगर्भा है । यहां के संसाधनों का सुनियोजित दोहन कर उनके लाभो का पूर्ण वितरण हमारे बजट का संकल्प है । सेवा क्षेत्र में अर्थव्यवस्था की नई संभावनाओं पर, जो प्रदेश की प्रकृति और सौंदर्य के अनुरूप पांच शक्तिपीठों को

विकसित कर धार्मिक पर्यटन की संभावनाओं को बढ़ाने जैसे प्रयास इस बजट में शामिल है । आज यहां हमारे वित्त मंत्री जी उपस्थित है। सभापति महोदय, मैं आज आपके माध्यम से हमारे वित्त मंत्री जी के समक्ष कुछ बातें रखना चाहती हूं। मैं जिस क्षेत्र से चुनकर आयी हूं, वह पत्थलगांव विधान सभा क्षेत्र है। यहां सभी लोग अपने क्षेत्र के लिये रेलवे कनेक्टिविटी की, हवाई कनेक्टिविटी की मांग करते हैं लेकिन मैं पत्थलगांव विधान सभा की एक विधायक होने के नाते, एक दुखियारी होने की भावना जताते हुए अपने क्षेत्र के लिये रोड कनेक्टिविटी की मांग करती हूं, जो मेरे पत्थलगांव विधान सभा क्षेत्र में जीरो है। वहां विगत 40 सालों से कांग्रेस के विधायक थे लेकिन वहां कुछ काम नहीं हुआ है। वहां शिक्षा के क्षेत्र में और स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी कुछ काम नहीं हुआ है। मैं आज इस आसन के माध्यम से माननीय वित्त मंत्री जी से मांग करना चाहती हूं कि मैं जिस क्षेत्र से चुनकर आयी हूं, मैं जिस क्षेत्र की विधायक हूं, कृपा करके मैं अपेक्षा करती हूं कि आप इसी बजट से वहां की रोड कनेक्टिविटी को अच्छी कर देंगे। जिससे वहां के लोगों के लिये आने-जाने की सुविधा हो सके।

समय :
4.56 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. रमन सिंह) पीठासीन हुए)**

माननीय अध्यक्ष महोदय, पत्थलगांव विधान सभा एक ऐसा क्षेत्र है, जो आर्थिक विकास कर सकता है। वहां टमाटर की, दलहन की और तिलहन की खेती होती है। जब यहां चुनाव चल रहा था तो मैंने पहले के भाषण में सुना था कि हमारे इन्हीं विपक्ष के साथियों के राष्ट्रीय नेता यहां किसी कार्यक्रम में आये थे और उन्होंने कहा था कि हमारे कांग्रेस की सरकार ने हर विकासखण्ड में फूड प्रोसेसिंग केंद्र खोल दिये गये हैं। लेकिन कहीं भी फूड प्रोसेसिंग केंद्र नहीं खुले हैं। लेकिन मैं अपनी तरफ से इस बजट में प्रस्ताव रखना चाहती हूं कि मेरे विधान सभा क्षेत्र में फूड प्रोसेसिंग केंद्र खोल दिया जाये, ताकि वहां के किसानों को लाभ मिले।

अध्यक्ष महोदय :- आपको अपने विधान सभा की जो भी मांग रखनी है, आप फटाफट रख दीजिये। आप क्या-क्या चाहती है, अपनी डिमांड रख दीजिये।

श्रीमती गोमती साय :- अध्यक्ष महोदय, जी। इस तरह से हमारे वित्त मंत्री जी समावेशी बजट लेकर आये हैं। समय कम है और बोलना बहुत है। लेकिन हमारे वित्त मंत्री जी ने इस बजट के माध्यम से छत्तीसगढ़ को चार चांद लगाया है। सभी लोगों को ध्यान में रखते हुए, सभी के विकास को ध्यान में रखते हुए यह बजट लाया गया है और अंत में मैं इतना ही बोलूंगी।

श्रीमती उत्तरी गनपत जांगड़े :- दीदी, सारंगढ़ बर रेल लाईन ला एक ठन मांग रख देबे ।

श्रीमती गोमती साय :- माननीय अध्यक्ष महोदय,

मत कर निराश की बातें, जीवन समल की आशा है

कर्तव्य कर्म करते जाओ, जीवन की यही परिभाषा है।

अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिये बहुत-बहुत धन्यवाद। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- माननीय सदस्यों से निवेदन है कि वह अपने विधान सभा की बात 5-5 मिनट में रखते जाये। चूंकि आज ही जवाब आना है। बहुत सारे सदस्य बाकी है। मैं चाहूंगा कि आप 5-5 मिनट में अपनी बात रख दें। अटल जी।

श्री अटल श्रीवास्तव (कोटा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं छत्तीसगढ़ के वर्ष 2024-25 के बजट के विरोध में बोलने के लिये खड़ा हुआ हूं। इस बजट को पेश करने वाले सदस्य पहली बार विधायक चुनकर आये, पहली बार वित्त मंत्री बने और मेरे खयाल से सबसे कम उम्र के वित्त मंत्री के रूप में यहां उनका बजट प्रस्तुत हुआ है। उनके प्रस्तुतीकरण को मैं बधाई देता हूं कि उन्होंने जिस तरह से जगलिंग की है, जो डाटा थे उनको लेकर, उनके जो 10 स्तम्भ हैं, जिसके आधार पर छत्तीसगढ़ का आने वाला भविष्य लिखा जायेगा।

समय
5.00 बजे

अध्यक्ष महोदय, उन्होंने जो GYAN की बातें कीं, मैं उन्हें उसको लेकर बधाई देता हूँ। पर उन्होंने जो GYAN की बातें की हैं, उस GYAN का पहला शब्द गरीब है और इस प्रदेश में गरीब के लिए जो योजनाएं बनायीं जानीं चाहिए थी, इस बजट में उसका कोई उल्लेख नहीं है। आप देखिए कि जब वर्ष 2014 में केन्द्र में सरकार आयी थी तब एल.पी.जी. का रेट 410 रूपये था आज 903 रूपये है। पेट्रोल का रेट 71 रूपये था आज 97 रूपये है। पहले डीजल का रेट 55 रूपये था, आज 70 रूपये है। सरसों तेल का रेट 90 रूपये था आज 143 रूपये है। पूर्व में आटे का रेट 22 रूपये था आज 35 रूपये है। पहले दूध 35 रूपये में मिलता था। जब इतनी महंगाई बढ़ी तो गरीबों के मुंह से निवाला छीन लिया गया। आपने बजट प्रस्तुत करते हुए, गरीबों के लिए ऐसे कोई साधन नहीं छोड़े कि वह ..।

श्री सुशान्त शुक्ला :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यहां सदन में केन्द्र सरकार के बजट पर चर्चा नहीं हो रही है। आप विषय में आएं।

श्री अटल श्रीवास्तव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं यही बात करना चाहता हूँ कि पूरे देश में जिस तरीके से महंगाई बढ़ी है, जिस तरीके से लोगों की थालियों से निवाला छीना गया है, पर छत्तीसगढ़ का बजट में छत्तीसगढ़ के गरीबों के लिए ऐसी कोई योजना नहीं बनायी गई, जिससे छत्तीसगढ़ के गरीबों को लाभ हो।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इनके GYAN का दूसरा शब्द "Y" है और इसमें इन्होंने युवाओं के लिए बात की। हमारी सरकार 5 सालों तक थी उस समय छत्तीसगढ़ के युवाओं को बेरोजगारी भत्ता मिलता

था। कहीं न कहीं छत्तीसगढ़ के युवा बेरोजगारी भत्ता पाकर, जितनी प्रतियोगी परीक्षाएं होतीं थीं, चाहे पी.एस.सी. परीक्षा हों या कोई भी दूसरी परीक्षाएं हों, सबकी फीस माफ कर दी गई थी। हमारी सरकार ने छत्तीसगढ़ के युवाओं के साथ यह किया था। युवाओं के लिए आपका जो रोड मैप है, उसमें कहीं कोई योजना नहीं है। जब हमारे पूर्व के भूपेश बघेल जी की सरकार ने युवाओं के लिए छत्तीसगढ़ ओलंपिक शुरू किया। आपने उसका नाम बदल दिया, मैं आपको धन्यवाद् देता हूँ कि आप लगातार जो यह नाम बदलने का खेल कर रहे हैं उसके लिए आपको धन्यवाद् है। आपने भूमिहीन खेतिहर मजदूरों के लिए 10 हजार रूपये की वार्षिक सहायता रखी है, मैं, आपको उसके लिए धन्यवाद् देता हूँ। आपने हमारी योजना को दीनदयाल उपाध्याय भूमिहीन कृषि मजदूर योजना नाम दिया है। कम से कम इससे छत्तीसगढ़ के भूमिहीन कृषि मजदूरों के लिए 10 हजार रूपये रखा है। आपने बिजली बिल हाफ योजना रखी। बिजली बिल हाफ योजना में 400 यूनिट तक बिजली बिल माफ होगी। यह हमारी सरकार की योजना थी मैं इसके लिए माननीय वित्त मंत्री जी को बधाई देता हूँ। कम से कम गरीबों के लिए 400 यूनिट बिजली बिल माफ करने की बात हुई।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं कृषक उन्नति योजना की बात करना चाहूंगा। जब राजीव गांधी न्याय योजना के तहत किसानों के बोनस का पैसा 4 किश्तों में देते थे तभी आपकी सरकार आने से पहले आपकी पार्टी ने अपने घोषणा पत्र में यह घोषणा की कि हम किसानों को 3100 रूपये धान की कीमत देंगे। आपने नाम बदला। मैं आपको धन्यवाद् देता हूँ कि आपने किसानों को 3100 रूपये धान की कीमत देंगे। मेरा आपसे केवल यही निवेदन है कि जो आपने कहा था कि हम 3100 रूपये की राशि एक मुश्त और वहीं उसी गांव पर मिलेगी, आप उसकी व्यवस्था कर लीजिए।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सदन में महतारी वंदन योजना को लेकर बहुत सारी बातें हुईं। अब इस योजना में अपात्र और पात्र की बातें होने लगीं हैं। आपने कितने बजट का एलॉटमेंट किया है, हमारे प्रदेश में कितनी लाख महिलाएं हैं, हमारे यहां शादी की उम्र सरकार द्वारा 18 वर्ष है और आप 21 साल की महिलाओं को विवाहित मानकर, केवल उनको पैसा दे रहे हैं। इसमें कहीं न कहीं खेल है। यहां पर बहुत सारी बातें स्मार्ट सिटी योजना की हुई। यह स्मार्ट सिटी योजना केन्द्र सरकार की योजना है। केन्द्र सरकार स्मार्ट सिटी के एडवायजरी बोर्ड का गठन करती है, जब केन्द्र सरकार के एडवायजरी बोर्ड के गठन के बाद बिलासपुर के हाईकोर्ट में यह बात हुई कि वहां के महापौर को इसका सदस्य बनाया जाए, वहां के सभापति को इसका सदस्य बनाया जाए। तब इसी केन्द्र की सरकार ने एडवायजरी बोर्ड को कहा कि हम इसके सदस्य नहीं बना सकते। फिर आप यह कैसे आरोप लगा सकते हैं कि स्मार्ट सिटी की परियोजना में जो भ्रष्टाचार हुआ है, उसमें कहीं न कहीं केन्द्र सरकार और उसके अधिकारी जिम्मेदार हैं, उसके लिए कांग्रेस की सरकार जिम्मेदार नहीं है। मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि GYAN की एक और बात है "A" हमारे अन्नदाता तो अपने आपको ठगा हुआ महसूस कर रहा है जब छत्तीसगढ़ का

अन्नदाता, किसान यह उम्मीद लेकर बैठा हुआ था कि उसने जो किसानी के लिए कर्ज लिया है, वह कर्ज माफ होगा। भारतीय जनता पार्टी के उप मुख्यमंत्री जी के कई वीडियो वॉयरल हुए। यहां कई पॉम्पलेट बांटे गए कि हम किसानों का 2 लाख रूपये तक का कर्ज माफ करेंगे, परन्तु आज किसान ठगा हुआ महसूस कर रहा है। कहीं न कहीं आज किसान आत्महत्या करने के लिए मजबूर हैं कि आखिर मेरे द्वारा लिया गया इतना कर्ज कैसे माफ होगा। मैं माननीय वित्त मंत्री जी से निवेदन करता हूँ कि कम से कम किसानों का 2 लाख रूपये तक कर्ज माफ कर दीजिए। चौथी बात इनकी GYAN में "N" से नारी है । महतारी वंदन योजना में जो महिलाओं के साथ हो रहा है, वह दिख ही रहा है। पिछले 5 सालों में हमारे छत्तीसगढ़ में स्वसहायता समूह की महिलाओं का लगभग-लगभग चार गुना वृद्धि हुई। हमारे गांव-गांव में कहीं पर 10 कहीं पर 15, कहीं 20 और कहीं 50 स्वसहायता समूह बने। उन महिलाओं को यह विश्वास था कि हमको स्वसहायता समूह के माध्यम से रोजगार मिलेगा, पर इन स्वसहायता समूहों के माध्यम से जिन महिलाओं ने कर्ज लिया था उन्हें यह विश्वास था कि उनका कर्ज भी माफ किया जायेगा। माननीय वित्त मंत्री जी ने इस बजट में उन तमाम् महिलाओं की कर्ज माफी का कोई प्रयोजन नहीं किया और स्वसहायता समूह...।

श्री चैतराम अटामी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य स्वसहायता समूह की बात कर रहे हैं उन स्वसहायता समूहों से रेडी टू ईट को छीन लिया गया है (शेम-शेम की आवाज) यह कांग्रेस की तत्कालीन सरकार ने स्वसहायता समूहों के साथ अन्याय किया है। आपके समय में रेडी टू ईट में बहुत भ्रष्टाचार हुआ है। (व्यवधान)

श्रीमती उत्तर गनपत जांगड़े :- अभी आप लोग उसे वापस कर दीजिए।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, (व्यवधान) उस माध्यम से काम होता था।

श्री चैतराम अटामी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे यह पूछना चाहता हूँ कि आपने किने स्वसहायता समूहों का कर्ज माफ किया है। आपने घोषणा की थी और स्वसहायता समूहों के कर्ज माफी की बात की थी कितने स्वसहायता समूहों का कर्ज माफ हुआ। (व्यवधान) आप एक समूह का बताईये। आपने स्वसहायता समूहों के कर्ज माफी की बात की थी।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने कर्ज माफ किया था। महिला विभाग से जो मिला था हमने उसका कर्ज माफ किया था।

श्री अटल श्रीवास्तव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जब आपने रेडी टू ईट की बात की। जब हमारी सरकार बनी। जो रेडी टू ईट चला रहे थे, जब वह हमारे पास आकर बोलते थे कि आप 5 लाख रुपये ले लीजिए, हमारा रेडी-टू-ईट चालू रखिये, तब हमको समझ में आया कि इसमें बड़ा भ्रष्टाचार है। इसलिए उसको बंद किया गया था ताकि बच्चों को अच्छा, पौष्टिक खाना मिल सके। इसलिए वह योजना शुरू की थी।

श्री सुशांत शुक्ला :- योजना किसी को पौष्टिक आहार देने के लिए थी या किसी की डालर की बढ़ोत्तरी के लिए दी थी ?

श्री धर्मजीत सिंह :- क्योंकि पौष्टिक आहार में खतरा नहीं था, इधर सरकार में बैठे हुए लोगों के पौष्टिक आहार में खतरा था।

श्री अटल श्रीवास्तव :- नही, सबसे ज्यादा इस तरह से लोग तो आपकी ही सरकार में हुए थे।

अध्यक्ष महोदय :- अटल जी, समाप्त करिये।

श्री अटल श्रीवास्तव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, दो मिनट का समय दीजिए। माननीय वित्त मंत्री जी ने जो बजट प्रस्तुत किया है, उसका चौथा स्तम्भ प्राकृतिक संसाधनों का उचित इस्तेमाल है जो कि सबसे महत्वपूर्ण है। मुझे डर है कि पूरे वित्त मंत्री जी के बजट में सब जगह कोई भी कर नहीं बढ़ाये गये हैं, आखिर यह 5 हजार करोड़ रुपये की जो जी.डी.पी. है, वह 10 हजार करोड़ रुपये कैसे पहुंच जायेगी। मुझे यह आशंका है कि यह जो अदृश्य शक्तियां हैं, यह बजट में आयेंगी। यह अदृश्य शक्तियां छत्तीसगढ़ के प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करेंगी। इसलिए आपने कटघोरा-डोगरगढ़ रेल लाईन के लिये बजट में 300 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है ताकि हमारे छत्तीसगढ़ की प्राकृतिक संपदा को यह ले जा सकें। चिरमिरी-नागपुर हाल्ट की नई रेल लाईन हेतु आपने बजट में 120 करोड रुपये का प्रावधान किया है ताकि छत्तीसगढ के गर्भ में फंसी हुई हमारी खनिज संपदा को ले जा सकें। अध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि मुझे माननीय वित्त मंत्री जी के इरादों में कोई शक नहीं है। वह छत्तीसगढ़ के लाडले सपूत हैं। मुझे विश्वास है कि वह छत्तीसगढ़ के हित का ध्यान रखेंगे। पर मैं अंतिम में मैं अपनी बात कहना चाहता हूं-

किसने दस्तक दी है, दिल पर कौन है,
आप हो अंदर से, बाहर ये कौन है।

यह बाहर के आदमी जो छत्तीसगढ़ की प्राकृतिक संपदा को लूटने आये हैं, उसको रोका जाना चाहिए। मैं अंतिम में केवल अपने क्षेत्र की एक मांग करता हूं।

श्रीमती गोमती साय :- बाहर से लोगों को बुलाया कौन था ?

श्री सुशांत शुक्ला :- छत्तीसगढ़ से जुड़े हुए संसाधन को ए.टी.एम. के रूप में समर्पित तो नहीं कर रहे हैं।

श्री अटल श्रीवास्तव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अपने क्षेत्र की मात्र एक मांग वित्त मंत्री जी से रखना चाहता हूं। मेरा क्षेत्र चार भागों में बंटा हुआ है। पेण्ड्रा-गौरेला, बेलगहना, रतनपुर और कोटा, दोनों के बीच में दूरी ज्यादा है। पर बेलगहना क्षेत्र के आदिवासी इलाकों में एक भी कॉलेज उपलब्ध नहीं है। मैंने माननीय शिक्षा मंत्री जी से भी निवेदन किया था कि बेलगहना क्षेत्र में अगर एक कॉलेज की

घोषणा हो जाती तो आदिवासी बालक-बालिकाओं को उच्च शिक्षा के लिए पढ़ने की सुविधा मिल जाती। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने बोलने का समय दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद। नीलकंठ टेकाम जी।

श्री धर्मजीत सिंह :- अदृश्य शक्तियों के बारे में आप जेल में पता करिये कि कौन-कौन थे ? अभी वहां एक आई.ए.एस. अफसर है, एक और आई.ए.एस. अफसर है, एक और स्टेट सर्विस वाली हैं, एक-दो और लोग हैं, जो अदृश्य शक्ति में पूरा कोयला, लोहा, सोना, चांदी, चावल सब कुछ का गुणा-भाग कर रहे थे।

आदिम जाति विकास मंत्री (श्री रामविचार नेताम) :- अटल जी के प्रिय लोग हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप तो कुछ बोलिये ही मत। पूरे गरीबों के निवाला को ठेकेदार को दे दिया। वसूली में सहायता के लिये ठेकेदार को बैठा दिये।

श्री बघेल लखेश्वर :- धर्मजीत भैया, हमारी सरकार पारदर्शी थी।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप तो बिल्कुल ही मत बोलिये। आप तो बहुत तकलीफ में थे। मैं तो आपकी तकलीफ को नजदीक से देखा हूं। आप तो वहां कहीं थे ही नहीं।

श्री अटल श्रीवास्तव :- अध्यक्ष महोदय, अभी हम आपकी तकलीफ को देख रहे हैं कि आप कहां बैठे हैं और आपको कहां बैठना था। आप क्या सोच कर गये थे और क्या सोचकर हो गया ?

श्री धर्मजीत सिंह :- अगर मैं उधर रहता तो मैं तो यहां रहता ही नहीं।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, नीलकंठ टेकाम जी।

श्री नीलकंठ टेकाम (केशकाल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय वित्त मंत्री जी द्वारा प्रस्तुत किये 2024-25 के बजट भाषण के पक्ष में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। सबसे पहले तो मैं यह कहना चाहूंगा कि यह जो बजट है, जैसा कि सभी लोग मान रहे हैं कि यह बजट छत्तीसगढ़ राज्य के 2047 के स्वरूप को बताने वाला बजट है। इसकी जो सबसे बड़ी खासियत है। अभी गांव-गांव में बड़ी चर्चा होती रहती है कि पिछली सरकार क्यों गिरी ? तो लोग बोलते हैं कि पिछली सरकार ने बजट में कोई पिलर नहीं रखा था इसलिए गिर गई। (मेजों की थपथपाहट) माननीय विष्णुदेव साय जी की सरकार 10 ठन पिलर रख के काम करत हे, ओ पाये कि 2047 तक के जाये के ओकर रास्ता क्लीयर हो गये हे। यह बहुत ही सोचा-समझा और रणनीति के साथ बनाया हुआ बजट है। 10 पिलर पर टिका हुआ यह बजट है। अभी हमारे मित्र पूछ रहे थे कि आपने कर की व्यवस्था नहीं की है, कोई नया टैक्स नहीं लगाया है। इसकी सब जगह चर्चा हो रही है कि बिना टैक्स के सरकार कैसे चलेगी ? हम भी यही जानते हैं कि बिना टैक्स के सरकार नहीं चल सकती, बिना टैक्स बढ़ाये सरकार नहीं चल सकती है, लेकिन हमारे वित्त मंत्री जी की जो तैयारी है, उसके बारे में मैं सदन को अवगत कराना चाहता हूं। जब हमारे वित्त मंत्री जी ने इस बजट की साधना की थी, उस समय उन्होंने व्यवस्था बना लिया था कि किस

तरह से मगरमच्छ को पकड़ने के लिए 100 नंबर का जाल, बड़े मछली को पकड़ने के लिए 80 नंबर का जाल और चिंगरी को भी ..। (मेजों की थपथपाहट)

आदिम जाति विकास मंत्री (श्री राम विचार नेताम) :- छोटा वाला चिंगरी।

श्री नीलकंठ टेकाम :- छोटा वाला चिंगरी को भी पकड़ने के लिए भी पेलना का इंतजाम किया गया है। इससे हमारी राजस्व की व्यवस्था होगी। (मेजों की थपथपाहट) राजस्व बढ़ाना कोई बहादुरी नहीं होता है, बल्कि एक सक्षम, एक प्रशिक्षित और एक टेक्निकयुक्त व्यवस्था के साथ राजस्व कलेक्ट करना एक जादूगरी होती है और आपने देखा होगा कि हमारे वित्त मंत्री जी ने एक प्रशासनिक व्यवस्था में सबसे ज्यादा महत्व प्रौद्योगिकी के उपयोग को दिया हुआ है। (मेजों की थपथपाहट) नई टेक्नोलॉजी के उपयोग को दिया हुआ है।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, आज हम अमृतकाल में यह बात कर रहे हैं कि आज से 2 हजार साल पहले चन्द्रगुप्त नामक सम्राट हुआ करता था और उनके शासनकाल को भारत के इतिहास का स्वर्ण काल कहा जाता है। स्वर्ण काल इसलिए कहा जाता है क्योंकि उन्होंने भी विज्ञान, प्रौद्योगिकी, दर्शन और ज्ञान पर काम किया था। आज हमारे माननीय विष्णु देव साय जी की सरकार और हमारे माननीय वित्त मंत्री जी ने भी हूबहू उसी तरीके से व्यवस्था को लागू करने का, चालू करने का संकल्प लिया हुआ है। इसमें हमको कोई संदेह नहीं होना चाहिए। ग्राम पंचायतों के चुनाव में आप सब लोग रहे हैं। आपने आपके चुनावी क्षेत्र में नेट कनेक्टिविटी की बात हर जगह देखने को और आपको सुनने को मिली है और पूर्व में जब भारतीय जनता पार्टी की सरकार थी, उन्होंने भारत नेट के माध्यम से, बस्तर नेट के माध्यम से यह व्यवस्था बना भी दिया था, लेकिन पिछले पांच सालों में आपने इसका कोई उपयोग नहीं किया। अब इस बजट के माध्यम से संदेश देने की कोशिश की गई है कि भारतनेट और बस्तर नेट जैसे जो इंटरनेट सेवाएं हैं, उसका भरपूर उपयोग किया जाएगा। (मेजों की थपथपाहट) पिछले पांच सालों में बिना Pillar के सरकार होने के कारण पूरे टाईम हवा में उड़ती रही, कटी पतंग की तरह उड़ती रही।

श्री अटल श्रीवास्तव :- अध्यक्ष महोदय, यह बड़े स्तंभ थे। एक Pillar यह भी थे। यह आई.ए.एस. अधिकारी थे, यह तीन जगह के कलेक्टर रहे हैं। आप भी उस Pillar में थे तो आप कम से कम उस Pillar को तो मत गिराईये। आप भी उसके अंग थे।

श्री नीलकंठ टेकाम :- अध्यक्ष महोदय, हमें यह जानकार बड़ी शर्मिंदा होती है कि दो-दो, तीन-तीन आई.ए.एस. ऑफिसरों को जेल में जाकर अपनी जिंदगी बितानी पड़ती है। (शेम-शेम की आवाज) (मेजों की थपथपाहट) मैं और मेरे जैसे सैकड़ों लोग आज गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं कि छत्तीसगढ़ राज्य में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी हुई है और भारत देश में नरेन्द्र मोदी जी की सरकार है। (मेजों की थपथपाहट)

एक माननीय सदस्या :- इनके तरफ से आई.ए.एस. को चुनना पड़ा।

श्री राम विचार नेताम :- आना शुरू हो गया है।

श्री नीलकंठ टेकाम :- बिल्कुल आना शुरू हो गया है। और भी लोग आयेंगे। अच्छे लोग आयेंगे और छत्तीसगढ़ राज्य को यूं ही कोई लूटने नहीं दिया जाएगा।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं बस्तर के केशकाल विधान सभा क्षेत्र से आता हूं। जब कांग्रेस की सरकार आई थी तब माननीय राहुल गांधी जी को बुलाकर उनके हाथ से दो असत्य काम करवाया गया। पहला काम, कोण्डागांव में मक्का प्रोसेसिंग प्लांट का भूमि पूजन करवाकर पांच साल में आज तक लोगों के सामने उसका अता-पता नहीं है। (शेम-शेम की आवाज) मक्का प्रोसेसिंग प्लांट क्या था? 45 हजार किसानों से उनका 20 रूपये प्रति किलो मक्का खरीदी करने का प्रोजेक्ट था, जिसमें किसानों ने अपने तरफ से 7 करोड़ रूपये जमा किया हुआ था। अगर आज वह मक्का प्रोसेसिंग प्लांट चालू हो जाता तो इस जिले के 45,000 किसान, जिसमें से 20,000 ऐसे किसान हैं जो वन अधिकार मान्यता पत्रधारी हैं । उनके जीवन में एक बहार आ चुकी रहती । लेकिन कांग्रेस सरकार ने उसको ठंडे बस्ते में डाल दिया। न केवल इसे ठंडे बस्ते में डाल दिया । चूंकि कलेक्टर की हैसियत से मैंने उस प्लांट को चालू कराने के लये वर्क ऑर्डर जारी किया था, सातवें दिन मेरा वहां से ट्रांसफर कर दिया गया था । (शेम-शेम की आवाज) यह बोलने की बात नहीं है लेकिन जो चीज है वह हम सबको समझनी पड़ेगी । हम सबको स्वीकार करना पड़ेगा ।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कलेक्टर की भी पीडा है और विधायक की भी पीड़ा है और एक कलेक्टर वित्तमंत्री जी हैं जिन्होंने बजट पेश किया है । एक कलेक्टर, दूसरे कलेक्टर के बारे में बोल रहे हैं । इसको समझने के लिये रामकुमार यादव जी कहां हैं ? वे बैठे नहीं हैं ।

श्री अटल श्रीवास्तव :- हम लोगों ने छत्तीसगढ़ बनते समय भी एक कलेक्टर को देखा है । जो वर्ष 2001 से 2003 तक थे और आप उनके बहुत बड़े चेले रहे हैं ।

श्री रामकुमार यादव :- ऐमन ला देखकर हमर छत्तीसगढ़ हा कन्फ्यूज हो गे हे कि आदमी नेता बनय कि कलेक्टर बनय ?

श्री धर्मजीत सिंह :- वे बहुत इंटेलीजेंट थे । यहां पर बैठकर उनके बारे में टीका-टिप्पणी करने के लायक हमारी हैसियत नहीं है ।

श्री नीलकंठ टेकाम :- रामकुमार भाई, कन्फ्यूज मत होइए । बस देखते जाईए कि आगे-आगे होता क्या है ?

श्री रामकुमार यादव :- फौज में जइसे रहिथे तो जेन हा बीच में छोड़ के आथे तेला का कथे ?

श्री धर्मजीत सिंह :- एक कलेक्टर बोलत हे, वित्तमंत्री के जवाब देत हे । तें हा समझत हस कि नहीं अइसे कहिके मैं पूछे रहेंओं । तें नइ रहे तेकर सेती पूछत रहेओं ।

श्री रामकुमार यादव :- मैं सब ला समझथओं । गोबर ला कइसे जतनना हे ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, समाप्त करिये ।

श्री प्रबोध मिंज :- ऐ हर हमर ग्यारहवां पिलर हे ।

श्री नीलकंठ टेकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ राज्य 32 परसेंट आदिवासीयुक्त राज्य है । यहां लगभग 1 करोड़ आदिवासी रहते हैं, यहां 75 लाख से ज्यादा गोंड आदिवासी हैं । (मेजों की थपथपाहट) गोंडी भाषा बोली जाती है । नाड़ निमा नावा निगा वॉय कि निकोनिना निकोनगाटो हियाका किंदाला । किसको समझ में आया ? कोई नहीं समझ सका । (मेजों की थपथपाहट) यह भाषा हमारी बुनियाद है । यह हमारे क्षेत्र में रहने वाले लोगों की धर्म-संस्कृति और जीवनशैली को आदिकाल से संजोकर रखकर और भविष्य में भी इसको बचाये रखने की सबसे बड़ी आवश्यकता है । मैं माननीय वित्तमंत्री जी को इस बात के लिये धन्यवाद देना चाहूंगा कि उन्होंने गोंडी भाषा को संरक्षित करने की दिशा में पहल की और उसको बजट में प्रावधानित किया हुआ है ।

श्री रामकुमार यादव :- टेकाम जी, ये तुंहर गोंडी भाषा ला कोरबा के मन समझहीं, जावा तो । उही मन ला समझइहा । तुमन ला पता हे कि नइ पता हे कि आपे मन के आदिवासी समाज के 12 ठन जाति के जाति प्रमाण-पत्र नइ बनत हे ।

श्री नीलकंठ टेकाम :- मैं उसी में आ रहा हूं ।

श्री रामकुमार यादव :- ओकर बर कछु काबर नइ लिखे हओ ? सौरा, पांव, खोबिया, खड़िया, मांझूराव, धनवार, कोड़, कोड़ाकू एमन के 22 इन जाति के जाति प्रमाण-पत्र नइ बनत हे । ओकरो बर लिखे रहितेओ ता मोला अच्छा लागतिस ।

श्री नीलकंठ टेकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ राज्य में 45 तरह की आदिवासी जातियां निवास करती हैं । सबकी जीवनशैलियां, भाषा, निवास, रीति-रिवाज अलग-अलग प्रकार के हैं और उन सबके बीच सामंजस्य रखना, चाहे वह कोई भी सरकार हो उसकी जिम्मेदारी बनती है । छत्तीसगढ़ सरकार ने, हमारी भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने आदिवासियों के जीवन-स्तर को उंचा उठाने के लिये, उनका जो रहन-सहन है, उनके जो गांव की व्यवस्था है । गांव में जो जमींदारी की व्यवस्था है, गांव में माटी-पूजा करने की व्यवस्था है उसको संरक्षित करने का काम करने की व्यवस्था इस बजट में की गयी है । यही इस बजट की सुंदरता है ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, अपने क्षेत्र के बारे में कुछ बता दीजिये ।

श्री नीलकंठ टेकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपका निर्देश है कि मैं अपने क्षेत्र के बारे में बताउं तो मैं कहना चाहता हूं कि केशकाल घाट बस्तर का प्रवेश द्वार है और नेशनल हाईवे होने की वजह से सीधा-सीधा स्टेट गवर्नमेंट का हस्तक्षेप नहीं हो पाने से केशकाल घाट की स्थिति बहुत ज्यादा खराब रहती है । वहां आये दिन घाट में जाम लगा रहता है । मैं माननीय वित्तमंत्री महोदय जी से यह आग्रह करना चाहता हूं और छत्तीसगढ़ सरकार से भी यह निवेदन करना चाहता हूं कि केशकाल घाट का

सुदृढ़ीकरण, उसका चौड़ीकरण और उसके बायपास का जो काम है उसको समय-सीमा में पूरा करा दिया जाये ताकि मध्यभारत को दक्षिण भारत के साथ जोड़ने की एकमात्र सड़क जो केशकाल घाट से होकर गुजरती है जहां पर सैकड़ों-हजारों लोग आना-जाना करते हैं उनको इसकी सुविधा हो सके । माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरी दूसरी मांग रावघाट से जगलदपुर तक रेलवे लाइन जो प्रस्तावित है, उसको जल्द से जल्द जो भी समस्याएं फॉरेस्ट डिपार्टमेंट की ओर से आ रही है, उसे एक समन्वय के साथ पूरा करा दिया जाये, जिससे आये दिन हर रोज दंतेवाड़ा जगदलपुर से रायपुर के लिए लगभग 4 हजार लोग रोज यहां पर बसों से यात्रा करते हैं और 1-1 यात्री को 1000 रूपया, 1500 रूपया किराया देना पड़ता है। एक्सीडेंट होता है और बहुत सारी असुविधाएं होती हैं। अगर ये रेलवे लाइन बन जाती है तो बस्तर के लोगों को सीधा रायपुर के साथ जुड़ने का अवसर मिल सकता है और एक पुराना रेलवे जो दल्लीराजहरा के आसपास से होकर विश्रामपुरी होते हुए, उसे भी अगर कोंडागांव से जोड़ दिया जाता है तो काफी अच्छी सुविधा उन बस्तरवासियों के लिए हो सकती है और वहां का उद्योग-व्यापार, वहां का एज्यूकेशन, वहां की चिकित्सा की सुविधा बढ़ सकती है और ये दोनों-तीनों काम मेरे केशकाल विधान सभा क्षेत्र से संबंध रखते हैं। इसलिए मैं निवेदन करते हुए कि इन्हें जब भी आवश्यक समझें तो इसे शामिल करने का कष्ट करेंगे। मुझे बोलने का अवसर देने के लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं इस बजट भाषण के प्रत्येक पेज के प्रत्येक लाइन का और प्रत्येक शब्द का समर्थन करते हुए अपनी बात को समाप्त करता हूं। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद। चातुरी नंद जी।

श्रीमती चातुरी नंद (सराईपाली) :- अध्यक्ष महोदय, मोला बोले के मौका देहो तेखर बर धन्यवाद और हमर युवा दिलों के सम्राट मोर बड़े भैया आदरणीय ओ.पी. चौधरी जी ला भी मैं प्रणाम करथव, भले आज हमन पक्ष अउ विपक्ष में हन, पर भैया हमर आदरणीय रहिस हे अउ ओखर विचार मोला बहुत अच्छा लगथे। हमर भैया भाषण चालू करे के पहली कबीर जी के दोहा ले चालू करे रहिस तो मैं भी कबीर जी के दोहा ले शुरूआत करना चाहथव -

चलती चक्की देख के, दिया कबीरा रोये,
दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोए।

हमर छत्तीसगढ़ के वित्त मंत्री आदरणीय चौधरी जी अपन बजट भाषण में आधारभूत रणनीतिक 10 स्तंभ के आधार पर बजट भाषण ला पेश करे हे, जेमा एक-एक करके मैं अपन बात ला रखियौ, जेमा पहिला नंबर मा ज्ञान लिखाये हे। ज्ञान के मतलब गरीब, युवा, अन्नदाता, नारी। जेमे मोला ये कहना हे कि गरीब ला महंगाई मार डारिस, युवा ला नौकरी के आस मार डारिस, अन्नदाता हमर किसान ला 3100 के आस मार डारिस, अउ नारी ला महतारी वंदन के फार्म मार डारिस। (मेजों की थपथपाहट) महतारी वंदन के फार्म एखर बर कहत हव कि सराईपाली विधान सभा क्षेत्र के अइसे गांव जामपाली जेमा

महतारी वंदन के फार्म ला बेचे बर 20-20 रूपया लिया जाथे। नारी के उन्नति अउ प्रगति बर महान विद्वान संविधान निर्माता स्व. बी.आर. अंबेडकर साहब हा कहे रहिस I measure the progress of community by the degree of progress which women have achieved. अर्थात् कोनो समुदाय के प्रगति हा महिला के प्रगति से आंके जाथे। भष्ट्राचार के बारे में आगे बात बोले गेहे जेमा मैं कहना चाहूं कि वर्ष 2014 में जब बी.जे.पी. के शासनकाल रहिस ते समय मा 24 फर्जी आदिवासी मन के जाति प्रमाण पत्र के द्वारा करोड़ों रूपया के भ्रष्टाचार करने वाला मन आज भी भ्रष्टाचार के बात करथे। अउ जाति प्रमाण पत्र निलंबित होये के बाद भी नवा-नवा रजिस्ट्री करत हावय, यह बहुत ही लज्जाजनक बात हे। बी.जे.पी. शासनकाल में लगे हुए एक चपरासी जो कि एस.डी.एम. कार्यालय में काम करत हावय वो अभी जो हे डेढ़ लाख रूपये के iphone 15 चलाथे, अउ Swift Dzire में दू झन ड्राइवर लेकर नौकरी करेला आथे त सोच सकथौ कि भ्रष्टाचार हा कोन चरम-सीमा में चलत हावय। हमर भैया के ध्यान आकर्षित करना चाहूं । तकनीकी आधारित आर्थिक विकास की बात महज एक कल्पना मात्र है । जी.डी.पी. 5 लाख करोड़ ले 10 लाख करोड़ करे के सपना दिखवत हे तो दिल्ली में बइठे हमर दाढ़ी वाल चचाजान कथे न खाऊंगा न खाने दूंगा तो ओखर बर मैं कहना चाहत हौं कि ओखरे पार्टी के व्यक्ति मन सराईपाली के 15वें वित्त अउ गौण खनिज के पइसा ला खावत हे अउ डकार भी नइ लेवत हे । प्राकृतिक संसाधन मन के उचित इस्तेमाल से वित्त मंत्री जी से मतलब है कि सरगुजा के कोयला ला अडाणी ला बेच दे अउ सरगुजा के जीवन ला अस्त-व्यस्त कर दे । हमर वित्त मंत्री महोदय, आगे हेल्थ डेस्टीनेशन के बात करे हे । हेल्थ डेस्टीनेशन कइसे आही, एला मैं बता देना चाहत हौं । एक गायनिक डॉक्टर दू ठ विधान सभा ला चलावत हे । कइसे हेल्थ डेस्टीनेशन आही । सरईपाली अउ बसना विधान सभा मा एक ठ गायनिक डॉक्टर हे, अउ वो गायनिक डॉक्टर भी अभी मेटरनिटी लीव मा चलत हे । सोचो हम दोनों विधान सभा क्षेत्र के का हो ही ।

श्री रामकुमार यादव :- दीदी, बहुत अच्छा, तोला शाबाशी देथन । ठाकुर साहब का कहत रिहिस हे कि रेडी-टू-ईट ला खा के पचा दिन, खा के पचा दिन । तुमन ता कोयला ला खा के पचा देत हावव ।

श्री सुशांत शुक्ला :- साथी सहयोगी सदस्य, अपनी ही पार्टी के लोगों को नहीं छोड़ रहे हैं, यह स्थिति है ।

श्रीमती चातुरी नंद :- निजी निवेश के नाम पर कहीं आरक्षण ला खत्म करे के साजिश तो नहीं चलत हे ।

अध्यक्ष महोदय :- अपने क्षेत्र की बात बताइए फाटाफट ।

श्रीमती चातुरी नंद :- मैं अपन क्षेत्र मा आवत हौं ।

श्री धर्मजीत सिंह :- ओ दीदी, इतना बढ़िया भाषण दे रही हैं, इतने स्टैंडर्ड का भाषण दे रही हैं । बीच-बीच में अपने ही लोगों को डिस्टर्ब क्यों करते हो यार ? हम तो ध्यान से सुन रहे हैं ।

श्रीमती चातुरी नंद :- आवास के बारे में मैं कहना चाहत हौं कि पात्रता के परिभाषा का होना चाहत हे। पात्र क्या वो व्यक्ति है जो टूटेफूटे मकान में रथे, जब कमाकर लाथे तब खाते अउ दूसरा, लेकिन ओखर सर्वे सूची मा नाम नइ हे ? अउ का पात्र ओला कहे जाही, जेखर सर्वे सूची मा नाम हे लेकिन ओखर पक्का मकान हे, दू ठन मोटर सायकल हे, अउ फोर व्हीलर हे ? मैं जानना चाहत हौं पात्रता काला कथे, अगर पात्रता इही ला कथे ? 2002 अउ 2011 के सर्वे ला तो हमर गरीब जनता मन बर यह बहुत ही शर्मनाम बात हे, बहुत ही दुखद बात हे । मैं अउ कहना चाहत हौं कि हमर भइया छत्तीसगढ़ी ला पहचान दे के बात करे हे । छत्तीसगढ़ी संस्कृति ला आगे बढ़ाए के बात करे हे, तेमा मैं कहना चाहत हौं कि छत्तीसगढ़ी ला पहचान देने वाला हमर बड़े भइया दाऊ भूपेश बघेल हा पांच वर्ष मा जो काम करे रिहिस, तेला बीजेपी के सरकार 15 साल मा नइ कर पाइस । अउ बजट भाषण मा हमर बड़े भइया छत्तीसगढ़ी मा नइ लिख कर हिंदी में लिखिस हे, वो हिंदी सरकार छत्तीसगढ़ी ला का बढ़ाही । जल जीवन मिशन के पाईप तो बिछ गे हे, जगह जगह जल जीवन मिशन के पाईप तो बिछ गे हे, टंकी घलो बन गे हे, नल घलो लग गे हे लेकिन पानी के अता पता नइ हे, ता कइसे होही जल जीवन मिशन । अनुसूचित जाति जनजाति के ऊपर होने वाला अपराध, जेमे पीड़ित क्षति पूर्ति मिलथे, ये प्रकरण में मुआवजा राशि 7 दिन के भीतर मा दे के नियम हावय लेकिन इहां 2-2, 3-3साल तक मुआवजा राशि के अता पता घलो नइ हे तो कइसे विकास होही ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, समाप्त करिये । पुरंदर जी ।

श्रीमती चातुरी नंद :- दो मिनट सर, दो मिनट । मैं मांग रख देथौं । सरईपाली से महासमुंद आए मा 110 किलोमीटर के दूरी तय करे जाथे अउ महासमुंद में जेल हावय और वहां के जनता ला इहां आए मा बड़ा तकलीफ होथे । मैं महोदय से निवेदन करत हौं यदि सरईपाली में एक उप जेल हो जाति तो वहां के पुलिस मन ला भी सुविधा होतिस अउ जनता ला भी सुविधा होतिस । एखर अलावा हमर भइया पुलिस विभाग के हमर भाई मन ला एक दिन के छुट्टी दे के घोषणा   करे हे, मे ओखर सराहना करत हंव लेकिन ए मंच ले निवेदन भी करत हंव कि ये जो 24 घंटा ड्यूटी करईया हमर पुलिस विभाग के भाई बहिनी मन हे, ओमन ला अतका कम वेतन भत्ता, अउ अतका कम ग्रेड-पे मिलथे कि ओखर मन के एखर से गुजारा नई हो सकय, ओमन ला कई दिन तक अपन परिवार से दूर रहे बर पड़थे, तेखर बर मे निवेदन करत हंव कि पुलिस विभाग के वेतन भत्ता अउ ग्रेड-पे ला बढ़ाया जाए। एखर अलावा हमर सराईपाली क्षेत्र हा बहुत सुदूर अंचल ए, हमर क्षेत्र हा विकास से अछूता हे। वहां एक गर्ल्स कॉलेज और एक कृषि महाविद्यालय के बहुत ही आवश्यकता हे। हमर भंवरपुर अंचल हा आदिवासी बहुल क्षेत्र हे, यहां बालिका छात्रावास नई हे, मैं भईया से निवेदन करत हंव कि इंहा बालिका छात्रावास बर प्रयास करही। संगवारी हो, मैं दो लाईन में अपन बात ला खत्म करिहंव।

जिंदगी के तार ला जोड़ के तो देख, अऊ माटी संग मया ला घोर के तो देख।

गुरतुर हो जाही संगवारी भाखा हा तोरो, छत्तीसगढ़ी में थोकिन गोठिया के तो देख। (मेजों की थपथपाहट) अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्रीमती गोमती साय :- अध्यक्ष महोदय, सात दिन में हमर बहिनी हा इतना समस्या बता दिस हे, साते दिन में इतना समस्या आ गे, ओखर से पहली तो नई रहिस होही।

अध्यक्ष महोदय :- पुरन्दर मिश्रा जी।

श्री रामकुमार यादव :- महराज प्रणाम।

श्री पुरन्दर मिश्रा :- खुश रहो आशीर्वाद।

श्री रामकुमार यादव :- अमित शाह जी के छोटे भाई कस दिखत हस। (हंसी)

श्री पुरन्दर मिश्रा :- वही समझ ले।

श्री रामकुमार टोप्पो :- डर लागत हे का।

श्री पुरन्दर मिश्रा (रायपुर नगर उत्तर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं वित्त मंत्री जी के बजट के समर्थन के लिए खड़ा हुआ हूं। बहुत ही अच्छा बजट, सुंदर बजट, छोटा बजट लेकिन मजबूत बजट हैं, मैं उनको धन्यवाद देता हूं। (मेजों की थपथपाहट) जिसमें गरीब, किसान, मजदूर, महिला, युवा, सभी लोगों का समावेश है। विष्णु ओम कहेंगे और अरूणोदय के पहले विजय करेंगे। ये बजट का अस्तित्व है। हमारे देश में माननीय प्रधानमंत्री जी ने आयोध्या में रामलला की स्थापना करके चारधाम को पांच धाम कर दिया, मैं उनका अभिनंदन करता हूं, आभार व्यक्त करता हूं।

श्री रामकुमार यादव :- महराज ओड़िया मा गोठयाथव त अच्छा लागथे।

<u>सदन को सूचना</u>

अध्यक्ष महोदय :- आज की कार्यसूची के पद क्रमांक (4) का कार्य पूर्ण होने तक सभा के समय में वृद्धि की जाए, मैं समझता हूं, सभा सहमत है।

(सभा द्वारा सहमति प्रदान की गई)

<u>वित्तीय वर्ष 2024-2025 के आय-व्ययक पर सामान्य चर्चा (क्रमश:)</u>

श्री पुरन्दर मिश्रा :- अध्यक्ष महोदय, मध्यप्रदेश में महाकाल कॉरिडोर, पुरी मंदिर में जगन्नाथ मंदिर का कॉरिडोर, उड़ीसा में समलई मंदिर का कॉरिडोर, उत्तरप्रदेश में कांशी विश्वानाथ का कॉरिडोर और छत्तीसगढ़ में राम जी के मामा का गांव है, कौशिल्या माता का माईका है, हम भांचा को पूजनीय करते हैं। मैं वित्त मंत्री जी से एक निवेदन करूंगा कि सनातन धर्म की रक्षा करने के लिए हिन्दू धर्म को

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

आगे बढ़ाने के लिए आपने 5 शक्तिपीठों की स्थापना की है, उसके लिए आप बधाई के पात्र हैं। मैं आपका अभिनंदन करता हूं। दक्षिण कौशल होने के कारण जगन्नाथ संस्कृति छत्तीसगढ़ के गांव-गांव में विराजमान है, गांव-गांव में उदयमान है। मैं आपसे निवेदन करता हूं कि अंग्रेज शासनकाल में भी जब 1820 में अंग्रेज का शासनकाल था, उस समय भी जगन्नाथ मंदिर को रथयात्रा के लिए दो लाख रूपए का अनुदान दिया गया था। मैं आपसे निवेदन करता हूं कि छत्तीसगढ़ में 418 जगन्नाथ यात्राएं निकलती हैं, उसके लिए भी कुछ न कुछ अनुदान का समावेश करेंगे। ताकि हम भारत को विश्वगुरू के पटल पर ले जाने के लिए अपने नेता, मुखिया का हाथ मजबूत कर पाएंगे। मैं आपसे निवेदन करता हूं कि जिस तरह संबलपुर, पुरी, उज्जैन कॉरीडोर का निर्माण हुआ है। आपने वहां पर देवियों के लिए कॉरीडोर का निर्माण किया है, परंतु मुझे ऐसा लगता है कि हमने अपनी मां की तो चिंता की है लेकिन अपने पिता की चिंता करके जगन्नाथ संस्कृति को बढ़ावा दें। क्योंकि विश्व में बिना बहन के यदि कोई सात मंदिर हैं तो वह जगन्नाथ संस्कृति की देन है। छत्तीसगढ़ में भाई-बहन के प्यार को बढ़ाने के लिए आप जगन्नाथ संस्कृति को बढ़ावा देंगे। इसी के साथ मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे बोलने का अवसर दिया।

अध्यक्ष महोदय :- श्रीमती शेषराज हरवंश।

श्रीमती शेषराज हरवंश (पामगढ़) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं बहुत देर से अपनी बारी का इंतजार कर रही थी। मैं पूरे प्रदेश के विषय पर तो नहीं जाना चाहूंगी क्योंकि कल से हमारे दोनों पक्ष के माननीय सदस्यों ने अपने-अपने विचार और बातें रखी हैं। मैं अपने विधान सभा क्षेत्र की बहुत ही महत्वपूर्ण और गंभीर बातें आपके समक्ष रखना चाहूंगी। जो मेरे विधान सभा क्षेत्र और जांजगीर-चांपा जिले के लिए बहुत गंभीर हैं। चूंकि मैं इस बजट के विरोध में बोलने के लिए खड़ी हुई हूं तो इस बजट में कहीं पर उनके लिए कोई प्रावधान नहीं किया गया है। मजदूरों के संरक्षण-संवर्धन और उनको काम देने का कोई प्रावधान नहीं किया गया है। पामगढ़ विधान सभा क्षेत्र एक ऐसा विधान सभा क्षेत्र है, जहां से भारी संख्या में मजदूर पलायन करते हैं और वहां पर पलायन एक बहुत बड़ी समस्या है क्योंकि मजदूर न तो शौख से पलायन करते हैं और न ही अपनी खुशी से पलायन करते हैं, बल्कि बहुत ही लाचारी, मजबूरी और बेबश होकर करते हैं। वह पलायन करके जिनके माध्यम से दूसरी जगह पर जाते हैं तो उनके और उनके परिवार के साथ वहां पर न जाने क्या-क्या होता है ? जब कभी वह वहां से खोज, ढूंढ कर हमको यानी अपने जनप्रतिनिधियों को फोन करते हैं कि हमें परेशानी हो रही है, हमें प्रताड़ित किया जा रहा है, हमारा शोषण किया जा रहा है, हमें वापस आना है तो उस समय हम इतने लाचार होते हैं कि उस समय हम उनके लिए कुछ नहीं कर पाने की स्थिति में रहते हैं क्योंकि न तो हमारे पास उनका कोई रिकॉर्ड होता है और हमने प्रशासन को भी उनका सुध लेते हुए कभी नहीं देखा है। यह एक बहुत ही गंभीर समस्या है। मैं माननीय वित्त मंत्री जी से आग्रह करूंगी कि श्रम विभाग से हमारे

पलायन करने वाले मजदूरों के लिए कुछ प्रावधान किया जाए। मेरे विधान सभा क्षेत्र में न तो उद्योग हैं, न फैक्ट्री हैं और न कारखाना हैं। वहां पर कुछ भी नहीं हैं, जिसकी वजह से वहां के लोगों को मजबूरन पलायन करना पड़ता है। मेरे विधान सभा क्षेत्र की अभी हाल ही की एक घटना है। एक हफ्ता पहले मेरे विधान सभा क्षेत्र के झूलन नामक एक गांव से एक परिवार ने पलायन किया था। उस परिवार के ढाई साल के बच्चे को कुछ शारीरिक परेशानी थी कि उसका शरीर फूलता जा रहा था, लेकिन वह परिवार जिनके माध्यम से वहां पर गया था, उन्होंने उनको छुट्टी ही नहीं दी। वह उनको आने नहीं दे रहे थे। अंततः जब उन्होंने हमसे संपर्क किया तो हमने कैसे भी करके उनको बुलवाया और बिलासपुर के एक निजी अस्पताल में भर्ती करवाया। हमें पता चला कि उस ढाई साल के बच्चे की किडनी में समस्या है जिसकी वजह से उसका शरीर फूलता जा रहा है। अभी पिछले 4 दिनों से वह बच्चा वहां पर भर्ती है और स्वास्थ्य लाभ ले रहा है। ऐसी बहुत सारी परेशानियां हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे क्षेत्र में जब स्कूलों ने वार्षिकोत्सव मनाया तो नयी विधायक बनने के उत्साह में सब लोगों ने मुझे अतिथि बनाया। मेरे विधान सभा क्षेत्र में एक दूसरी समस्या है। हम यह कह सकते हैं कि पूरे प्रदेश में शिक्षा का स्तर बहुत अच्छा है। जहां पर माननीय वित्त मंत्री जी ने शिक्षा के लिए बहुत सारे प्रावधान किये हैं क्योंकि वह स्वयं highly educated हैं। लेकिन बहुत सारे स्कूल ऐसे हैं, जहां पर शिक्षक नहीं हैं। स्कूल शिक्षकविहीन हैं। यह एक बहुत बड़ी समस्या है। बच्चे इस बात को हमारे सामने रखते हैं कि हमारे स्कूल में शिक्षक नहीं हैं। कहीं न कहीं स्कूल के संचालक भी इस बात को रखते हैं कि शिक्षक की कमी होने की वजह से हम बच्चों को बहुत ज्यादा संसाधन, सुविधा नहीं दे पा रहे हैं। एक शिक्षित और विकसित प्रदेश को बजट में शामिल किया गया है और उसका अवलोकन किया गया है तो जब तक हम स्कूलों में शिक्षकों की भर्ती नहीं कर पाएंगे, तब तक हम शिक्षित प्रदेश और विकसित प्रदेश को यहां पर कैसे लागू कर सकते हैं ?

माननीय अध्यक्ष महोदय, फलाई ऐश (राखड़) जांजगीर-चांपा जिला की एक बहुत बड़ी समस्या है। जिसके लिए मैंने कुछ समय पूर्व ध्यानाकर्षण भी लगाया था। मेरा समय आया था, लेकिन हमने बहिगर्मन किया था, इसलिए मैं उस विषय को आपके सामने नहीं लाई हूं। राखड़ पर्यावरण और स्वास्थ्य दोनों को देखते हुए एक बहुत बड़ी समस्या है । उसमें पानी से लेकर पर्यावरण और स्वास्थ्य, सब पर असर हो रहा है और उससे चलने वाले जो परिवहन है, जो उसको लेकर चलते हैं, उस परिवहन की इतनी मनमानी है कि वे बेकाबू होकर चलती हैं । आज सुबह की मेरे विधान सभा क्षेत्र की एक घटना है। राखड़ से भरे हुए केप्सूल ने एक कार को ठोकर मारी और चार साल का बच्चा उसमें घायल हो गया है । उसके लिए कोई अधिकृत नहीं होता । जब हम सम्पर्क करने की कोशिश करते हैं तो ड्राईवर किसी और एजेंसी का और गाड़ी किसी और की है, यह कहकर हमें टाल दिया जाता है । हम किसी भी ऐसे अधिकृत व्यक्ति से नहीं मिल पाते, बात नहीं कर पाते और हम त्वरित उसका निराकरण नहीं कर पाते और न ही

उन लोगों की ओर से ऐसा कोई प्रावधान नहीं है। उन्होंने उद्योग खोल लिया, उद्योगपतियों ने वहां से खूब मोटी रकम ले ली । उसमें प्रशासन कहीं न कहीं इंवाल्व रहता है । उनको बहुत ढील दिए रहते हैं । मैं इस ओर भी माननीय वित्त मंत्री जी का ध्यानाकर्षित करना चाहूंगी कि इस पर भी कड़ाई हो और इस पर भी लगाम कसी जाये, ताकि क्षेत्र की जनता सुरक्षित रह सकें । जमीनें तो जा रही हैं, बहुत ज्यादा बरबाद हो रही है, खेत बरबाद हो रहे हैं, लेकिन लोगों की जान कम से कम बची रहे, मैं इस सदन के माध्यम से इसकी गुजारिश करना चाहूंगी। मैं बहुत ज्यादा नहीं कहना चाहूंगी, सबने बहुत अच्छे विचार रखे ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, पलायन पर मैं फिर से जोर देना चाहूंगी, उसके लिए कुछ न कुछ निराकरण करिए । अध्यक्ष महोदय, आपने बोलने का समय दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री रामकुमार टोप्पो (सीतापुर) :- धन्यवाद अध्यक्ष महोदय । मैं पहली बार अपनी बात रखने के लिए खड़ा हुआ हूं और आपने बोलने का मौका दिया, बहुत बहुत धन्यवाद । साथ ही आपके माध्यम से मैं सीतापुर की जनता का बहुत-बहुत आभार व्यक्त करूंगा कि देश की आजादी के 75 साल बाद सीतापुर में पहली बार कमल खिलाकर हमें यहां चुनकर भेजा है । (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछले 8 दिनों से मैं लगातार देख रहा हूं कि हमारे विपक्ष के माननीय सदस्यगण कोई भी चर्चा में एक साथ खड़े होकर आपस में हल्ला करते हैं, कोई किसी की नहीं सुनता । इससे यह साफ देखने को मिलता है कि आज माननीय विष्णु देव साय जी की सरकार और माननीय वित्त मंत्री जी के इस दूरदर्शी बजट में छत्तीसगढ़ को नई ऊंचाईयों तक ले जाने के बजट को देखकर विपक्ष में एक घबराहट का प्रतीक है । इससे पता चलता है कि विपक्ष के लोग कितने घबराए हुए हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- आपने ठीक कहा । वे लोग आपस में ही एक दूसरे की बात नहीं सुन रहे हैं । वे सब धड़ाधड़, धड़ाधड़ इस्तीफा चल रहा है । अभी महाराष्ट्र में अशोक चौहान जी ने भी कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया है । इसमें से भी कई लोग जाने वाले हैं । ये लोग खुद आपस में एक नहीं है न । अंदर में सब गड़बड़ है । कोई किसी के नाम में भी वारनिस पोत रहा है, कोई किसी के नाम को मिटवा रहा है, कोई कुछ कर रहा है तो भगदड़ तो होगा ही भैया । क्या करोगे ?

श्री रामकुमार टोप्पो :- यह घबराहट का प्रतीक है । अध्यक्ष महोदय, कहते हैं कि लक्ष्यविहीन जीवन व्यर्थ होता है । उसी प्रकार किसी भी सरकार की लक्ष्य विहीन जो योजनाएं होती हैं, वह भी कभी सार्थक नहीं हो सकतीं, लेकिन हमारी सरकार ने और माननीय वित्त मंत्री जी के बजट ने जो आज एक लक्ष्य रखा, छत्तीसगढ़ को नई ऊंचाई देने के लिए छोटा लक्ष्य नहीं रखा है । यह लक्ष्य आज जीएसडीपी का जो पांच लाख करोड़ का जो अनुमानित बजट है, इसको आने वाले 2028 तक 10 लाख करोड़ तक ले जाने का लक्ष्य रखा गया है । मैं इसके लिए माननीय वित्त मंत्री जी को बहुत बहुत बधाई और धन्यवाद देना चाहूंगा । (मेजों की थपथपाहट) इस बजट में हमें जो सबसे अहम चीज लगती है, उसमें

कहा गया है कि सरगुजा और बस्तर की ओर देखो । पिछली सरकार ने भी इस बात को दूसरे पक्ष में कहा था कि सरगुजा की ओर देखो । 2018 के चुनाव में वहां एक हवाएं बहीं और उन हवाओं में यह था कि सरगुजा वासियों, कांग्रेस को वोट दीजिए क्योंकि इस बार सरगुजा से मुख्यमंत्री बनने वाले हैं । इस बात को देखते हुए वहां की जनता ने कांग्रेस को एकतरफा वोट देकर वहां विजय बनाकर यहां सदन तक भेजा था, लेकिन आने के बाद पता चलता है कि हमें मुख्यमंत्री नहीं मिला । आश्वासन में मिला - ढाई साल का सी.एम. । यह बड़े दुख का विषय है । ढाई साल का मौका मिला, लेकिन ढाई साल भी बीतते गया, शासन खतम हो गया, लेकिन ढाई साल की बात कभी पूरी नहीं हुई। जो उनके वादे थे, उसके प्रति वहां की जनता चिंतित रही । मैं भारतीय जनता पार्टी को धन्यवाद देना चाहूंगा कि आज सरगुजा संभाग को मुख्यमंत्री के रूप में तोहफा दिया गया है (मेजों की थपथपाहट) और वित्त मंत्री जी को भी धन्यवाद कहना चाहूंगा कि इस बजट में मुख्य रूप से बस्तर और सरगुजा की ओर देखने हेतु इंगित किया है, मैं इसके लिए बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, कहते है कि घर, हर किसी का सपना होता है। चाहे गरीब व्यक्ति हो, चाहे अमीर व्यक्ति हो, हर कोई सपना देखता है कि कम से कम मेरा खुद का एक घर हो। लेकिन पिछली सरकार ने इस घर निर्माण की प्रधानमंत्री आवास योजना का भी राजनीतिकरण करके कि कहीं श्रेय न मिल जाये, कहकर उसको रोकने का काम किया था। हम पिछले चुनाव में चुनाव प्रचार हेतु मैनपाट के एक गांव में गये थे। अध्यक्ष महोदय, यह विशवास करने योग्य बातें नहीं हैं। बिलकुल रोड के समीप बिना छत का एक मकान खड़ा था। उस घर में तीन सदस्य रहते थे, पति, पत्नि और एक तीन साल का बच्चा रहता था। कोई यकीन नहीं कर सकता कि बिना छत के मकान में कोई रहता है। जब हम उस मकान के करीब गये तो पता चलता है कि उसके घर में सम्पत्ति के नाम से सिर्फ एक बैग और उसकी पत्नि का 10 वीं पास का प्रमाण-पत्र था। मैंने उनकी दुदर्शा देखकर पूछा कि आप लोगों को घर बनाने के लिए पैसा नहीं आया तो उसने कहा, नहीं। हमारा मकान बनाने का आवेदन पास हुआ था, लेकिन पैसा कहां गया, पता नहीं चला। अध्यक्ष महोदय, सबसे बड़ी बात तो यह है कि उस घर के बगल में मोदी जी द्वारा चलाया गया स्वच्छ भारत मिशन के तहत बना शौचालय यथास्थिति में खड़ा था। यह विषय निश्चित ही उस ओर इशारा करता है कि सिर्फ राजनीति के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना को रोकने की वजह से एक परिवार पिछले 5 साल से एक पक्का घर के लिए तरशता रहा। लेकिन माननीय विष्णुदेव साय जी की सरकार को धन्यवाद कहूंगा, मैं बारंबार धन्यवाद ज्ञापित करूंगा कि उन्होंने सरकार बनाने के बाद पहला हस्ताक्षर करके उन गरीब परिवारों को घर दिया और उन लोगों का घर बनना शुरू हो गया है। मैं इसके लिए धन्यवाद ज्ञापित करूंगा। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय वित्तमंत्री जी को विशेष रूप से धन्यवाद ज्ञापित करूंगा कि उन्होंने मेरे विधानसभा क्षेत्र के बतौली और नर्मदापुर के लिए पोस्ट मैट्रिक आदिवासी बालक

छात्रावास दिया है। देवगढ़, मंगारी, बतौली, कमलेश्वरपुर और बौदा में प्री मैट्रिक आदिवासी बालक छात्रावास दिया है। मैं इसके लिए बहुत-बहुत आभार व्यक्त करूंगा, धन्यवाद दूंगा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आज से दो दिन पहले हमारी विपक्ष माननीय दीदी अनिला भेंडिया जी ने संबोधन में कहा था कि आदिवासी सैनिक और एक गरीब परिवार के लोग फौज में जाते हैं, गरीब परिवार के लोग ही पुलिस में जाते हैं। लेकिन मैं उस बात का खण्डन करते हुए कहता हूं कि सैनिक, कोई आदिवासी नहीं होता है और सैनिक, कोई गरीब नहीं होता है। (मेजों की थपथपाहट) केवल गरीब परिवार के लोग ही सेना में नहीं जाते हैं। इस बात का जीता-जागता उदाहरण है कि हमारे देश के वित्तमंत्री जी की बेटी आज वायुसेना में पदस्थ है। (मेजों की थपथपाहट) ना ही सैनिक का कोई जाति या धर्म होता है। उसका केवल एक ही धर्म होता है और वह राष्ट्र धर्म होता है और वह अपने इस राष्ट्र के लिए जीता है। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय, नक्सलवाद के विषय पर भारी चर्चा हो रही थी कि आज सरकार बने दो महीने हुए और नक्सली हमला कर रहे हैं, कैम्प पर हमला कर रहे हैं। लेकिन मैं बताना चाहूंगा कि सन् 1967 से नक्सलवाद का जड़ पनपा हुआ है और आज तक चल रहा है। यह इतिहास कि जब-जब सेना के जवानों ने उनके खिलाफ कार्रवाई करने के लिए कदम उठाया है, तब-तब उनका बौखलाहट सामने आया है और उल्टे-पुल्टे अटेकिंग करने जैसे कदम उठाये हैं। आज भारतीय जनता पार्टी की सरकार के कठोर कदम नक्सलवाद को खत्म करने के लिए उठाये हैं, हमारे पुलिस के जवानों के कठोर कदम ने उन्हें बौखलाहट होने के लिए मजबूर किया है और यह उसी का बौखलाहट है। लेकिन मैं आज इस सदन के माध्यम से कहना चाहूंगा कि बहुत जल्द ही इस नक्सलवाद का समापन होगा और भारतीय जनता पार्टी की सरकार ही समापन करेगी। (मेजों की थपथपाहट) अध्यक्ष महोदय, मैं आपको इस बात से अवगत कराना चाहूंगा कि हमारे विपक्ष में बैठे कांग्रेस साथी, देश के एक जिम्मेदार नेता ने कहा था कि इस देश के सैनिक को मरने के लिए पैसे दिये जाते हैं। यह जिम्मेदार सदस्य का कहना था। लेकिन मैं आज इस सदन के माध्यम से कहना चाहूंगा कि सैनिक कभी भी केवल पैसे के लिए नौकरी नहीं करता है। इस राष्ट्र के प्रति जुनून उसे गोली से टकराने के लिए मजबूर करता है। वह हमेशा सोचता है कि हमारे राष्ट्र के हर कम्युनिटी के लोग सुरक्षित रहें, सैनिक कभी पैसे के लिये मरने नहीं जाता है, यह बहुत निन्दनीय है । अध्यक्ष महोदय, आज इस बजट में देखिये, हमारे पुलिस के जवानो को आपरेशन में समस्या न हो, यह सोचकर रेडी टू ईट की व्यवस्था की गई है और सबसे सबसे बड़ी बात है यही है कि कहा जाता है- जो अंगारों में चला है, वहीं अंगारों की तकलीफ जानता है । अध्यक्ष महोदय, मैं वित्त मंत्री जी को धन्यवाद कहूंगा कि उन्होंने हमारे जवानों को स्पाईक से बचने के लिये जो बूट का प्रावधान किया है, उसके लिये धन्यवाद करना चाहूंगा । (मेजों की थपथपाहट) माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछली सरकार ने बिजली बिल हाफ की योजना चलाई थी, यह बिल्कुल सराहनीय योजना है, मैं इसकी तारीफ

करता हूँ, लेकिन इस योजना का यह दुष्परिणाम हुआ कि आज जब हम क्षेत्र में जनसंपर्क के लिये जाते हैं तो एक बुजुर्ग महिला बिजली बिल लेकर आती है और शायद उसके घर में शायद एक बत्ती जली होगी, लेकिन 40 हजार रूपये का बिजली बिल आता है । उनसे यह पूछा जाता है कि पहले बिल आया है कि नहीं आया है, उस पर जवाब आता है कि आज तक बिल नहीं आया है और जब आया तो 40 हजार रूपये का बिल है तो यह थी पूर्ववती सरकार की बिजली बिल हाफ योजना ? यह जनता को धोखा देने की योजना है । अध्यक्ष महोदय, मैं आज इस बात को भी कहना चाहूंगा कि इस बात का ध्यान रखा जाये कि जो इस तरह से बिजली बिल हाफ के शिकार हुये हैं, उन लोगों के साथ न्याय होना चाहिये । अध्यक्ष महोदय, मैं अंत में ....।

श्री रामकुमार यादव :- सहनाव, तोला सेल्यूट करथंव । देश के सेवा करके आये हव । कभु-कभु हमर प्रधानमंत्री जी ला देखथन, वहु हा वर्दी ला पहन के चल दे रहिथे ? मोला भोरहा हो जाथे कि सेना में तो नई रिहिसे ? आगे बोलव ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये ।

श्री रामकुमार टोप्पो :- अध्यक्ष महोदय, यह अतिश्योक्ति है कि सदन में एक ही नाम के दो व्यक्ति हैं, एक पक्ष में और एक विपक्ष में । आप बहुत बोलते हैं और हम बहुत शांत रहते हैं । अध्यक्ष महोदय, क्षेत्र की मांगों को आपके समक्ष रखना चाहूंगा । अभी 24 जनवरी 2024 को सीतापुर विधान सभा क्षेत्र में घटना होती है, एक अल्कोहल से भरी ट्रक रात को 1.30 बजे खंबे से टकरा जाती है और उसमें आग लग जाती है । सीतापुर में 75 सालों से राज करने वाली कांग्रेस और उनके नेता की चिंता देखिये, यह क्षेत्र पर्यटन से भरपूर है । यहां 50 किलोमीटर तक दमकल गाड़ियों की कोई व्यवस्था नहीं है, आज तक इसकी चिंता नहीं की गई । अध्यक्ष महोदय, मैं उस रात को अनुभव करता हूँ कि 1.30 बजे रात को जब गाड़ी में आग लगती है और दुकान के समीप धू-धू कर आग जलती है और हमारे पास फोन आता है, हम स्वयं वहां पर जाते हैं और समझिये की अतिश्योक्ति की बातें हैं कि उस दिन परेड में शामिल होने वाले 30-40 युवाजन उस दिन एक जगह पर सो रहे थे । हम वहां स्वयं गये, उनको जगाये और नगर पंचायत की गाड़ी लाकर युवाओं ने बाल्टी के पानी से आग बुझाने का काम किया और आग पर काबू पाया है । अध्यक्ष महोदय, मैं मांग रखता हूँ कि इस क्षेत्र में पर्यटन क्षेत्र का ध्यान रखते हुये, जल्द से जल्द दमकल गाड़ी की व्यवस्था बजट में करेंगे ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, धन्यवाद ।

श्री रामकुमार टोप्पो :- अध्यक्ष महोदय, इसके अलावा सीतापुर विधान सभा में पिछले पांच वर्षों से धूल से नहाता रहा है और जनता ने सीतापुर का नाम बदलकर धूलपुर रख दिया है । यह बहुत पीड़ा का विषय है । वहां से कैबिनेट के मंत्री धूल पर चलते रहे हैं, लेकिन इस पर कभी पहल नहीं किया । अध्यक्ष महोदय, मैं यह मांग करना चाहूंगा कि सीतापुर नगर को गौरव पथ योजना से जोड़कर उसे

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

धूलमुक्त किया जाये । अध्यक्ष महोदय, मैनपाट को छत्तीसगढ़ का शिमला का दर्जा प्राप्त है, वहां पर पर्यटन की अपार संभावनायें हैं, मैं चाहूंगा कि इस पर एक कमेटी गठित कर उसे पयर्टन के रूप में और अधिक विकसित करें । अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे मौका दिया, इसके लिये बहुत-बहुत धन्यवाद । जय हिन्द ।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद । श्रीमती अनिला भेंडिया जी ।

श्रीमती अनिला भेंडिया (डौंडी लोहारा) :- अध्यक्ष महोदय, मैं छत्तीसगढ़ के बजट भाषण के विरोध में बोलने के लिये खड़ी हुई हूं। मैं हमारे नौजवान और होशियार वित्त मंत्री जी को बधाई भी दूंगी क्योंकि उन्होंने अपना पहला बजट प्रस्तुत किया है। वे युवा हैं, तो हम लोगों ने सोचा था कि उनकी सोच युवाओं जैसी होनी चाहिए। उन्होंने ईशारा किया कि बस्तर से सरगुजा की तरफ देखिये। हम लोग बस्तर से सरगुजा की ओर देखते रहे और सोचे कि बजट में बीच के क्षेत्रों के लिये भी कुछ आ जायेगा परंतु हम लोगों को निराशा मिली कि आप सरगुजा से जशपुर, रायगढ़ होते हुए नारायणपुर पहुंच और मध्य छत्तीसगढ़ में आपकी नजर नहीं पड़ी। यह हम लोगों के लिये बहुत दु:ख की बात है। उसमें हमारा बालोद जिला भी आता है। हम बालोद जिले से कांग्रेस के तीन-तीन विधायक हैं। हम लोग भी देख रहे थे कि इसमें कम से कम दलगत राजनीति से उठकर हमारे बालोद जिला में भी एक नजर डालते तो इसमें हमको ज्यादा खुशी होती। हम लोगों को इस बात से थोड़ी-सी निराशा हुई। उसमें इनका एक आठवां स्तंभ, जो डी.डी.पी., विकेन्द्रीकृत विकास पॉकेट्स के बारे में था। विकेन्द्रीकरण कैसे होगा ? जब आपकी सोच संकीर्ण हो, आपकी सोच, जो आपका महत्वपूर्ण स्थान है, जिला है, वहीं तक केंद्रीत हो गयी है तो हम कैसे कहेंगे कि आप विकेन्द्रीकरण की नीति से काम करेंगे और पूरे छत्तीसगढ़ में..।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप ही से प्रेरणा मिली थी कि पूरा पैसा, पाटन, साजा, कवर्धा और दुर्ग ग्रामीण को मिलता था। सब सड़कें वहीं बनती थी। आपको विकेन्द्रीकरण की चिन्ता उस दिन करनी चाहिए थी। अब विकेन्द्रीकरण हो तो रहा है। आप क्यों टेंशन पाल रही हैं ?

श्रीमती अनिला भेंडिया :- अध्यक्ष महोदय, विकेन्द्रीकरण नहीं हुआ है, इसलिये हम उस बात को रख रहे हैं। देखिये, वह युवा वित्त मंत्री हैं और कम से कम जो उनके दिमाग में है न, हम उनको बोल रहे हैं। आप लोग वहीं के वहीं रहेंगे। आप आगे मत बढ़िये।

श्री अजय चन्द्राकर :- एक कनिक सुनिये तो। एक कनिक पाटन के रेस्ट हाऊस ला देख के आ जाओ। मे हो मान जाहूं अगर पूरा छत्तीसगढ़ में वैसने रेस्ट हाऊस पा जाबे तो।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- हां तो तिही गये रेहव ओ मन देखे ला। हमन नइ गय रहेन।

अध्यक्ष महोदय, मैं इसलिये हमारे वित्त मंत्री जी को बोलना चाह रही हूं क्योंकि वह होशियार भी हैं, युवा भी हैं। देखिये, हम लोग तो उन्हें आशीर्वाद ही देंगे क्योंकि वह हमारे बच्चे की उम्र के हैं।

श्री रामकुमार यादव :- वह तुंहर ले होशियार हे तेला ओ मन ला वित्त मंत्री बनाये हे। अउ तोला ओकर संरक्षक बनाये हे।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- अध्यक्ष महोदय, हम इसलिये उन्हें बोल रहे हैं कि आपकी जो बुद्धि है, उसको कम से कम विकसित कीजिये और पूरे छत्तीसगढ़ प्रदेश के बारे में, हर जिले के बारे में सोचिये। क्योंकि आज आप सरकार में है और आप हर जिले की जनता के मंत्री हैं, इसलिये मैं आपसे यही कहना चाहूंगी। आज यह बड़े भैया लोग केवल राजनीति की बात करते हैं। मैं इसलिये आपसे निवेदन करना चाह रही हूं। यदि आज हमारा छत्तीसगढ़ कृषि प्रधान प्रदेश कहलाता है। कृषि के क्षेत्र में वर्ष 2022-23 में राज्य के स्थिर भाव पर 5.93 प्रतिशत की दर से कृषि क्षेत्र अनुमानित था और अभी वर्ष 2023-24 में इनकी वृद्धि दर 3.23 प्रतिशत ही अनुमानित है।

श्री अजय चन्द्राकर :- अच्छा सुनिये। मुझे बहुत उत्सुकता हो रही है। मैं आज तक भाभी जी बोला हूं। अब कल आंटी बोलहूं, ठीक हे ?

श्रीमती अनिला भेंडिया :- ओकर बर आंटी हव, तोर बर नइ हव। (हंसी)

श्री अजय चन्द्राकर :- अच्छा। अऊ पुन्नूलाल मोहले हा पूछत हे, ओ का बोलही।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- ये बबा हे।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- मे हा नतनिन बोलहू ।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- अध्यक्ष महोदय, योजना क्रमांक - 8987, बीज गुणवत्ता प्रमाणीकरण प्रयोगशाला, आपने बजट में इसको जीरो कर दिया। क्या अब प्रदेश में हमारा बीज प्रमाणीकरण नहीं होगा ? आप बंद कर देंगे ? अगर इसमें बजट बढ़ाकर किसी जिला को नहीं देते तो कम से कम हमारे बालोद जिला में ही बीज प्रमाणीकरण प्रयोगशाला खोल देते क्योंकि छत्तीसगढ़ में हमारा बालोद जिला भी कृषि के क्षेत्र में अव्वल है। मेरे खयाल से धमतरी के बाद बालोद जिला है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- वहां दाल फ्राई वाले बीज मिलथे।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- नहीं, वह दाल फ्राई वाले बात नहीं चलथे, अभी यहां के बात चलथे। उसी तरह जैसे कृषि में पोषण बाड़ी विकास योजना है, आपने इसमें भी बजट कम कर दिया। क्योंकि यह ऐसी योजना थी, जिसमें चाहे छोटे-छोटे आंगनबाड़ी केंद्र हो और अपनी छोटी-छोटी संस्थाएं हों, जिसमें पेड़-पौधे लगाकर बच्चों के लिये पोषण आहार रूप में साग-भाजी उगाते थे, यह ऐसा कुछ प्रोजेक्ट था, आपने उसको भी बंद कर दिया। उसी तरह सहकारिता, पशु-पालन, जल संसाधन, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग, वन एवं जलवायु परिवर्तन, खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग, इन विभागों के लिये कृषि विभाग में जो बजट आता था, उस बजट को भी आपने कम कर दिया।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

समय :
6.00 बजे

माननीय अध्यक्ष महोदय, उसी तरह योजना क्रमांक 7422 औद्योगिक जल संरक्षण निर्माण में वर्ष 2022-23 में 9 लाख 59 हजार रूपये था। आज आपने वर्ष 2024-25 में 15 लाख रूपये कर दिया। आप औद्योगिक क्षेत्र को फायदा दिलाने का काम कर रहे हैं और पहले बाढ़ नियंत्रण योजना में 12 लाख 50 हजार रूपये था आपने उसे वर्ष 2023-24 में सरकार आते ही इस राशि को 6 लाख रूपये कर दिया। तो यह जनता के साथ अन्याय है। आप औद्योगिक क्षेत्र में पैसा बढ़ा रहे हैं और जब बाढ़ आपदा प्रबंधन में अधिक बारिश हो या बांध टूट गया तो हमारी जनता को बहुत परेशानियां होती हैं उसमें आपने राशि कम कर दी।

श्री अजय चन्द्राकर :- सुनना, आंटी।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- बताईये अंकल। (हंसी)

श्री अजय चन्द्राकर :- राजस्व आपदा मद से तें मूर्ति बनवास, तें बाढ़ आपदा नियंत्रण के तोला बात करे के अधिकार नइ हे।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- तोर सरकार के बजट में बात हे तेला करत हौं, ते चुप ना।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बाढ़ आपदा के पईसा से तें मूर्ति बनवाए हस। सुनत हस।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- तें तोर भाषण में बोल डरेस ना। अब मोला बोलन दें।

श्री अजय चन्द्राकर :- तें ए बता कि ओ पईसा से बाढ़ नियंत्रण करना रिहिस तोला। तें मूर्ति लगवाए के बजाए। सुने आंटी।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- हमर आदरणीय विष्णु देव साय हा सेटिंग कर डरे हे। ओमे ऊपर से लगते। अब बाढ़ आपदा नइ आए कहिके बजट ला कम कर दे हे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय वित्त मंत्री जी से कहना चाहूंगी कि अगर इसमें आप बजट को बढ़ाते तो ज्यादा अच्छा रहता। क्योंकि प्राकृतिक आपदा, बाढ़ आपदा है, कभी भी कुछ भी यह सब हो सकता है। उसी तरह से आपने महतारी वंदन योजना में 3000 करोड़ रूपये का बजट रखा है, परन्तु आपने कहा है कि इस योजना में 50 हजार महिलाओं को फायदा होगा। मेरी गणित अच्छी नहीं है, पर मैंने थोड़ा-बहुत आंकलन किया है। तो उस गणित के हिसाब से सिर्फ 25 हजार महिलाएं लाभांवित हो रही हैं। बाकी कम से कम हमारे छत्तीसगढ़ में तीन करोड़ में सवा करोड़ या डेढ़ करोड़ महिलाएं होंगी तो बाकी महिला बहनों को कैसे लाभांवित करेंगे? इसका मतलब है कि इस योजना में बाकी महिलाएं पात्र हो गई हैं तो इस तरह की योजनाओं को लाकर, हमारी बहनों को जो निराश करने की कोशिश कर रहे हैं, वह बहुत ही परेशानी की बात है। वैसे ही आपने हमारे शिक्षक संघ को भी निराश किया। उसी तरह से

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

आपने पुलिस वेलफेयर में बजट नहीं दिया। उसी तरह से आपने अधिकारी-कर्मचारी और पेंशनरों के लिए कोई बजट नहीं रखा। अभी मुख्यमंत्री जी के क्षेत्र जशपुर में हमारे रसोईयां संघ वालों ने इतना हल्ला किया, यहां तक की माननीय मुख्यमंत्री जी को भाषण देने नहीं दिया। तो आपने ऐसे लोगों के लिए बजट नहीं रखा। यहां पर दैनिक वेतनभोगी कर्मचारियों के नियमितिकरण पर कोई चर्चा नहीं हुई, न आपके बजट में कुछ उल्लेख है। जबकि आपने क्या कहा था कि हम लोगों के सत्ता में आने के 100 दिनों में ही कमेटी बनाकर, इस प्रकरण को निपटाने की घोषणा करेंगे, जिनमें नियमितिकरण के हमारे भाई, बहन बहुत खुश थे। इस सरकार के बजट को एक आशा भरी निगाह से देख रहे थे कि हमारे लिए तो इस बजट में हमारे युवा वित्त मंत्री जी कुछ करेंगे। तो यह आपकी घोषणाएं हैं

माननीय अध्यक्ष महोदय, उसी तरह से नल जल योजना की बात कर रहे हैं। नल जल योजना में भी हमारे बहुत से सदस्यों ने अपनी बातें रखीं। अब तो उसमें केन्द्र सरकार आपको बहुत जल्दी पैसा दे देगी तो इसमें कोई काम अधूरा छूटेगा ही नहीं। मेरे ही विधान सभा के विनगरी क्षेत्र में दल्ली राजहरा नगर पालिका एक ऐसी नगर पालिका है आपकी जो डॉ. रमन सिंह जी की सरकार थी, उस समय से अमृत मिशन योजना चल रही है। उसमें पैसे की कुछ कमी आ गई तो वहां काम रूक गया है। मैं आपसे निवेदन भी करना चाहूंगी कि उसमें राशि बढ़ा दें तो वह काम पूरा हो जाए। उसी तरह संस्कृति के बारे में हमारे अजय भईया, धर्मजीत भईया हमेशा मजाक उड़ाते हैं। क्योंकि छत्तीसगढ़ की संस्कृति हम सब की परम्पराएं, हर परम्परा में चाहे तीज हो, कोई त्यौहार हो, शादी-ब्याह हो, निंदाई-कोड़ाई हो, खासकर हमारे आदिवासी क्षेत्रों में हर जगह हम लोग अलग-अलग संस्कृति का गाना गाते हैं और राजिम कुम्भ में भी डूबकी लगाने का आपकी सरकार थी, तब भी आप लोग देश-विदेश से बाबा जी लोगों को बुलाकर साथ में डूबकी लगाये, वहां पर कूदे। आज हमारे पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी महादेव घाट में डूबकी लगा दिये तो उसमें आप लोग हंसी-मजाक कर रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- सच-सच एक बात बताबे, तहन बोलत रहा। भारी भूपेश बघेल-भूपेश बघेल कहत हस, तैं तो आकर गुट के रहिबे नई रहेस, तैं बाबा जी के गुट वाला हस।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- गुट रहे या नहीं रहे, पार्टी तो मेरी है न। कांग्रेस पार्टी मेरी है।

श्री अजय चन्द्राकर :- तोर सी.आर. गड़बड़ हो जाही, आंटी, समझे।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- अंकल, मैं आपको बता दूं कि मेरी सी.आर. से मेरे को चिंता नहीं है। मैं अपने दम पर अपने क्षेत्र में, अपने कार्यकर्ताओं के लिए काम करती हूं। (मेजों की थपथपाहट) मैं उनके साथ खड़ी रहती हूं। मैं किसी के भरोसे चुनाव नहीं लड़ती। मैं अपनी पार्टी के लिए, अपने लोगों के लिए यहां आई हूं और इसमें भी मैं विधान सभा में दो-ढाई हजार जनता के लिए आई हूं।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- उसको नहीं बोल रही हैं, राजिम मेला में नागा बाबा भी आते हैं।

श्री रामकुमार यादव :- लेकिन चन्द्राकर जी, तू कौन गुट के हा।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- आप लोग उसको थोड़ी हसेंगे, उसके लिए नहीं हंसेंगे। वह आपकी संस्कृति में है। हमारे पूर्व मुख्यमंत्री जी महादेव घाट में डूबकी लगा दिये तो आप लोग उनको बोल रहे हैं कि डूबकी लगाते रहो। यह क्या बात हुई? पहले भी हमर दादा, परदादा मन हा डूबकी लगायें, पुन्नी, मकर सक्रांति में डूबकी लगाने के लिये जायें, सब में जायें।

श्री अजय चन्द्राकर :- भंवरा भी खेंले।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- भंवरा भी खेले हैं। तैं नई खेले हस का ? हम सब खेले हन। हम छत्तीसगढ़ के संस्कृति ला जानथन।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, आपस में बात मत करिये। अब कृपया समाप्त करें।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह लोग विलोर देते हैं। (हंसी) वैसे हमारे स्कूल के बारे में भी बोल रहे हैं। हमारे बस्तर में कई ट्राइवल क्षेत्र हैं, हमारी सरकार ने वहां कई कॉलेज भी खोले, स्कूलों का उन्नयन भी किया गया। हमारे आदिवासी भाईयों की बहुत सी जमीनें भी वापिस की गई। राज्य में कई जिलो में लाइवलीहुड कॉलेज भी खोले हैं। प्रधानध्यापकों की भर्ती भी हुई है। B.Ed. कॉलेज भी खोले हैं। इसमें माननीय वित्त मंत्री जी से कहूंगी कि मेरे जिला में भी B.Ed. कॉलेज नहीं है। अगर आप मेरे जिले में B.Ed. कॉलेज खुलवा देंगे तो बड़ी मेहरबानी होगी। जैसे हमारे यहां कुछ स्कूल गुदूम और संबलपुर में हैं, उनके उन्नयन के लिए कई सालों से देख रहे हैं। उन स्कूलों का हायर सेकेण्डरी स्कूल में उन्नयन भी हो जाये। आदरणीय आपके ही समय से मोहर जलाशय का एक प्रकरण लंबित है। मेरे विधान सभा में आपकी सरकार के समय से प्रोजेक्ट चल रहा था, उसके बाद से अभी भी वह मोहर जलाशय का प्रकरण लंबित है। वह राजनांदगांव में है, परंतु प्रभावित मेरे जिले के लोग हैं। ऐसे में उनके व्यवस्थापन, मुआवजा के बहुत से प्रकरण लंबित हैं। अगर मोहर जलाशय को बहुत जल्दी पूर्ण करा दें और वहां के लोगों का व्यवस्थान करा देंगे तो बहुत मेहरबानी होगी।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इस बजट में हमारे युवा साथियों, महिलाओं, अधिकारी-कर्मचारियों, delivages के हमारे भाईयों-बहनों को निराश किये हैं। इसके लिए मैं इस बजट का विरोध करती हूं, पर एक और बात कहकर मैं अपनी बात समाप्त करूंगी। सत्य परेशान हो सकता है, अजय भैया सुन ना। सत्य परेशान हो सकता है, पराजित नहीं। हमारी पूर्व सरकार ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए पूरा मन से काम किया है। परंतु आप लोगों ने हर बिन्दु पर भ्रष्टाचार, भ्रष्टाचार करके लोगों तक संदेश पहुंचाने का काम कर रहे हैं। परंतु यह गलत है। जनता जान रही है कि कौन क्या काम कर रहा है, कौन क्या करेंगे। वह आने वाला समय बतायेगा। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने बोलने का समय दिया, उसके लिए मैं बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूं।

अध्यक्ष महोदय :- वित्त मंत्री, माननीय श्री ओ. पी. चौधरी जी। (मेजों की थपथपाहट)

वित्त मंत्री (श्री ओ. पी. चौधरी) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बजट चर्चा में पक्ष की ओर से और विपक्ष की ओर से दोनों तरफ से हमारे बहुत सारे सदस्यों ने भाग लिया है, उन्हें मैं सबसे पहले धन्यवाद देना चाहता हूं। आदरणीय अजय चन्द्राकर जी, आदरणीय दलेश्वर साहू जी, आदरणीय अनुज शर्मा जी, द्वारिकाधीश यादव जी, श्रीमती भावना बोहरा जी, श्रीमती संगीता सिन्हा जी, श्री रोहित साहू जी, श्री कुंवर सिंह निषाद जी, श्री पुन्नूलाल मोहले जी, आदरणीय धर्मजीत सिंह जी, श्री रामकुमार यादव जी, श्री विक्रम मण्डावी जी, श्री मोतीलाल साहू जी, श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह जी, श्री अटल श्रीवास्तव जी, श्री नीलकंठ टेकाम जी, श्रीमती चातुरी नंद जी, श्री पुरन्दर मिश्रा जी, श्रीमती शेषराज हरवंश जी, श्री रामकुमार टोप्पो जी और दीदी अनिला भेंडिया जी, मैं सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं कि इन सभी सदस्यों ने इस बजट चर्चा में भाग लिया है और अपने-अपने विचारों को रखा है।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, इस बजट का सबसे प्रमुख विषय है कि हमने एक सपना देखने की कोशिश की है, एक लक्ष्य निर्धारित करने की कोशिश की है, एक Goal सेट करने की कोशिश की है और उनको Reforms के आधार पर achieve करने का एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है। जब चर्चा होती है कि 05 लाख करोड़ रूपये की जी.डी.पी. को 10 लाख करोड़ रूपये तक पहुंचाना है तो मैं भी बताना चाहता हूं कि जब हमने यह चर्चा प्रारंभ की तो हम बहुत सारे Economist लोगों के साथ बैठें, बहुत सारे Bureaucrats के साथ बैठें, बहुत सारे राजनीतिक लोगों के साथ बैठें तो सबने कहा कि 8 साल कर दो, 9 साल कर दो, 7 साल कर दो, लेकिन मुझे लगता है कि आज जैसे नरेन्द्र मोदी जी देश के लिए बोल रहे हैं कि मेरे तीसरे कार्यकाल में भारत को तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापति कर दूंगा। बहुत सारे Economist बोल रहे हैं कि यह नहीं हो सकता, लेकिन हम जब तक लक्ष्य बड़ा नहीं रखेंगे, बड़ा करने के बारे में सोचेंगे नहीं, इसलिए हमने बड़ा लक्ष्य रखा है। (मेजों की थपथपाहट) कांग्रेस की सरकार जो 50 सालों तक चलती रही, वह उसी विचार के साथ चलती रही कि जितनी लंबी चादर हो, उतरा पैर पसारों। चादर ही छोटा था, पैर को जैसे-तैसे घुसाये रहे और देश को 50 साल तक वहीं का वहीं रख दिया। (शेम-शेम की आवाज) हम सोचते हैं कि जब तक पैर को चादर से बाहर नहीं निकालेंगे तब तक चादर को बड़ा करने के बारे में कैसे सोचेंगे। यह हमारा विचार है। (मेजों की थपथपाहट) अध्यक्ष महोदय, अभी सम्माननीय सदस्य आदरणीय राघवेन्द्र जी चर्चा कर रहे थे। वह बहुत अच्छी बात बोल रहे थे कि हमको पक्ष-विपक्ष की राजनीति से ऊपर उठकर काम करना चाहिए, विचार करना चाहिए। मैं एक उदाहरण देना चाहता हूं। भारत की अर्थव्यवस्था की यात्रा में 1991 का साल बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। निश्चित रूप से उस समय कांग्रेस की सरकार थी, फिर भी मैं कहना चाहूंगा कि उस समय के राजनीतिक नेतृत्व पी. वी. नरसिम्हा राव जी की मैं इस मंच पर, इस सदन पर तारीफ करना चाहूंगा कि उन्होंने देश के लिए New Economic Reforms को लागू किया।

श्री अजय चन्द्राकर :- चौधरी जी, आप पी. वी. नरसिम्हा राव जी की प्रशंसा कर रहे हैं, यह बहुत अच्छी बात है। पी. वी. नरसिम्हा राव जी, यह पार्टी वालों के प्रधानमंत्री थे। यह लोग उनकी लाश को मुख्यालय में घुसने नहीं दिए और उसको दफन करने के लिए जगह नहीं दिए। यह कांग्रेसी बैठे हैं।

श्री ओ. पी. चौधरी :- अध्यक्ष महोदय, मैं आदरणीय पी. वी. नरसिम्हन राव जी की तारीफ करना चाहूंगा। उन्होंने सामान्यत: जन सामान्य में जो New Economic Reforms लाए, उसका क्रेडिट ज्यादातर डॉ. मनमोहन सिंह जी को दिया जाता है, लेकिन आप सब सम्माननीय सदस्यों को याद होगा कि उस समय जो Reforms की policies आए थे, उसके 3 प्रमुख बिंदु L.P.G. थे। Liberalization, Privatization and Globalization। उदारीकरण, निजीकरण, वैश्विकरण। यह तीन बिंदु के साथ नरसिम्हा राव जी की सरकार यह Economic Reforms लाई थी। यह पूरे Reforms उस समय के जो Ministry of Industry and commerce था, उससे जुड़े हुए थे और प्रधानमंत्री के रूप में पी. वी. नरसिम्हा राव जी ने इस Industry and commerce department को अपने पास रखा हुआ था और उन्होंने पूरे Reforms का सूत्रपात किया था। कोई भी व्यक्ति कितना भी बड़ा जानकार हो सकता है, Economist हो सकता है, लेकिन इन सारे चीजों को लागू करने के लिए, Result तक पहुंचाने के लिए, Conclusion तक पहुंचाने के लिए यदि किसी चीज की जरूरत पड़ती है तो Political will की जरूरत पड़ती है। वह Political will पी. वी. नरसिम्हा राव जी ने उस समय देश को दिया था। (मेजों की थपथपाहट) माननीय अध्यक्ष महोदय, जब बड़े-बड़े ..।

श्री अटल श्रीवास्तव :- अध्यक्ष महोदय, मैं वित्त मंत्री जी को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं क्योंकि पिछले 10 सालों से हम लोग केन्द्र में बैठी हुई हमारी सरकार की बुराई सुन रहे थे, पर कम से कम आपने इस सदन में नरसिम्हा राव जी के सरकार की उनकी Economic Reforms की तारीफ की, इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं।

श्री अजय चंद्राकर :- मोदी जी को धन्यवाद दीजिये जिन्होंने भारत रत्न दिया है ।

श्री राघवेंद्र कुमार सिंह :- सोनिया जी ने दे दिया है, सोनिया जी ने आपकी सरकार को धन्यवाद दिया है ।

श्री रामकुमार यादव :- मोदी जी के बात करत हओ । आडवाणी जी के रथ ला खेद के उही प्रधानमंत्री बन गे । ओला टार दिस ।

श्री ओ.पी.चौधरी :- रामकुमार तें देखबे, हाथी से बच के रहिबे भई । हाथी ला धोखा देकर आए हस । धरमजयगढ़ तरफ मत आबे । ओकरे बर तें हा हाथी ला ठग दे हस । (हंसी) माननीय अध्यक्ष महोदय, यह जो Economic reforms हुए थे उस समय जब बड़े-बड़े निर्णय लिये जा रहे थे और रिजर्व बैंक के संबंध में, सोने के रिजर्व के संबंध में बहुत सारे स्टेप लिये जा रहे थे तब कांग्रेस के नेताओं ने पी.वी. नरसिम्हा राव जी को अचानक बोला कि हम इतने बड़े-बड़े निर्णय ले रहे हैं तो पहले एक सर्वदलीय बैठक बुला लेना चाहिए और उसके बाद यह निर्णय लेना चाहिए तो पी.वी. नरसिम्हा राव जी ने मुस्कुराते हुए

कहा था कि इसकी जरूरत नहीं है, मेरी अटल जी से फोन पर बात हो गयी है । (मेजों की थपथपाहट) विपक्ष का क्या दायित्व होता है, क्या सकारात्मक दायित्व होता है उसे अगर किसी से सीखने की जरूरत है तो भारतीय जनता पार्टी के अटल बिहारी बाजपेयी जैसे नेताओं से सीखने की जरूरत है । केवल टेलीफोनिक चर्चा के आधार पर उन्होंने वर्ष 1991 के new Economic reforms को सहमति दी थी और देश के हित के लिये पी.वी. नरसिम्हा राव जी की सरकार को आगे बढ़ने के लिये पूरी तरह से साथ दिया था । इतने बड़े-बड़े निर्णय लिये गये और अटल जी उन पूरे निर्णयों के साथ खड़े रहे । देश का आर्थिक reform हुआ और उससे हम आगे बढ़ पाये । लेकिन हमारे आदरणीय सदस्य राघवेन्द्र जी कह रहे थे कि हमारे मन में सहिष्णुता होनी चाहिए, उदारता होनी चाहिए । निश्चित रूप से होनी चाहिए और वही राजनीति देश और प्रदेश को आगे बढ़ा सकती है, ऐसा मैं भी मानता हूं लेकिन कांग्रेस की जो राजनीति रही है उसके संबंध में भी सदन को मैं अवगत कराना चाहूंगा कि जिस पी.वी. नरसिम्हा राव जी ने देश को आर्थिक reform दिया उनके डेड बॉडी को, उनके पार्थिव शरीर को कांग्रेस के कार्यालय में नहीं रखने दिया गया था । उनके पार्थिव शरीर को दिल्ली में जैसे गांधी परिवार के लिये बड़े-बड़े स्मारक बनते हैं वैसा कुछ नहीं बनने दिया गया । उनके पार्थिव शरीर को तुरंत आंध्रप्रदेश भेज दिया गया था । उनके बेटे गिड़गिड़ाते रहे लोकिन तत्कालीन सोनिया गांधी परिवार की सोनिया गांधी जी और इन लोगों ने उसे एक्सपेप्ट नहीं किया था । इस तरह की संकीर्ण मानसिकता के साथ विशेषकर आज की कांग्रेस इस नेरो माइंडसेट के साथ गांधी परिवार था ।

श्री धर्मजीत सिंह :- एक मिनट । वित्त मंत्री जी, उनकी डेड बॉडी भी पूरी नहीं जली थी । शाम को जब बताया गया कि उनकी डेड बॉडी पूरी नहीं जली है तो फिर लकड़ी-फाटा रखकर वहां आदमी भेजा गया तब उनकी डेड बॉडी जली । यह बुरा हाल था । हम रिकॉर्डेड बता रहे हैं ।

श्री ओ.पी.चौधरी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उन्हीं पी.वी. नरसिम्हा राव जी को राजनीति की संकीर्ण सीमाओं से ऊपर उठकर, पार्टीगत संकीर्ण सीमाओं से उठकर आदरणीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस वर्ष भारत रत्न का ऐलान किया है । मैं इस सदन के माध्यम से, आपके माध्यम से आदरणीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी को बहुत-बहुत धन्यवाद ज्ञापित करना चाहता हूं कि पार्टीगत संकीर्णता से ऊपर उठकर उन्होंने पी.वी. नरसिम्हा राव जी को भारत रत्न प्रदान करने का काम किया है ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, बस्तर पर बहुत सी चर्चाएं हुईं । हमने हमारी स्ट्रेटजी के जो टेन पिलर्स डिसाईड किये हैं उसमें Focus on Bastar Surguja लिखा हुआ है और हमारा पूरा फोकस है कि हम बस्तर-सरगुजा को फोकस करने के लिये समर्पित हैं । जो बस्तर की बात है, आजादी के बाद दशकों तक बस्तर को बुरी तरह से इग्नोर किया गया । बस्तर के लिये विकास की क्या रणनीति होनी चाहिए, उसको लेकर उस समय की दिल्ली की कांग्रेस की राजनीतिक सोच, उनकी विकास संबंधी सोच काफी ज्यादा कन्फ्यूज रही ।

श्री विक्रम मण्डावी :- माननीय मंत्री जी, क्या बस्तर में पिछले 15 साल में या उससे पहले विकास नहीं हुआ था ? क्या बिल्कुल नहीं हुआ था, बस्तर में कुछ भी नहीं था ?

श्री ओ.पी.चौधरी :- विक्रम जी, मैं पूरा बता रहा हूं । आपकी बारी आयेगी तो जरूर बोलियेगा । माननीय अध्यक्ष महोदय, उस क्षेत्र को बाकी सभ्यताओं से कैसे जोड़ा जाये इसके संबंध में न तो कोई अध्ययन किया गया, न कभी सोचा गया । उस क्षेत्र के संबंध में कहीं न कहीं Cultural protection के नाम पर, सांस्कृतिक संरक्षण के नाम पर उस क्षेत्र को एक तरह से बंद करके रखा गया यही कांग्रेस की सोच थी और उसके कारण बस्तर का विकास रूका । वर्ष 1960 के दशक में दुर्भाग्य के साथ कहना पड़ता है कि एक कलेक्टर ऐसे थे जिन्होंने माढ़ क्षेत्र में सड़कों के काम को पूरी तरह से रोक दिया । उन्होंने बस्तर में सड़कों के काम को रोकवा दिया और इस तरह से Cultural protection के नाम की उस क्षेत्र में मलेरिया से, हैजा से हजारों लोग मरते रहे और उसको कहीं न कहीं कल्चरल प्रोटेक्शन के नाम पर अलाउ किया गया। अध्यक्ष महोदय, बस्तर में इस तरह की स्थिति बनी रही, बनी रही, बनी रही और उसी कारण से वर्ष 1970 और 80 के दशक में कहीं न कहीं माओवाद का पदार्पण इसी कारण से हुआ। कोई ऐसा कारण बस्तर में नहीं दिखता जिससे वहां पर insurgency आये। हम insurgency के कारणों को जब राष्ट्रीय स्तर पर, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देखते हैं तो जो कारण होते हैं, वे बस्तर में नहीं हैं। अध्यक्ष महोदय, नक्सलवाद सबसे पहले पश्चिम बंगाल में आया।

श्री बघेल लखेश्वर :- एक मिनट। आप बहुत ज्यादा बोल रहे हैं। 80 के दशक में हो, चाहे 70 के दशक में हो, हम लोग बस में जाते थे। जगरगुंडा से लेकर बीजापुर निकलते थे, लेकिन इन 15 सालों में वहां पर हवाई जहाज का जाना भी मुश्किल हो गया। उसको भी बता दीजिएगा।

श्री ओ.पी. चौधरी :- मालूम है। बिल्कुल, बताउंगा। लखेश्वर जी, आप तो इधर के लायक हैं।

श्री बघेल लखेश्वर :- तो इतना ज्यादा नहीं बोलिएगा।

श्री रामविचार नेताम :- लखेश्वर जी, आपका इधर स्वागत है।

श्री अजय चन्द्राकर :- लखेश्वर जी, जब नक्सलवाद बस्तर में आया तो सरकार किसकी थी और नक्सलवाद आया क्यों? सरकार किसकी थी? आप यह बताइए पहली नक्सल घटना जब घटी तो मध्यप्रदेश का मुख्यमंत्री कौन था? लाने वाले आप, शोषण करने वाले आप, दूर करने वाले ये लोग, समझे। उसके बाद की हालात को मत बताओ।

श्री बघेल लखेश्वर :- नक्सलवाद को खत्म करने के लिए पहल कांग्रेस की सरकार ने की थी। पश्चिम बंगाल में किसने खत्म किया? कांग्रेस सरकार ने किया।

श्री अजय चन्द्राकर :- नक्सलवाद को बस्तर में किसने लाया? मैंने यह पूछा। (व्यवधान)

श्री बघेल लखेश्वर :- आतंकवाद को किसने पंजाब में खत्म किया। कांग्रेस ने किया।

श्री अजय चन्द्राकर :- बस्तर में नक्सलवाद को लाया कौन? आपने नक्सलवाद लाया। अर्जुन सिंह जी लाये दिग्विजय सिंह जी लाये। यही लोग नक्सलवाद को लाये।

श्री बघेल लखेश्वर :- आयी, लेकिन बढ़ावा किसकी सरकार के समय में मिला, यह तो बताओ। (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- चौधरी साहब। (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- नक्सलवाद को लाने वाली पार्टी कांग्रेस पार्टी है।

श्री विक्रम मंडावी :- 15 साल में आप लोगों ने समाप्त क्यों नहीं किया? (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- बीजापुर में नक्सवाद किसने लाया? (व्यवधान)

श्री नीलकंठ नेताम :- आजादी के तुरंत बाद कांग्रेस की सरकार ने नक्सलियों के लिए वहां पर सड़के बना दीं, उन्हें रोजगार दे दिया। कांग्रेस ने जान-बूझकर नक्सलाइटों को वहां आने का रास्ता दिया। केवल और केवल यह कांग्रेस की वजह से वहां पर नक्सलाइट आया है। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- शांत रहिए। (व्यवधान)

सुश्री लता उसेंडी :- कांग्रेस के शासन में नेशनल हाइवे तक में नहीं जा पाते थे। नेशनल हाइवे में नक्सली दुर्घटनाएं होती थीं। (व्यवधान)

श्री अटल श्रीवास्तव :- 15 साल में पैसा कमाने का साधन बना लिये थे। (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- ये देश आजाद नहीं होये रहतिस तो ये चौधरी साहब कलेक्टर कहां से बनतिस। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग बैठिए। मंत्री जी।

श्री बघेल लखेश्वर :- नीलकंठ जी, आप कांग्रेस के समय में ही स्कूल में पढ़े हो, कांग्रेस ने आपको आई.ए.एस. बनाया है। डिप्टी कलेक्टर बनाया है और क्या बनायेगा? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग आपस में बात मत करिए। (व्यवधान)

श्री आशाराम नेताम :- आपके समय भोपाल के विधान सभा में जाकर उस समय के जनप्रतिनिधि पार्टी बनाकर आते थे। (व्यवधान)

श्री चैतराम अटामी :- प्रधानमंत्री सड़क योजना आज अंतिम छोर तक पहुंचा है। उस समय नहीं पहुंचा था। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, विषय आ गया। सब बातें आ गई।

श्री अजय चन्द्राकर :- नगरनार कब शुरू हुआ? आप यह बताइए। नगरनार कब शुरू हुआ? कौन प्रधानमंत्री था, आप यह बताओ।

श्री विक्रम मंडावी :- बेच कौन रहा है, आप यह बता दीजिए।

अध्यक्ष महोदय :- अजय जी। अजय जी।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बघेल लखेश्वर :- अजय भैया, सुन लीजिए। अगर जोगी जी की इच्छाशक्ति नहीं होती न तो नगरनार स्टील प्लांट नहीं बनता। समझ गये। (मेजों की थपथपाहट) जोगी जी के कारण बना। समझ गये न।

श्री अजय चन्द्राकर :- बनाने वाले हम।

श्री बघेल लखेश्वर :- बनाने वाले ठीक। लेकिन उनकी इच्छाशक्ति थी कि आप बनायें कहां लोहंडीगुड़ा में, बेलर में टाटा स्टील प्लांट। क्या हाल हुआ, आप उसको भी बता दीजिएगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- उसको तो जमीन वापस करके श्रेय ले रहे हो न। जमीन वापस करके श्रेय ले रहे हो न? कभी टाटा के नाम में जमीन चढ़ी? चढ़ी थी क्या बताओ? कि सी.एस.आई.डी.सी. के पास जमीन थी? फिर टाटा कहां से आ गया? टाटा को तो जमीन ही नहीं मिली।

श्री विक्रम मंडावी :- फिर टाटा से जमीन क्यों लिये भैया।

श्री अजय चन्द्राकर :- टाटा को तो जमीन ही नहीं मिली।

श्री विक्रम मंडावी :- टाटा से जमीन क्यों लिये?

श्री अटल श्रीवास्तव :- बैलाडीला किसने लाया? बैलाडीला को लाया तो कांग्रेस ने लाया। रेल लाइन बिछाने का काम कौन किया?

अध्यक्ष महोदय :- अजय जी, आपस में बात नहीं करेंगे। बहुत हो गया। चलिए ओ.पी. जी। चलिए, अब शांत रहिए।

श्री बघेल लखेश्वर बघेल :- ये आग लगाते हैं।

श्री ओ.पी. चौधरी :- अध्यक्ष महोदय, हम बस्तर की बात कर रहे थे। वहां insurgency का मुझे कोई कारण नहीं दिखाई देता है। जो दूसरे जगहों से हम तुलना करते हैं। पश्चिम बंगाल में नक्सलवाद आया। वहां जमीन का समान वितरण बहुत बड़ा कारण था, लेकिन बस्तर में हमारे सभी भाई-बहनों के पास पर्याप्त जमीन है, वह बस्तर के लिए कोई कारण नहीं हो सकता। बिहार में जब हम नक्सलवाद की बात करते हैं तो जातिगत विभेद, जाति के आधार पर जो शोषण है, वह बहुत बड़े कारण के रूप में स्कॉलर्स इसे प्रतिपादित करते हैं। बस्तर के हमारे सामाजिक सामंजस्य की संस्कृति में जाति-पाति का कोई स्थान नहीं है, आदिवासी समाज की हमारी उदात्त संस्कृति में । देश से अलग होने की भावना या किसी प्रकार का विद्रोह, इस तरह की भावनाओं को पनपाया जाता है, जम्मू कश्मीर में या नॉर्थ ईस्ट में, वह भी कारण बस्तर में नहीं है । लेकिन आखिर बस्तर में इन्सर्जेन्सी आई तो आई कैसे ? इसको समझना पड़ेगा और कहीं न कहीं जिम्मेदारी लेनी पड़ेगी, इसके पीछे की मूल कारण को समझेंगे तभी हम उसका समाधान कर पाएंगे और उसे स्वीकार करने में किसी भी पार्टी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए । गलतियां हो जाती हैं, उसे स्वीकार करना चाहिए । अध्यक्ष महोदय, इस तरह के हालात यहां पर थे, 50 सालों में बहुत महत्वपूर्ण तथ्य में आपके सामने इस सदन में रखना चाह रहा हूं कि 1998 तक पूरा

बस्तर लगभग 40 हजार स्क्वेयर किलोमीटर का क्षेत्र एक ही जिला हुआ करता था, जो कि केरल राज्य से भी बड़ा था, बस्तर का सिंगल जिला केरल राज्य से बड़ा था । दिल्ली के क्षेत्रफल से तुलना करूं तो दिल्ली के क्षेत्रफल से 1998 तक बस्तर के एक जिले का क्षेत्रफल वह 30 गुना बड़ा था । इसके लिए हमें कहीं न कहीं सोचना पड़ेगा कि ऐसा हुआ क्यों ? इस तरह के हालात थे, इस तरह की स्थिति थी, उसके कारण से चीजें बिगड़ती चली गईं। इसमें पार्टीगत् बात नहीं करना चाहता लेकिन मूल कारण को तो समझना पड़ेगा। मैं एक उदाहरण और देना चाहता हूं । जैसे हम बस्तर जाते हैं, कांकेर पहुंचे, केशकाल पहुंचे, कोंडागांव पहुंचे, जगदलपुर पहुंचे, केशलूर पहुंचे, गीदम पहुंचे, भैरमगढ़ पहुंचे, बीजापुर पहुंचे फिर आगे बढ़ते हैं भोपालपट्टनम, भोपालपट्टनम से आगे जाकर नेशनल हाईवे, राष्ट्रीय राजमार्ग जाकर इंद्रावती नदी में आजादी के 60 सालों तक खत्म हो जाता था । इंद्रावती में नेशनल हाईवे खत्म हो जाता था । जैसे कोई राष्ट्र खत्म हो गया हो, इस तरह से वहां खत्म हो जाता था । वहां से उस प्वाइंट का नाम है तिमेड़ । तिमेड़ में यदि आजादी के 50, 60 सालों तक एक पुल बना दिया जाता तो पूरे बस्तर की अर्थव्यवस्था, पूरे बस्तर का जीवन नागपुर और हैदराबाद से सीधा जुड़ गया होता और आज जो बस्तर की हालत है, वह नहीं होती । इसके लिए हमें कहीं न कहीं सोचना पड़ेगा । उस तिमेड़ के ब्रिज को बनाने का काम किसी ने किया तो भारतीय जनता पार्टी ने किया (मेजो की थपथपाहट) ।

श्री विक्रम मंडावी :- माननीय मंत्री जी, तिमेड़ की जो पुलिया बनी वह किसके शासनकाल में बनी । उस समय डॉ. मनमोहन सिंह केन्द्रीय मंत्री थे और डॉ. रमन सिंह छत्तीसगढ़ में मंत्री थे । उस समय केन्द्र शासन से स्वीकृत मिली हुई पुलिया है, जो कि महाराष्ट्र सरकार ने बनाया है ।

श्री ओ.पी.चौधरी :- चलिए, अध्यक्ष महोदय छोड़िए । माननीय सदस्य केवल इतना बता दें कि 60 साल तक तिमेड़ में ब्रिज क्यों नहीं बना ? इसका जवाब तो देना पड़ेगा ।

श्री विक्रम मंडावी :- ठीक है, 60 साल नहीं बना लेकिन अभी तो बना ना ।

श्री ओ.पी.चौधरी :- एक ब्रिज नही बना सके उसका तो जवाब देना पड़ेगा ।

अध्यक्ष महोदय :- चालिए, प्रश्न उत्तर की जरूरत नहीं है, आप कंटीन्यू करिये।

श्री ओ.पी.चौधरी :- अध्यक्ष महोदय, बस्तर में इस तरह के हालात रहे और बस्तर को हमने पूरी तरह से फोकस किया है । आपको मैं विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहता हूं कि आपके मुख्यमंत्री रहते हुए और उस समय हम लोग प्रशासन में थे और मुझे आज भी याद आता है ऐसा कोई दो महीना नहीं जाता था जब आप बस्तर का विजिट नहीं करते थे । उस कारण बस्तर को नई ऊंचाई में ले जाने में बहुत बड़े बड़े काम हुए (मेजो की थपथपाहट) । राजनीतिक कारणों से, पार्टीगत कारणों से कोई स्वीकार करे या न करे । अध्यक्ष महोदय, इतने बड़े बड़े काम हुए, लाईवलीहुड कॉलेज का मॉडल वहां से निकलकर आया । एज्युकेशन सिटी जैसे प्रोजेक्ट हुए । जिसको एक अमेरिकन रेटिंग एजेंसी केपीएमजी ने दुनिया के सर्वश्रेष्ठ 100 प्रोजेक्ट की सूची में उसको शामिल किया । आदरणीय मनमोहन सिंह जी की

सरकार ने कांग्रेस की तत्कालीन सरकार ने, यहां भारतीय जनता पार्टी की सरकार थी लेकिन शैक्षणिक नवाचार के लिए उस समय आपकी सरकार के कामों को, प्रशासन को प्रधानमंत्री एक्सीलेंसी अवार्ड से सम्मानित किया । अध्यक्ष महोदय, बस्तर में बहुत कुछ हुआ । अभी हमारा फिर से पूरा फोकस है कि बस्तर में बहुत कुछ हो इसीलिए हमने बहुत महत्पूर्ण पिलर के रूप में फोकस ऑन बस्तर सरगुजा बिंदु रखा है । अध्यक्ष महोदय, मैं केवल दो उदाहरण देना चाहता हूं बाकी डिटेल हमारे सम्मानित सदस्य बजट में देख सकते हैं । जो सरगुजा है, उसके लिए इरीगेशन प्रोजेक्ट में कुल 6400 करोड़ का प्रावधान किया गया है (मेजो की थपथपाहट) । इस तरह की सोच रखी गई है । इसी तरह से बस्तर के लिए 2208 करोड़ का प्रावधान किया गया है । जब हम देखते हैं सड़क, पुल पलिया के लिए बस्तर में 1421 करोड़ के कार्यों का प्रावधान किया गया है और सरगुजा में 2253 करोड़ रूपए के कार्यों का प्रावधान इस बजट में किया गया है। इतना अधिक फोकस बस्तर और सरगुजा को प्रदान किया गया है। (मेजों की थपथपाहट) अभी कई सम्माननीय सदस्य बोल रहे थे कि अलग-अलग क्षेत्रों पर विकेन्द्रीयकृत नीति कैसे है ? एक ही क्षेत्र को कैसे ध्यान दिया जा रहा है। अध्यक्ष महोदय, हमने जो डी.डी.पी. (Decentralised development pocket) का एक कॉन्सेप्ट लाया है, जो हमारे पिलर का एक महत्वपूर्ण पिलर है, उसमें हम छत्तीसगढ़ के किसी भी क्षेत्र को और किसी भी क्षेत्र की विशेषता को, किसी भी क्षेत्र की संभावना को बिल्कुल छोड़ने वाले नहीं हैं। जहां जो बेस्ट चीज हो सकता है, उसको आगे बढ़ाने के लिए हमारी सरकार आदरणीय विष्णु देव साय जी के नेतृत्व में पूर्णतः समर्पित है। अगर रायपुर है, रायपुर की जो संभावना है, दुर्ग, भिलाई, राजनांदगांव की जो संभावना है, बिलासपुर की जो संभावना है, मैदानी क्षेत्र के जो कृषि क्षेत्र हैं, उस पर किसानों के लिए जो करना है, उसके लिए हमारी सरकार पूर्णतः प्रतिबद्ध है। एक ओर बस्तर में जहां गोंडी भाषा को प्रमोट करने के लिए हमारी सरकार माननीय विष्णु देव साय जी के नेतृत्व में पूर्णतः प्रतिबद्ध है, वहीं नया रायपुर में रायपुर में भिलाई में आई.टी. सेक्टर को भी लाने के लिए पूर्णतः प्रतिबद्ध है। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय, अभी हमारे एक सदस्य गोंडी में बोलकर सुनाए और हम सब लोग आवाक होकर देख रहे थे। हमें कल्पना करनी चाहिए कि आखिर 60 साल तक बस्तर के बच्चों को हम वही अल्फाबेट सीखाते रहे, अ का अनार, अ का आम, जो पूरा जीवन जंगल में बिताते हैं, उनको हम ग का गमला पढ़ाते रहे, जिनका पूरा जीवन झरने के पानी से चलता है, उनको न का नल सीखाते रहे, इससे बड़ा अत्याचार शिक्षा व्यवस्था में और भाषा के नाम पर क्या हो सकता है ? (शेम-शेम की आवाज) अध्यक्ष महोदय, जब हम लोग वहां पर प्रशासन में थे तो वहां के स्थानीय बच्चों की मनावैज्ञानिक स्थिति को समझने का प्रयास किया और आपके मुख्य मंत्रित्व काल में हम लोगों ने नया अल्फाबेट क्रियेट किया अ का अर, अर मतलब रास्ता, अ का आग, आग मतलब पत्ता, इ का इत्ता, इत्ता मतलब ईमली, ई का ईरू, ईरू मतलब महुआ, इस तरह का अल्फाबेट बना। (मेजों की थपथपाहट) आज उसी गोंडी भाषा के

लिए हम साफ्टवेयर बनाने जा रहे हैं ताकि जो कोई गोंडी नहीं जानता, उसके साथ भी हम आसानी से जीवन और कम्यूनिकेशन को स्टेबलिस कर सकें। यह हमारी विष्णुदेव सरकार का बस्तर के प्रति कमिटमेंट है।

श्री लखेश्वर बघेल :- मंत्री जी, हमारे बस्तर में कई बोलियां हैं, हल्दी, भथरा, धुरवा, माड़िया है, इसके लिए क्या कॉन्सेप्ट है।

श्री ओ.पी.चौधरी :- अध्यक्ष महोदय, निश्चित रूप से सभी भाषाओं की विविधता के प्रति, भाषाओं के लिए हमारा पूरा समर्पण है। चाहे वह हल्बी हो, चाहे भथरा हो, उन सबके लिए भी क्रमिक रूप से काम करने के लिए विष्णुदेव साय जी की सरकार पूर्णत: प्रतिबद्ध है। गोंडी से एक बड़ी शुरूआत हुई है और यह बहुत आगे तक जाएगी और उस क्षेत्र के बच्चों के शिक्षा व्यवस्था की मानसिकता को समझते हुए, हम अच्छे तरीके से काम करेंगे, यह हमारी सरकार की प्रतिबद्धता है।

अध्यक्ष महोदय, अभी एक विषय आया था, माननीय सदस्य राघवेन्द्र जी ने बहुत महत्वपूर्ण विषय उठाया था कि इतने बड़े लक्ष्य कैसे प्राप्त होंगे। मैंने उस पर बोला कि हमारे लक्ष्य निश्चित रूप से महत्वाकांक्षी है और हम क्लिीनिंग का काम करेंगे, सफाई का काम करेंगे, आदरणीय विष्णुदेव साय जी की सरकार की नीयत बहुत स्पष्ट है और उस नीयत के अनुरूप हम लोग काम करते हुए निश्चित रूप से टैक्स जनरेशन में सभी चीजों में बड़ी सफलताओं को अर्जित करेंगे।

अध्यक्ष महोदय, अभी सदन में बात आई थी कि मगरमच्छ को पकड़ लें, मगरमच्छ को भी पकड़ने का तरीका है, बड़ी मछली को भी पकड़ने का तरीका है और कहा जा रहा था कि चिंगरी को भी पकड़ने का तरीका है। अध्यक्ष महोदय, हम सभी जगह टेक्नोलॉजी को इन्वाल्व करेंगे, पूरी तरह से लगायेंगे और रिफार्म ला करके क्लीनलीनेस ला करके, टैक्स रिफार्म करके सारी चीजों को करेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- आप शाकाहारी हैं, ये सब कैसे करेंगे ? (हंसी)

श्री ओ.पी.चौधरी :- अध्यक्ष महोदय, चिंगरी को तो छूने की जरूरत ही नहीं है। अर्थव्यवस्था में चिंगरी को छोड़ ही देना चाहिए। मगरमच्छ और बड़ी मछली को पकड़ा जाए, उसी से हमारी अर्थव्यवस्था में गरीबों का कल्याण हो सकता है।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- चौधरी साहब, चिंगरी में जो स्वाद है, ओ बड़े में नई हे, मे बता देथव, मोला पूछ।

श्री ओ.पी. चौधरी :- मैं शाकाहारी जरूर हो, पर टेबल पार्टनर बने में मोला कोई दिक्कत नहीं हे। मैं खिलाए बर जरूर तैयार हो। (हंसी)

माननीय अध्यक्ष महोदय, हम इसमें पूरी तरह से प्रतिबद्ध हैं कि हमारे Technology based reforms में बड़ा परिवर्तन आएगा। निश्चित रूप से base खराब और छोटा है इसलिए हम बड़े percentage growth का target लेकर चल रहे हैं क्योंकि base काफी खराब है। कई जगहों पर जो खराबी

है, जो dirtiness है, वह साफ तौर पर दिखता है। मैं उम्मीद करता हूं कि यह अच्छी तरीके से होगा। चाहे State G.S.T. हो, चाहे Excise हो, चाहे Mining हो, सभी जगह System में बहुत सारे Bad Governance के practises रहें। उनके कारण से दिक्कतें हुई हैं। base खराब है इसलिए हम बड़ा jump लगाने का target लेकर चल रहे हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, P.S.C. पर एक बात आई कि पुराने समय में भी बहुत सारे घपले, घोटाले हुए तो फिर आप हम लोगों को ही क्यों बोलते हैं ? सदन में इस तरह की बात आई। P.S.C. के संबंध में मैं यही बात कहना चाहूंगा कि पहले वर्ष 2005, 2008 और 2013 में कई विषय आये थे। लेकिन मैं उसमें तत्कालीन सरकार के commitment की निश्चित रूप से सराहना करना चाहूंगा कि विषय में तो कभी भी गड़बड़ी हो सकती है लेकिन उसके लिए पूर्णत: राजनीतिक इच्छाशक्ति का होना जरूरी है। जब गड़बड़ी हुई तो उस सरकार की सरकार ने समय पूर्ण होने से पहले P.S.C. के अध्यक्ष को केबिनेट में प्रस्ताव लाकर उसके कार्यकाल समाप्ति से पहले हटाने का काम किया था, जबकि पिछली सरकार उन्हें प्रोटेक्ट करने का काम कर रही थी। यह महत्वपूर्ण बात है। यह भारतीय जनता पार्टी का political commitment ही था कि बाद में प्रदीप जोशी जैसे व्यक्तित्व को P.S.C. का अध्यक्ष बनाया गया और उन्होंने C.G. P.S.C. में इतने अच्छे reforms किये कि बीच के 5 सालों में पूरे देश में छत्तीसगढ़ की P.S.C. के best practises का उदाहरण दिया जाता था और कैसे उसमें सुधार लाना चाहिए, इसके लिए study कराई जाती थी। उन्हीं प्रदीप जोशी जी को नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ने बाद में U.P.S.C. का member बनाया और उसके बाद U.P.S.C. के अध्यक्ष भी रहें। इस तरह के व्यक्ति को हमारी पिछली सरकार ने P.S.C. का चेयरमेन बनाकर रखा था।

माननीय अध्यक्ष महोदय, रेडी टू ईट की बात है तो यह एक बहुत बड़ा विषय है। पिछली कांग्रेस की सरकार ने उसमें बड़ा खतरनाक निर्णय लिया और छत्तीसगढ़ की माताओं और बहनों के अहित में निर्णय लिया। मैं तो सुने रहे हो कि आदरणीय अनिला भेंडिया दीदी जी हा ओखर बहुत विरोध करे रीहिस हे कि अइसे मत करो। लेकिन मंत्री होने के बाद भी इनकी बात को नहीं माना गया। क्योंकि ऐसा बताया जाता है कि वाड्रा मैडम के यहां से फोन आ गया था। (शेम-शेम की आवाज)

श्रीमती अनिला भेंडिया :- वहिचे ले फोन आए रीहिस करके तोर कर फोन आए रीहिस का ? (हंसी)

श्री ओ.पी. चौधरी :- तुमन कतको कुछु करत रहिहौं न, प्रशासन वाले सब I.A.S. अऊ Deputy Collector मन तुंहर कर रहहींच। रोज काए-काए होए ओला ओमन watsup में बताये। (मेजों की थपथपाहट) इसके लिए भी हमारी सरकार पूर्णत: प्रतिबद्ध है। यह विष्णु देव सरकार का commitment है कि पोंटी चड्ढा से जुड़े हुए लोगों को छत्तीसगढ़ में काम करने नहीं दिया जाएगा। हमारे सदन में आज बहुत सारे विषय आये कि जो नये जिले बनाये गये हैं उनमें कार्यालय और कॉलेज नहीं हैं। बहुत सारी

जगहों से हमारे विपक्ष के सदस्य साथीगण भी जीतकर आये हैं। निश्चित रूप से पिछली सरकार में राजनीतिक रूप से तो जिला बनाने का काम कर दिया गया था, लेकिन वहां पर जाकर वाकई में दु:ख होता है क्योंकि न तो वहां पर कोई office building है, न कोई development है और न किसी चीज की व्यवस्था है। सब लोग परेशान हैं। भले ही उन्होंने जिले बनाये हैं लेकिन आने वाले समय में विष्णु देव सरकार की ओर से हम यह दावा करते हैं कि राजनीतिक और पार्टीगत सोच से ऊपर उठकर उन जिला मुख्यालयों और जिलों का विकास करने के लिए हम पूरी तरह से प्रतिबद्ध हैं। हम सारे जिलों और जिला मुख्यालयों का विकास करके दिखाएंगे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछली सरकार में जो बिजली बिल हाफ योजना चलती थी। उन्होंने कुछ अच्छी योजना शुरू की थी तो हमने उसको continue भी किया है। यह पार्टीगत बात नहीं है। यदि आप कोई अच्छी चीज करेंगे तो उसको continue करने में भी हमारी विष्णु देव सरकार को कोई गुरेज नहीं है। लेकिन जिस चीज में खाना-पीना करेंगे, जिस चीज में खिलाने की कोशिश करेंगे, उन चीजों को रोकने के लिए विष्णु देव साय जी की सरकार पूरी तरह से प्रतिबद्ध है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, खेती और किसान पर बहुत सारे विषय आये। आजादी के बाद के 4-5 दशकों तक किस तरह से गांव के हालात रहे, खेती के हालात रहे, किसान के हालात रहे । वह भी इस सदन में स्मरण करना बहुत महत्वपूर्ण है । अगर हम किसी चीज का क्रेडिट पिछले 5 साल की सरकार को देना चाहते हैं या हम लोग किसी चीज का क्रेडिट 15 साल की भाजपा सरकार को देना चाहते हैं तो पिछले 50-60 सालों के बारे में भी हम लोगों को चर्चा करनी चाहिए। मेरा बचपन बहुत छोटे से गांव में बीता और उस समय के खेती को और खेतिहर मजदूरों की, कमियां की, किसान के हालात ला बहुत करीब से देखे के मौका मिलिस । अभी भी मोला याद हे, जब हमन छोटे रेहेन त स्कूल जाए के पहिली रोटी पहुंचेए बर या मुर्रा पहुंचाए बर साईकिल मा खेत तक जान और दिन भर कमियां मन खेत मा काम करैं । 1990 के दशक के बात करथौ, ओकर पहिली के 4-5 दशक तक कांग्रेस के एक छत्र राज रिहीसे, लेकिन अइसे चले कि पूरा कमियां मन बेचारा मन दिन भर बुता ला करै, शाम के आएं और तामि मा भूति ला लें और लेकर ढेकी में कुटए, ओकर बाद खाएं । छत्तीसगढ़ में जो 15 साल की सरकार रही, उसको विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहूंगा, जिसने पेट के भूख की ज्वाला को समझा और पीडीएस की श्रेष्ठ व्यवस्था हमारे छत्तीसगढ़ को प्रदान की । (मेजों की थपथपाहट) इससे मजदूरों के हालात, इससे मजदूरों की बारगेनिंग केपेसिटी बढ़ी । वे बंधक की तरह रहते थे, उससे गांव-गांव में उन कमियां लोगों को मुक्ति मिली । अध्यक्ष महोदय, इसके लिए मैं निश्चित रूप से आपकी पिछले वाली सरकार को बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहूंगा । इस सदन के माध्यम से उसके प्रति बहुत धन्यवाद ज्ञापित करना चाहूंगा । यहां जो पीडीएस की व्यवस्था थी, वह केवल किसानों के और कमियां के लिए बेहतर नहीं थीं। इसमें नमक का भी वितरण किया गया, नि:शुल्क नमक वितरण किया गया और आज

बस्तर, सरगुजा की बात करते हैं, हमारे सभी वरिष्ठगण यहां बैठे हुए हैं, सबको पता है कि बहुमूल्य वनोत्पादों को चिरौंजी जैसी चीज को हमारे आदिवासी भाई बहन हाट बाजार में लेकर आते थे और उनका बोरा-बोरा लेकर दो-दो किलो, चार-चार नमक के बदले दे दिया करते थे । अगर बस्तर और सरगुजा जैसे समाज में आदिवासी भाई बहनों के शोषण का सबसे बड़ा प्रतीक था तो वह नमक था । नमक के बदले उनको लूटा जाता था और आपकी पिछली वाली सरकार ने जो पीडीएस व्यवस्था लागू की, उसमें नि:शुल्क नमक का प्रावधान किया । (मेजों की थपथपाहट) जो मुझे लगता है कि आदिवासी भाई बहनों को शोषण से मुक्ति दिलाने का सबसे बड़ा काम था । आज जो तामी वाला कल्चर था, जो ढेंकी में कूटकर खाने वाला कल्चर था, उससे छत्तीसगढ़ के हर गांव को मुक्ति मिली है । आज मैं कहना चाहता हूं कि जब 2003 में भारतीय जनता पार्टी की सरकार आई थी, तब टोटल धान खरीदी 5 लाख मीट्रिक टन थी और जब 2018 में भारतीय जनता पार्टी की सरकार का आखरी साल था, उस समय यह बढ़कर लगभग 63 लाख मीट्रिक टन हो चुका था, 12-13 गुणा वृद्धि अगर किसी ने की तो भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने की । अभी बोला जा रहा था कि धान खरीदी कम हुई है । बीच में 2-3 दिन पहले एक प्रश्न आया था कि रकबा कम हो गया है, कहकर छत्तीसगढ़ के किसानों को, यहां की जनता को भ्रमित करने का प्रयास किया जा रहा था । यह पहला साल है, जिसमें विष्णु देव साय जी की सरकार ने निर्णय लिया कि 15 क्विंटल के स्थान पर 21 क्विंटल धान की खरीदी होगी । (मेजों की थपथपाहट) अगर किसी का औसत उत्पादन 16 क्विंटल है और उसके पास 10 एकड़ खेत है तो वह 7 एकड़ में ही अपना धान बेच लिया तो रकबा कम हो सकता है, इसमें कोई बड़ी बात नहीं है, लेकिन जो कुल धान की खरीदी हुई है, वह पिछले साल 1 करोड़, 20 लाख मीट्रिक टन थी, और इस साल इतिहास बनाते हुए हिस्टोरिकल रिकार्ड के साथ 1 करोड़, 35 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी हूई है । (मेजों की थपथपाहट) किसानों के लिए हमारी सरकार पूर्णत: प्रतिबद्ध है । कई लोगों ने बजट के आंकड़ें पर कहा कि किसानों के लिए पूरा हो पाएगा या नहीं हो पाएगा । मैं सम्माननीय सदन के सदस्यों को आपके माध्यम से अवगत कराना चाहूंगा कि 2023-24 का जो तृतीय अनुपूरक बजट आया है, उसमें किसान भाइयों के लिए, कृषक उन्नति योजना के लिए 12 हजार करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है और इस बजट में 10 हजार करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है । (मेजों की थपथपाहट) जो भी जरूरत होगी, आने वाले समय में अनुपूरक बजट में हम शामिल करके विष्णु देव साय जी की सरकार गारंटी की सरकार है, किसान भाइयों के साथ अपने वायदों को पूरा करने के लिए पूर्णत: समर्पित सरकार है। सदन को किसी भी प्रकार से चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है । सबको धान का मूल्य, कृषक उन्नति योजना का लाभ 100 प्रतिशत मिलेगा । किसी को चिन्ता करने की जरूरत नहीं है । (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय, महतारी वंदन योजना में कई तरह की बातें आईं कि इतने कम पैसे में कैसे होगा, यह बोला गया था, वह बोला गया था। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सम्माननीय सदन के सदस्यों को बताना चाहूंगाकि जब सन् 2018 में कांग्रेस नेतृत्व की सरकार बनी थी तो सभी को मालूम है कि उनके जनघोषणा-पत्र प्रति माह पांच सौ रूपया अर्थात् साल में 6 हजार रूपये प्रत्येक माता-बहनों को देने की बात कही गई थी। जिन लोगों ने 6 हजार रूपये प्रतिमाह देने का वादा किया था, पांच साल में 6 रूपये तक नहीं दिए और वही हम पर सवाल उठाते हैं, यह उचित नहीं है।(मेजों की थपथपाहट)

श्री रामकुमार यादव :- अभी कतका देवत हव ?

श्री ओ.पी. चौधरी :- हाथी आय हे, ठग के भागे हे।

श्री रामकुमार यादव :- अभी कतका देत हा ? एक हजार रूपया देबो करके बात करे हा अउ पहली के ला जोड़ के देवत हा।

श्री ओ.पी. चौधरी :- अध्यक्ष महोदय, हम माताओं-बहनों के लिए विष्णुदेव साय जी की सरकार पूर्णत: प्रतिबद्ध है। निश्चित रूप से अंबानी, अडानी या हीरा ग्रुप के परिवार की महिलाओं को थोड़ी मिलना चाहिए, उनको नहीं मिलना चाहिए।

श्री धर्मजीत सिंह :- मांगेंगे तो भी नहीं देना चाहिए।

श्री ओ.पी. चौधरी :- हां, मांगेंगे तो भी नहीं देना चाहिए। अध्यक्ष महोदय, बहुत सामान्य क्रायटेरिया रखा गया है। देश में इस तरह की जो भी योजनाएं हैं, आप किसी भी प्रदेश से तुलना करें, सबसे लिबरल और माताओं-बहनों के लिए सबसे हितैषी योजना हमारे छत्तीसगढ़ की महतारी वंदन योजना है। किसी को चिंता करने की जरूरत नहीं है। बजट में प्रावधान किया गया है, अभी सरकार का प्रशासनिक फार्म भरना चालू हुआ है। यह फार्म भरते ही 1 मार्च से पैसा देने की वादा हमारी विषणुदेव साय जी की सरकार कैबिनेट में निर्णय ले चुकी है।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं महतारी वंदन योजना के लिए कई जगह गया था। कई लोगों के यहां दो-दो, तीन-तीन महिलाएं हैं। तो क्या महिला महतारी योजना है। उन तीनों को देंगे या एक को ही देंगे ?

श्री रामकुमार यादव :- ओखर 12 ठी हावय, कैसे करही ?

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय मंत्री जी, इनके घर में एक भी नहीं है तो उनके लिए कौन सा वंदन योजना शुरू करेंगे, यह थोड़ा घोषणा कर दीजिये।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- उसको जरा बता दें तो अच्छा रहेगा।

श्री धर्मजीत सिंह :- इतनी बड़ी योजना में इनको सही प्राब्लम मिला कि किसी-किसी का तीन है, तो आपकी चिंता जायज है। (हंसी)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री ओ.पी. चौधरी :- सम्माननीय अध्यक्ष महोदय, महतारी वंदन योजना अन्तर्गत जितने भी आवेदन आयेंगे, जो सही पात्र होंगे, उनके लिए विष्णुदेव साय जी की सरकार सौ प्रतिशत समर्पित है, प्रतिबद्ध है। उन सबको साल का 12 हजार रूपया मिलेगा। (मेजों की थपथपाहट) यह जरूर ही अभी बजटीय प्रावधान 3 हजार करोड़ रूपये का किया गया है। मगर सदन को चिंता करने की जरूरत नहीं है। हम अन्य माध्यमों से, यदि अनुपूरक की जरूरत पड़ेगी तो अनुपूरक लायेंगे। जहां हमको सी.एफ. एडवांस की जरूरत होगी वहां सी.एफ. एडवांस लेंगे। लेकिन हर माताओं-बहनों को पात्रता अनुसार 12 हजार रूपया प्रत्येक वर्ष देने के काम को पूरा करेंगे।

अध्यक्ष महोदय, हम लोगों ने इस बजट में अन्य सभी प्रकार का प्रावधान किया है। पूरा प्रयास किया है कि छत्तीसगढ़ को एक नया विजन मिल सके। हम उस विजन में सबका साथ चाहते हैं। हम विपक्ष से भी सकारात्मक विपक्ष की भूमिका चाहते हैं। अनावश्यक रूप से, बिना हल्ला-गुल्ला किये सकारात्मक विपक्ष की भूमिका निभायेंगे तो सब मिलकर 10 पिलर पर आधारित हमारे रिफार्म्स को लागू करेंगे और लागू करके विष्णुदेव साय जी की सरकार पूरे छत्तीसगढ़ को एक नई ऊंचाई पर ले जाने के लिए पूर्णत: प्रतिबद्ध है। हमारी सरकार रिफार्म्स पर आधारित होगी। हम पूरे पांच साल रिफार्म्स पर चलेंगे। हमारी सरकार की, हमारे मुख्यमंत्री जी की नीयत बिलकुल साफ है। मैं आपके माध्यम से सम्माननीय विपक्ष के सदस्यों को भी कहना चाहता हूं कि जहां उनको लगे कि कहां पर क्या चोरी हो रहा है, कहां पर बिजनेस इंटेलीजेंस यूनिट लगाने की जरूरत है, कहां क्या है, मुझे बताये। ठीक है, सदन में पार्टी धर्म निभाना पड़ता है। आप व्यक्तिगत रूप मिलकर मुझे बतायें, हमारे सम्माननीय मंत्रियों को बताये, हमारे सम्माननीय मुख्यमंत्री जी को बताये। हम लोग छत्तीसगढ़ को आगे ले जाने के लिए पूर्णत: समर्पित हैं। हमारे बहुत सारे सदस्यों ने अलग-अलग, तरह-तरह की उनके क्षेत्रों की समस्यों को रखा है। हम उन समस्याओं पर निश्चित रूप से ध्यान देंगे, पार्टीगत सीमाओं से ऊपर उठकर आदरणीय विष्णुदेव साय जी की सरकार का करेगी और किसी को चिन्ता करने की जरूरत नहीं है । इसमें जो महत्वपूर्ण बातें आई है, उनमें कुछ को विनियोग विधेयक में जोड़ने का प्रयास करेंगे और आने वाले समय जून में अनुपूरक बजट आयेगा, उसमें भी हम आवश्यकतानुसार जोड़ लेंगे । यदि बहुत जरूरी कोई काम रहेगा तो सी.एफ.एडवांस के माध्यम से भी करेंगे । हमारे सम्माननीय सदस्यों ने बहुत सारे बिन्दुओं को रखा है । मैंने इन सारे बिन्दुओं को व्यक्तिगत रूप से भी नोट किया है, हमारे विभाग ने भी नोट किया है, हम सब मिलकर अच्छे तरीके से काम करेंगे । अध्यक्ष महोदय, सबका साथ और सबका विकास यही मोदी जी का नारा है । हम विपक्ष को पार्टीगत सीमाओं से ऊपर उठकर देखेंगे और छत्तीसगढ़ के विकास के लिये विष्णुदेव साय जी के नेतृत्व में पूर्ण समर्पित होकर काम करेंगे । अध्यक्ष महोदय, बहुत-बहुत धन्यवाद । (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद ।

अध्यक्षीय व्यवस्था

अध्यक्ष महोदय :- माननीय सदस्य श्री अजय चंद्राकर द्वारा माननीय सदस्य श्री कुंवर सिंह निषाद द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-2025 के आय-व्ययक पर सामान्य चर्चा के दौरान अपना उद्बोधन गायन करते हुये प्रस्तुत करने के सबंध में व्यवस्था चाही गई थी कि क्या इसकी सभा में अनुमति दी गई है या नहीं ? तत्संबंध में मैने संबंधित कार्यवाही का अवलोकन किया । विषय में मेरी व्यवस्था निम्नानुसार है :-

सभा में श्री कुंवर सिंह निषाद, सदस्य के उद्बोधन के समत भी आसंदी द्वारा यह निर्देश दिये गये थे कि गाने के माध्यम के अलावा आप दूसरे रूप में भी अपनी बात को कह सकते हैं एवं गायन के माध्यम से उद्बोधन की परम्परा नहीं रही है । इस प्रकार मैं समझता हूँ कि आसंदी द्वारा तत्समय ही स्पष्ट कर दिया गया था । तथापि इस संबंध में मेरी यह व्यवस्था है कि कृपया सभा में अपनी बात रखते समय संदर्भ के रूप में कविता, श्लोक, शेर-शायरी आदि के अंशों का उल्लेख तो किया जा सकता है, लेकिन अपना संपूर्ण उद्बोधन गायन करते हुए व्यक्त किया जाना सभा के न नियम हैं न परम्परा है । धन्यवाद ।

अध्यक्ष महोदय :- सभा की कार्यवाही बुधवार दिनांक 14 फरवरी 2024 को 11.00 बजे दिन तक के लिये स्थगित ।

(06 बजकर 52 मिनट पर विधान सभा की कार्यवाही बुधवार, दिनांक 14 फरवरी 2024 (माघ 25, शक संवत् 1945) के पूर्वानह 11.00 बजे तक के लिये स्थगित हुई ।)

दिनेश शर्मा

रायपुर (छत्तीसगढ)
दिनांक : 13 फरवरी, 2024

सचिव
छत्तीसगढ़ विधान सभा

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं